# "बुन्देलखण्ड प्रभाग (उत्तर प्रदेश) में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम द्वारा वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक चेतना का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन"

(बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी में समाजशास्त्र विषय में
पी० एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध)

1992



शोधार्थी
श्रीमती इन्द्रा श्रीवास्तव
प्रवक्ता समाज शास्त्र
ईश्वर शरण डिग्री कालेज
इलाहाबाद

सुपरवाइजर
डा० जसवन्त नाग
प्राध्यापक समाजशास्त्र
जवाहर लाल नेहरु पी०जी० कालेज
बांदा (उ० प्र०)

# "बुन्देलखण्ड प्रभाग (उत्तर प्रदेश) में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम द्वारा वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक चेतना का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन"

(बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी में समाजशास्त्र विषय में पी०एच०डी० उपाधि

हेतु प्रस्तुत शोध – प्रबंध)

1 9 9 2


शोधार्थी

श्रीमती इन्द्रा श्रीवास्तव
प्रवक्ता समाज शास्त्र,
ईश्वर शरण डिग्री कालेज
इलाहाबाद ।

सुपरवाइजर

डा० जसवन्त नाग
प्राध्यापक समाजशास्त्र
जवाहर लाल नेहरू पी०जी०कालेज
बांदा (उ०प्र०)

## प्राक्कथन

राष्ट्र सामूहिक चेतना का दर्पण है और चेतना से शिक्षा विकसित होती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल लिखने पढ़ने की दक्षता होना मात्र नहीं है वरन् व्यक्ति का बहुमुखी विकास करना है। शिक्षा के माध्यम से, उसमें कम से कम इतनी दक्षता आ जाये कि वह स्वतन्त्र रूप से, वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थितियों को, अपने विवेक से हल कर सके। भारत सरकार के प्रौढ़ शिक्षा की नवीन अवधारणा के अन्तर्गत न केवल साक्षरता को, अपितु अशिक्षित वयस्कों की, समाज के सदस्य के रूप में, सर्वतोमुखी उन्नति को भी, महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इस लक्ष्य तक पहुंचने के लिये सरकार ने, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की नवीन योजना के तीन उद्देश्य, व्यक्ति में साक्षरता, जनचेतना जागृति करना एवं व्यावहारिक दक्षता सृजित करना - परिभाषित किया है। ग्रामीण निरक्षर प्रौढ़ों के आर्थिक सामाजिक, राजनैतिक तथा वैयक्तिक चेतना के विकास की प्रक्रिया, प्रौढ़ शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। कुटीर उद्योग धन्धे, कला कौशल, कृषि उत्पादन से सम्बन्धित कार्यकलापों की दक्षता, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से ही सम्भव है।

राष्ट्र के विकास में, ग्रामीण प्रौढ़ों की भागेदारी भी आवश्यक है। जब तक हमारी ग्रामीण प्रौढ़ जनता शिक्षित नहीं हो जाती, हम किसी भी क्षेत्र में उन्नति नहीं कर सकते । इसी कारण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 से लागू होने पर प्रौढ़शिक्षा पर पूर्ण ध्यान दिया जाता है। कुछ जनपदों में सभी को शिक्षा, शत प्रतिशत साक्षरता, **"एक पढ़ाये एक"** का जनजागरण कार्यक्रम चल रहा है।

शोधकर्ता ने राष्ट्रीय महत्त्व के विषय **"प्रौढ़ शिक्षा-मूल्यांकन"** पर शोध कार्य इसलिये लिया है ताकि वह अपने शोध कार्य से, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को सफलता पूर्वक चलाने के लिये व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत कर सके। आशा है प्रस्तुत शोध पर आधारित सुझाव, बुन्देलखण्ड प्रभाग के पांच जनपदों के बहुमुखी विकास में योगदान दे सकेंगे ।

**दिनांक :** 01.06.1992

**इन्द्रा श्रीवास्तव**
**शोधकर्ता**

## आभार

शोध कार्य के विभिन्न चरणों में, समय समय पर, विषय विशेषज्ञों से परामर्श लेना अपेक्षित होता है अतः शोधकर्ता, प्रौढ़ शिक्षा से सम्बन्धित गूढ़ विषयों पर, विशेषज्ञों के परामर्श से लाभान्वित हुई है। प्रोफेसर एस0 पी0 नागेन्द्र (पूर्व विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर) वर्तमान निदेशक, गोविन्द वल्लभ पन्त, सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद और स्वर्गीय डा0 एस0 के0 कुलश्रेष्ठ, अवकाश प्राप्त निदेशक, मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग (मनोविज्ञान शाला ) उ0 प्र0 इलाहाबाद के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने अनुसूचियों के निर्माण में और मूल्यांकन, तथा विश्लेषण में, समय समय पर, बहुमूल्य परामर्श एवं मार्ग दर्शन किया। वह डा0 कृष्णा अवतार पाण्डेय, निदेशक राज्य प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय लखनऊ, जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी, जालौन, झांसी, बांदा, ललितपुर तथा हमीरपुर के प्रति भी आभारी है, जिनकी सहायता से, बुन्देलखण्ड प्रभाग के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की अनुसूची विवरण एवं आय व्यय के आंकड़े प्राप्त कराने के अतिरिक्त आवश्यक जानकारी, समय समय पर उपलब्ध कराने में सहायता की ।

शोधकर्ता श्री परमेश्वर दयाल, श्री ओम प्रकाश तिवारी, श्री हरिहर नाथ पाण्डेय अवकाश प्राप्त मनोवैज्ञानिक, इलाहाबाद एवं पुस्तकालय अध्यक्ष, के प्रति भी आभार व्यक्त करती है जिन्होंने, मूल्यांकन एवं, विश्लेषण कार्य में, सहायता प्रदान की।

शोध कर्ता, श्री दशरथ, श्री अनिल कुमार तिवारी, श्री सी0 पी0 सिंह0, श्री एस0 जे0 निगम, श्री पी0 के0 श्रीवास्तव एवं ए0 के0 श्रीवास्तव के प्रति भी आभार ज्ञापित करती है जिन के अथक सहयोगी परिश्रम से क्षेत्रीय कार्य समय से पूरा हो सका ।

शोधकर्ता, डा0 जसवन्त नाग, शोध निर्देशक के प्रति विशेष रूप से आभारी है जिन्होंने, समय समय पर, जब भी शोधकर्ता को कठिनाई अथवा

मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़ी, अपने मूल्यांकन और उपयोगी सुझावों का योगदान और मार्ग दर्शन किया । उनके परामर्श एवं मार्गदर्शन के बगैर यह शोध कार्य समय से पूरा होना असम्भव था ।

शोधकर्ता प्रदर्श के सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित करती है जिनके सहयोग पूर्ण क्रियाकलापों से यह शोध सम्पन्न होने में सहायता मिली।

दिनांक : 01.06.1992

इन्द्रा श्रीवास्तव

शोधकर्ता

# आमुख

सम्प्रति भारत एक विकासशील देश है अतः आज का समय पुननिर्माण एवं पुनीर्नियोजन का है। हमने अपने देश के लिये धर्मनिरपेक्ष कल्याणकारी लोकतंत्र को स्वीकारा है। उसे सुदृढ़ एवं शक्तिशाली बनाने के लिये आवश्यक है कि उसकी आधारशिला सुदृढ़ एवं शक्तिशाली हो यह आधार शिला इस देश की समस्त जनता है यह हमारा दुर्भाग्य है कि अभी भी यहां अधिकांश लोग अशिक्षित हैं। अधिकांश ग्रामीण न तो छपी हुई पुस्तक का एक भी पृष्ठ पढ़ सकते हैं, न वे मतदान की पर्ची पर समझदारी के साथ निशान लगा सकते हैं, न रोजमर्रा के छोटे-मोटे हिसाब लगा सकते हैं। यह निरक्षरता और अशिक्षा एक अभिशाप बन गई है जो हमारी आर्थिक और सामाजिक प्रगति को अवरूद्ध कर रही है। आर्थिक उत्पादकता, जनसंख्या नियंत्रण, राष्ट्रीय एकीकरण, सुरक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता के कार्यक्रम भी इस कारण विपरीत रूप से प्रभावित होते हैं। हमारे लिये निरक्षरता और भी अधिक लज्जाजनक है, क्योंकि विश्व के वयस्क निरक्षरों में से आधे भारतीय हैं। अतः इन वयस्कों के लिये प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम चल रहे है।

भूतपूर्व केन्द्रीय शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ने प्रौढ़ शिक्षा का जनतंत्र में महत्त्व स्पष्ट करते हुए केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड के 15वें अधिवेशन में कहा था **"प्रौढ़ शिक्षा को केवल व्यक्तियों को साक्षर बनाने तक ही सीमित नहीं रखा जाना चाहिए । उसमें उस शिक्षा को भी शामिल किया जाना चाहिए जो प्रत्येक नागरिक को जनतंत्रीय सामाजिक व्यवस्था में भाग लेने के लिए तैयार करती है"** प्रो0 हुमांयु कबीर भी प्रौढ़ शिक्षा का उद्‌देश्य नागरिक चेतना का निर्माण एवं सामाजिक सुदृढ़ता का विकास मानते थे । इसका उद्‌देश्य निरक्षर वयस्कों में साक्षरता लाना उनके लिये स्वास्थ्य एवं पर्यावरण शिक्षा और आर्थिक उन्नति के लिये उद्योग धन्धों की शिक्षा की व्यवस्था करना तथा व्यक्ति, एवं समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल मनोरंजन के स्वस्थ साधनों की व्यवस्था करना है इस प्रकार उनमें, कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति पर्याप्त जागरूकता के साथ-साथ नागरिकता की भावना का विकास करना है।

भारतीय संविधान के निर्माताओं ने, प्राथमिक स्तर की शिक्षा का ज्ञान अनिवार्य और देशव्यापी बनाने का जो आश्वासन दिया था वह पूरा होना है। इस दिशा में जो भी शिक्षा का प्रसार हुआ उसका महत्त्व परिणाम और गुणवत्ता के द्वारा आंका जा सकता है। देश के अभिजात शिक्षित समूह से व्यापक सामाजिक परिवर्तन और क्रान्ति की अपेक्षा की जाती है। किन्तु उस पर आरोप है कि यदि वह एक ओर नई विचार धाराओं को जन्म देता है और उनका प्रचार प्रसार करता है तो दूसरी ओर अपने निहित स्वार्थों को साधनें में समाज का एक परजीवी खण्ड बनकर रह जाता है। जातीयता, प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता आदि विघातक शक्तियों को प्रश्रय और प्रोत्साहन भी शिक्षित और सम्पन्न समुदाय से मिलता है। समाज की नैतिकता के अवमूल्यन में भी उन्हें जिम्मेदार ठहराया जाता रहा है।

शिक्षा ही यह निश्चित कर सकती है कि वह क्रांतिकारी परिवर्तनों का अस्त्र बनेगी या यथास्थितिवाद की प्रत्यक्ष – अप्रत्यक्ष समर्थन देगी। यह अविस्मरणीय है कि समसामयिक शिक्षा द्वारा विकसित होने वाली प्रशिक्षित योग्यता समाज के अल्प किन्तु सम्पन्न वर्ग की सेवा के लिये ही अर्पित होती है। बार-बार बड़े वर्ग से कहा जाता है कि भारत के पास विश्व की तीसरे स्थान की प्रशिक्षित वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक शक्ति है। संख्या की दृष्टि से यह दावा सही है, पर हमें क्षमताओं के धरातल और उनके उपयोग पर भी विचार करना चाहिए। समस्याओं के समाधान की दृष्टि से इन क्षमताओं में अधिक पैनापन अपेक्षित है।

हमारा सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण जिस पुराने एवं लक्ष्य विरोधी धरातल पर खड़ा है उसका परीक्षण, मूल्यांकन, एवं संशोधन और उसमें नयी विचार धारायें शामिल करके उसे हमारे आधुनिक एवं प्रगतिशील राष्ट्र के अनुकूल बनाने की आवश्यकता है जिससे हम तीव्रता एवं कुशलता के साथ मैत्रीपूर्वक राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। बहुत से लोग आत्मत्याग, परित्याग व पुनर्जन्म जैसी धारणाओं पर विश्वास करते हैं। निर्धनता को ईश्वर प्रदत्त माना गया है जबकि आत्म विश्वास एवं आत्म-प्रयास को ईश्वर प्रदत्त नहीं माना

गया, जिससे निष्क्रियता एवं भावशून्यता को बढ़ावा मिला । राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये सामूहिक जीवन एवं सामूहिक प्रयासों में सुधार के लिये व्यक्तिगत प्रयासों एवं सामूहिक रूप से कार्य करने की नई मूल्यांकन प्रणाली द्वारा इस प्रचलित मूल्यांकन प्रणाली को बदलने की आवश्यकता है। इसलिये प्रौढ़ शिक्षा आन्दोलन हमारी सामान्य सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा और सृजन एवं हमारी मूल्यांकन प्रणाली के नये सामाजिक रूप में पुनर्मूल्यांकन और पुनर्व्याख्या करने वाले अग्रदूत के रूप में कार्य कर सकता है। प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास के परिणामस्वरूप तेजी से होते हुए परिवर्तन के कारण नई सामाजिक शक्तियों के प्रति अपने मस्तिष्क एवं क्रिया कलापों को व्यवस्थित कर सकने का है। प्रौढ़ शिक्षा आन्दोलन को जन साधारण के बीच सामाजिक एवं नागरिक दायित्वों को विकसित करना चाहिए, ताकि वे अपने भाग्य के निर्माता स्वयं बन सकें तथा इस प्रकार निर्धनता अज्ञान, अधिक जनसंख्या और कुपोषण रोगों के भयावह व्यूह को तोड़ सकें ।

मानव जाति आज अस्तित्व के संकट के दौर से गुजर रही है। सार्थक शिक्षा जीवन की एक अनिवार्यता बन गई है। आज तीसरी दुनिया के सामने विकास की अनेक उलझी हुई समस्यायें है, जो प्रशिक्षित योग्यता की मांग करती है। उसके और विकसित देशों के बीच की दूरी कम करने के लिये शिक्षा के पुनर्नवीकरण के साथ उसमें व्यावहारिकता की आवश्यकता है। समाज की आन्तरिक असमताओं और विसंगतियों को दूर करने के लिये भी शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा शक्तिशाली साधन हो सकता हैं। समय की चेतावनी है कि सम्यक् नीति का अभाव और योजनाओं को क्रियान्वयन में असफलता घातक सिद्ध होगी। हमें सभ्यता के इस संकट को समझकर भविष्य की चुनौतियों को पहचानना होगा ।

**इन्द्रा श्रीवास्तव**

**शोधकर्ता**

**दिनांक :** 01.06.1992

विषय वस्तु


| क्रम सं0 | | विवरण | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| प्रथम अध्याय | 1. | प्रस्तावना | 1 - 8 |
| | 2. | प्रौढ़ शिक्षा, आवश्यकता और महत्व:-शिक्षा के तन्त्र, सहशिक्षा, औपचारिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, (प्रौढ़ शिक्षा) | 9 - 12 |
| | 3. | शिक्षा की प्रासंगिकता | 13 - 18 |
| | 4. | प्रौढ़ शिक्षा की अवधारणा:-पश्चिमी विचार धारा, भारतीय विचारधारा, अवधारणा का स्पष्टीकरण | 19 - 26 |
| | 5. | प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम एवं उद्देश्य:-नवीन विचार धारा, सामान्य उद्देश्य परिसीमित उद्देश्य | 27 - 31 |
| | 6. | अंतराष्ट्रीय साक्षरता वर्ष | 32 - 33 |
| | 7. | साक्षरता के नये प्रयास | 34 - 38 |
| | 8. | प्रौढ़ शिक्षा और विकास:-व्यक्तिगत विकास, सामाजिक विकास, आर्थिक विकास, राजनैतिक विकास, अन्य ज्ञान चेतना । | 39 - 52 |
| | 9. | शोध की आवश्यकता | 53 - 56 |
| | 10. | निरक्षरता एक समस्या:-विश्व, भारत, उत्तर प्रदेश, तथा बुंदेलखण्ड के संदर्भ में | 57 - 65 |
| | 11. | साक्षरता के प्रसार में अनियमिततायें, आर्डर आख्या | 66 - 68 |
| द्वितीय अध्याय | 1. | संदर्भित अध्ययन | 69 - 71 |
| | अ. | भारत के बाहर अध्ययन | 72 - |
| | ब. | भारत में हुए अध्ययन | 73 - 122 |
| | स. | राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रकाशित शोध सर्वेक्षण । | 123 - 169 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| तृतीय अध्याय | अ. 1. | प्रस्तुत शोध अध्ययन अभिकल्प का निर्धारण एवं स्पष्टीकरण | 170 - |
| | 2. | प्रस्तुत शोध का अभिकल्प | 171 |
| | 3. | समग्र संग्रह स्त्रोत | 172 |
| | 4. | समंक विश्लेषण | 172 |
| | 5. | संग्रहित समंको की विश्वसनीयता । | 173 |
| | 6. | विश्लेषणात्मक उपकरण | 175 |
| | 7. | शोध अध्ययन परिसीमन | 176 |
| | 8. | परिकल्पना- परिकल्पना निर्धारण | 177 |
| | ब. | अध्ययन विधि : | 178 |
| | स. | न्यादर्श चयन | 178 |
| | अ. | प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन अनुसूची | 181 |
| | ब. | अनुदेशक अनुसूची | 182 |
| | स. | ग्राम प्रधान अनुसूची | 182 - 183 |
| चतुर्थ अध्याय | | दत्त-विश्लेषण एवं निर्वचन | 184 - 186 |
| | | खण्ड-1 वैयक्तिक | 186 - 206 |
| | | खण्ड-2 सामाजिक | 207 - 226 |
| | | खण्ड-3 आर्थिक | 227 - 248 |
| | | खण्ड-4 राजनैतिक | 249 - 272 |
| | | खण्ड-5 अन्य ज्ञान | 273 - 292 |
| | | खण्ड-6 अनुदेशक अनुसूची | 293 - 305 |
| | | खण्ड-7 ग्राम प्रधान अनुसूची | 306 - 315 |
| पंचम अध्याय | | विवेचन एवं निष्कर्ष | 316 - 351 |
| | | विवेचन | |
| | | खण्ड - 1 वैयक्तिक चेतना | 316 - 320 |
| | | खण्ड - 2 सामाजिक चेतना | 321 - 324 |
| | | खण्ड - 3 आर्थिक चेतना | 325 - 328 |
| | | खण्ड - 4 राजनैतिक चेतना | 329 - 331 |

| | | |
|---|---|---|
| | खण्ड – 5 अन्य ज्ञान चेतना | 332 – 335 |
| | खण्ड – 6 अनुदेशक अनुसूची | 336 – 341 |
| | खण्ड – 7 ग्राम प्रधान अनुसूची | |
| | निष्कर्ष | 342 – 351 |
| षष्टम अध्याय | सुझाव एवं सारांश एवं भावी शोध अध्ययन हेतु सुझाव | 352 – 398 |
| संदर्भ ग्रंथ अनुक्रमणिका | | 399 |
| | 1. पुस्तकें | 399 – 404 |
| | 2. जरनल्स | 405 – 409 |
| | 3. पत्रिकायें | 410 – 411 |
| | 4. रिपोर्ट | 411 – 412 |
| | 5. अन्य–इयर बुक, सामान्य ज्ञान पुस्तिका | 412 |
| परिशिष्ट–1 | 1. भारत में प्रौढ़ शिक्षा का संगठनात्मक ढांचा कार्यक्रम, साक्षरता स्थिति | I – III |
| | 2. उत्तर प्रदेश प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम विवरण एवं आकड़े । | IV-XI-A |
| | 3. बुन्देल खण्ड, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम विवरण एवं आंकड़े: एवं मानचित्र | XII-L |
| | जनपद जालौन, झांसी, बांदा, ललितपुर एवं हमीरपुर | |
| परिशिष्ट–2 | बुन्देल खण्ड प्रभाग के दत्त विश्लेषण संयुक्त एवं जनपद अनुसार, जालौन, झांसी, बांदा, ललितपुर एवं हमीरपुर | LI-C |
| परिशिष्ट–3 | 1. प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन अनुसूची, उत्तर पत्र सहित | CI-CXVI |
| | 2. अनुदेशक अनुसूची | C XVII-CXIX |
| | 3. ग्राम प्रधान अनुसूची | CXX-CXXI |
| | 4. न्याय दर्श विवरण | CXXII |
| | 5. अनुदेशक नामावली सूची | CXXIII-CXXIX |
| | 6. ग्राम प्रधानजनपद अनुसार नामावली सूची | CXXX-CXXXVI |
| | 7. न्यायदर्श प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की सूची | CXXXVII-CXLIII |

## तालिका सूची


| क्रम सं0 | तालिका सं0 | विवरण | पृष्ठ सं0 |
|---|---|---|---|
| 1 अध्याय | 1.1 | भारत की जनसंख्या {1981-1992} | 57 |
| | 1.2 | भारत में साक्षरता की स्थिति {1901-1991} | 59 |
| | 1.3 | भारत में साक्षर और निरक्षर व्यक्तियों की संख्या {1981-1991} | 60 |
| | 1.4 | साक्षरता प्रतिशत, वृद्धिदर क्रम 1991 | 61 |
| | 1.5 | उ0प्र0 में शिक्षा व्यय प्रतिशत, पंचवर्षीय योजना के ... अन्तर्गत विवरण | 62 |
| | 1.6 | बुन्देलखण्ड प्रभाग साक्षरता प्रतिशत 1981 जनगणना के अनुसार | 63 |
| | 1.7 | बुन्देलखण्ड प्रभाग में साक्षरता प्रतिशत जनगणना 1991 के अनुसार | 64 |
| 2 अध्याय | 2.1 | 1986 से 1917 की अवधि में रात्रि विद्यालयों की स्थिति | 78 |
| | 2.2 | 1851 से 1868 की अवधि में जेल विद्यालयों की स्थिति | 79 |
| 2.3 | 2.3 | 1927 से 1937 की अवधि में विद्यार्थियों सहित प्रौढ़ साक्षरता की स्थिति | 80 |
| | 2.4 | प्रौढ़ शिक्षा के विभिन्न मदों पर व्यय | 84 |
| | 2.5 | राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम द्वारा निरक्षर प्रौढ़ों को साक्षर करने का वर्ष वार लक्ष्य {1978-1984} | 90 |
| | 2.6 | पंच-वर्षीय योजनाओं में प्रौढ़ शिक्षा पर धनराशि का प्रावधान | 91 |
| 3 अध्याय | 3.1 | बुन्देलखण्ड प्रभाग में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र संख्या | 178 |
| | 3.2 | जनपद अनुसार न्यादर्श केन्द्र संख्या | 179 |
| | 3.3 | जनपद अनुसार परियोजना, न्यादर्श केन्द्र संख्या । | 180 |
| 4 अध्याय | 4.1 | आयुवर्ग के अनुसार दत्त आवंटन सभी पांच जनपदों का योग | 185 |

4.2 शिक्षा स्तर के अनुसार दन्त आवंटन सभी पांच जनपदों का योग 185

4.3 जाति/वर्ग के अनुसार दन्त आवंटन सभी पांच जनपदों का योग 186

4.4 प्रदर्श का व्यवसाय अनुसार विवरण सभी पांच जनपदों का 186

4.5 प्रदर्श-प्रतिभागियों का वार्षिक आय वर्गीकरण (संख्या) 186

खण्ड-1

वैयक्तिक

4.6 शिक्षा की स्थिति (प्रतिशत में) 188

4.7 रूपये गणना करने सम्बन्धित स्थिति 189

4.8 बच्चों की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण 190

4.9 घर का सामान खरीदने में सलाह लेना 192

4.10 स्वास्थ्य के प्रति दृष्टिकोण 193

4.11 कृषि सम्बन्धी उपकरणों के क्रम के प्रति दृष्टिकोण 195

4.12 सांस्कृतिक और धार्मिक आयोजनों के प्रति दृष्टिकोण 196

4.13 प्रोयोगिक संचार माध्यमों का उपयोग 198

4.14 डाक-तार विभाग संबन्धी दृष्टिकोण 199

4.15 घरेलू समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण 201

4.16 वैवाहिक दृष्टिकोण 202

4.17 ग्रामीण नियमों सम्बन्धित जानकारी 203

खण्ड-2

सामाजिक

4.18 सामाजिक विकास और योजनाओं के प्रति दृष्टिकोण 207

4.19 विकास गोष्ठियों में सहभागिता 209

4.20 बाह्य समूहों से सम्पर्क 210

4.21 सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक आयोजनों सम्बन्धी दृष्टिकोण 212

| | | |
|---|---|---|
| 4.22 | विभिन्न सुविधाओं के प्रति जागरूकता | 213 |
| 4.23 | ग्राम में संचालित विकास कार्यक्रमों के प्रति दृष्टिकोण | 215 |
| 4.24 | विभिन्न जाति, समुदायों में उठने-बैठने का विवरण | 216 |
| 4.25 | सामाजिक कुरीतियों की नापसन्दगी | 219 |
| 4.26 | सामाजिक समारोहों, धार्मिक स्थलों के प्रति दृष्टिकोण | 220 |
| 4.27 | दूसरी जाति के व्यक्ति के संकटग्रस्त होने पर प्रतिक्रिया | 222 |
| 4.28 | परिवार सम्बन्धी दृष्टिकोण | 223 |
| 4.29 | विवाह सम्बन्धी दृष्टिकोण | 223 |
| **खण्ड-3** | | |
| **आर्थिक** | | |
| 4.30 | आय वृद्धि के प्रति चेतना का स्वरूप | 227 |
| 4.31 | घर की वस्तुओं सम्बन्धी जानकारी | 229 |
| 4.32 | आर्थिक आय वृद्धि हेतु व्यवसाय की पसन्द | 230 |
| 4.33 | अपनी आर्थिक दशा में आये परिवर्तन के प्रति दृष्टिकोण | 232 |
| 4.34 | मासिक/वार्षिक आय वृद्धि के उपाय | 234 |
| 4.35 | उत्पादन विक्रय सम्बन्धी दृटिकोण | 235 |
| 4.36 | समय व्यतीत करने वाले कार्य | 237 |
| 4.37 | आय वृद्धि के प्रयास माध्यम | 238 |
| 4.38 | पारिवारिक आय वृद्धि के उपाय | 240 |
| 4.39 | ग्राम की आर्थिक दशा सुधारने के प्रयास | 242 |
| 4.40 | आर्थिक दशा पर प्रभाव सम्बन्धी दृष्टिकोण | 244 |
| 4.41 | कर्ज या ॠण लेने के प्रति दृष्टिकोण | 245 |
| **खण्ड-4** | | |
| **राजनैतिक** | | |
| 4.42 | स्वतंत्रता का सही अर्थ | 249 |
| 4.43 | सामान्य ज्ञान की जानकारी | 252 |

| | | |
|---|---|---|
| 4.44 | चुनाव संबंन्धी जागरूकता (वोट देना) | 253 |
| 4.45 | गांव के पदाधिकारियों सम्बन्धी जानकारी | 255 |
| 4.46 | ग्राम विकास संबन्धी जानकारी और सहभागिकता | 256 |
| 4.47 | ग्राम के विकास के लिये विधियों के अपनाने के प्रति दृष्टिकोण | 258 |
| 4.48 | शासन पर ग्राम विकास के लिये दबाव के तरीके | 260 |
| 4.49 | ग्राम विकास से सम्बद्ध संस्थानों की जानकारी | 262 |
| 4.50 | ग्राम पंचायत के कार्य | 263 |
| 4.51 | ग्राम प्रधान की नियुक्ति विधि | 265 |
| 4.52 | राजनैतिक/प्रशासनिक प्रमुखों के कार्यों की जानकारी | 267 |
| 4.53 | प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के कार्यों की जानकारी | 269 |

**खण्ड-5**

**अन्य जानकारी**

| | | |
|---|---|---|
| 4.54 | प्रौढ़ शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा | 274 |
| 4.55 | बीच में प्रौढ़ शिक्षा छोड़ने के कारण | 275 |
| 4.56 | पारिवारिक बच्चों के व्यक्तित्त्व विकास के प्रति दृष्टिकोण | 276 |
| 4.57 | शोषण, गरीबी और बेरोजगारी से बचने के उपायों के प्रति दृष्टिकोण | 277 |
| 4.58 | सामाजिक कुरीतियों के प्रति दृष्टिकोण | 278 |
| 4.59 | सफाई और उसके प्रकार सम्बन्धी धारणा | 280 |
| 4.60 | प्रौढ़ शिक्षा से लाभों सम्बन्धी धारणा | 281 |
| 4.61 | प्रौढ़ शिक्षा से हुये लाभ | 283 |
| 4.62 | प्रौढ़ शिक्षा के सफल संचालन के उपाय सम्बन्धी दृष्टिकोण | 284 |
| 4.63 | प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र जाने से वैयक्तिक लाभ | 286 |
| 4.64 | प्रौढ़ शिक्षा विषयक धारणा | 288 |
| 4.65 | बच्चों की बीमारियों से बचाव के टीकों की जानकारी | 289 |

खण्ड-6

अनुदेशक-अनुसूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| | 4.66 | रूचि के कार्य | 294 |
| | 4.67 | अनुदेशक बनने के कारण | 295 |
| | 4.68 | जातियों की संख्या | 300 |
| | 4.69 | जाति के प्रकार | 301 |
| | 4.70 | सुझावों की संख्या | 301 |


खण्ड-7

ग्राम-प्रधान

अनुसूची

विश्लेशण


| | | | |
|---|---|---|---|
| | 4.71 | जनपद बार प्रश्नोत्तर | 307 |
| | 4.72 | प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र छोड़ने के कारण | 308 |
| | 4.73 | प्रौढ़ शिक्षा पर अनवर्ती अध्ययन | 310 |
| | 4.74 | सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर जाना | 311 |
| | 4.75 | प्रभावी ढंग से केन्द्र चलाने के सुझाव | 312 |
| 5 अध्याय | 5.1 | बुन्देलखण्ड की जनसंख्या औसत साक्षरता §1981§ | 343 |
| | 5.2 | बुन्देलखण्ड की जनसंख्या औसत साक्षरता§1991§ | 343 |
| 6 अध्याय | 6.1 | प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम- अधिकारियों, अनुदेशकों का प्रशिक्षण विवरण | 355 |
| | 6.2 | भारत की जनसंख्या,साक्षरता,निरक्षरता स्थिति | 376 |
| | 6.3 | उ0प्र0की जनसंख्या,साक्षरता निरक्षरता स्थिति | 377 |
| | 6.4 | बुन्देलखण्ड प्रभाग की जनसंख्या,साक्षरता,निरक्षरता स्थिति | 378 |
| | 6.5 | 1981-1981 की जनगणना के अनुसार बुंन्देलखण्ड प्रभाग के जनपदों की जनसंख्या साक्षरता प्रतिशत क्रमशः अ एवं ब में | 380 |

| | | |
|---|---|---|
| 6.6 | विगत दो वर्षों में प्रौढ़ शिक्षा से लाभान्वित व्यक्तियों का विवरण | 380 |
| 6.7 | बुंदेलखण्ड प्रभाग, प्रौढ़ शिक्षा, व्यय विवरण प्रत्येक जनपद कीपरियोजना में 14-14 लाख तक का बजट प्रावधान | 381 |
| 6.8 | प्रौढ़ शिक्षा परियोजना विकास खण्ड | 381 |
| 6.9 | न्यादर्श बुंदेलखंड प्रभाग | 382 |
| 6.10 | आयु वर्ग के अनुसार प्राप्त आंकड़े, पांच जनपदों का योग | 383 |
| 6.11 | शिक्षा स्तर के अनुसार पांच जनपदों का योग | 384 |
| 6.12 | जातिव,वर्ग अनुसार संख्या (पांचों जनपद) | 384 |
| 6.13 | व्यवसाय अनुसार विवरण (पांचों जनपद) | 384 |
| 6.14 | आय के अनुसार वर्गीकरण | 385 |

414.



## परिशिष्ट तालिका सूची


| क्रम सं0 | तालिका सं0 | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| परिशिष्ट-1 | | **भारत** | II |
| | 1.1 | भारत में पंचवर्षीय योजनाओं में निर्धारित परिव्यय | |
| | | **उत्तर प्रदेश** | |
| | 1.2 | उत्तर प्रदेश में वर्ष 1979-80 से अब तक कार्यक्रम का प्रसार | IV |
| | 1.3 | उत्तर प्रदेश में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की संख्या | V |
| | 1.4 | उ0प्र0 में पंजीकृत प्रतिभागियों की संख्या | V |
| | 1.5 | उत्तर प्रदेश में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र नामांकन की प्रगति (संख्या लाख में) | VI |
| | 1.6 | उ0प्र0 में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर नामांकन की प्रगति (संख्या लाख में) | VI |
| | 1.7 | सामग्री आपूर्ति | VII |
| | 1.8 | प्रस्तावित बजट वर्ष 1990-95 | VIII |
| | 1.9 | योजनावधि 1990-95 में शत प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करने हेतु खण्ड (अ) के आधार पर राज्य सरकार भारत सरकार तथा अन्य संस्थाओं द्वारा प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र संचालन | IX |
| | 1.10. | योजनान्तर्गत वर्ष 1990-95 तक आयोजनोत्तर एवं आयोजनागत पक्ष में शत प्रतिशत लक्ष्य सप्राप्त करने हेतु खण्ड(ब) के आधार पर राज्य सरकार, भारत सरकार तथा अन्य संस्थाओं द्वारा प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र संचालन | X |

415.




| क्रम सं0 | तालिका सं0 | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| | 1.11 | उत्तर प्रदेश आठवीं पंच वर्षीय योजना प्रस्तावित व्यंग विवरण | XI |
| | | **बुन्देलखण्ड** | |
| | 1.12 | बुन्देलखण्ड प्रभाग में प्रौढ़ शिक्षा से लाभान्वित व्यक्ति संख्या वर्ष 88-89. | XIV |
| | 1.13 | बुन्देलखण्ड प्रभाग में प्रौढ़ शिक्षा के लाभार्थियों का विवरण वर्ष 1989-90. | XIV |
| | 1.14 | सातवीं पंचवर्षीय योजना में भारत सरकार द्वारा बजट | XVI |
| | 1.15 | वर्ष 1987-88 से 1989-90 (तीन वर्षों का बजट व्यय विवरण) केवल परियोजनाओं मे व्यय जनपदों (हेड क्वार्टर व्यय सम्मिलित नही है ) | XVII |
| | 1.16 | आठवी पंचवर्षीय योजना (अनुमानित बजट) | XVIII |
| | 1.17 | बुन्देलखण्ड प्रभाग में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के लिये वर्ष 1990-91 से वर्ष 1994-95 तक शत प्रतिशत साक्षरता प्राप्त करने का विभिन्न श्रोतों द्वारा वर्षवार भौतिक लक्ष्यों की फॉट । | XIX |
| | 1.18 | बुन्देलखण्ड प्रभाग में प्रौढ़ शिक्षा आठवीं पंच वर्षीय योजना 1990-95 तक वर्तमान में संचालित परियोजनाओं द्वारा आच्छादन वर्षवार | XX |
| | | **जालौन** | |
| | 1.19 | जालौन जनपद में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के प्रारम्भ होने तथा प्रतिभागियों का विवरण | XXII |

| क्रम सं0 | तालिका सं0 | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| | 1.20 | जालौन जनपद में 31 मार्च 1981 तक प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के पंजीकृत लाभान्वित प्रतिभागियों का विवरण | XXIII |
| | 1.21 | जालौन जनपद में वर्ष 1988-89 एवं 1989-90 तक केन्द्रो मे पंजीकृत लाभान्वित प्रतिभागियों की संख्या | XXIV |
| | 1.22 | जालौन जनपद की परियोजना कोच वर्ष 1987 से वर्ष 1990 तक बजट व्यय । | XXIV |
| | | **झाँसी** | |
| | 1.23 | झाँसी जनपद में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रो के प्रारम्भ होने तथा प्रतिभागियों का विवरण | XXVI |
| | 1.24 | झाँसी जनपद में कार्यक्रम प्रकार एवां केन्द्रो की संख्या | XXVII |
| | 1.25 | झाँसी जनपद में पंजीकृत प्रतिभागी एवं लाभान्वित विवरण वर्ष 1981. | XXVII |
| | 1.26 | झाँसी जनपद में वर्ष 1988-89, 1989-90 में लाभान्वित प्रतिभागियों की संख्या । | XXVIII |
| | 1.27 | झाँसी जनपद में वर्ष 1987 से वर्ष 1990 तक वजट व्यय । | XXIX |

| क्रम सं0 | तालिका सं0 | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| | | **बाँदा** | |
| | 1.28 | बाँदा जनपद में प्रौढ़ शिक्षा प्रारम्भ होने की स्थिति में केन्द्रो की संख्या एवं प्रतिभागियों की संख्या । | XXXIII |
| | 1.29 | बाँदा जनपद में विभिन्न अभिकरणों द्वारा प्रथम चक्र में संचालित प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों का विवरण । | XXXIV |
| | 1.30 | 31 मई 1980 तक बन्द हुए केन्द्रो के पंजीकृत एवं लाभान्वित प्रतिभागियों का विवरण । | XXXIV |
| | 1.31 | बाँदा में पं0 जवाहर लाल नेहरू डिग्री कालेज बाँदा तथा स्वेच्छिक संगठन नेहरू युवक केन्द्र द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम प्रगति विवरण (परियोजना टी0एम0एम0टी0ए0) | XXXV |
| | 1.32 | एन0ए0ई0पी0 द्वारा बाँदा जनपद में लाभान्वित प्रतिभागियों की संख्या (1980-81 से 1987-88तक) | XXXVI |
| | 1.33 | वर्ष 1980-81 से 1987-88 तक एन0ए0 आइ0पी0 द्वारा लाभान्वित प्रतिभागियों की संख्या । | XXXVI |

| क्रम संख्या | तालिका सं0 | विवरण | पृ0 सं0 |
| --- | --- | --- | --- |
| | 1.34 | 15-35 आयुवर्ग के बांदा जनपद के निरक्षर व्यक्तियों का विवरण | XXXVII |
| | 1.35 | बांदा जनपद में साक्षरता अभियान की कार्यकारी ोजना 1988-89 | XXXVIII |
| | 1.36 | बांदा जनपद में साक्षरता अभियान की कार्यकारी योजना वर्ष 1989-90 | XXXIX |
| | 1.37 | 15-35 आयुवर्ग के बांदा जनपद के निरक्षर व्यक्तियों को साक्षर बनाने का लक्ष्य । | XL |
| | 1.38 | बांदा जनपद में वर्ष 1987 से वर्ष 1990 तक बजट, व्यय। | XL |
| | | **ललितपुर** | |
| | 1.39 | ललितपुर जनपद में वर्ष 1988-1989 तथा 1989-90 तक लाभान्वित प्रतिभागियों की संख्या । | XLIV |
| | 1.40 | ललितपुर जनपद में योजना वर्ष 1989-90 के लिये शासन से अनुमोदित परिव्यय । | XLIV |

| क्रम संख्या | तालिका सं0 | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| | 1.41 | ललितपुर जनपद में वर्ष 1987 से वर्ष 1990 तक बजट, व्यय । | XLV |
| | | हमीरपुर | |
| | 1.42 | हमीरपुर जनपद में 1991 की जनगणना के अनुसार साक्षरता | XLVII |
| | 1.43 | हमीरपुर जनपद में 30 सितम्बर 1989 को जनपद में कार्यरत शिक्षण संस्थाओं की संख्या | XLVIII |
| | 1.44 | हमीरपुर जनपद में वर्ष 1988-89 एवं 1989-90 में लाभान्वित प्रतिभागियों की संख्या । | XLVIII |
| | 1.45 | हमीरपुर जनपद की परियोजना राठ में वर्ष 1984-85 से वर्ष 1989-90 तक बजट एवं व्यय विवरण । | XLVIX |
| परिशिष्ट 2 | | बुन्देलखण्ड प्रभाग | |
| | 2.1 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी लिंग भेद अनुसार न्यादर्श । | LI |

| क्रम0 सं0 | तालिका सं0 | विवरण। | पृ0 संख्या |
|---|---|---|---|
| | 2.2 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आयुवर्ग अनुसार न्यादर्श | LI |
| | 2.3 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी शिक्षा स्तर के अनुसार न्यादर्श । | LI |
| | 2.4 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी जाति वर्ग के अनुसार न्यादर्श । | LII |
| | 2.5 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी व्यवसाय के अनुसार न्यादर्श । | LII |
| | 2.6 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वार्षिक आय अनुसार न्यादर्श । | LII |
| | 2.7 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वैयक्तिक चेतना से लाभान्वित । | LIII-LIV |
| | 2.8 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी सामाजिक चेतना से लाभान्वित । | LV-LVI |
| | 2.9 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आर्थिक चेतना से लाभान्वित । | LVII-LVIII |
| | 2.10 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी राजनैतिक चेतना से लाभान्वित । | LIX-LX |

| क्रम सं0 | तालिक सं0 | विवरण | पृ0 संख्या |
|---|---|---|---|
| | 2.11 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी अन्य ज्ञान से लाभान्वित । | LXI-LXII |
| | | **जनपद जालौन** | |
| | 2.12 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी लिंग भेद अनुसार न्यादर्श । | LXIII |
| | 2.13 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आयु वर्ग के अनुसार न्यादर्श । | LXIII |
| | 2.14 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी शिक्षा स्तर के अनुसार न्यादर्श । | LXIII |
| | 2.15 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी जाति वर्ग के अनुसार न्यादर्श । | LXIV |
| | 2.16 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी व्यवसाय के अनुसार न्यादर्श । | LXIV |
| | 2.17 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वार्षिक आय के अनुसार न्यादर्श । | LXIV |
| | 2.18 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वैयक्तिक चेतना से लाभान्वित । | LXIV |

| क्रम सं0 | तालिका सं0 | विवरण | पृ0 सं0 |
|---|---|---|---|
| | 2.19 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी सामाजिक चेतना से लाभान्वित । | LXVI |
| | 2.20 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आर्थिक चेतना से लाभान्वित । | LXVII |
| | 2.21 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी राजनैतिक चेतना से लाभान्वित । | LXVIII |
| | 2.22 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी अन्य ज्ञान से लाभान्वित । | LXIX |
| | | **जनपद झांसी** | |
| | 2.23 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी लिंग भेद के अनुसार न्यादर्श । | LXX |
| | 2.24 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आयुवर्ग के अनुसार न्यादर्श । | LXX |
| | 2.25 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी शिक्षा स्तर के अनुसार न्यादर्श । | LXX |
| | 2.26 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी जाति वर्ग के अनुसार न्यादर्श। | LXXI |

| क्रम सं0 | तालिका सं0 | विवरण | पृ0 सं0 |
|---|---|---|---|
| | 2.27 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी व्यवसाय के अनुसार न्यादर्श । | LXXI |
| | 2.28 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वार्षिक आय के अनुसार न्यादर्श । | LXXI |
| | 2.29 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वैयक्तिक चेतना से लाभान्वित । | LXXII |
| | 2.30 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी सामाजिक चेतना से लाभान्वित । | LXXIII |
| | 2.31 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आर्थिक चेतना से लाभान्वित । | LXXIV |
| | 2.32 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी राजनैतिक चेतना से लाभान्वित । | LXXV |
| | 2.33 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी अन्य ज्ञान से लाभान्वित । | LXXVI |
| | | **जनपद बांदा** | |
| | 2.34 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी लिंग भेद के अनुसार न्यादर्श । | LXXVII |
| | 2.35 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आयुवर्ग के अनुसार न्यादर्श । | LXXVII |

| क्रम सं0 | तालिका सं0 | विवरण | पृ0 संख्या |
|---|---|---|---|
| | 2.36 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी शिक्षा स्तर के अनुसार न्यादर्श । | LXXVII |
| | 2.37 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी जाति वर्ग के अनुसार न्यादर्श । | LXXVIII |
| | 2.38 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी व्यवसाय अनुसार न्यादर्श । | LXXVIII |
| | 2.39 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वार्षिक आय अनुसार न्यादर्श । | LXXVIII |
| | 2.40 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वैयक्तिक चेतना से लाभान्वित । | LXXXIX |
| | 2.41 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी सामाजिक चेतना से लाभान्वित । | LXXX |
| | 2.42 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आर्थिक चेतना से लाभान्वित । | LXXXI |
| | 2.43 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी राजनैतिक चेतना से लाभान्वित । | LXXXII |
| | 2.44 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी अन्य ज्ञान से लाभान्वित । | LXXXIII |

| क्रम संख्या | तालिका सं0 | विवरण | पृ0 संख्या |
|---|---|---|---|
| | | **जनपद ललितपुर** | |
| | 2.45 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी लिंग भेद के अनुसार न्यादर्श । | LXXXIV |
| | 2.46 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आयुवर्ग के अनुसार न्यादर्श । | LXXXIV |
| | 2.47 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी शिक्षा स्तर अनुसार न्यादर्श । | LXXXIV |
| | 2.48 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी जातिवर्ग के अनुसार न्यादर्श । | LXXXV |
| | 2.49 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी व्यवसाय के अनुसार न्यादर्श । | LXXXV |
| | 2.50 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वार्षिक आय अनुसार न्यादर्श । | LXXXV |
| | 2.51 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वैयक्तिक चेतना से लाभान्वित । | LXXXVI |
| | 2.52 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी सामाजिक चेतना से लाभान्वित । | LXXXVII |
| | 2.53 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आर्थिक चेतना से लाभान्वित । | LXXXVIII |

| क्रम सं0 | तालिका सं0 | विवरण | पृ0 सं0 |
|---|---|---|---|
| | 2.54 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी राजनैतिक चेतना से लाभान्वित । | LXXXIX |
| | 2.55 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी अन्य ज्ञान से लाभान्वित । | XC |
| | | **जनपद हमीरपुर** | |
| | 2.56 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी लिंग भेद के अनुसार न्यादर्श । | XCI |
| | 2.57 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आयुवर्ग के अनुसार न्यादर्श । | XCI |
| | 2.58 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी शिक्षा के अनुसार न्यादर्श । | XCI |
| | 2.59 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी जाति वर्ग के अनुसार न्यादर्श । | XCII |
| | 2.60 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी व्यवसाय के अनुसार न्यादर्श । | XCII |
| | 2.61 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वार्षिक आय के अनुसार न्यादर्श । | XCII |
| | 2.62 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वैयक्तिक चेतना से लाभान्वित । | XCIII |

| क्र0सं0 | तालिका सं0 | विवरण | पृ0 सं0 |
|---|---|---|---|
| | 2.63 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी सामाजिक चेतना से लाभान्वित । | XCIV |
| | 2.64 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आर्थिक चेतना से लाभान्वित । | XCV |
| | 2.65 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी राजनैतिक चेतना से लाभान्वित । | XCVI |
| | 2.66 | प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी अन्य ज्ञान से लाभान्वित | XCVII |
| | 2.67 | अनुदेशक अनुसूची अनुसार विश्लेषण । | XCVIII |
| | 2.68 | ग्राम प्रधान अनुसूची अनुसार विश्लेषण | XCIX-C |
| परिशिष्ट-3 | | | |
| | 3.1 | प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन उत्तर पत्र । | |
| | 3.2 | प्रौढ़ शिक्षा से सम्बन्धित प्रतिभागियों का न्यादर्श । विवरण जनपद अनुसार । | -CXXII |

## प्रथम अध्याय

1. प्रस्तावना :

किसी देश की प्रगति इस बात पर निर्भर होती है कि उस देश की जनता किस प्रकार की हैं। भौतिक व प्राकृतिक संसाधन चाहे कितने ही प्रचुर मात्रा में क्यों न हों देश आगे तभी प्रगति कर सकता है जबकि उन्हें विकसित और समुन्नत करने के लिये दक्ष और जागरूक नागरिक उपलब्ध हों। दक्ष और चैतन्य लोग तो साधनों के अभाव में भी अपनी साधना सृजन शीलता एवं अध्यवसाय से देश को सम्पन्न बना देते हैं। इसका ज्वलन्त उदाहरण हमारा पड़ोसी देश जापान है, जिसमें कि यर्थष्ट प्राकृतिक साधनों का अभाव ही है परन्तु वहां के जिम्मेदार जागरूक और सुशिक्षित नागरिकों ने जापान की गाथा को एशिया में ही नहीं वरन् सारे विश्व में एक सफल कहानी के रूप में बदल दिया दूसरी ओर अमेरिका है। आधुनिक अमेरिका मानव के अदम्य साहस ओर उत्सर्ग का जीवन्त उदाहरण है। हमारे देश में भी प्राकृतिक एवं भौतिक संसाधनों की कमी नहीं है परन्तु हम विश्व में पिछड़े हुये देशों अर्थात तीसरी दुनिया के अन्तर्गत आते हैं। हमारे नागरिकों में उस क्षेत्र में दक्षता और निष्ठा का विकास नहीं हो पाया है जो देश को आगे बढ़ाती हैं। हमारे देश के दो तिहाई अर्थात 50 करोड़ लोग निरक्षर हैं जिनमें 22 करोड़ पुरूष और 28 करोड़ महिलायें है। महिलाओं के निरक्षर होने से पूरे परिवार की प्रगति में अवरोध आता है। कहावत है कि यदि आप एक पुरूष को साक्षर बनाते हैं तो एक व्यक्ति को साक्षर बनाते हैं परन्तु यदि एक महिला को शिक्षित बनाते हैं तो एक परिवार को शिक्षित बनाने में योगदान करते हैं। अनुसूचित जाति, जनजाति की साक्षरता भी अत्यन्त निम्न कोटि की है। महिलाओं की साक्षरता, अनुसुचित जाति, अनुसूचित जनजाति में तो और भी सोचनीय है। निरक्षरता की इस स्थिति को बढ़ती हुई जनसंख्या ने और भी विषम बना दिया है। यदि समय से जन संख्या और निरक्षरता पर अंकुश न लगाया गया तो 21 वीं शताब्दी में हमारे बीच लगभग 52 करोड़ निरक्षर व्यक्ति होंगें ।

अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता आन्दोलन की वर्तमान प्रवृत्तियों को

2.

ध्यान में रखते हुए विगत वर्षों में, भारत में जन साक्षरता कार्यक्रम , साक्षरता से खिसक कर व्यावहारिक साक्षरता, अनौपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत प्रौढ़ शिक्षा में निहित हो गया है।

वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक विकास में शिक्षा एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसी कारण व्यक्तियों के लिये समाज में शिक्षा का आयोजन आदि काल से किसी न किसी रूप में होता रहा है। शिक्षा एक व्यापक शब्द है और इसकी विवेचना, शिक्षा शास्त्रियों, शिक्षा विशेषज्ञों ने, समय, दशा एवं आवश्यकता के अनुसार की है। शिक्षा के उद्देश्यों में भी समय, दशा और आवश्यकता अनुसार परिवर्तन होते आये हैं। वास्तव में शिक्षा का व्यापक अर्थ है जो व्यक्ति के जन्म से प्रारम्भ होती है और उसके अन्त तक चलती रहती है चाहे उसका रूप जो भी हो। भारत में विदेशी शासन लगभग 300 वर्षों तक चला । उनके शासन काल में शिक्षा का उद्देश्य सीमित कर दिया गया था। विदेशी शिक्षा पद्धति ने भारतीय समाज़ को दो वर्गों में विभक्त कर दिया प्रथम निरक्षर द्वितीय साक्षर । फलस्वरूप इन दोनों वर्गों के आचार-विचारों में, दैनिक क्रियाओं में, संसाधनों के प्रयोग में, अन्तर आ गया और अन्तर निरन्तर बढ़ता गया । इस अन्तर के उत्तरोत्तर बढ़ने से विकास की गति में शिथिलता आने लगी। विदेशी सरकार इसके प्रति उदासीन तो थी, किन्तु अनभिज्ञ नहीं थी।

इधर भारतीय देश भक्तों ने विदेशों में जाकर वहां की संस्कृति, सभ्यता, सम्प्रभुता एवं सम्पन्नता का अवलोकन किया तो अपनी निम्न स्थिति से क्षुब्ध हुए और दृढ़ संकल्प किया कि वह भारत में रहकर उसे स्वतन्त्र कराने संबंधी, सभी क्षेत्रों में कार्य करेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी रुचि प्रदर्शित की गई। फलस्वरूप अंग्रेजों के कार्यकाल में ही प्रौढ़ शिक्षा का शुभारम्भ हुआ । ब्रम्ह समाज के नेताओं ने, रवीन्द्र नाथ टैगोर एवं महात्मा गांधी ने इस क्षेत्र में कार्य किया । इसी मध्य यूनेस्को का साक्षरता कार्यक्रम चलाया गया । इस अन्तर्राष्ट्रीय संगठन ने शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक योजनायें बनाई, उनमें से प्रौढ़ शिक्षा पर, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर, कार्य प्रारम्भ हुआ । इस संगठन ने प्रौढ़

शिक्षा के विकास में रूचि इसलिये ली क्योंकि विश्व में जातिवाद, वर्गवाद, क्षेत्रवाद, निर्धनता, बेरोजगारी, बीमारी तथा असमानता विद्यमान है जिसके कारण एक विश्व समाज के विकास का मार्ग अवरूद्ध है, जब तक शिक्षा-विकास का मार्ग प्रशस्त नहीं होगा, विकास सम्भव नहीं है। प्रौढ़ शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो विश्व बन्धुत्व के उद्देश्य को पूरा करने में सहायक है। प्रौढ़ शिक्षा के अन्तर्गत 15 वर्ष 35 वर्ष के निरक्षर व्यक्तियों को अनौपचारिक शिक्षा प्रदान करने का लक्ष्य है। शिक्षा के तीन आयाम :

1. चेतना जागृति
2. कार्यात्मकता एवं
3. साक्षरता

है, जो गांव के युवकों प्रौढ़ों पर आधारित है। तीनों आयामों को गति प्रदान करने की दृष्टि से विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में भी अनौपचारिक शिक्षा की व्यवस्था की गई है।

प्रौढ़ शिक्षा बड़ी व्यापक है। वह प्रौढ़ों को सिर्फ अक्षर ज्ञान अथवा अंक ज्ञान देने तक ही सीमित नहीं है अपितु उन्हें और अच्छे कुशल कारीगर अथवा व्यवसायी बनाने, जागरूक नागरिक बनाने, तथा अंततोगत्वा एक सफल आदमी बनाने का भी उपक्रम है। इस प्रकार प्रौढ़ शिक्षा **साक्षरता, व्यावसायिक कौशल और चेतना जागृति** का संगम है जो प्रौढ़ों के जीवन को मंगलमय बनाता है। निरक्षरता के कारण व्यक्ति को और राष्ट्र को बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। यद्यपि वह इस निरन्तर व्याधि का अभ्यस्त हो जाता है और उससे होने वाली हानि के प्रति जड़ हो जाता है। आधुनिक जीवन की परिस्थितियां अनपढ़ व्यक्ति को निकम्मा ठहरा कर उसे हीन जीवन व्यतीत करने के लिये बाध्य कर देती हैं। उसके लिये उचित आमदनी की कोई संभावना नहीं रहती। प्रजातंत्रिक सरकार और वाणिज्य बाजार जैसे परिष्कृत सामाजिक प्रक्रियाओं से वह अलग-थलग पड़ जाता है। निरक्षरता आर्थिक और सामाजिक प्रगति को अवरूद्ध कर देती है तथा आर्थिक उत्पादिकता, जनसंख्या, नियंत्रण, राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा तथा स्वास्थ्य व सफाई के सुधार को दुष्प्रभावित करती है। योजना आयोग

के सदस्य प्रो० वी० के० आर० वी० राव के शब्दों में, "प्रौढ़ शिक्षा और प्रौढ़ साक्षरता के बिना न तो उस विस्तार और गति में आर्थिक और सामाजिक विकास संभव है जिसकी हमें आवश्यकता है और न ही हमारे आर्थिक और सामाजिक विकास को वह तत्व, गुणात्मकता अथवा शक्ति मिल सकती है जो मूल्य और हितकारिता की दृष्टि से उसे सार्थक बनाये । इसीलिये आर्थिक व सामाजिक विकास के किसी भी कार्यक्रम में प्रौढ़ शिक्षा और प्रौढ़ साक्षरता को प्रथम स्थान मिलना चाहिये।" वास्तव में, प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास है। इसके अनतर्गत वैयक्तिक सामाजिक आर्थिक व सांस्कृतिक विकास आते हैं। टायनवी ने ठीक ही कहा था कि एक सभ्यता तभी तक जीवित रह सकती है जबतक कि वह उस समय की चुनौतियों का समुचित प्रत्युत्तर दें; क्योंकि यह कहा जाता है कि व्यक्ति को या तो सीखना चाहिये या मर जाना चाहिये। सीखने के द्वारा वह सम्पूर्ण जीवन में (अ) अधिकतम वैयक्तिक विकास कर सकता है (ब) किस प्रकार से अपने अधिकतम लाभ के लिये प्रौद्योगिकी व विज्ञान की प्रक्रियाओं व उत्पादन पर नियंत्रण किया जाये यह सीख सकता है, (स) मानव- संबंधों के सभी क्षेत्रों में लोकतंत्रीय ढंग से रहने की अपनी योग्यता को पूर्ण कर सकता है ।

**"आत्मनम् विद्धि"** अपने को पहचानों, अस्तित्ववाद का यह उद्घोष, प्रौढ़ शिक्षा का प्रमुख संदेश है। अपनी दुर्बलतायें, संभावनायें, आकांक्षायें, परिवेश, सभी कुछ, जिससे आदमी अन्दर और बाहर घिरा है, जानने की, पहचानने की जरूरत है। कर्तव्य और अकर्तव्य के निरूपण का विवेक एक आवश्यकता है। आधुनिक प्रौढ़ की असहाय किंकर्तव्य-विमूढ़ता में गीता हमारा मार्गदर्शन करती है ।

**कर्मणोह्यपि बोधव्यं व विकर्मण: ।**
**अकर्मणश्च बोधव्यं गहना कर्मणोगति: ।।**

कर्म का स्वरूप जानना चाहिए, अकर्म का स्वरूप भी जानना चाहिए तथा निषिद्ध कर्म का स्वरूप भी जानना चाहिए, क्योंकि कर्म की गति गहन है।

प्रौढ़ शिक्षा में चेतना और कर्म का पक्ष, हमारा ध्यान, इसी ओर दिलाता है। लगता है व्यक्ति और समाज के उक्त दोनों पक्ष जर्जर हो गये है। परिणाम हमारे आपके सामने हैं। दूर दूर तक नजर डालें तो भारत आज अभावों से भरा है, रोटी, कपड़े, मकान का तथा भौतिक सामग्रियों का अभाव है। अभाव का प्रभाव यही नहीं समाप्त होता । इन अभावों से घिरा आकुल व्याकुल सामान्य प्रौढ़ अज्ञानतावश जनसंख्या बाहुल्य में संतोष कर लेता है।

वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 84 करोड़ 40 लाख है। इससे पता चलता है कि लगभग 50 करोड़ (47.89%) लोग भारत में निरक्षर है, गरीबी, जनसंख्या और निरक्षरता तीनों में अनयोन्याश्रित संबंध है, एक के बढ़ने से दूसरे को बल मिलता है। इस दुष्ट चक्र को तोड़ना आज की सबसे बड़ी समस्या है। तीनों बिन्दुओं में से किसी एक पद पर आघात कर चक्र को तोड़कर अन्य समस्याओं का समाधान संभव हो सकता है। प्रौढ़ शिक्षा इन तीनों को अपने अंचल में समेट कर, एक ऐसे जन आन्दोलन का उद्‌देश्य लेकर संकल्पित की गयी है जिससे वह अपनी समस्याओं, अपनी स्थिति का आकलन करके स्वयमेव उनका समाधान ढूंढ़ सके।

प्रौढ़ शिक्षा का प्रथम कर्तव्य व्यक्तियों में परिवर्तन के लिए इच्छा जगाना है उनमें यह चेतना ला देना है; कि परिवर्तन सम्भव है। गरीबी, बीमारी, दमन या शोषण में रहने वाले आदमी इस विचार को पहचानने में सक्षम हों कि वे जो जीवन जी रहे हैं वह दु:खमय है और इसे वे अपने काम से बदल सकते हैं।

इस प्रकार के कार्य को प्राय: प्रौढ़ शिक्षा नहीं कहा जाता है और इसे प्रौढ़ शिक्षा संगठनों या विभागों का दायित्व भी नहीं माना जाता है। बच्चों को चलना, बोलना, सिखाना, सामान्यतया शिक्षा नहीं माना जाता है। यह तभी सीखना माना जाता है जब बच्चा शिशुत्व की उम्र से बाहर

पैर बढ़ाने पर अपने प्राथमिक कृतित्व नहीं सीखता है तब विशेष स्कूलों में संगठित शिक्षा उसके शिक्षण का कार्य करती है, जैसे गूंगों और अन्य अपंगों के लिए भी ऐसा होता है। इसी प्रकार प्रौढ़ शिक्षा की संस्थाओं को चेतना बढ़ाने का बुनियादी काम करना ही होगा । उन्हें परिस्थितियों के आधार पर इस प्रकार का कार्य उठाना होगा। तीसरी दुनिया में यह काम किसी के द्वारा या कुछ संगठन और लोगों की कार्य कुशलता पर निर्भर होगा कि यह काम कौन करे; सामुदायिक विकास कार्यकर्ता, राजनैतिक शिक्षा अधिकारी या प्रौढ़ शिक्षक। महत्त्वपूर्ण यह है कि इसे किया जाना है और शैक्षणिक प्रवृत्तियों को आवश्यक आधार मानना चाहिए ।

यह बात प्रौढ़ शिक्षा की दूसरी सीढ़ी के लिए भी सच है। लोगों की यह सहायता करना कि वे क्या परिवर्तन चाहते हैं और इसे कैसे निर्मित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए यह काफी नहीं है कि गांव के लोग इस बात को जाने कि मलेरिया दूर करने के लिए कुछ किया जा सकता है, उन्हें यह भी जानना चाहिए कि यह ऐसी बुराई नहीं है जिसे उन्हें सहन करना है। उन्हें सीखना है कि मलेरिया का इलाज दबाइयों से किया जा सकता है, मच्छरों को नियंन्त्रित कर इससे बचा जा सकता है और मलेरिया का सामना उपचारात्मक या रक्षात्मक उपायों को मिलाकर किया जा सकता है। पर इस सब विचार का अनुवर्तन जरूरी है। इसी तरह हम शिक्षा प्रवृत्तियों की उन सब सारणियों से गुजरते हैं जिनमें सिखाने की प्रक्रियाएं सम्मिलित है - यही चेतना और ज्ञान का विस्तार है। यदि विकास को मानव और पर्यावरण के जीवन को आगे बढ़ाने वाला होना है तो इन सभी बातों का समन्वय करना होगा ।

देश की प्रगति में सहयोग देने के लिये महिलाओं का साक्षर होना अति आवश्यक है। पढ़ी लिखी महिला ही जीवन के विभिन्न पहलुओं में उत्थान के लिए अपनाये गए प्रोग्रामों से होने वाले फायदे एवं नुकसानों के बारे में जान सकती हैं। महिलाएं भारत की कुल आबादीका 48.4% है अतः उनका साक्षर होना अति आवश्यक है। स्वामी विवेकानन्द ने औरतों के बारे में कहा

है कि जिस प्रकार से एक पक्षी एक पंख से नहीं उड़ सकता उसी प्रकार से एक देश महिलाओं से सहयोग के बिना आगे नहीं बढ़ सकता। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचार से यदि हम एक लड़के को शिक्षित करते हैं तो हम एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, पर जब लड़की को शिक्षित करते हैं तो हम पूरे परिवार को साक्षर बनाते हैं। महिलाओं की शिक्षा के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए, भारत सरकार ने, बड़े पैमाने पर **"प्रौढ़ शिक्षा प्रोग्राम"** अनपढ़पन दूर करने के साथ-साथ, निम्नलिखित उद्देश्य पूर्ति के लिये, प्रारम्भ किया। इस शिक्षा के मुख्य तत्त्व है:

1. प्रौढ़ों को (15-35) साक्षर बनाना, 2. प्रौढ़ों में कार्यात्मकता का विकास करना 3. प्रौढ़ों में सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक उत्थान के प्रति जागरूकता पैदा करना ।

**प्रौढ़ों को साक्षर बनाना :**

इस पहलू के अन्तर्गत महिलाओं को थोड़ा बहुत अक्षर ज्ञान दिया जाता है ताकि जब बस, रिक्शा इत्यादि में सफर करे या बाजार से खरीदारी करे तो हिसाब-किताब कर सकें। इसमें महिलाओं को इतना कुछ लिखना सिखाया जाता है ताकि जरूरत पड़ने पर वह लिख सकें। वह अपने नजदीकी रिश्तेदार को ऐसी जानकारी पत्र द्वारा दे सके जो वह किसी को बताना नहीं चाहती हो। थोड़ा बहुत पढ़कर भी वह जान जाऐगी कि सरकार ने उन्हें क्या अधिकार दिये है पर उनकी अज्ञानता के कारण दूसरे उनकी सुविधाओं से लाभ उठा रहे हैं और वे स्वयं वंचित रह जाती हैं। इन केन्द्रों में पढ़-लिख कर वे अपने अधिकार स्वयं लेने में सक्षम होकर किसी की मदद की जरूरत नहीं समझती।

**प्रौढ़ महिलाओं में कार्यात्मक साक्षरता प्रदान करना :**

कार्यात्मक साक्षरता से अभिप्राय है ऐसी साक्षरता जो दैनिक जीवन में होने वाले विभिन्न कार्यों से सम्बन्ध रखती है। यहां पर दैनिक कार्यों को करने का उचित तरीका बताया जाता है ताकि वह कार्य महिलाएं अच्छी प्रकार कर सकें। महिलाओं के कार्य, जैसे बाजार से सामान लाना, खाना बनाना, गृह प्रबन्ध, बाल विकास इत्यादि को उचित ढंग से करना, उदाहरणतया खाना

बनाते समय पौष्टिक तत्वों का बचाव, फलों एवं सब्जियों का संरक्षण, खरीदारी करते समय ध्यान में रखने वाली बातें, परिवार में उपलब्ध साधनों का उचित प्रयोग बच्चों को किस उम्र में क्या खिलाएं एवं किस समय कौन सा टीका लगवाना चाहिए जिससे उनका उचित विकास हो और वे एक सुदृढ़ देश का निर्माण कर सकें ।

**प्रौढ़ों में सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक उत्थान के प्रति जागरूकता पैदा करना**

इसके अन्तर्गत प्रौढ़ शिक्षा के योगदान को दो भागों में बांटा गया है – व्यक्तिगत और सामाजिक ।

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में उन महिलाओं को शिक्षा का सुअवसर मिलता है जिन्हें प्रारम्भिक वर्षों में शिक्षा इसलिए नहीं दी गई कि उनकी मां और दादी नहीं पढ़ी थीं, और उनके परिवार जनों ने उनको आदर्श मानकर उनके साथ भी ऐसा ही किया था । पढ़ने, लिखने, हिसाब के अलावा प्रौढ़ शिक्षा-प्रौढ़ों को खेती, अन्य व्यवसायों एवं लघु उद्योगों से सम्बन्धित तकनीकी ज्ञान भी प्रदान करती है और इन सभी कार्यों को करने में महिलाओं का पूरा सहयोग पुरूषों को मिलता है। नये ज्ञान से वे अपनी आय को बढ़ा कर नए-नए अनुसंधानों के परिणामों को दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकें और जीवन स्तर को ऊंचा उठा सकें। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में प्रौढ़ महिलाओं को छोटी-मोटी बीमारियों के घरेलू इलाज करने का ज्ञान दिया जाता है। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में प्रौढ़ों को उनके कर्तव्यों एवं अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाता है, ताकि वह अपना योगदान स्वयं के परिवार के समुदाय को तथा देश को अदा कर सकें । यहां महिलाओं को यह ज्ञान दिया जाता है कि उनके अपने परिवार, पड़ोसी एवं समुदाय के प्रति क्या कर्तव्य एवं जिम्मेदारियां है। इसका तात्पर्य यह है कि प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र व्यक्तिगत जागरूकता के अलावा सामाजिक जागरूकता भी जागृत करते हैं। खेती बाड़ी में एवं घर में नये-नये उपकरणों के प्रयोग होने से महिलाओं के पास काफी समय की बचत हो गई है। वे अपने इस बचे हुए समय में घरेलू उपार्जन के अन्य साधनों को अपनाकर अपनी आय बढ़ा सकती है एवं अन्य किन्हीं कार्यों में परिवार की जरूरत के अनुसार लगा सकती है।

## 2. प्रौढ़ शिक्षा की आवश्यकता और महत्व

**"सा विद्या या विमुक्तये"**- शिक्षा अज्ञान और दमन से, मुक्ति दिलाती है। यह मुक्ति हमें, पर्यावरण में गरीबी, शोषण तथा अन्य समस्याओं से प्राप्त करनी है। इसको हम इस प्रकार कह सकते है। साक्षरता (माध्यम) प्रौढ़ शिक्षा (साधन) से मुक्ति या स्वतन्त्रता (साध्य ) का लक्ष्य है।

(माध्यम) 2 साक्षरता

1 मानव

प्रौढ़ शिक्षा (साधन) 3 4 (साध्य) मुक्ति/स्वतन्त्रता

शिक्षा शास्त्री विद्वान और चिंतक इस तथ्य से पूर्णतया अवगत है कि शिक्षा द्वारा मानवीय विचारों एवं व्यवहारों का परिष्कार किया जा सकता है। मानव का विकास शिक्षा के ही द्वारा सम्भव हुआ है और आगे भी सम्भव है। विद्या मनुष्य का प्रच्छन्न भूषण है। विद्या भोगकारी यशकरी और सुखकरी है। **"विद्या गुरूणाम् गुरू"** विद्या गुरूओं की गुरू है।

शिक्षा वह है जो मनुष्य को अपने चतुर्दिक परिवेश से परिचित कराये अन्तर्तम की प्रवृत्तियों को परिमार्जित कर उसे बल प्रदान करे, उसकी सुप्त शक्तियों को जाग्रतावस्था में पहुचायें और उसे जीवन संग्राम के लिये प्रस्तुत करे।

राष्ट्र और शिक्षा का गहन सम्बन्ध है। जिस राष्ट्र की शिक्षा जितनी सशक्त होगी वह राष्ट्र उतना ही समृद्ध एवं शक्तिशाली होगा। इस तथ्य को ध्यान में रखकर महान आदर्शों का देश भारत शिक्षा के प्रति उदासीनता नहीं दिखा सकता। हमारी शिक्षा अति प्राचीन काल से ही मूल्य एवं अध्यात्म प्रधान रही है। मानवीय मूल्य मूल रूप से पांच है जो शास्वत है। ये है- धर्म, सत्य, शान्ति, प्रेम, अहिंसा । अध्यात्मिक शिक्षा भारत की प्राचीन परम्परा है शिक्षा के माध्यम से ही संस्कारों का निर्माण होता है तथा संस्कारित

मनुष्य ही मानवतावादी हो सकता है।

**शिक्षा के तन्त्र :**

शिक्षा सीखने की एक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया को संचालित करने के लिये तीन तंत्र :- 1. सहज शिक्षा 2. औपचारिक 3. अनौपचारिक शिक्षा है।

1. **सहज शिक्षा :**

इस तन्त्र के अन्तर्गत सीखने के वे सम्पूर्ण कार्यक्रम आ जाते हैं जिनको पूर्व नियोजन नहीं किया जाता है। इस प्रकार की शिक्षा के कार्यक्रम से कोई भी व्यक्ति, कहीं भी किसी भी रूप में, किसी भी समय राह चलते हुए परिवार व समाज में बहुत सी शिक्षा किसी नियोजन के बिना सहज ही ग्रहण करता है।

2. **औपचारिक शिक्षा :**

इस तंत्र के अन्तर्गत सीखने के वे सब कार्यक्रम आते हैं जिनका कोई पाठ्यक्रम किसी संस्था या विभाग द्वारा नियोजित किया जाता है। विद्यालयों में प्रत्येक वय वर्ग (6-11, 11-14, 15-22 तथा 22 वर्ष से अधिक) के लिये कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं। इस निश्चित पाठ्यक्रम केन्द्रीय संस्था अथवा व्यक्ति द्वारा समय सारणी का निर्माण द्वारा किया जाता है।

3. **अनौपचारिक शिक्षा :**

इस तन्त्र के अन्तर्गत शिक्षा के वे सब कार्यक्रम आते है जिस में पाठ्यक्रम स्थान समय आदि का नियोजन विकेन्द्रित रूप से लक्ष्य निर्धारण समूह द्वारा अपने पर्यावरण एवं आवश्यकता को ध्यान में रखकर किया जाता है। इसके कार्यक्रम सीखने वालों की सुविधानुसार विद्यालयों तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर आयोजित किये जाते हैं। इसकी समय-सारिणी सीखने वालों की आवश्यकता के अनुरूप बनाई जाती है। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम अनौपचारिक शिक्षा तन्त्र के

अन्तर्गत आता है। और इस कार्यक्रम की गतविधियां अनौपचारिक तन्त्र की अवधारणा के अन्तर्गत विकेन्द्रित रूप से नियोजित होती हैं ।

**"समाज शिक्षा को एक प्रकार के अध्ययन के पाठ्यक्रम के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जिसका उद्देश्य व्यक्तियों को नागरिकता की चेतना का निर्माण करना एवं सामाजिक सुदृढ़ता का विकास करना है"।**

**प्रौढ़ शिक्षा :**

यह शिक्षा सर्वकालिक है। और हर समय प्रत्येक दशा में दी जाती रही है। आगे चलकर इसके स्वरूप में परिवर्तन हुआ और अब प्रौढ़ शिक्षा का अर्थ 15-35 वर्षा या इस से अधिक आयु के निरक्षर व्यक्तियों को शिक्षित करने से जुड़ा है। शिक्षित करने का अर्थ केवल हस्ताक्षर करना सीखना या कुछ थोड़ा पढ़ने आने लगने से नहीं है अब इस को और व्यापक रूप में लिया जाता है। प्रारम्भ में प्रौढों को आयुवर्ग के अनुसार तीन भागों (12-18, 19-35 तथा 35 से अधिक) में काटा गया । अब इसे 15-35 में ही बाटा जाता है।

सन् 1945 तथा 1949 में प्रौढ़ शिक्षा के लिये एक समिति गठित की गई उसने प्रौढ़ शिक्षा को समाज शिक्षा कहा समाज शिक्षा से हमारा अभिप्राय - पूर्ण मानव की शिक्षा से है। श्री मोहन लाल सक्सेना समिति के अध्यक्ष थे। इस समिति ने चलचित्र पुस्तकालय , द्रश्य श्रव्य आडियो विजुवल इन्स्टीटयूट के माध्यम से ग्रामीण वयस्कों को शिक्षित करने की योजना बनाई। नवीन विचार धारा के अन्तर्गत भारतीय नागरिकों को समाज का अंग मानकर समाज , शिक्षा कहा गया । इसका अर्थ है नागरिकों का बहुमुखी विकास होना। बहुमुखी विकास के आठ क्षेत्र बताये गये।

1. आर्थिक 2. सामाजिक 3. राजनैतिक 4. सांस्कृतिक 5. औद्योगिक 6. बौद्धिक 7. नैतिकता का विकास 8. स्वास्थ्य शिक्षा 9. वैक्तिक विकास चेतना आना ।

इन क्षेत्रों में सहभागिता का विकास करना समाज शिक्षा है।

आर्थिक के अन्तर्गत सघन कृषि विकास कार्यक्रम, लघु उद्योग कार्यक्रम के विषय में जानना रूचि लेना एवं प्रेणना लेना आता है। **सांस्कृतिक** विकास के अन्तर्गत, अवकाश का सदउपयोग, मनोरंजन, सामुदायिक केन्द्रों में गोष्ठी करके अपने गांव समाज की उन्नति के विषय में कार्य करना आता है। सामाजिक विकास में सामुदायिक विकास कार्यक्रम वाचनालय, दहेज प्रथा उन्मूलन सती प्रथा के अवगुणों को दूर करने की चेतना, युवक केन्द्रों की स्थापना, महिला सुधार समिति का गठन तथा कार्यक्रम सम्मिलित किये जाते हैं। **राजनैतिक** चेतना में मताधिकार, वयस्कों को स्वतन्त्र रूप से मत डालने के अधिकार के प्रति चेतना, नागरिकता की चेतना जाग्रति होना कर्तव्यों तथा अधिकारों को समझना सही ज्ञान होना (जागरूकता आना) है। **औद्योगिक** विकास के अन्तर्गत व्यावसायिक जगत के प्रति ज्ञान, उन्नत करने के ढंग का ज्ञान, आदि सम्मिलित किया जाता है। **बौद्धिक** विकास के अन्तर्गत साक्षरता, लिखाना पढ़ना आना है। **नैतिकता** के विकास के अन्तर्गत सही कार्य करना, अनैतिक कार्यों से दूर रहने के महत्त्व को समझना आदि सम्मिलित किये जा सकते हैं **स्वास्थ्य** शिक्षा में शारीरिक विकास, मानसिक विकास, सही कहना, करना, अच्छा सोचना करना कहना आदि बातें सम्मिलित की जाती हैं। **वैयक्तिक** विकास में अपनी शिक्षा के प्रति जागरूकता भले बुरे कार्यों में स्वयं निर्णय लेना आदि सम्मिलित किये जा सकते हैं।

यहां विकास का अर्थ चेतना एवं जागरूकता के रूप में लेना उचित होगा ।

## 3. शिक्षा की प्रासंगिकता

आज के समय में शिक्षा के महत्त्व को कतई नकारा नहीं जा सकता और हमें यह जान लेना चाहिए कि हमारी अच्छाई के लिये सही शिक्षा पद्धति से ही गतिशील परिवर्तन सम्भव है। शिक्षा के माध्यम से किसी क्षेत्र विशेष में महारत हासिल कर लेना ही पर्याप्त नहीं है अपितु शिक्षार्थी के दिलोदिमाग में नैतिकता की भावना का समावेश भी आवश्यक है जो सम्भवतः इसका अधिक महत्वपूर्ण पहलू है। इस प्रकार की शिक्षा-पद्धति हेतु निष्ठावान शिक्षकों व शिक्षण-संस्थाओं की आवश्यकता है। शिक्षकों को शिक्षा के प्रति पूर्ण समर्पित किन्तु निस्पृह होना चाहिए। एसी शिक्षण संस्थाओं की आवश्यकता है जिनका नियम व उद्देश्य केवल धनार्जन तक सीमित न हो। सर्वोपरि आवश्यकता इस बात की है की अभिभावक गण अपने बच्चों के प्रति अपने दायित्व को समझें। थोड़े से ध्यान, थोड़ी सी परवाह और थोड़ी सी चिन्ता भर करने से शिक्षा से जुड़े व्यक्तियों द्वारा अपने चारों ओर शिक्षा के भले प्रभाव देखने का सुअवसर मिल सकेगा । आज शिक्षा हमारे समाज का एक आवश्यक एवं अभिन्न भाग बन चुकी है। सवाल यह नहीं कि शिक्षा राष्ट्र की प्रगति हेतु आवश्यक है बल्कि जोर इस बार पर दिया जाना चाहिये कि वह अपने समग्र रूपों में भी पूर्णनिष्ठा का आवरण धारण किये रहें। इस प्रकार की शिक्षा से व्यक्ति स्वयं अपना भाग्य विधाता बन जाता है और शिक्षा प्राप्ति के बाद उसके लिए कुछ भी पा लेना मुश्किल नहीं रह जाता।

प्रौढ़ शिक्षा के द्वारा उंच-नींच अमीर गरीब, शहरी ग्रामीण, शिक्षित-अशिक्षित स्त्री-पुरूष के भेदभाव को मिटाया जा सकता है। सभी व्यक्ति एक दूसरे की समस्या को अपनी समस्या समझ कर उसका हल ढूंढ़ सकते हैं। वह समझ सकते हैं कि गांव की समस्या हम सब की समस्या है।

किसी भी राष्ट्र का स्वरूप तीन तत्वों से निर्धारित होता है: भूमि, जन और संस्कृति । इसलिए राष्ट्रीयता विकसित करने के लिए इन तीनों तत्वों के प्रति जनमानस में भावात्मक लगाव और प्रगाढ़ता उत्पन्न की जानी चाहिए। शिक्षा ही वह साधन है जो भावात्मक लगाव को सुदृढ़ और गहरा

कर सकती है। भारत की विशेषता यह है कि वह विभिन्नताओं वाला देश है। इस विभिन्नता से विघटन पैदा होने की संभावनाएं वर्तमान समय में बढ़ी ही है। इसलिए शिक्षा का प्रमुख कार्य विभिन्नता के प्रति सहिष्णुता एवं सम्यक् दृष्टिकोण विकसित करना तथा **"विविधता"** में एकता बनाये रखना भी हो जाता है।

प्रौढ़ शिक्षा के अंतर्गत किसी नई बात को सीखने के लिए प्रौढ़ व्यक्ति जानबूझ कर प्रयास करता है। पूर्व केन्द्रीय शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ने प्रौढ़ शिक्षा का जनतंत्र में महत्व स्पष्ट करते हुए केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड के 15वें अधिवेशन में कहा था, **"प्रौढ़ शिक्षा को केवल व्यक्तियों को साक्षर बनाने तक ही सीमित नहीं रखा जाना चाहिए इसमें उस शिक्षा को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए जो प्रत्येक नागरिक को जनतंत्रीय सामाजिक व्यवस्था में भाग लेने के लिए तैयार करती है"।** प्रो0 हुमायूं कबीर भी प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य नागरिक चेतना का निर्माण एवं सामाजिक सुदृढ़ता का विकास मानते हैं।

भारत सरकार ने अपने पंचमुखी कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्न कार्यक्रमों की अनुशंसा की है :-

1. निरक्षर वयस्कों में साक्षरता का प्रसार ।
2. वयस्कों के लिए स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य विज्ञान की शिक्षा की व्यवस्था ।
3. वयस्कों की आर्थिक उन्नति के लिए उद्योग धन्धों की शिक्षा की व्यवस्था ।
4. वयस्कों के लिये व्यक्ति एवं समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल मनोरंजन के स्वस्थ साधनों की व्यवस्था करना तथा ।
5. वयस्कों में कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति पर्याप्त जागरूकता के साथ-साथ नागरिकता की भावना का विकास करना है।

प्रौढ़ शिक्षा निरक्षर वयस्कों की प्रथम आवश्यकता है। देश के लगभग 65 प्रतिशत प्रौढ़ निरक्षर है। इस प्रकार शिक्षा प्राप्त न करने से न केवल मानसिक विकास अवरूद्ध हो जाता है वरन् समाज के अल्पसंख्यक शिक्षितों द्वारा उनका निरन्तर शोषण भी होता है। फलतः गरीब और गरीब हो जाता है। अशिक्षित वयस्क अपने अधिकारों के उपभोग से भी वंचित रह जाता है। इसीलिए प्रौढ़ शिक्षा आवश्यक है। ताकि प्रौढ़ व्यक्ति समानता एवं स्वतंत्राता के बुनियादी अधिकारों का उपभोग कर सकें ।

जनतंत्र और निरक्षरता साथ-साथ नहीं चल सकती। शिक्षा वयस्कों को मताधिकार का प्रशिक्षण देने का सबल साधन है। प्रौढ़ शिक्षा के द्वारा यह प्रशिक्षण सहज ही दिया जा सकता है। भारतीय लोकतंत्र की दुर्बलता का बड़ा कारण सही नेतृत्व का चयन न कर पाना ही है। इस कारण शासक और शासित का सम्बन्ध केवल वोट और जीत तक ही रह जाता है जबकि लोकतंत्र की अनिवार्य शर्त है सही नेतृत्व का चुनाव और उसमें आस्था और विश्वास। यह कहना सही है कि जहां कि जनता **"मूर्ख"** होती है वहां के नेता **"धूर्त"** होते हैं। प्रौढ़ शिक्षा द्वारा प्रौढ़ों में जागरूकता पैदा कर नेतृत्व की निरंकुशता पर काबू किया जा सकता है और लोगों को मताधिकार की महत्ता को समझाया जा सकता है।

भारत के लोकतंत्र की प्रमुख बाधाएं है -- विभिन्न धर्म, जाति, राज्यों की विभिन्नता, अच्छे नेतृत्व की कमी, सांस्कृतिक विभिन्नतायें, विभिन्न भाषाएं, सेवा आयोगों में निष्पक्षता का अभाव, अनुपयुक्त शिक्षा और आर्थिक व सामाजिक विभिन्नता । इन सब बाधाओं को दूर करने के लिए राजनैतिक भावात्मक, ऐतिहासिक एवं भौगोलिक दृष्टिकोण से एकता स्थापित करना आवश्यक है। प्रौढ़ शिक्षा के प्रसार से अन्तर्जातीय एवं अंतरप्रांतीय विवाह से प्रति जनता में सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास कर लोगों में एकता पैदा की जा सकती है। प्रौढ़ शिक्षा द्वारा राष्ट्र भाषा की शिक्षा और महत्ता भी प्रसारित की जा सकती है। शिक्षा आयोग ने शिक्षा को राष्ट्रीय सुरक्षा का आधार माना है। उसके अनुसार कोई भी राष्ट्र अपनी सुरक्षा केवल पुलिस तथा सेना के हाथों में

में नहीं छोड़ सकता है। एक बड़ी सीमा तक राष्ट्रीय सुरक्षा --- राष्ट्र के नागरिकों की शिक्षा पर, उनके घटनाओं के कारणों के ज्ञान पर, उनके धीरज तथा अनुशासन की भावना पर तथा उनकी इस योग्यता पर कि वे प्रभावशाली ढंग से सुरक्षा कार्यों में भाग ले सकें, निर्भर करती है। आयोग का यह कथन आज की भारतीय परिस्थितियों के संदर्भ में अक्षरशः सही उत्तर रहा है। सैनिक शक्ति मजबूत होने के बावजूद, पर्याप्त आधुनिक उपकरण होने के बाद भी हम अपने आंतरिक कलह और अशांति को खत्म नहीं कर पाये। आतंकवाद जो मासूम बच्चों, बूढ़ों और महिलाओं को भी नहीं बख्शाता को समाप्त नहीं कर पाये ...... इन सब कार्यों के लिए मानसिक जागरूकता, भावात्मक एकता और शिक्षा आवश्यक है।

आर्थिक विकास शिक्षा के माध्यम से ही संभव हैं। आर्थिक विकास के लिये तो सारी जनसंख्या को ही जीवन के नये विचारों और कार्य के नये तरीकों की शिक्षा देना आवश्यक है। परम्परा से ग्रस्त समाज द्वारा आर्थिक विकास की दिशा में की गई यात्रा को राबर्ट हील ब्रोनर ने **"महान आरोहण"** कहा है और यह मत व्यक्त किया है कि उसकी सफलता की शर्त है बड़े पैमाने पर मानव में परिवर्तन । उसका कथन है, "और अधिक आर्थिक विस्तार के लिये अनिवार्य पूंजी साधन के अन्तर्भाग की केवल पूर्ति से ही परम्पराओं से जकड़ा कोई भी समाज आधुनिक समाज के रूप में परिवर्तित नहीं हो सकेगा । इस रूपान्तर के लिये व्यापक सामाजिक कायापलट से कम कोई भी चीज पर्याप्त नहीं होगी । आदतों में आमूल परिवर्तन, समय, धन और कार्य सम्बन्धी मूल्यों का परिवर्तन पूर्ण अनुस्थापन तथा स्वयं दैनिक जीवन के ताने बाने को मिटाना और फिर से बनाना आवश्यक होगा।" ये विचार सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मोर्चों की प्रगति पर भी समान रूप से लागू होते हैं। राजनैतिक सामाजिक और आर्थिक संगठन की आवश्यकता मानव की आजादी और सम्मान बढ़ाने के लिए है। मानव ही स्वयं को आजाद और विकसित कर सकता है। वह दूसरों के द्वारा आजाद और विकसित नहीं किया जा सकता है। मानव अपना स्वयं का निर्माता है। यह उसकी क्षमता है कि वह स्वयं निश्चयात्मक उद्देश्य से

कार्य करे, यही क्षमता उसे दूसरे जीवों से भिन्न बनाती है। उसके स्वयं के चैतन्य का विस्तार और नियंन्त्रण करने की शक्ति का स्वयं पर, पर्यावरण पर और अपने समाज आदि पर प्रसार हो, यही हम विकास द्वारा चाहते हैं, इसलिए विकास मानव के लिए, मानव द्वारा, मानव का है। यही शिक्षा के लिए भी सच है। इसका उद्देश्य अज्ञान और पराधीनता की लाचारियों और दबावों से मानव को मुक्त कराना है। प्रौढ़ शिक्षा का अर्थ मानव के स्व-विकास में सहायता करना है। इसे हर तरह से मानव की योग्यता को विशद करने के लिए योगदान करना है। प्रौढ़ शिक्षा विकास के जरिए मानव के स्वनिश्चय करने की योग्यता में सहायता करती है। इस शिक्षा का उद्देश्य मानव को स्पष्ट सोचने में मदद, उन्हें काम के सम्भव विकल्पों को जांचने की क्षमता अपने उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए उन विकल्पों को जांचने और चयन करने की तैयारी और उनके निर्णय को वास्तविकता में बदलने के प्रयत्न करना है।

विकास के व्यक्तिगत और भौतिक बिन्दुओं को अलग नहीं किया जा सकता है। मनुष्य स्वयं अपना विकास, निर्णय करने की प्रक्रिया एवं विकास की दिशा क्या हो इन विचारों का निश्चय करे लागू करने से ही, कर पाता है। इसीलिए मानव स्वयं का विकास समाज और पर्यावरण से अलग रहकर शून्य में नहीं कर सकता साथ ही वह दूसरों के द्वारा भी विकसित नहीं किया जा सकता है। मनुष्य की चेतना सोचने और कार्य करने की प्रक्रिया से विकसित होती है। उसकी क्षमता कार्य की प्रक्रिया से बढ़ती है।

काम करने का अर्थ अन्य लोगों के साथ जीवंत सहयोग है, क्योंकि अलगाव में मानव शरीर असहाय और बुद्धि से अवरूद्ध हो जाता है। मुक्ति के लिए शिक्षा इसीलिए मानव के सहयोग की शिक्षा है, क्योंकि दूसरों के सहयोग से ही मनुष्य प्राकृतिक दबावों व मनुष्य द्वारा डाले गये अन्य दबावों से अपने को मुक्त कर सकता है। इस प्रकार शिक्षा इस माने में सघन रूप से व्यक्तिगत है क्योंकि उसे वैयक्तिक अनुभव के द्वारा ही चलना पड़ता है। वह किसी भी अन्य प्रकार से अपनी चेतना को विकसित नहीं कर सकता है। साथ ही यह काम सामाजिक महत्व का भी हैं, क्योंकि जिस आदमी को शिक्षित करना है, वह आदमी समाज का है और शिक्षा उसमें जो बदलाव लाती है, उस बदलाव से उसका समाज भी

प्रभावित होगा । इसका एक दूसरा विचार-बिन्दु भी है। आदमी कुछ करना चाहता है, इसलिए सीखता है। जब एक बार वह अपनी क्षमता के विकास के लिए कदम उठाता है, तब वह बनना चाहता है एक अधिक चेतनशील और समझदार व्यक्ति। शिक्षा ने मानव को मुक्त नहीं किया है यदि वह दीवार पर सनद टांगने के लिए सीखता है और **"शिक्षित व्यक्ति"** और ज्ञान का स्वामी बन प्रतिष्ठा चाहता है पर भौतिकवादी समाज में इस प्रकार की इच्छा एक रोग जैसा कागज के टुकड़ों {सनदों} का संग्रह, जो ऐसे ज्ञान की मात्र वैध निविदा बन जाता है जिसका विकास से कुछ लेना-देना नहीं है।

इसलिए यदि प्रौढ़ शिक्षा को विकास में हाथ बंटाना है तो इसे जीवन का अंग होना चाहिए- जीवन से समन्वित और अभिन्न । इसे थोपा भी नहीं जा सकता। प्रत्येक सीखने वाला अन्त में स्वयं सेवक है। कितना ही अधिक ज्ञान उसे क्यों न दिया जाए, वह केवल अपनी इच्छा से ही सीख सकता है। प्रौढ़ शिक्षा वह नहीं है जिसका सम्बन्ध कृषि, स्वास्थ्य, साक्षरता और यान्त्रिक दक्षता से है। शिक्षा की ये विभिन्न शाखाएं उसके सम्पूर्ण जीवन से सम्बन्धित हैं जिसमें वह जी रहा है और जियेगा । **"सोयाबीन कैसे उगायें"** यह ज्ञान आदमी के लिए कम काम में आने वाला है, यदि इसे सीखने के साथ पोषाहार का ज्ञान नहीं है और सोयाबीन के विक्रय के लिए बाजार नहीं है। इसका अर्थ है कि प्रौढ़ शिक्षा आदमी और समाज में परिवर्तन लाएगी। इसका अर्थ यह भी है कि प्रौढ़ शिक्षा परिवर्तन को बढ़ावा देगी, साथ ही परिवर्तन को नियन्त्रित करने में मनुष्य की मदद करेगी ।

## 4. प्रौढ़ शिक्षा की अवधारणा :

प्रौढ़ शिक्षा की अवधारणा में समय के साथ आवश्यकतानुसार परिवर्तन होते रहे हैं। प्रौढ़ शिक्षा का साहित्यिक अर्थ है कि उन प्रौढ़ों के लिए शैक्षिक सुविधायें जिन्होने अपनी शिक्षा प्राप्त करने वाली आयु में औपचारिक शिक्षा के नियमित पाठ्यक्रम द्वारा शिक्षा न प्राप्त की हो। प्रौढ़ शिक्षा की अवधारणा को परिभाषित करने के विषय में अत्यधिक विरोधाभास हैं। प्रौढ़ शिक्षा की अवधारणा ने विगत शताब्दियों में विकास की श्रृंखला से गुजरा है। विभिन्न समय में विभिन्न व्यक्तियों द्वारा इसे विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया गया है। पश्चिमी व भारतीय विचारधाराओं को इस प्रकार देखा जा सकता है।

**पश्चिमी विचारधारा :**

जीवन समस्याओं से घिरा हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति आगे बढ़ने के लिए समस्याओं को सुलझाता रहता है। अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए व्यक्ति कुछ न कुछ शिक्षा प्राप्त करता है। इस विचार का समर्थन करते हुए ब्राइसन लिखते हैं -

प्रौढ़ शिक्षा जीवन के सामान्य व्यापार में व्यक्तियों द्वारा चलाये गये शैक्षिक उद्देश्यों के साथ एक क्रिया कलाप है। जो छोटी या बड़ी समस्याओं को सुलझाने के लिए उर्जा व समय का मात्र एक भाग उपयोग करते हैं।

प्रौढ़ शिक्षा को अभिवृत्तियों समझ व कौशल आदि का विकास करना चाहिए जिससे व्यक्ति अपनी दिन प्रतिदिन की समस्याओं को सुलझाने योग्य बन सके। इस विचार को सुदृढ़ता प्रदान करते हुए ब्रैडफोर्ड लिखते हैं -

"प्रौढ़ शिक्षा प्रौढ़ व्यक्तियों द्वारा स्वतंत्र रूप से संगठित व ऐच्छिक रूप से गंभीर प्रयास है जिसके द्वारा शैक्षिक साधनों से सूचना, अभिवृत्तियों

---

1. ब्राइसन, एल0 एल0 **एडल्ट एजूकेशन,** न्यूयार्क, अमेरिकन बुक, 1939 पृ0 18.
2. ब्रैडफोर्ड, एल0पी0, **एडल्ट एजूकेशन,** न्यूयार्क: रसेल सेज फाउन्डेशन, 1949, पृष्ठ संख्या 4

समझ, और कौशल को प्राप्त करके अपनी व्यावसायिक वैयक्तिक तथा नागरिक समस्याओं को सुलझाने में सहायता प्राप्त हो सके।"

उपरोक्त विचारों को **इनसाइक्लोपीडिया अमेरिका** (वा० 1) में भी पाया जा सकता है। उन सभी के विचार है कि शिक्षा का कोई भी प्रकार, औपचारिक या अनौपचारिक, जो कि प्रौढ़ों के ज्ञान, कौशल, अभिवृतियों, योग्यताओं का विकास करता है तथा अपनी समस्यायें सुलझाने में सहायता करता है, वही प्रौढ़ शिक्षा है।

शिक्षा केवल कुछ अवधि या विशेष आयु तक ही सीमित नहीं है। यूनेस्कों (1972) द्वारा प्रकाशित पुस्तक **"लर्निंग टूबी"** के अनुसार शिक्षा एक विस्तृत प्रक्रिया है। शिक्षा केवल कक्षा की चार दीवारियों तक ही सीमित नहीं है। बल्कि यह जीवन-पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। इसी प्रकार प्रौढ़ शिक्षा शिक्षा की उपर्युक्त अवधारणा का ही एक आयाम है।

लोवी[1] लिखते हैं कि "प्रौढ़ शिक्षा एक अनवरत जीवन पर्यन्त प्रक्रिया के रूप में शिक्षा की अवधारणा पर आधारित है, जो सीखने के लिए निर्मित विशिज संस्थाओं या व्यक्ति के जीवन के प्रारम्भिक वर्षों तक ही सीमित नहीं है। सीखने का प्रारंभी उस समय से हो ही जाता है जब कि बच्चा अपने पर्यावरण के प्रति जागरूक हो जाता है और जब तक जीवित रहता है।

उपरोक्त विचारों की समालोचना करने से ज्ञात होता है पश्चिमी विचार धारा में प्रौढ़ शिक्षा को और जीवन की समस्याओं का पर्याय माना गया है। इस आधार पर जीवन की समस्याओं से निपटने का साधन माना गया है।

---

1. लोवी, लुई, **"एडल्ट एजूकेशन एण्ड ग्रुप वर्क"** न्यूयार्क, विलियम मारर एण्ड कम्पनी, 1955 पृष्ठ संख्या 22.

भारतीय विचारधारा :

भारतीय संदर्भों में प्रौढ़ शिक्षा की अवधारणा अत्यधिक प्राचीन और विस्तृत है। उपनिषद् काल में प्रौढ़ शिक्षा कथाओं (जातक गल्प) के रूप में थी। किन्तु इसके अर्थ और प्रकार्य विभिन्न कालों में विभिन्न स्वरूपों तथा विभिन्न नामों से जानी जाती थी जैसे रात्रि शिक्षा, समाज शिक्षा कृषक कार्यात्मक साक्षरता, प्रौढ़ शिक्षा इत्यादि। गांधीजी ने कहा था । "शिक्षा से मेरा तात्पर्य है। बच्चे और व्यक्ति के शरीर मस्तिष्क और आत्मा में निहित सर्वाधिक अच्छाइयों को उजागर कर लेना"। उनका तात्पर्य है कि शिक्षा केवल बच्चों के लिये ही नहीं बल्कि प्रौढ़ों के लिये भी उनके सर्वांगीण विकास के लिये आवश्यक है।

स्वतन्त्रता से पूर्व प्रौढ़ शिक्षा को अक्षरशः शाब्दिक अर्थ में प्रौढ़ शिक्षा तक ही सीमित किया जाता रहा 1947 में भारत स्वतन्त्र हुआ उस समय केवल 16 प्रतिशत व्यक्ति साक्षर थे तथा बाकी 84 प्रतिशत जनता निरक्षर थी। अतः उस समय नेतृत्व के लिये सैय्यदन ने पंचम अखिल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा सम्मेलन में अपने उद्बोधन भाषण में कहा था कि प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तियों को पढ़ाने, कुछ लिखित प्रतीकों को समझाने तथा उनको ध्वनि में अनुदित कर सिखाना है। अपने इस संबोधन में श्री सैय्यदन केवल सैद्धान्तिक पहलू पर जोर देते प्रतीत होते हैं। सन् 1949 में प्रौढ़ शिक्षा की अवधारणा को समाज शिक्षा के रूप में विस्तारित किया गया । तत्कालीन शिक्षा मंत्री, श्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ने यूनेस्को द्वारा आयोजित ग्रामीण प्रौढ़ शिक्षा पर हुयी गोष्ठी में अपने उद्घाटन भाषण में प्रौढ़ शिक्षा का समाज शिक्षा के रूप में निरूपित किया ।

डा0 माथुर के अनुसार :

"शिक्षा का तात्पर्य है पूर्ण मानव हेतु शिक्षा। शिक्षा उसको साक्षर बनायेगी इससे प्रकार उसे विश्व का ज्ञान मिलेगा । यह उसे सिखायेगी कि किस प्रकार

---

1. सैय्यदन, के0 जी0 **"एड्रेस टू फिफ्थ आल इन्डिया एडल्ट एजूकेशन कान्फ्रेन्स"** द इन्डियन जरनल आफ एडल्ट एजूकेशन, नयी दिल्ली, वा0 9, नं0 1, जनवरी 1948
2. माथुर, एस0 एस0, **"ए सोशल एप्रोच टू इन्डियन एजूकेशन"** (चौथा सं0), आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर, 1976 पृष्ठ – 281
3. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या 282

अपने पर्यावरण से सामंजस्य स्थापित किया जाये .......... । इसके द्वारा उसे उत्पादन प्रणाली तथा कलाओं में सुधार का प्रशिक्षण मिलेगा जिससे उसका आर्थिक विकास हो सकेगा। इसका (शिक्षा) यह भी उद्देश्य है कि यह मानव को व्यक्ति व समुदाय दोनों के लिये स्वच्छता का प्रशिक्षण दे जिससे हमारा प्रजातांत्रिक जीवन और भी स्वस्थ और समृद्ध हो सके"।

प्रौढ़ शिक्षा का अर्थ केवल साक्षरता ही नहीं है। इसका यह भी अर्थ है कि व्यक्ति अपने चारों ओर से समस्याओं से अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति जागरूक हों। प्रोफेसर हुमांयू कबीर के वक्तव्यों द्वारा उपर्युक्त कथन के सामाजिक शिक्षा संबंधित परिभाषा को प्रस्तुत किया है जो इस प्रकार है।

"(समाजशिक्षा) के पाठ्यक्रम के रूप में जिसे व्यक्तियों के बीच नागरिकता की चेतना को उत्पन्न करने तथा उनमें समाजिक एकता को बढ़ाने की ओर निर्देशित किया गया है। वयस्क निरक्षरों के बीच केवल साक्षरता का परिचय नहीं बल्कि समूहों में शिक्षित मस्तिष्क को उत्पन्न करना इसका उद्देश्य है"।

एक प्रौढ़ व्यक्ति विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करता है जैसे सामाजिक, स्वास्थ्य संबंधी, आर्थिक तथा कृषि संबंधी । उसे इन सभी क्षेत्रों की जानकारी तो होनी ही चाहिए साथ ही साथ नैतिक तथा अध्यात्मिक विकास की ओर भी सचेत रहना चाहिए।

शारदा देवी के अनुसार :

"........... प्रौढ़ शिक्षा की अवधारणा प्रौढ़ साक्षरता से **"मानव निर्माण"** के रूप में उदित हुई है जिसके अनुसार न केवल शारीरिक बौद्धिक सामाजिक व आर्थिक पहलुओं पर ही नहीं वरन् नैतिक तथा अध्यात्मिक पहलुओं पर भी बल दिया गया है जिससे व्यक्ति सही अर्थों में शिक्षित तथा सभ्य बन सकें"।

---

1. देवी0 एस0 **"एडल्ट एजूकेशन प्लान्स एण्ड एक्शन स्ट्रेट जीस"** डेवलपमेन्ट आफ एजूकेशन, रीजनल कालेज आफ एजूकेशन, भुवनेश्वर 1979 पृ 27.

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तियों को राष्ट्र के लिये कार्य तथा राष्ट्रीय विकास में सहयोग देने के लिये तैयार करना भी है।

भारत के राष्ट्रपति स्व0 श्री वी0वी0 गिरी ने कहा था कि प्रौढ़ शिक्षा को विशाल समूहों में एक चेतना उत्पन्न करनी चाहिए जो उन्हें महान राष्टीय कार्यों को पूरा करने की ओर उन्मुख कर सकें।

प्रौढ़ शिक्षण को एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम से भी जोड़ा गया है। प्रौढ़ शिक्षा की नवीन अवधारणा के तीन आधार सभी भारतीय नागरिकों को साक्षर बनाना उनको प्रगतिशील दृष्टिकोण की ओर अग्रसर करना एवं नागरिकता की भावना का विकास करने के रूप में परिभाषित की गई है। इसको ग्रामीण जनता में वैयक्तिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, औद्योगिक, सांस्कृतिक, औद्योगिक, बौद्धिक (साक्षरता) नैतिकता का विकास एवं स्वास्थ्य शिक्षा के क्षेत्रों में सहभागिता के विकास के रूप में लिया जाना तर्कसंगत होगा। इस प्रकार प्रौढ़ शिक्षा की अवधारणा में आज बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया है। साक्षरता अपने छोटे दायरे से निकलकर, सामाजिक शिक्षा का व्यापक रूप ग्रहण कर चुकी है। अब इसका आयोजन व्यक्तियों को साक्षर बनाने (थोड़ा बहुत, पढ़ने लिखने) तक ही सीमित नहीं है वरन् वैयक्तिक, सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक तथा अन्य बातों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर लाभान्वित होने की जागरूकता लाना है।

प्रौढ़ शिक्षा उद्देश्य व्यक्तियों के बहुमुखी विकास को बढ़ाना है। इसके अन्तर्गत वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास शामिल है। नयी दिल्ली में चतुर्दश राष्ट्रीय गोष्ठी की प्रतिवेदन के अनुसार प्रौढ़ शिक्षा

---

1. गिरी, वी0 वी0 रूरल फंक्शनल लिटेसी प्रोग्राम सेन्ट्रल सेक्टर, मयूरभंज डिस्ट्रिक्ट एडल्ट एजूकेशन ओर्गेनाइजेशन 1980, पृ0 42.
2. प्रौढ़ शिक्षा के कार्यकर्ताओं के आधारिक प्रशिक्षण के लिये पृष्ठ भूमि पत्राक राज्य संन्दर्भ केन्द्र, साक्षरता निकेतन लखनऊ पृ0 3,4.

व्यक्तियों के जीवन के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी है, इसलिए इस कार्यक्रम को विभिन्न चरणों में गतिशील होना चाहिये। समय की निश्चित अवधि में इसे समाज की आवश्यकताओं को प्रतिबिम्बित करना चाहिए (1966 पृ0 3)

भारत के संविधान में 1961 तक प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण को स्वीकार किया गया परन्तु आज तक देश इस लक्ष्य से बहुत दूर है। अज्ञानता और निर्धनता दो बुनियादी समस्यायें हैं। अज्ञानता का प्रत्यक्ष संबंध निरक्षरता से है। तथा निरक्षरता निर्धनता को जन्म देती है। अज्ञानता व निर्धनता की बीच निश्चित संबंध है। आर्थिक राजनीतिक और सामाजिक लक्ष्यों के विकास के संदर्भ में हमें प्रौढ़ शिक्षा की वैध भूमिका को समझना है।

अतः प्रौढ़ शिक्षा इस प्राककल्पना पर आधारित है कि (क) अज्ञानता व निरक्षरता देश के सामाजिक आर्थिक प्रगति व व्यक्ति की संवृद्धि में एक बड़ी बाधा है। (ख) शिक्षा का तात्पर्य केवल स्कूली शिक्षा से ही नहीं है, (ग) सीखना कार्य करना तथा जीवन एक दूसरे से पृथक नही है (घ) औपचारिक शिक्षा की प्रक्रिया तथा वह साधन जिसके द्वारा व्यक्ति औपचारिक शिक्षा की प्रक्रिया में लगा रहता है, इसे अनुभव कराने में असफल रही है।

प्रौढ़ शिक्षा न केवल एक विकल्प है अपितु एक आवश्यकता है। मोहन्ती के विचार भारत में प्रौढ़ शिक्षा के संबंध में विचारणीय है। मोहन्ती ने इस बात का उल्लेख किया है कि सामूहिक निरक्षरता और सामूहिक निर्धनता ये दोनों महत्वपूर्ण समस्यायें हैं और दोनों ही सकारात्मक रूप से संबंधित है। कुंडु ने इन विचारों को यह कह कर कि विकास उतना ही आवश्यक है जितने कि लक्ष्य और निरक्षर और निर्धन अपनी स्वतन्त्रता साक्षरता, संवाद और क्रिया द्वारा प्राप्त कर सकते हैं, स्थायित्व दिया।

---

1. मोहन्ती, जे0 ए0 स्टडी आफ द इम्पैक्ट ऑफ डेमोक्रेसी ऑन प्राइमरी एजूकेशन इन इण्डिया विथ स्पेशल रिफरेन्स टु ओरिसा, पी0 एच0 डी0 थीसिस 1979 पृ0 267.

इसके अतिरिक्त प्रौढ़ शिक्षा की भूमिका प्रौढ़ों को सीखने तथा इच्छित कार्यों को भली प्रकार करने में सहायता प्रदान करती है। प्रौढ़ शिक्षा प्रौढ़ों को जीवन में उच्च मूल्यों को खोजने तथा उन्हें पाने की इच्छा में सहायता करती है।

देवदास के अनुसार **"शिक्षा मानव विकास के लिये आवश्यक है। प्रजातंत्र बिना शिक्षा के कार्य नहीं कर सकता । निरक्षरता का उन्मूलन राष्ट्रीय विकास का आधार है"।**

वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक विकास ने हमारे जीवन प्रतिमानों में परिवर्तन किया है और हमारे परम्परागत प्रारूपों व मूल्यों को कमजोर भी कर दिया है। इसके साथ ही हमारी जनसंख्या अपनी जटिल समस्याओं के साथ असमान है। अतः आधुनिक परिवर्तनों और विकासों की जटिलताओं को भलीभांती समझने के लिये तथा समाज में उनकी भूमिकाओं को समझने के लिये प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम एक आवश्यकता बन जाता है। हीली उचित ही कहता है "प्रौढ़ शिक्षा एक स्थायी राष्ट्रीय आवश्यकता है, नागरिकता का एक अपृथकनीय पहलू है इसलिये इसे सार्वभौमिक व जीवन पर्यन्त दोनों ही होना चाहिए भारतीय संविधान के अनुच्छेद 29 व 30 में जाति, रंग व धर्म किसी आधार पर बिना किसी भेदभाव के समस्त नागरिकों के लिये शिक्षा की व्यवस्था करता है।

<u>अवधारणा का स्पष्टीकरण :</u>

प्रस्तुत शोध कार्य सम्प्रत्ययों के सहारे गतिवान हुआ है। प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन में इसको नकारा नहीं जा सकता कि शिक्षा, चाहे वह छोटा हो या बड़ा धनवान हो या निर्धन, बालक हो या जवान अथवा प्रौढ़ सभी के लिये उपयोगी है। इस के द्वारा ही उसमें वैयक्तिक, सामाजिक, राजनैतिक,

---

1. देवदास, आर० **"विथर द एन० ए० ई० पी०"** इन्डियन जरनल आफ एडल्ट एजूकेशन, न्यू दिल्ली वा 40, नम्बर 10-11, अक्टूबर नवम्बर 1979, पृ22.

आर्थिक चेतना का विकास एक वृद्धि होनी है। किसी भी राष्ट्र के लिये शिक्षित नागरिकों का होना अत्यंन्त आवश्यक है। जिन राष्ट्रों देशों में इस दिशा पर ध्यान नहीं दिया गया, वहां वांछित प्रगति नहीं हुई। ऐसे राष्ट्र या देश तृतीय संसार के ही वर्ग में गिने जाते हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि भारत में कभी भी निरक्षर व्यक्ति गांवों में हैं गावों के विकास में उनकी सहभागिता के लिये उन्हें शिक्षित करना ही है। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम सम्पूर्ण भारत में चल रहे हैं उनके माध्यम से ग्रामीण अनपढ़ प्रौढ़ों में, वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा अन्य चेतना एवं जागरूकता लाने की आशा की जाती है। इस अवधारणा है कि प्रौढ़ शिक्षा में अपव्यय हो रहा है ग्रामीण अनपढ़ प्रौढ़ को इससे वांछित लाभ है नहीं हो रहा है। उक्त अवधारणा की परख हेतु इस शोध अध्ययन को समिति समय, साधन को ध्यान में रखकर बुन्देलखण्ड प्रभाग तक ही सीमित रखा गया है।

## 5. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम एवं उद्देश्य

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम व्यक्ति और समाज के अनवरत उत्पादन के लिए जनजागरण का कार्यक्रम है यह कार्यक्रम साक्षरता के माध्यम से देश से गरीबी तथा सामाजिक विषमताओं के उन्मूलन हेतु कृत संकल्प हैं। राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को स्वालम्बी तथा विकास की दिशा में अग्रसर होने के लिए साक्षर होना अति आवश्यक है। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम निरक्षरता के उन्मूलन से प्रारम्भ होकर प्रौढ़ में व्यावसायिक दक्षता एवं चेतना जागृति भी प्रदान करता है। इस प्रकार प्रौढ़ शिक्षा समाज के उपेक्षित जन समूह को आगे बढ़ाने का संशक्त माध्यम है।

प्रौढ़ शिक्षा के उद्देश्यों को निम्न बिन्दुओं मे वर्णित किया जा सकता है : –

1. राष्ट्रीय विकास की गति को तेज करना ।
2. गरीबी और शोषण से मुक्ति ।
3. ग्रामीण विकास ।
4. प्रौढ़ों की मनोवृत्ति बदलना ।
5. प्रौढ़ों की चेतना एवं व्यावसायिक कुशलता बढ़ाना ।
6. नारी समाज को समानता प्रदान करना और उनमें जागृति लाना ।
7. स्वावलम्बी बनाना ।
8. अन्ध विश्वास और रूढ़ियों को समूल नष्ट करना ।

भारत सरकार की 1986 की नई शिक्षा नीति द्वारा समाजवादी समाज की रचना की संकल्पना की गई हैं। सातवीं पंचवर्षीय योजना और राष्ट्रीय नयी शिक्षा नीति में साक्षरता और सामाजिक शिक्षा पर विशेष ध्यान देने सम्बन्धी नीतियां बनी जिन्हें प्रभावी ढंग से चलाने संबंधी कार्यक्रम की रूप रेखा तैयार की गई है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली के तत्वाधान में सेन्टर फार एडल्ट एजूकेशन एण्ड एक्सपेन्शन (सी०ए०ई०ई०) देश भर में चल रहे हैं। जिनमें 33 कालेज चुने गये हैं। ऐसे प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रयास है। प्रौढ़ शिक्षा के उद्देश्य और कार्यक्रमों में व्यापकता और प्रसार लाना इसका उद्देश्य है, और धीरे-धीरे प्रावैधिक होता जा रहा है ।

वर्तमान समय में प्रौढ़ शिक्षा के निम्न उद्देश्य है : –

1. ऐसे व्यक्तियों को साक्षर करना, जिनको औपचारिक शिक्षा सुलभ नहीं हो सकी है ।
2. संसाधनों का सही प्रकार से उपयोग करना, व्यक्तियों को स्थानीय साधनों के विषय में ज्ञान कराना और उनके उपयोग के महत्त्व को समझाना और उपयोग करने में मार्ग दर्शन करना ।
3. अच्छे नागरिक बनने के महत्त्व को बताते हुए, उसका अनुसरण करने के लिये प्रेरित करना ।
4. नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक करना और उनके प्रति मार्ग दर्शन करना ।
5. बाल विवाह, दहेज स्त्री पुरूष की असमानता, अस्पृश्यता जुआ आदि जैसी कुरीतियों एवं अन्ध विश्वास आदि के प्रति सावधान करना ।
6. अपव्यय, अनावश्यक रूप से मुकदमेंबाजी आदि जैसी बातों के प्रति सजग करना ।
7. लोगों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की ओर तथा वैज्ञानिक संसाधनों के उपयोग के प्रति जागरूक करना।
8. व्यक्तियों को उनकी दैनिक आवश्यकता अनुसार औपचारिक शिक्षा प्रदान करना ।
9. स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन (बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण) संबंधी शिक्षा देना ।

10. कृषि सम्बन्धी जानकारी देना तथा कृषि के विकसित उपकरणों के विषय में ज्ञान देना उनके प्रयोग के लिये संसाधनों के विषय में व्यापक रूप से ज्ञान देना ।

भारत सरकार की प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के लिये निर्धारित नीति है कि : -

1. प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत ऐसे स्वयंसेवी संगठनों को अनुदान सहायता देना जारी रखना, जिनका साम्प्रदायिक झुकाव न हो।
2. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में विद्यार्थियों से अधिक से अधिक सहयोग लेना ।
3. महिलाओं, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, मजदूरों तथा कमजोर वर्ग को प्राथमिकता देना ।
4. प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से नव साक्षर हुए लोगों को नवसाक्षर उपयोगी साधन सुलभ कराना ।

**प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के तीन प्रमुख उद्देश्य (नवीन विचार धारा)**

प्रौढ़ शिक्षा के उद्देश्यों को नयी विचारधारा से व्यापक बनाया गया है। जिसके अनुसार उद्देश्यों का विवरण निम्नांकित है : -

**अ) साक्षरता प्रसार :**

इसके अन्तर्गत चार बातें जानना ।

1. समझ समझ कर सामान्य गति से किताब पढ़ना ।
2. सरल शब्दों में लिखना
3. सौ तक गिनती जानना ।
4. साधारण जोड़ बाकी, गुणा भाग का ज्ञान।

**ब) व्यावसायिक कुशलता बढ़ाना :**

इसके अन्तर्गत तीन प्रमुख बातें आती हैं : -

1. प्रौढ़ों द्वारा किये जा रहे विभिन्न व्यवसायों, उद्योगों, कार्यों, कृषि, पशुपालन, लघुकुटीर तथा उद्योगों के कौशल को समुन्नत करने का ज्ञान देना ।
2. नये उद्योगों की स्थापना की ओर अग्रसर कराना ।
3. अपने दैनिक काम काज को आर्थिक कुशलता से कर सकने की क्षमता बढ़ाना ।

स) **चेतना जागृति :**

इसके अन्तर्गत 6 प्रमुख बातें हैं : -

1. नागरिक अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता हो जाना।
2. विभिन्न ग्राम विकास योजनाओं की जानकारी होना और उनकी प्रक्रियाओं से परिचित हो जाना ।
3. 15-35 वर्ष आयुवर्ग शिक्षित करना ।
4. मुख्यत: ग्रामीण क्षेत्र, कृषक, मजदूर, निर्बल वर्ग, अनु0 जाति, जनजाति अल्प संख्यक, को शिक्षित करना ।
5. ऐसी व्यवस्था करना कि 15-35 आयु वर्ग से कम या अधिक के लोग भी शिक्षित होने का लाभ उठा सकें।
6. गन्दी, मलिन बस्ती के लोग, स्त्री पुरूष कार्यक्रम से लाभान्वित हो सकें ।

**सामान्य उद्देश्य :**

प्रौढ़ शिक्षा के सामान्य उद्देश्य निम्नवत हैं : -

1. प्रौढ़ शिक्षार्थी में अन्तर्निहित क्षमताओं का समुचित विकास हो सके ।
2. उसमें आत्मविश्वास जागृत हो सके ।
3. वैज्ञानिक चिन्तन का विकास हो सके ।
4. सामाजिक न्याय प्राप्त करने के लिये अपने को वह तैयार कर सके ।

5. सामुदायिक भावना का विकास हो सके ।

6. राष्ट्रीय कार्यक्रमों, योजनाओं में सहभागिता का विकास हो सके ।

7. परिवार कल्याण, स्वास्थ्य सुधार, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग ले सकें, उनके प्रति जागरूकता आ सके ।

**परिसीमित उद्देश्य :**

इस शोध कार्य के निहित उद्देश्य निम्नवत हैं ।

1. बुन्देलखण्ड के विकास में प्रौढ़ शिक्षा का आकलन (मूल्यांकन)
2. प्रौढ़ शिक्षा से सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक राजनैतिक क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों को जांचना ।
3. प्रौढ़ शिक्षा पर होने वाले अपव्यय के कारण एवं उनके निवारण की विधा प्रस्तुत करना ।
4. प्रौढ़ शिक्षा के विस्तार एवं कार्य प्रणाली पर विचार प्रस्तुत करना ।
5. सरकार द्वारा प्रस्तावित लक्ष्य को समयबद्ध कार्यक्रम द्वारा समयावधि में पूर्ण करने सम्बन्धी सुझाव देना ।

## 6. अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता वर्ष :

निरक्षरता उन्मूलन के लिये यूनेस्को ने अपने सामान्य सभा के चौदहवें अधिवेशन के दौरान 1966 में एक मत से आवहान किया था कि विश्व के समस्त राष्ट्र पूर्ण तैयारी से निरक्षरता उन्मूलन के लिये लग जायें। इस सन्दर्भ में प्रत्येक 8 सितम्बर को विश्व में अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस बनाया जाना उद्देश्य यह है कि विश्व से निरक्षरता समाप्त की जाये। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि निरक्षरता की समस्या इतनी व्यापक है कि इस के लिये विश्व स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं। वर्ष 1990 को संयुक्त राष्ट्र संघ ने अंतराष्ट्रीय साक्षरता वर्ष के रूप में मनाया था । इसमें कई लक्ष्य निर्धारित किये गये थे। सब से महत्वपूर्ण लक्ष्य इस शताब्दी के अंत तक विश्व से निरक्षरता का उन्मूलन करना है। जनता में साक्षरता के लिये चेतना जागृति करने, शिक्षा तंत्र को मजबूत बनाने और इसके मार्ग में आ रही समस्याओं का समाधान करने के लिये विश्व व्यापी अभियान चलाया गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वाधान में विश्व की एक लाख स्वयंसेवी संस्थाओं के संगठन **"इन्टरनेशलन टास्क फोर्स लिटरेसी"** अर्थात् अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता कार्यदल में कार्य करना आरम्भ कर दिया है। भारत में भी निरक्षरता के उन्मूलन के लिये राष्ट्रीय साक्षरता मिशन कार्यरत है। अब प्रत्येक वर्ष 5 सितम्बर से 12 सितम्बर तक राष्ट्रीय उन्मूलन सप्ताह मनाया जाता है।

संयुक्त राष्ट्र के अनुमान के अनुसार सन् दो हजार में विश्व में निरक्षर व्यक्तियों की संख्या एक अरब होगी। भारत में निरक्षर व्यक्ति लगभग 50 करोड़ होंगे। 1985 के आंकड़ों के अनुसार विश्व के वयस्क व्यक्तियों में 27 प्रतिशत निरक्षर है। अर्थात् लगभग 90 करोड़ वयस्क लोग ऐसे हैं जिन्हें पढ़ने लिखने की काम चलाऊ जानकारी भी नहीं है। विश्व की निरक्षर जनसंख्या का 98 प्रतिशत भाग विकासशील देशों में मुख्य रूप से एशिया में है। वर्ष 1987 में विश्व की जनसंख्या पांच अरब हो चुकी थी। निरक्षर जनसंख्या में से 8 प्रतिशत महिलायें हैं। भारत में महिलाओं में साक्षरता की दर और भी निराशाजनक है यहां हर तीन महिलाओं में से दो निरक्षर हैं।

स्वतंत्रता के बाद भारत के संविधान में चौदह वर्ष के बालक बालिकाओं को निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता को स्वीकार किया गया । स्वतन्त्रता के बाद के वर्षों के, इस लक्ष्य को प्राप्त करने में कुछ प्रगति भी हुई बढ़ती हुई, जनसंख्या तथा आर्थिक और सामाजिक कारणों से हम उस लक्ष्य को पाने में अभी भी दूर हैं। वर्ष 1971 में भारत में करीब 29 प्रतिशत लोग साक्षर थे। 1981 में साक्षरता की दर 36.23% प्रतिशत हो गयी। लेकिन इस बीच निरक्षर लोगों की संख्या भी 38 करोड़ से बढ़कर 42 करोड़ हो गई । इसमें से लगभग 24 करोड़ 15 वर्ष की आयु से अधिक के थे। सन् 1991 में निरक्षरों की संख्या 50 करोड़ हो गई है। जिसमें में निरक्षर महिलाओं की संख्या करीब साढ़े 25 करोड़ है ।

इस समस्या से निपटने के लिये स्वयंसेवी संगठन तथा सरकार द्वारा भारत में निरक्षरता उन्मूलन अभियान चलाया जा रहा है। प्रत्येक वर्ष 8 सितम्बर को निरक्षरता उन्मूलन दिवस मनाया जाता है। सन् 1990 में अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता वर्ष मनाया गया था । और यह निर्णय लिया गया था कि भार में 15-35 वर्ष के 8 करोड़ व्यक्तियों को 1995 तक साक्षर बनाया जाये और सन् 2000 तक सभी को शिक्षित कर दिया जायेगा।

इस कार्यक्रम के अनुसार राज्य सरकारें अपने सुविधा एवं बजट के अनुसार नये प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोलती हैं। निरक्षर उत्थान समितियां इस योजना में कार्य कर रही हैं। जनपदों में व्यक्तियों को शत प्रतिशत शिक्षित करने के लिये प्रौढ़ शिक्षा पखवारा 5 सितम्बर से 12 सितम्बर तक मनाया जाता है। इसके अन्तर्गत 15 - 20 गांवों में शत प्रतिशत शिक्षित करने का लक्ष्य निर्धारित कर लिया जाता है ।

## 7. साक्षरता के नये प्रयास

नई दिल्ली के विज्ञान भवन में 5 मई 1988 को साक्षरता दीप प्रज्जवलित कर राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के जन अभियान का शुभारंभ किया गया । राज्यों की राजधानियों जिला मुख्यालयों और परियोजना कार्यालयों सहित देश भर में ऐसे शुभारंभ समारोह हुए। निरक्षरता मिटाने के लिये इस प्रकार सबको शिक्षा का एवं साक्षरता का जो वचन संविधान के निर्माताओं ने दिया था । उसे पूरा करने के लिये राष्ट्रीय स्तर पर संकल्प किया गया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि करोड़ों लोगों का निरक्षर रहना भारत के लिये कलंक और अभिशाप है। इससे मुक्ति पानी ही होगी। विकास का संबंध केवल कल-कारखानों, बच्चों और सड़कों से नहीं है। इसका लक्ष्य है लोगों की भौतिक सांस्कृतिक और अध्यात्मिक उन्नति हो। मानवीय पक्ष और उससे जुड़ी हुई बातें महत्वपूर्ण हैं। हमें साक्षरता का प्रयास केवल पढ़ने लिखने तथा गणित सिखाने तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए बल्कि हम इससे अपने परम्परागत मूल्यों, संस्कृति एवं पुरानी विरासत को सजीव बनायें। तभी हम इस मिशन को सार्थक कर पायेंगे। विभिन्न वर्गों के लोगों जैसे शिक्षकों सशस्त्र सैनिकों, स्वैच्छिक संस्थाओं व्यापारियों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, महिला संगठनों तथा अन्य सभी वर्गों के लोगों का साक्षरता के कार्य में हाथ बढ़ाना है। महिलाओं, अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिये साक्षरता पर विशेष रूप से बल दिया जाना है। साक्षरता के अभाव के कारण शोषण होता है। आजादी से लेकर अब तक देश में साक्षरता को बढ़ावा देने के लिये अनेक कार्यक्रम चलाये गये किन्तु अपेक्षित सफलता नहीं मिल पायी। इस कार्यक्रम को लोगों से जोड़ने के लिये राष्ट्रीय साक्षरता मिशन लोगों की बोलचाल की भाषा या बोलियों में साक्षरता प्रदान करने की व्यवस्था करता है।

देश में वर्षों से चलाये जा रहे प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों की खूबियों और खामियों के मूल्यांकन विश्लेषण के बाद राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की संरचना की गई। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की उपलब्धियां कम न थीं। मगर

जो समस्यायें मुख्य रूप से सामने आयीं उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं : -

कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण का घटिया स्तर, अब सूचना अनुश्रवण {मानिटरिंग} प्रणाली का भरोसेमंद नहीं होना, गलत रिपोर्ट भी भेजा जाना था । प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में शिक्षा के लिये अनुकूल वातावरण का अभाव, अपर्याप्त रोशनी, जन संचार माध्यमों की उपेक्षा सरकारी नियमों के जटिल होने की वजह से स्वैच्छिक संस्थाओं में उत्साह की कमी, बीच में पढ़ाई छोड़े जाने वालों की बहुतायत, जीवन तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कार्यकुशलता बढ़ाने एवं चेतना जगाने का ढीला प्रयास, शिक्षा में निरन्तरता का अभाव और राजनैतिक एवं प्रशासनिक सहयोग की कमी आदि ।

मिशन के समक्ष वर्तमान चुनौती का स्वरूप आज यह है कि 1951 में 15 से 35 वर्ष की उम्र वाले निरक्षरों की संख्या 9 करोड़ 10 लाख थी, जो 1981 में बढ़कर 11 करोड़ हो गयी । इनकी संख्या में 1991 में साठ लाख की और वृद्धि हुई। साक्षरता मिशन का लक्ष्य 1990 तक तीन करोड़ और 1995 तक पांच करोड़ यानि कुल आठ करोड़ लोगों को साक्षर बनाना है। व्यावहारिक साक्षरता का अर्थ यह है कि पढ़ने-लिखने और हिसाब किताब करने में व्यक्ति आत्म-निर्भर हो जाये। साथ ही उसे यह ज्ञात हो जाये कि उसकी वर्तमान स्थिति का कारण क्या हैं तथा संगठित होकर एवं विकास कार्यों में भाग लेकर वह अपनी हालत सुधारने का कारगर ढंग से प्रयास कर सकता है। वह ऐसे नये हुनर सीख सके जिससे उसे आर्थिक स्थिति में सुधाने में मदद मिलें राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण का महत्व व बचाव, महिला और पुरूष की समानता, छोटा परिवार आदि के बारे में तथा अन्य सामाजिक मूल्यों के विषय में उसे समझने में आसानी हो। निरक्षरता की समाप्ति का लाभ अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाने के उद्देश्य से मिशन पूरे देश में निरन्तर शिक्षा की व्यवस्था एवं खुले एवं दूरस्थ अध्ययन का प्रबंध भी कर रहा है।

साक्षरता के प्रसार के लिये सबसे अधिक आवश्यक है- लोगों

को प्रेरित करना। इसी सवाल का हल खोजने हेतु राष्ट्रीय साक्षरता मिशन बना है। इसके लिये जरूरी है कि शिक्षक निष्ठावान हों पूर्ण प्रशिक्षित हों और गरीबों तथा निरक्षरों के साथ आत्मीयता एवं आदरपूर्वक व्यवहार कर सकें साथ ही सीखने का वातावरण सुधरा हुआ हो। कक्षाओं में प्रकाश की व्यवस्था अच्छी हो तथा उपयुक्त अध्ययन सामग्री हो। शिक्षा पाने वालों के मन में यह भावना उत्पन्न हो कि जो लोग कार्यक्रम चला रहे हैं उन्हें हमारी चिन्ता है। शिक्षार्थियों में यह विश्वास जगाया जाये कि उनमें सीखने की क्षमता है। उन्हें यह विश्वास दिलाया जाये कि साक्षरता शुरू में ही नीरस लगती है, बाद में नहीं शिक्षा में निरन्तरता की व्यवस्था कर साक्षर व्यक्ति की अपनी नयी स्थित के प्रति जागरूक बनाना भी उतना ही जरूरी है। उनकी सफलता की सार्वजनिक प्रशंसा की जाये। स्वास्थ्य से संबंधित विषयों पर आधारित, विशेषकर बाल-स्वास्थ्य से जुड़े महिला कार्यक्रम भी पाठ्यक्रम में शामिल हों। मनोरंजक अध्यात्मिक और सांस्कृतिक अध्यापन शैली शायद अधिक कारगर सिद्ध हो।

इस अभियान को जन-जन तक पहुचाने का असर भी अब दृष्टिगोचर होने लगा है। इन आठ महीनों में ही कई मंत्रालयों और विभागों तथा स्वयं सेवी संस्थाओं ने इस दिशा में तेज कदम उठाये हैं। **"जन शिक्षण"** निलयमों के खुल जाने से साक्षरता के साथ-साथ सतत शिक्षा और अनुवर्ती कार्यक्रमों की ओर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। जन शिक्षण निलयम् एक संस्थागत ढांचा है। आमलोगों की रूचि जगाने और पढ़ाई लिखाई की ओर उन्हें आकर्षित करने हेतु **"पंच परमेश्वर" "हार की जीत" "मिलावट की रोकथाम"** आदि विभिन्न विषयों पर लघु कथा के रूप में पठनीय सामग्री तैयार की गई है। अनेक प्रकार के अन्य प्रकाशन, पोस्टर प्रोत्साहन, साहित्य, वीडियो कैसेट, चलचित्र आदि तैयार किये गये हैं। इस दिशा में आगे भी और तेजी से कार्य हो रहा है। तमिलनाडु के कोयम्बतूर जिले में दो साल के अन्दर निरक्षरता के सम्पूर्ण उन्मूलन का प्रण लिया गया है। केरल और पांडिचेरी में पूर्ण साक्षरता पायी जा चुकी है। 1987-88 में जहां लगभग 300 स्वैच्छिक संस्थायें इस कार्य में हाथ बंटा रही थी। वहां 1988 में यह संख्या बढ़कर 525 तक पहुच गयी है।

1989 के अंत तक इनकी संख्या 700 तक पहुंचाने का लक्ष्य था । देश भर के लगभग सभी 345 नेहरू युवा केन्द्रों मे साक्षरता अभियान पूरे जोरों पर चल रहा है। विशेष रूप से रेलवे व रक्षा विभागों एवं सार्वजनिक उपक्रमों में यह अभियान काफी जोर पकड़ चुका है। रेलवे ने 1989 के अंत तक 409 साक्षरता केन्द्र बनाकर अपने 11200 निरक्षर कर्मचारियों को साक्षर बनाने का व्रत लिया वर्तमान समय में स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा देश में 45,433 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र तथा 2355 जन शिक्षा निलयम कार्य कर रहे हैं। भारत सरकार ने 30,000 शिक्षा निलयम की स्वीकृत प्रदान कर दी है जो प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों की शिक्षा को भी जारी रखने का भी कार्य करेगें। इसके अतिरिक्त भारत ज्ञान विज्ञान जत्था समिति 721 बड़े तथा 1552 छोटे जत्था निर्मित कर चुकी है जो देश के 332 जनपदों में साक्षरता प्रसार करेगी। गान्धियन तथा सर्वोदय संस्थाओं के कार्यकर्ता पैदल चलकर साक्षरता कार्यक्रम को सफल बनाने का कार्य कर रहे हैं। भारत सरकार ने 16 फिल्में भी प्रौढ़ शिक्षा के सम्बन्ध में की हैं। इस प्रकार विभिन्न जनपदों में शतप्रतिशत साक्षरता लाने का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। दिल्ली, बम्बई और कलकत्ता में स्कूलों के छात्र-छात्राओं ने साक्षरता के लिये काम करने का संकल्प लिया है। राष्ट्रीय सेवा योजना और एन0सी0सी0 कैडेटों तथा कालेज के लाखों युवकों-युवतियों ने **"एक पढ़ाये एक"** योजना पर अमल शुरू कर दिया है इस समय 10 लाख लोग कार्य कर रहे हैं। कतिपय महिला संगठनों, विशेषकर तीन सेनाओं से संबंधित संगठनों ने भी साक्षरता अभियान शरू कर दिया है। कई तकनीकी संस्थायें भी इस अभियान से जुड़ गई हैं ।

नया साक्षरता मिशन तकनीकी और सामाजिक मिशन है। इसके माध्यम से विज्ञान और तकनीक के लाभ आम जनता को सुलभ कराये जायेगें। इसके अतिरिक्त प्रौढ़ शिक्षा के चल रहे कार्यक्रमों को सुधारने में भी इन वैज्ञानिक एवं तकनीकी विधाओं का उपयोग किया जा रहा है।

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान नई दिल्ली द्वारा देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा प्रौढ़ शिक्षा तथा सतत् शिक्षा कार्यक्रम

भी चलाये जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश में काशी हिन्दु विश्वविद्यालय वाराणसी, (सतत् शिक्षा विभाग) आगरा विश्वविद्यालय आगरा तथा गांधी ग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय तमिलनाडू में निरक्षरता उन्मूलन हेतु कार्यरत हैं। इन विश्वविद्यालयों के छात्रों एवं शिक्षकों के प्रयास से ये कार्यक्रम चल रहे हैं और प्रौढ़ प्रतिभागी लाभ उठा रहे हैं। उच्च शिक्षा द्वारा नयी व्यवस्था में प्रौढ़ तथा सतत् शिक्षा कार्यरत है। वर्ष 1987 से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी कार्यरत है। उच्च शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा को बल प्रदान करने के उद्देश्य से कार्य कर रही है जिसमें : -

1. शैक्षिक पहचान के लिये तथा पठन पाठन सामग्री के विकास प्रशिक्षण, शोध, मूल्यांकन, अनुश्ररण करने का कार्य कर रही हैं।

2. छात्रों, अध्यापकों द्वारा साक्षरता के लिये दल बनाये गये हैं और शिक्षण कार्य कर रहें हैं।

3. लक्ष्य समूह 9-14 वर्ष तथा 15-35 वर्ष के निरक्षर लोगों को नवीन उपकरणों के माध्यम से लाभान्वित किया जा रहा है।

4. स्वास्थ्य, जनसंख्या नियंन्त्राण, नारी शिक्षा पर अधिक बल दिया जा रहा है।

5. व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत मोमबत्ती पापड़, सिल्क रोलिंग, अम्बर चरखा कातना, सिलाई, बुनाई, रंगाई, साबुन बनाना आदि शिक्षण क्षेत्र हैं ।

# 3. प्रौढ़ शिक्षा और विकास

## 1. व्यक्तिगत विकास :

प्रौढ़ शिक्षा का मुख्य प्रयोजन वयस्कों का व्यक्तियों के रूप में सर्वांगीण वैयक्तिक विकास करना है। अतः व्यक्तिगत दृष्टि से समाज शिक्षा के निम्नांकित 6 उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं।

### 1. वयस्कों का आत्म विकास :

वयस्कों का आत्म विकास करने के लिये, उनकी आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों के अनुकूल किसी विशिष्ट ज्ञान की प्राप्ति, जीवन के सिद्धान्तों के प्रतिपादन या किसी कला के अनुसरण के लिये उपर्युक्त सुविधाओं की व्यवस्था करना ।

### 2. वयस्कों का शारीरिक विकास :

वयस्कों का शारीरिक विकास के लिये, स्वास्थ्य संबंधी नियमों, बाल-स्वास्थ्य, अस्वस्थता से बचने के उपायों, वयस्कों के क्षेत्रों में फैलने वाले मुख्य रोगों को रोकने एवं पौष्टिक भोजन की समस्या का समाधान करने के लिये उपर्युक्त प्रशिक्षण की व्यवस्था करना ।

### 3. वयस्कों का मानसिक विकास :

जो वयस्क अपनी आर्थिक एवं पारिवारिक परिस्थिति के कारण औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाये हैं उनको मानसिक विकास के लिये शिक्षा की व्यवस्था करना ।

### 4. वयस्कों का सांस्कृतिक विकास :

वयस्कों का सांस्कृतिक विकास करने और उनको अपने देश के प्राचीन एवं वर्तमान सांस्कृतिक कार्यों से परिचित कराने के लिये गीतों, लोकगीतों, नृत्यों, लोकनृत्यों, वार्तालापों, व्याख्यानों आदि की व्यवस्था करना ।

5. **वयस्कों की सामाजिक कुशलता का विकास :**

वयस्कों की सामाजिक कुशलता का विकास करने के लिये उन्हें अन्य व्यक्तियों के मध्य रहने और सामंजस्य, जीवन में उन्नति करने पारिवारिक जीवन को सुखमय बनाने और जटिल संसार में अपने कर्तव्यों एवं अधिकारों का ज्ञान प्रदान की व्यवस्था करना ।

6. **वयस्कों की व्यावसायिक कुशलता का विकास :**

वयस्कों की व्यावसायिक कुशलता का विकास करने के लिये नगरों में व्यावसायिक एवं प्राविधिक शिक्षा और ग्रामों में कृषि एवं कुटीर उद्योगों की शिक्षा की व्यवस्था करना ।

राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के तीन महत्वपूर्ण घटकों में से दो घटकों-प्रौढ़ शिक्षार्थियों की कार्यात्मक क्षमता और चेतना के विकास को वर्तमान कार्यक्रम के नीति वक्तव्य में प्रमुखता दी गई है। किन्तु सरकार द्वारा बनाई गई नीतियों का महत्व वहीं समाहित है जहां से व्यक्ति में आत्म चेतना या वैयक्तिक अस्मिता का प्रादुर्भाव हो सके। व्यक्ति स्वयं क्या है ? व्यक्ति का व्यक्ति से अंतः क्रियात्मक संबंध क्या है? तथा व्यक्ति का समाज के प्रति क्या उत्तरदायित्व है, इसकी जानकारी शिक्षा एवं संचार शिक्षा द्वारा ही हो सकती है। इस प्रकार जब व्यक्ति द्वारा "मानवीय व सामाजिक मूल्यो की स्थापना करने की कार्यक्षमता विकसित होती है तो ऐसी उत्पन्न चेतना को वैयक्तिक चेतना कहा जाता है। एक व्यक्ति में संचार एवं शिक्षा के माध्यम से उत्पन्न आत्मिक सुख एवं सम्पन्नता के प्रति सचेतना वैयक्ति चेतना की वृद्धि करती है। व्यक्ति में स्वयं इन प्रवृत्तियों का विकास हो के कि वे लघु परिवारों के प्रति सचेत हों, बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा हेतु जागरूक रखे, परिवार कल्याण कार्यक्रमों में सहभागिता रखे। वैयक्तिक चेतना द्वारा वैयक्तिक भूमिका आत्म जागृति का परिणाम होगा । इस प्रकार वैयक्तिक चेतना के अन्तर्गत कुछ निम्न आयामों को लिया जा सकता है।

1. व्यक्ति की सम-सामयिक परिस्थितियों में गुणात्मक परिवर्तन लाना ही वैयक्तिक विकास है।

2. कार्यक्षमता में वृद्धि

3. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास ।

4. परस्पर सहयोग, सद्भावना एवं मैत्रीपूर्ण संबंधों का विकास।
5. समुदाय में समानता, आत्मनिर्भरता व स्थानीय स्तर पर चलने वाले विकास योजनाओं में सहभागिता ।
6. व्यक्तियों में शिक्षा के प्रति पर्याप्त रूचि एवं सीमित परिवार की भावना का विकास ।

7. सामाजिक कुरीतियों को समझना एवं उनके निवारण हेतु व्यक्तिगत रूप से चेतन होना ।

प्रौढ़ साक्षरता का प्रमुख उद्देश्य लोगों के सोचने काम करने और जाने हुए संसार को और अधिक जानने की क्षमता प्रदान करना है। उसका उद्देश्य उन्हें किसी सरकारी नीति को मनवाना न होकर उन्हें यह जानने के लिये उत्सुक बनाना है, कि बहुत कुछ जो संसार में घटित हो रहा है, वह उनके लिये प्रासंगिक है अथवा नहीं और वह उनके जाने हुए संसार को और अधिक आत्मीय बना सकता है। अथवा नहीं । प्रौढ़ शिक्षा त्वरित ऐतिहासिक परिवर्तन तो नहीं लाती, न ही विमुक्ति का एकमात्र साधन है, परन्तु यह सामाजिक चेतना एवं परिवर्तन का एक आवश्यक अभिकरण अवश्य है।

**2. सामाजिक विकास :**

संस्कृति और समाज दोनों विकासशील हैं। मनुष्य पीढ़ी दर-पीढ़ी सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना हस्तान्तरित करता है। पूर्व प्राप्त

ज्ञान को प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से समाहित करता है और अपने ज्ञान का भी कुछ अंश उसमें समाहित करता है। इस प्रकार समाज और संस्कृति का विकास होता चलता है। ऐसे विकास के लिये जो योगदान दिये जाते हैं। उनमें प्रमुख लिखित या अन्य प्रकार से अभिलेखगत साक्ष्य हो सकते हैं जिनका व्यक्ति की मृत्यु के बाद भी अस्तित्व बना रहता है और आने वाले युगों के लिये प्रेरणा और संबल के रूप में कार्य करता है।

समाज में दो प्रकार के लोग होते हैं शिक्षित और अशिक्षित। अशिक्षित व्यक्तियों द्वारा दृश्य श्रव्य और अन्य संचार माध्यमों से संप्रेषित होकर अपने सामाजिक सांस्कृतिक पहलुओं में परिवर्तन लाया जा सकता है। किन्तु परिवर्तन लगभग नगण्य होता है। क्योंकि आज तेजी से छोटे होते जा रहे विश्व में शिक्षा के माध्यम से जिन लोगों को ज्ञान का साक्षात्कार नहीं कराया जा पाता वह वर्ग अथवा समूह अपने समकालीन शिक्षित वर्गों एवं समूहों की तुलना में बहुत पिछड़ा रह जाता है। ऐसे वर्गों के बीच में क्रान्तिकारी परिवर्तन का सशक्त माध्यम प्रौढ़ शिक्षा ही हो सकती है। किसी समाज के विशिष्ट सामाजिक मूल्यों के बीच अपने घिसी पिटी जीवन शैली में जीवन व्यतीत करने वाले लोग या तो अपने जीवन में परिवर्तन के प्रति निराश हो चुके होते हैं या फिर निरक्षर होने के कारण शिक्षितों की नकल करके हास्यप्रद सांस्कृतिक सामाजिक परिस्थितियाँ पैदा कर देते हैं ।

पर्याप्त बौद्धिक विकास के कारण प्रौढ़ों को मात्र लिपिकीय प्रतीकों के समझने और उनके प्रयोग में लाने की क्षमता को उत्पन्न करना प्रौढ़ शिक्षा के समक्ष सबसे पहली और सबसे गंभीर चुनौती है।

विश्व की समस्त ग्रामीण जनसंख्या के एक बहुत बड़े भाग का लिपिकीय माध्यम से संक्रमणीय ज्ञान से वंचित रह जाना मानवता के लिये एक अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार माध्यमों के संचरण में कठिनाइयां तो होती ही है, अशिक्षितों के बीच इन माध्यमों की पैठ एक

अलग समस्या होती है। इन माध्यमों की क्षमता तब महत्त्वपूर्ण हो जाती है जब सम्प्रक्ष्य व्यक्ति प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से क्रमशः सम्प्रेषणीय बातों के प्रारंभिक पक्षों की ओर जागरूक होने लगता है। डा० सम्पूर्णानन्द के अनुसार शिक्षा का अर्थ केवल साक्षरता न होकर अत्यन्त व्यापक है और शिक्षा जीवन के सर्वांगीण विकास का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है। अशिक्षित प्रौढ़ों के समाज को और उनकी समाजिक चेतना को एक अभिनव उर्जा और गति देकर यथास्थिति से नवीनता का मार्ग प्रशस्त करने का कार्य प्रौढ़ शिक्षा ही कर सकती है।

यद्यपि समाज शिक्षा के मुख्य प्रयोजन वयस्कों का व्यक्तियों के रूप में सर्वांगीण विकास करना है, तथापि उसका प्रयोजन–वयस्कों को समाज का लाभप्रद सदस्य बनाना भी है ताकि उनका और उनके माध्यम से समाज का उत्थान हो सके । सामाजिक दृष्टि से समाज शिक्षा के 4 उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं : –

**1. सामाजिक एकता का विकास :**

आधुनिक भारतीय समाज–समूहों एवं व्यक्तियों के मध्य पारस्परिक द्वेषों एवं संघर्षों का महाकाव्य बन गया है। परिणामतः भारतीय समाज पृथकता के कगार की ओर बड़ी तेजी से बढ़ रहा है यह पृथकता अनेक रूपों में दृष्टिगोचर होती है: यथा – विभिन्न धार्मिक समूहों भाषा–भाषी समूहों वृद्धों और युवकों श्रमिकों और पूंजीपतियों विदेशियों और देशवासियों ग्राम और नगर, निवासियों धनी और निर्धन, व्यक्तियों शिक्षित और अशिक्षित व्यक्तियों प्रतिष्ठित और सामान्य व्यक्तियों आदि के मध्य विद्यमान पृथकता ।

**2. राष्ट्रीय साधनों की सुरक्षा व उन्नति :**

राष्ट्रीय साधन दो प्रकार के होते हैं भौतिक एवं मानवीय । भौतिक साधनों के अंतर्गत हमारे देश के वन, भूमि एवं भूमि के गर्भ में छिपी हुई है जन–जीवन के लिये आवश्यक विविध प्रकार की मूल्यवान वस्तुएं हैं। हमारे देश के सभी व्यक्तियों को इन साधनों का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए

ताकि वे इनकी सुरक्षा प्रयोग एवं उन्नति में अपना योग प्रदान कर सकें ।

भौतिक साधनों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं - मानवीय साधन। हमारी शिक्षण संस्थाओं का एक मुख्य कर्तव्य - मानवीय संसाधनों की उन्नति करना है। यह तभी संभव है, जब हमारी शिक्षण संस्थायें हमारे देश वासियों की मानसिक शक्तियों, उत्पादक योग्यताओं एवं आधारभूत कुशलताओं का अधिक से अधिक विकास करें ।

हमारे अशिक्षित वयस्कों को भौतिक साधनों का समुचित ज्ञान नहीं है। साथ ही विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण न कर सकने के कारण उनकी मानसिक शक्तियों एवं उत्पादक योग्यतायें अविकसित दशा में हैं ।

3. **सहकारी समुदायों व संस्थाओं का निर्माण :**

राष्ट्रीय साधनों की सुरक्षा एवं उन्नति देश की प्रगति एवं समृद्धि के लिये परम आवश्यक है। किन्तु इससे कहीं अधिक आवश्यक यह है कि पृथकता के कारणों का निवारण करके ऐसे समूहों का संगठन किया जाये, जिनमें इन साधनों को सब व्यक्तियों के हित के लिये प्रयोग करने की इच्छा एवं योग्यता विकसित हो ।

इस प्रकार के समूहों के केवल दो रूप हो सकते है - सहकारी समुदाय एवं सहकारी संस्थायें। इन समूहों में रहकर ही व्यक्ति अपनं सम्मान एवं स्वतंत्रता की - रक्षा कर सकते हैं, उन समस्याओं के समाधान के लिये सामूहिक कार्य कर सकते हैं। और उन कार्यों का सामूहिक मूल्यांकन कर सकते हैं ।

4. **सामाजिक आदर्श का समावेश :**

प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत हित का, अपने समूह अपने समूह समाज और अपने देश के हित के लिये सहर्ष बलिदान करने के लिये

तैयार रहना चाहिए। इस सामाजिक आदर्श को समस्त युगों में सब देशों एवं समाजों द्वारा सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है। इस आदर्श को एक प्रख्यात अंग्रेज लेखक के इस वाक्य में व्यक्त किया जा सकता है। यदि इंग्लैण्ड का अन्त होता है तो जीवित कौन है? वस्तुतः उक्त सामाजिक आदर्श का अनुसरण करके ही विश्व की महान विभूतियों ने मानव जाति की प्रगति में योगदान किया है। समाज शिक्षा का उद्देश्य - भारत के जन-जन में इस भावना का समावेश करना है कि प्रत्येक व्यक्ति समाज एवं मानव जाति की प्रगति में योग प्रदान करना अपना सर्वोच्च आदर्श समझें ।

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का एक प्रमुख पहलू व्यक्तियों को अपने सामाजिक दशा के प्रति जागृति उत्पन्न करना है। सामाजिक चेतना का तात्पर्य गरीबों व निरक्षरों के लिये सामूहिक प्रयासों के से वैध हितों को आगे बढ़ाने में स्वयं को तैयार करना तथा कानूनों व सरकारी नीतियों के विकास के अवरोधों के प्रति जागरूकता से है। साथ ही प्रौढ़ शिक्षा ने **"शक्तिहीनता"** की भावना को समाप्त किया है। और सामूहिक सौदेबाजी के लिये समैक्यता की भावना को उत्पन्न किया है। कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी व्यवहारों एवं आधुनिक विचारों को अपनाने की दिशा में परिवर्तन प्रारम्भ किया है ।

### 3. <u>आर्थिक विकास</u> :

डा० ए० आर० देसाई और एस० पी० पारेलकर का अध्ययन "द रिलेशनशिप बिटवीन लिट्रेसी एण्ड इकोनोमिक प्रोडक्टिविटी आफ इण्डस्ट्रियल वर्कस आफ बाम्बे ऐ सोशियोलोजिकल एनालिसिस" इस दिशा में प्रासंगिक है। निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि साक्षर व्यक्ति अपनी स्थिति को सुधारने के लिये अधिक जागरूक हैं। निरक्षर लोग नियमों को नहीं जानते अतएव अपने शोषण के विरूद्ध कोई आवाज नहीं उठाते। साक्षर लोग नई चीजों को सीखने के लिये उत्सुक रहते हैं। 50 में से 45 पर्यवेक्षकों के साक्षात्कार लेने पर ज्ञात हुआ कि यदि श्रमिकों को साक्षरता संस्थाओं में तकनीकी तथा संगठनात्मक सिद्धान्तों के प्रति जागरूक बनाया जाये तथा यह बताया जाये कि वे उत्पादन प्रक्रिया में

किस प्रकार योगदान कर सकते हैं तो उनकी कार्यक्षमता में सुधार हो सकता है ।

**"शिक्षा के अर्थशास्त्र"** में एक विस्तृत अध्ययन एम0 ब्लाउग द्वारा किया गया जिसमें उन्होंने निष्कर्ष दिया कि "साक्षरता के प्रभाव से तात्पर्य है कि यह व्यक्तियों को संचार का एक अलिखित साधन उपलब्ध कराता है इस प्रकार साक्षरता आर्थिक विकास में : -

1. नव साक्षरों की उत्पादकता बढ़ाकर
2. साक्षरों के साथ समितियों में व्यक्तिगत कार्यों की उत्पादकता को उंचा उठाकर
3. स्वास्थ्य पालन पोषण से संबंधित सामान्य ज्ञान को बढ़ाकर
4. प्राविधिक शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा को देकर
5. उनकी व्यावसायिक गतिशीलता में तीव्रता तथा अधिक सक्षम व्यवसाय को चुनने की एक प्रणाली के रूप में
6. आर्थिक दृष्टिकोणों को मजबूत करके, योगदान कर सकती है।

---

1. डा0 ए0 आर0 देसाई एण्ड जे0 एस0 पेरोलकर "द रिलेशनशिप बिटवीन लिट्रेसी एण्ड इकोनोमिक प्रोडक्टिविटी आफ इण्डस्ट्रियल वर्कर्स आफ बाम्बे: ए सोशियोलोजिकल एनालिसिस" **लिट्रेसी वर्क** वाल्यूम - 1 नं0 3, समर, 1970, पृष्ठ 27-30.
2. मार्क, ब्लाऊग, **"इकोनोमिक्स आफ एजूकेशन"** जेनेवा: इन्टरनेशनल लेबर आरगेनाइजेशन, 1973 पृ0 32.

वी० के० आर० वी० के अनुसार "प्रौढ़ शिक्षा व प्रौढ़ साक्षरता के बिना आर्थिक और सामाजिक विकास की उस गति व दर को प्राप्त करना असंभव है, जिसको हम प्राप्त करना चाहते हैं ........... प्रौढ़ शिक्षा व प्रौढ़ साक्षरता के कार्यक्रम को सामाजिक व आर्थिक विकास कार्यक्रमों में एक प्रमुख स्थान मिलना चाहिये"।

आर्थिक विकास का आधार है लोगों में उच्च जीवन-स्तर का ज्ञान और उच्च जीवन स्तर कायम रखने की इच्छा । लोगों को अच्छे जीवन के बारे में ज्ञान होना चाहिए। यह ज्ञान आधारभूत आवश्यकताओं जैसे कपड़ा, रोटी, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा इत्यादि दृष्टि से भी होना चाहिए। जीवन के अच्छे तरीकों का केवल ज्ञान ही नहीं होना चाहिए अपितु उनको पाने की इच्छा भी होनी चाहिए। ऐसा होने पर ही लोग अधिक काम करने को तैयार होगें, अधिक साहस दिखायेंगें, अधिक कल्पनाशील होगों, और अधिक खतरा उठाने को तैयार होंगे। ये सभी आर्थिक विकास व चेतना के आधार हैं। आर्थिक विकास के लिये आवश्यक है कि लोग उत्पादन के नये तरीके इस्तेमान करें।

---

1. राव वी.के.आर.वी, एजूकेशन एण्ड ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेन्ट एलाइड पब्लिशर्स, नईदिल्ली . 1966.

4. राजनैतिक विकास :

औपचारिक शिक्षा की संदर्भहीनता का प्रचार विश्व के कई चिन्तकों एवं शिक्षाशास्त्रियों ने किया है किन्तु उनमें से प्रमुख दो क्रांतिकारी शिक्षाशास्त्री विश्व के मानचित्र में सर्वाधिक उभर कर आये हैं। इन्होंने शिक्षा संबंधी रूढ़िवादी विचारधारा को झंकझोर दिया। ये महान क्रांतिकारी शिक्षाशास्त्री हैं श्री इषान इलिच और श्री पावलो फ्रेरे जिन्होंने इस सिद्धान्त पर बल दिया कि सामाजिक आर्थिक राजनीतिक एवं वैधानिक सामंजस्य व विकास के लिये समाज एवं समुदाय के महत्वपूर्ण आयवर्ग के लोगों का साक्षर होना नितान्त आवश्यक है। क्योंकि वे लोग सामाजिक संरचना एवं विकास के मेरूदण्ड हैं। ऐसे लोग 15 से 35 आयुवर्ग के बीच के होते हैं जिनकी मानसिकता, व्यक्तित्व, परिवार, समुदाय, समाज एवं राज्य तथा राष्ट्र को आत्मनिर्भर करने एवं स्वावलंबन प्रदान करने की होती है। परन्तु दुर्भाग्य की बात यह है कि अपने देश भारतवर्ष में साक्षरता की स्थिति अन्य देशों की अपेक्षा काफी दयनीय हैं।

यदि हमारे देश के लोग द्रुतगति से साक्षर नहीं किये जाते हैं तो हम राष्ट्रीय विकास की दौड़ में काफी पीछे रह जायेंगे। न तो हम स्थायी एवं कर्मठ सरकार का निर्माण कर सकते हैं और न ही अपेक्षित लोकतन्त्र की स्थापना कर सकते हैं। इस प्रकार साक्षरता का स्वावलंबन तथा जागरूकता का सीधा संबंध है। साथ ही साथ साक्षरता विधि सम्मत ज्ञान एवं राष्ट्रीयं एकता का महत्वपूर्ण घड़ी है ।

किसी भी प्रजातांत्रिक राष्ट्र में सरकार के गठन एवं उसके समन्वय का भार उस देश के प्रबुद्ध नागरिकों पर निर्भर करता है जिस देश के लोग जितने ही साक्षर एवं नैतिक रूप से जागरूक होंगे उतने ही जागरूक प्रतिनिधि का चुनाव भी करेंगे, जबकि जागरूकता की जननी साक्षरता है इस तथ्य को सोवियत रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका जापान, डेनमार्क, ब्रिटेन, कनाडा, तथा वियतनाम जैसे देशों के संदर्भ में देखा जा सकता है।

साक्षरता एवं लोकतंत्र का सीधा संबंध है क्योंकि जनतंत्रीय

सरकार देश की जनता की जनता द्वारा जनता के कल्याण के लिये मानी जाती है इस कल्याणकारी सरकार का गठन तभी संभव है जब देश में सामाजिक एवं सामुदायिक गठन की मानसिकता कल्याणकारी एवं विकासशील भावनाओं से प्रेरित हो। इसका प्रेरणा स्त्रोत केवल साक्षरता ही माना जाता है। इस प्रकार देश की प्रगति में प्रौढ़ शिक्षा तथा साक्षरता का महत्वपूर्ण योगदान है। इसमें पुरूष–महिलाओं में भेद नहीं होना चाहिए क्योंकि दोनों ही लोकतंत्रीय गठन में निर्णायक भूमिका का निर्वाह करते हैं। महिलाओं का साक्षर होना तो और भी श्रेयस्कर है क्योंकि वे केवल किसी तंत्र का ही गठन नहीं करती हैं बल्कि पूरे परिवार में संस्कार का बीजारोपण भी करती हैं। भारत सरकार ने इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में महिलाओं को अत्यधिक महत्त्व दिया है। भारत में 80 प्रतिशत जनता गांवों में रहती हैं। अज्ञानतावश आज भी गांव की 80 प्रतिशत जनता निरक्षर है जिसके कारण उन्हें विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । विशेष रूप से सामाजिक रूढ़िवादिता धर्मान्धता, साम्प्रदायिकता तथा अनेक प्राकृतिक एवं सामाजिक विपदाओं का सामना अनावश्यक रूप से झेलना पड़ता है। इसका मुख्य कारण लोगों में कार्य और कारण की जानकारी न होना है। लोग समझ ही नहीं पाते कि कोई घटना क्यों घटी? इसका मूल कारण क्या है। लोगों में कारण के प्रति जागरूक होने की मानसिकता ही नहीं बन पाती है। बिना साक्षरता के जागरूकता आना वैसे ही संदिग्ध है जैसे बिना प्रकाश के अंधकार का समाप्त होना। अतः साक्षरता जागरूकता लाने एवं शोषण से मुक्ति दिलाने का मार्ग प्रशस्त करती है।

साक्षरता किसी भी प्रकार के ज्ञान को अर्जित करने का एक सरल एवं सफल माध्यम है। चाहे यह ज्ञान अपने सामान्य अधिकार और कर्तव्य से संबंधित हो या मौलिक अधिकार या विधि सम्मत ज्ञान से। साक्षरता के अभाव में व्यक्ति अपने विकास संबंधी तथा कर्तव्यपरक ज्ञान का बोध ही नहीं कर पाते हैं। परिणाम स्वरूप व्यक्ति अनेक प्रकार की गलतियां अनायास ही कर बैठते है। वैधानिक ज्ञान के अभाव में पुरूषों एवं महिलाओं का शोषण

भी कई स्तरों पर भरपुर रूप से किया जाता है। विशेष रूप से हिन्दू विधि में वैवाहिक कानून, तलाक, दहेज, उन्मूलन विधि जैसे कानूनों की जानकारी न होने से प्रायः महिलायें शोषण एवं उत्पीड़न का शिकार बनती हैं। मौलिक अधिकारों की जानकारी न होने से कभी-कभी उनके अधिकारों का अवैधानिक रूप से भी हनन किया जाता है। जब कि जागरूक व्यक्ति प्रायः इस उत्पीड़न का शिकार नहीं हो पाते हैं ।

हमने अपने देश के लिये धर्म निरपेक्ष कल्याणकारी लोकतंत्र को स्वीकारा है। उसे सुदृढ़ एवं शक्तिशाली बनाने के लिये आवश्यक हैं कि उसकी आधारशिला भी शक्तिशाली हो। यह आधारशिला इस देश की समस्त जनता है। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे यहां अधिकांश लोग अशिक्षित हैं। श्री के० जी० सैयद न ठीक ही कहते हैं कि "अधिकांश निरक्षर देशवासी न तो छपी हुई पुस्तक का एक पृष्ठ भी पढ़ सकते हैं और न वे मतदान की पर्ची पर समझदारी के साथ निशान लगा सकते हैं और नहीं रोजमर्रा के छोटे-छोटे हिसाब लगा सकते हैं। इस प्रकार निरक्षरता और अशिक्षा अनेकों दुर्घटनाओं का स्त्रोत बन जाती हैं, जो हमारी आर्थिक और सामाजिक प्रगति को अवरूद्ध कर देती हैं।" आर्थिक उत्पादकता, जनसंख्या-नियंत्रण, प्रदूषण नियंत्रण, राष्ट्रीय एकीकरण, सुरक्षा स्वास्थ्य और स्वच्छता के कार्यक्रम को गतिशील बनाने के लिये लोगों का साक्षर होना अत्यंत आवश्यक है। साक्षरता के अभाव में किसी राष्ट्र का निर्माण व विकास करना या तो कोरी कल्पना है या स्वप्नलोकीय अपेक्षा ।

प्रौढ़ शिक्षा से राजनैतिक चेतना जुड़ी है जो राजनीतिकरण की प्रक्रिया से सम्बद्ध है। राजनीतिकरण का तात्पर्य है कि एक समूह या व्यक्ति का तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था के साथ उसका व्यावहारिक क्रियाओं एवं वैचारिक दर्शन के रूप से सम्बन्धि होना है।

राजनीतिक व्यवस्था से व्यक्ति की व्यवहारगत व वैचारिक दर्शन का सामंजस्य व्यक्ति को राजनैतिक क्षेत्र में सक्रिय बनाता है। इस

सक्रियता को राजनैतिक चेतना कहते है। तात्पर्य है कि राजनीतिक घटनाओं, हस्तक्षेपों, योगदान विषयक ज्ञान व्यक्ति में हो जाता है। उसकी जानकारी के होने से व्यक्ति अपने को समकालीन परिस्थितियों में समायोजित कर लेता है।

5. अन्य ज्ञान :

प्रौढ़ों के बीच अपनी धार्मिक मान्यताओं के साथ-साथ उनसे जुड़ी हुई अनेक मिथकीय अवधारणायें भी हो सकती हैं। ऐसी अवधारणायें इन लोगों के जीवन को संचालित करने में पूर्वाग्रहों का कार्य करती हैं। ये मिथकीय अवधारणायें प्रौढ़ों के बीच शिक्षा के प्रचार द्वारा धीरे-धीरे ही लुप्त हो सकती हैं ।

इसी प्रकार जीवन- दर्शन, वेश-भूषा, आचार-विचार एवं व्यवहार आदि से जुड़े अनेक अनुपयोगी अथवा हानिकर पक्षों को काट छांटकर ग्रामीण लोगों के बीच से अलग कर देने का कार्य प्रौढ़ शिक्षा द्वारा किया जा सकता है।

प्रौढ़ों के लिये तैयार किये जाने वाले साहित्य के ताने बाने यदि इन तत्वों से ओत-प्रोत हों तो उनके सांस्कृति विकास में शिक्षा की भूमिका और भी प्रभावपूर्ण ढंग से निभाई जा सकती है। ऐसी शिक्षा, ऐसा साहित्य ग्रामीण प्रौढ़ों के बीच उनकी अपने क्षेत्रीय सांस्कृतिक और सामाजिक रंगत लेकर उनके अपने अभिन्न मित्र के रूप में आ बैठता है। तथा बिना कुछ कहे किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न किये बिना यह शिक्षा सांस्कृतिक सामाजिक विकास का ऐसा उपक्रम बनाती है जिसे कोई चतुर समाजशास्त्री ही भांप सकता है।

सम्पूर्ण विश्व में ग्रामों का जो स्वरूप है उसके कारण, कृषि, पशुपालन और कुटीर उद्योग ही वहां पर प्रमुख रूप से पाये जाते हैं।

इसीलिये ग्रामीणों के बीच विज्ञान और तकनीकी के अभिनव अन्वेषणों से प्राप्त नवीन कृषि उपकरणों, कृषि रक्षा यन्त्रों, खादों और कीटनाशकों आदि के उपयोग के साथ उन्नत और अधिक उपज देने वाली किस्मों के बीजों आदि का प्रयोग भी अशिक्षित ग्रामीण समाज में आज के विज्ञान प्रधान युग में दिखाई देता है। इस प्रकार उपर्युक्त सभी चीजें ग्रामीणों के सांस्कृतिक विकास के आंशिक साधन के रूप में दिखलाई पड़ने लगी है, क्योंकि नवीन जानकारियों से अवगत होकर कृषि, पशु-पालन और कुटीर उद्योगों के क्षेत्र में प्रायः सभी देशों में जो अधिक विकास यात्रा हुई है उसने उनके समाज और संस्कृति को भी निर्विवाद रूप से प्रभावित किया हैं। अशिक्षितों ने प्रायः रेडियो, दूरदर्शन और चलचित्र जैसे दृश्य-श्रव्य माध्यमों से इन चीजों के विषय में जो जानकारियां प्राप्त की हैं उसे लम्बे समय तक सुरक्षित रखते हुय यथासमय उपयोग में लाने की कार्यवाही लिपिबद्धता के माध्यम से ही सम्भव है। इस दृष्टि से भी अशिक्षित रह गये ग्रामीणों के बीच प्रौढ़ शिक्षा द्वारासांस्कृतिक उन्नयन की अनन्त संभावनायें हैं ।

## 1. शोध की आवश्यकता

भारत सरकार की ओर से **"इण्डियन जरनल आफ एडल्ट एजूकेशन"** के 48 वाल्यूम सितम्बर 1987 तक निकल चुके हैं जिनके अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्रौढ़ शिक्षा न केवल भारतवर्ष की वरन् यूनेस्कों की वृहत योजना है जिसमें अरबों रूपये सन् 1920 से 1987 तक व्यय हो चुके हैं। जर्नल्स के सभी वाल्यूम में योजना की व्यापकता, कार्यक्रमों की रूपरेखा, कार्य विधियां, व्यय सम्बन्धी आंकड़े तो मिलते हैं किन्तु प्रौढ़ शिक्षा योजना से, व्यय की तुलना में कितना लाभ अभी तक संभव हो पाया है, किसी जरनल में अध्ययन करने को नहीं मिलता है। केवल एक इण्डियन जर्नल आफ एडल्ट एजूकेशन 17-बी इन्द्रप्रस्थ स्टेट नई दिल्ली 110002 के वालूम 47 अंक -1, जनवरी, 1986 में **"मोटीवेशन फार एडल्ट लरनर्स"** पर एक रेटिंग स्केल द्वारा अनुवर्त्ती अध्ययन हुआ है। इसके अतिरिक्त डा0 रांगेय राघव मार्ग आगरा - 2 के प्रकाशन साहित्य परिचय 1978 के अक्टूबर मास के विशेषांक में प्रौढ़ शिक्षा पर कुछ विवेचनात्मक पत्राक शिक्षा विशेषज्ञों ने प्रस्तुत किये हैं जो अध्ययन के दृष्टिकोण से रोचक हैं और शोधकर्ताओं को शोध कार्य की दिशा प्रदान करने में सहायक हैं। प्रौढ़ शिक्षा सतत् शिक्षा विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा जनवरी - जून 1986 अंक 1,2 प्रकाशित पत्रिका ने प्रौढ़ शिक्षा पर विवेचनात्मक पक्ष लिया है जो शोधकर्ता का मार्ग दर्शन करती है।

**"भारत में प्रौढ़ शिक्षा का सही माने में प्रारम्भ सन् 1920 के लगभग हुआ था परन्तु पिछले 22 वर्षों के प्रयत्नों से भी निरक्षरता की स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। सन् 1951 से निरक्षरों की संख्या में वृद्धि ही हुई है सन् 1951 में 20 करोड़ लोग निरक्षर थे। सन् 1961 में 36 करोड़ लोग निरक्षर 1971 में 38 करोड़ 1981 में 42 करोड़ सन् 1991 में देश में 50 करोड़ निरक्षर थे। साथ ही साक्षरता का प्रतिशत 1951 में 16.6% 1961 में 24% 1971 में 29.45% 1981 में 36% तथा 1991 52.11% हो गया इसका प्रमुख कारक जनसंख्या की उत्तरोत्तर वृद्धि**

**तथा प्रौढ़ शिक्षा के जनजागरण कार्यक्रम की कमी ही कहा जा सकता है"।** भारत की साक्षरता 1981 में 36.23% प्रतिशत की इसी वर्ष उत्तर प्रदेश में साक्षरता का प्रतिशत राष्ट्रीय साक्षरता के प्रतिशत से भी नीचे 27.38% प्रतिशत था जिसमें पुरूषों का 38.76% तथा महिलाओं का 14.04% प्रतिशत रहा सन् 1991 की जनगणना के अनुसार भारत की साक्षरता 52.11 प्रतिशत हो गई पर उत्तर प्रदेश की 41.71% रही। यह प्रतिशत राष्ट्रीय साक्षरता प्रतिशत से नीचे है।

यह अध्ययन इस बात की ओर संकेत देते हैं कि प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में सम्प्रति शोध की आवश्यकता है। वर्ष 1947 के पूर्व प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में शोध कार्य का प्रश्न ही नहीं उठता था । स्वतंत्रता के उपरान्त शिक्षा के क्षेत्र में मूल परिवर्तन हुए और पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत शिक्षा को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया । प्रौढ़ शिक्षा, शिक्षा का एक महत्वपूर्ण भाग है जिसमें अरबों रूपये सरकार द्वारा अभी तक व्यय हो चुके किन्तु भारतवर्ष में प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से 15-35 वर्ष के अनपढ़ व्यक्तियों को वह लाभ नहीं मिल पाया जिसकी अपेक्षा की जाती है। इस क्षेत्र में शोध कार्य भी इस स्तर के नहीं हुए जिसके आधार पर प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में मार्ग दर्शन हो सके।

भारत की 80% जनसंख्या गांवों में निवास करती हैं जिसमें लगभग 65.20% जनसंख्या अनपढ़ है। 20% जनसंख्या जो शहरों में है वह प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में गांवों से सम्बद्ध है। कृषि एक महत्वपूर्ण केन्द्र बिन्दु है। कृषि उपज जीवन के लिये अनिवार्य वस्तु है और इस से संबधित 65.20% ग्रामीण जनसंख्या अशिक्षित रहे यह एक विशेष चिन्ता का विषय है। शिक्षा मानव को समृद्धिशाली बनाने में, उन्नति के शिखर में पहुंचाने में विशेष भूमिका निभाती है। यदि भारतवर्ष को अन्य देशों के समकक्ष होना है तो ग्रामीण जनता को शत-प्रतिशत साक्षर करना ही होगा । सन् 1947 में भारतवर्ष के स्वतंत्र होने के उपरान्त प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम, पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से आगे बढ़ा । साक्षरता का प्रतिशत अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि इस दिशा में कुछ कार्य हुआ किन्तु जब ग्रामीण जनता की उपलब्धियों को देखा जाता है, तो सन्तोषजनक स्थिति नहीं दिखायी देती । इसके कारणों का ज्ञान प्राप्त करने के लिये अनुवर्त्ती अध्ययन और सर्वेक्षण की आवश्यकता प्रतीत होती भारत सरकार का यह निर्णय था कि वह 15-35 वर्ष के ग्रामीण व्यक्तियों को सन् 1995 तक पूर्णरूप से साक्षर बनायेगी । इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये उसके द्वारा शिक्षा को पंचवर्षीय योजनाओं में प्राथमिकता की गई और वित्तीय व्यवस्था अन्य मदों में कटौती कर, और अधिक कर दी जाती है। शत-प्रतिशत लक्ष्य को प्राप्त करने के केवल तीन वर्ष ही शेष हैं किन्तु प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से साक्षरता का उपलब्ध प्रतिशत सन्तोषजनक नहीं है। इस कार्यक्रम में जो भी आंकड़े उपलब्ध है उनकी विश्वसनीयता और वैधता पर सहज ही सन्देह उठता है। इसकी पुष्टि प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के सर्वेक्षण से ही हो सकती है।

एक ओर प्रौढ़ शिक्षा में लगे कार्यकर्ता, कर्मचारी, अधिकारी एवं संगठन योजना निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार अग्रसर होने पर सन्तोष व्यक्त कर रहे हैं, दूसरी ओर यह दिखाई पड़ता है, कि हमारे गांव आज भी लगभग 35 वर्ष पूर्व दिशा में ही है। उनके विकास में ग्रामीण जनता के सोचने समझने एवं कार्य करने की विधि अशिक्षित वर्ग जैसी ही देखने को मिलती है। गांव की जनता में अभी भी अन्ध विश्वास, पाखण्ड, संकुचित, वातावरण,

वैमनस्य की भावना, संकीर्ण विचार धारा देखने को मिलती है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि गांवों में अभी भी अंगूठा लगाने वाले व्यक्ति मिलते हैं। ऐसी स्थिति का अवलोकन करने से यह प्रतीत होता है कि प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का सम्यक मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। शोधकर्ता के रूप में, इस दिशा में सर्वेक्षण करने का उद्देश्य रखना सर्वथा उचित ही है। इस वर्तमान समस्या पर प्रस्तुत बिन्दुओं पर शोध करना शोधार्थी का अभीष्ट है। ग्रामीण संरचना के अन्य सामाजिक घटक जाति व्यवस्था, दलवाद, अन्ध विश्वास, संचार की सुविधाओं का अभाव आदि कहां तक प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को प्रभावित कर रही है, साथ ही इस कार्यक्रम में कार्यरत कर्मचारियों, अधिकारियों की प्रतिबद्धता कार्य निष्पादन में कौन से सामाजिक कारक व्यवधान उत्पन्न कर रहे हैं। इसे भी जानना शोध का अभीष्ट है ।

## 10. निरक्षरता एक समस्या

(विश्व, भारत, उत्तर प्रदेश तथा विशेष रूप से बुन्देलखण्ड के सन्दर्भ में)

वर्ष 1987 में विश्व की जनसंख्या पांच अरब हो चुकी थी और इस संख्या में प्रतिवर्ष वृद्धि हो रही है। विश्व में 8 अनपढ़ में 3 भारतीय हैं। जिसमें से दो महिलायें तथा एक पुरूष है। सन् 2001 में विश्व में अनपढ़ एक अरब हो जायेंगे। वर्ष 1991 की जनगणना के आधार पर भारत की जनसंख्या 84 करोड़ 40 लाख (पूर्णांक) हो चुकी हैं जिसका 1/2 भाग अनपढ़ हैं 1991-92 में भारत में 50 करोड़ व्यक्ति अनपढ़ हैं इसमें 28 करोड़ महिलायें तथा 22 करोड़ पुरूष हैं। अनुमान हैं कि यह संख्या सन् 2001 में बढ़कर 52 करोड़ हो जायेगी । इसमें से 35 प्रतिशत महिलायें तथा 65 प्रतिशत पुरूष होंगे ।

जनसंख्या से निरक्षरता दोनों ही वृद्धि हो रही है। भारत की जनसंख्या वृद्धि पिछले एक दशक की इस प्रकार है।

**तालिका - 1.1**

**भारत की जन संख्या** 1 मिलयन = 10 लाख

| जनगणना वर्ष | जनसंख्या | वृद्धि दर |
|---|---|---|
| 1981 योग | महिलायें | - |
| | पुरूष 683,810,051 | - |
| 1991 योग | महिला 40,63,32,932 | (1981-91) |
| | पुरूष 43,75,97,929 | 23.50 प्रतिशत अथवा |
| | 84,39,30,861 | 160.60 मिलियन जनसंख्या वृद्धि । |

जनगणना के अनुसार 1981 में भारत की जनसंख्या 683,810,051 थी जो 1991 में बढ़कर 84,39,20,861 हो गई इस दशक में जनसंख्या 23.50 प्रतिशत वृद्धि हुई । भारत में 1.3.91 को पुरूषों की संख्या 43 करोड़ 75 लाख 97 हजार 929 तथा महिलाओं की संख्या 40 करोड़ 63 लाख 32 हजार 932 थी अर्थात् लिंग भेद अनुपात, प्रति हजार पुरूषों में 920 महिलायें हैं भारत में 52.11 प्रतिशत साक्षर हैं (63.86% प्रतिशत पुरूष तथा 39.42% प्रतिशत महिलायें)।

निरक्षरता उन्मूलन कार्यक्रम के द्वारा एक ओर साक्षरता का प्रतिशत बढ़ तो रहा है। भारत की साक्षरता तालिका इसकी पुष्टि करती है किन्तु दूसरी ओर अनपढ़ व्यक्तियों की संख्या में भी वृद्धि है पिछले दशक में यह वृद्धि 23.50% प्रतिशत आंकी गई ।

वर्ष 1901 से 1991 तक जनगणना के अनुसार भारत में साक्षरता इस प्रकार है ।

## तालिका - 1.2

## भारत में साक्षरता की स्थिति (1901-1991)

1 मिलियन = 10 लाख

| वर्ष | औसत प्रतिशत वृद्धि दर | पुरुष(%) | महिला(%) | अन्य विववरण |
|---|---|---|---|---|
| 1901 | 5.30 | 9.83 | 0.60 | |
| 1911 | 5.92 | 10.56 | 1.05 | |
| 1921 | 7.16 | 12.21 | 1.81 | |
| 1931 | 9.50 | 15.59 | 2.93 | |
| 1941 | 16.10 | 24.90 | 7.30 | |
| 1951 | 16.67 | 24.95 | 7.93 | |
| 1961 | 24.02 | 34.44 | 12.95 | |
| 1971 | 29.45 | 39.45 | 18.69 | |
| 1981 | 36.23 | 46.74 | 24.88 | 301.93 मिलियन निरक्षर (43.56% निरक्षर) 4वर्ष तक के बालकों को सम्मिलित नहीं किया गया । |
| 1991 | 52.11 | 63.86 | 39.42 | 324.03 मिलियन निरक्षर 7 वर्ष तक के बालकों सम्मिलित नहीं है । |

**सन्दर्भ :** वार्षिक पुस्तिका से प्राप्त सूचना ।

**टिप्पणी:** 1) 1981-91 साक्षरता वृद्धिदर 8.55 प्रतिशत रही जबकि इन्ही वर्षों में निरक्षरता वृद्धि दर 7.31 प्रतिशत रही ।

2) न्यूनतम आवश्यक कार्यक्रम (एम0एन0पी0) 1986 शिक्षा नीति से 1995 तक कुछ विकास खण्डों में शतप्रतिशत साक्षरता प्राप्त करने का लक्ष्य है तथा 2001 में सभी विकास खण्डों में शतप्रतिशत साक्षरता का लक्ष्य निर्धारित किया गया है ।

भारत में साक्षर और निरक्षर व्यक्तियों की संख्या वर्ष 1981-91 इस प्रकार रही ।

तालिका - 1.3

**भारत में साक्षर और निरक्षर व्यक्तियों की संख्यां (1981-91)**

1 मिलियन = 10 लाख

| सा0 नि0 | संख्या (10 लाख में) | पुरूष (10 लाख में) | महिला (10लाख में) | साक्षरता वृद्धिदर |
|---|---|---|---|---|
| **साक्षर** | | | | |
| 1981 | 233.94 | 156.95 | 76.99 | (1981-91) |
| | | | | 7 वर्ष से अधिक 8.55% |
| 1991 | 352.08 | 224.29 | 127.79 | 7.49% पुरूष |
| | | | | 9.67% स्त्री |
| प्रतिशत वृद्धि | 50.5 | 42.9 | 66.0 | |
| **निरक्षर** | | | | |
| 1981 | 301.93 | 120.90 | 181.03 | (1981-91) |
| 1991 | 324.03 | 126.69 | 197.34 | 7.31% |
| प्रतिशत वृद्धि | 7.31 | 4.8 | 9.0 | |

**सन्दर्भ :** वार्षिक पुस्तिका 1991

साक्षरता के 90.59 प्रतिशत वृद्धि दर प्राप्त करने का गौरव केरल को होने पर प्राप्त स्थान है जहां कुछ क्षेत्रों शत-प्रतिशत लोग साक्षर हैं। साक्षरता की दृष्टि से सबसे पिछड़ा राज्य बिहार है। यहां साक्षरता का प्रतिशत 38.54 है। इसके बाद राजस्थान का स्थान आता है। जहां

साक्षरता का प्रतिशत 38.91 . है। देश के विभिन्न भागों में अभी भी साक्षरता की स्थिति बहुत दयनीय है।

तालिका - 1.4

**साक्षरता प्रतिशत वृद्धि दर क्रम 1991**

| क्र0सं0 | राज्य/केन्द्रीय टेरीटरी | महिला (%) | पुरूष (%) | योग (%) |
|---|---|---|---|---|
| 1. | केरल | 86.93 | 94.45 | 90.59 |
| 2. | मेजोरम | 78.09 | 87.06 | 81.23 |
| 3. | लंकाद्वीप | 70.88 | 85.48 | 79.23 |
| 4. | चण्डीगढ़ | 73.61 | 85.67 | 78.73 |
| 5. | गोआ | 68.20 | 84.06 | 76.96 |
| 6. | दिल्ली | 68.01 | 83.91 | 76.09 |
| - - | - - | - - | - - | - - |
| 27. | उ0प्र0 | 26.02 | 52.07 | 41.71 |

**सन्दर्भ :** रजिस्ट्रार जनरल भारत 1991 तालिका से स्पष्ट है कि 1991 के आंकड़ों के अनुसार उ0प्र0 के साक्षरता प्रतिशत क्रम में सत्ताइसवां स्थान प्राप्त है। आने वाले वर्षों में इस में सुधार होना आयोजित है। जब उत्तर प्रदेश की साक्षरता प्रतिशत में वृद्धि की बात कही जाती है तो बुन्देल खण्ड प्रभाग में वृद्धि की बात अपने आप आ जाती है।

**उत्तर प्रदेश :**

उत्तर प्रदेश का क्षेत्रफल 294,411 वर्ग कि0 मी0 है तथा 1991 की जन गणना के अनुसार 138, 760,417 (पु0 73, ₹745, 994 तथा म0 65,014,423) जनसंख्या है। जनसंख्या घनत्व 471 वर्ग किमी0 है। और भारत की जनसंख्या का 16.44% भाग है। अर्थात प्रतिशत के हिसाब से प्रथम स्थान है। जनसंख्या का लगभग तीन चौथाई भाग या 8 करोड़ से अधिक लोग निरक्षर हैं। इस समय 11 व्यक्तियों में केवल 3 व्यक्ति साक्षर हैं। प्रदेश में 38.37 प्रतिशत पुरूष और 14.47 प्रतिशत महिलायें निरक्षर हैं । और आयुवर्ग 15-35 के 2 करोड़ से अधिक निरक्षर उ0प्र0

में है। वर्ष 1981 की जनगणना के अनुसार यहां साक्षरता का प्रतिशत 27.38 थी। जिसमें पुरूष 38.76% तथा स्त्री 14.04% साक्षर थे। सन् 1991 की जनगणना अनुसार पुरूष 55.35% तथा स्त्री 26.02% साक्षर थे औसत 41.71% साक्षर नवीनतम सूचनाओं के आधार पर दिनांक 1.4.88 को उ0प्र0 में 15-35 आय वर्ग के अन्तर्गत 205 लाख निरक्षर प्रौढ़ों के अनुमान है कि यदि इसी प्रकार प्रौढ़ शिक्षा का कार्य क्रम चलना रहेगा तो वर्ष 1994-95 में यह संख्या बढ़कर 250 लाख हो जायेगी। शासन ने दूसरी ओर वयवर्ग 15-35 के व्यक्तियों में शतप्रतिशत साक्षरता के प्रसार का लक्ष्य रखा है। इसे समय बद्ध कार्यक्रम, द्वारा पूरा करने का संकल्प है। **"गांव में तीस पढ़ाये एक"** साक्षरता किटें की सहायता से होना है।

उ0प्र0 सरकार द्वारा पंचवर्षीय योजनाओं में शिक्षा पर निम्नलिखित प्रतिशत व्यय किया है इस के बावजूद साक्षरता की स्थित सन्तोषजनक विवरण

**तालिका - 1.5**

**उ0प्र0 में शिक्षा-व्यय प्रतिशत पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विवरण**

| योजना | प्रारम्भिक शिक्षा | माध्यमिक शिक्षा | उच्च शिक्षा | अन्य | योग100% |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम | 70% | 7% | 3% | 20% | 1807 लाख |
| द्वितीय | 59 | 21 | 12 | 8 | 1431 लाख |
| तृतीय | 66 | 17 | 11 | 8 | 4471 लाख |
| चतुर्थ 1974-79 | 67 | 17 | 11 | 5 | 5701 लाख |
| पंचम 1974-79 | 53 | 28 | 14 | 5 | 9404 लाख |
| षष्ठम 1980-85 | 42 | 35 | 14 | 9 | 21483 लाख |
| सातवीं 1985-90 | 66 | 19 | 07 | 8 | 26199 लाख |
| आठवीं 1990-95 | | | | | |

**टिप्पणी:** 1985-90 प्रौढ़ शिक्षा

418.70 रू0 लाख (2%) व्यय हुआ जबकि प्रौढ़ शिक्षा में 1233 लाख (5%) प्रस्तावित किया गया था । शिक्षा का सम्पूर्ण बजट रूपये 1,35,97,595 का 1989-90 के प्रौढ़ शिक्षा आयोजन में .01 लाख समय स्वीकृत थे।

**बुन्देलखण्ड :**

बुन्देलखण्ड अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण प्रदेश का हृदय है। इसका इतिहास अत्यन्त प्राचीन है।

वर्तमान समय में बुन्देलखण्ड में पांच जनपद, जालौन, झांसी, बांदा, ललितपुर और हमीरपुर सम्मिलित है। यह पाचों जनपद देश के पिछड़े जनपदों में सम्मिलित किये गये हैं। बुन्देलखण्ड क्षेत्र को अनुदान सूची में वर्ग **"ए"** तथा **"बी"** रख दिया गया था किन्तु यह अनुदान समय से न मिलने के कारण अपेक्षित सुधार नहीं ला पा रहा। इस अनुदान में 15 लाख रूपये या 75% नकद भुगदान मिलता था । किन्तु 30.9.88 के बाद इस सुविधा को अचानक समाप्त कर दिया गया । इसके समाप्त करने के बाद केन्द्र सरकार ने **"विकास केन्द्र योजना"** प्रस्तावित किया । 1.4.90 के बाद प्रति स्थापित होने वाले उद्योगों के लिये राज्य सरकार के माध्यम से लाभ मिला किन्तु इस योजना से विकास की गति में कोई विशेषा तेजी नहीं दिखाई पड़ती है। विकास के संसाधनों की कमी, जनसंख्या की वृद्धि चिन्ता का विषय बना हुआ है।

साक्षरता तथा जनसंख्या इस प्रकार थी

**तालिका - 1.6**

**बुन्देलखण्ड प्रभाग में साक्षरता प्रतिशत सन् 1981 जनगणना के अनुसार**

**(सांख्यिकीय कलेण्डर 1981-82)**

| क्रम सं0 | जनपद | जनपद(%) | पुरूष | स्त्री (%) | जनसंख्या योग |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | जालौन | 35.95 | 50.16 | 18.96 | 9,87,432 |
| 2. | झांसी | 37.06 | 50.67 | 21.38 | 11,37,714 |
| 3. | बांदा | 23.30 | 35.99 | 8.61 | 15,33,990 |
| 4. | ललितपुर | 21.34 | 31.11 | 9.96 | 5,77,648 |
| 5. | हमीरपुर | 26.31 | 38.94 | 11.57 | 11,94,168 |
| **योग : बुन्देलखण्ड** | | **28.79 औसत** | **41.37 औसत** | **14.09 औसत** | **54,30,952 जनसंख्या** |

नवीनतम सूचना के अनुसार बुन्देलखण्ड की जनसंख्या में 23.58% की वृद्धि हुई है। सन् 1991 की जनगणना के अनुसार बुन्देलखण्ड की जनसंख्या तथा साक्षरता का प्रतिशत निम्नलिखित है ।

**तालिका - 1.7**

**बुन्देलखण्ड प्रभाग में साक्षरता प्रतिशत जनगणना 1991 के अनुसार**

| क्रम सं0 | जनपद | जनपद (%) | पुरूष (%) | महिला (%) | जनसंख्या |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | जालौन | 41.33 | 54.43 | 25.51 | 12,17,021 |
| 2. | झांसी | 42.75 | 55.49 | 27.92 | 14,26,751 |
| 3. | बांदा | 28.74 | 41.59 | 13.47 | 18,51,014 |
| 4. | ललितपुर | 25.36 | 35.82 | 12.97 | 7,48,997 |
| 5. | हमीरपुर | 32.14 | 45.50 | 16.71 | 14,65,401 |
| **योग :** | | **34.06 औसत** | **46.54 औसत** | **16.71 औसत** | **67,09,184** |

**टिप्पणी :** टेन्टेटिव, सन्दर्भ उत्तर प्रदेश, एक दृष्टि 1992 द्वारा आर0 के0 ठुकराल ।

प्रौढ़ शिक्षा के अन्तर्गत बुन्देलखण्ड प्रभाग में आठवीं पंचवर्षीय योजना में केन्द्र तथा राज्य सरकारें क्रमशः 1.35 तथा 2.25 लाख व्यक्तियों को साक्षर बनाने का कार्यक्रम चला रही हैं योजनान्तर्गत शत प्रतिशत साक्षरता प्राप्त करने के लिये राज्य संसाधनों से 4.08 लाख, केन्द्र संसाधनों से 3.25 लाख तथा अन्य संस्थाओं से .50 लाख व्यक्तियों को साक्षर बनाने का लक्ष्य हैं । राज्य कार्यक्रम में सं0 473.60 लाख और केन्द्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत रूपये 482.00 लाख योजनावधि में व्यय होने का अनुमान है । बुन्देलखण्ड में शतप्रतिशत साक्षरता के लिये पांच जनपदों में से एक जनपद अभी तक नहीं लिया गया है। जबकि समीप के फतेहपुर जनपद को इस दायरे में लाया गया है ।

समस्या यह है कि एक ओर तो राज्य एवं केन्द्रीय सरकारें प्रौढ़ शिक्षा पर व्यय कर रही हैं दूसरी और इस धन राशि के आय व्यय होने के संकेत मिलते हैं । समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है कि ललितपुर, हमीरपुर, जनपदों में साक्षर बनाने के स्थान पर पैसा कमाने की होड़ मची है अनुदेशक पर्यवेक्षक तथा परियोजना अधिकारी इसके दोषी हैं। एक ओर प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के ठीक से न चलने की शिकायतें है तो दूसरी ओर प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में लगे व्यक्ति अपने मांगों के प्रति आन्दोलनात्मक रास्ता अपना रहे हैं। सन्दर्भ दैनिक जागरण दिनांक 15.1.91

11. साक्षरता के प्रसार में अनियमितायें आडिट आख्या :

प्रत्येक पंचवर्षीय योजना में भारत सरकार साक्षरता कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने के लिये धान आवंटित करती है किन्तु उस धन का उपयोग मापदण्ड के अनुसार नहीं हो रहा है। भारत सरकार के कन्ट्रोलर जनरल के अनुसार इस कार्यक्रम को पूर्ण सुचारू रूप से नहीं चलाया गया है । उनकी आख्या के प्रमुख बिन्दु इस प्रकार हैं (द टाइम्स आफ इण्डिया दिनांक 16.5.92)

1. ग्रामीण व्यावहारिक शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत 1985-90 में 182 लाख लोग पंजीकृत हुये जिसमें कि 135 लाख लोग शिक्षित हुये। इस रिपोर्ट के अनुसार बहुत से केन्दों में उपस्थिति विश्वसनीय नहीं थी ।

2. काम्पट्रोलर एवं आडीटर जनरल (सी०ए०जी०) के अनुसार प्रशिक्षकों का वेतन लगभग 31 माह तक देरी से दिया गया । कुछ प्रदेशों में कुछ ऐसी भी घटनाओं को दर्ज किया गया जहां कि वेतन दिया ही नहीं गया ।

3. इसके दूसरी तरफ, परियोजना कर्मचारियों तथा प्रशिक्षकों की एडहाक नियुक्ति के बजाय नियमित नियुक्ति की गई । इससे 8 प्रदेशों में लगभग 7.30 करोड़ रूपये का अतिरिक्त खर्च आया ।

   रिपोर्ट के अनुसार पठन-पाठन सामग्री का वितरण 16 प्रदेशों में असंतोष जनका रहा और 19.81 लाख रूपये की सामग्री 1985-90 के बीच खरीदी गई परन्तु केन्द्रों में वितरित नहीं की गई।

4. आख्या में कहा गया है कि 1987-90 के बीच, 14 राज्यों में साक्षरता के बाद तथा सतत् शिक्षा एवं अनुवर्ती कार्यक्रमों जन शिक्षण निलयम, के लिये स्वीकृत किये गये के उसमें 7.23 करोड़ रूपयों का अभी तक

उपयोग नहीं किया गया । रिपोर्ट के अनुसार पांच प्रदेशों में 2.96 करोड़ रूपये खर्च नहीं किये गये । बल्कि उनको बैंकों में राज्य खातों से अलग रखा गया ।

5. 1990 तक 60,000 निलयमों के लक्ष्य के विपरीत सिर्फ 11691 ही स्थापित किये गये 19 प्रदेशों मे जबकि 16351 विलयमों को मार्च 1990 तक संस्तुति दी गई थी। नये साक्षरों की संख्या बहुत से राज्यों में आडिट के लिये उपलब्ध नहीं थी, दो राज्यों में सी0 ए0 जी0 के अनुसार कोई नया पंजीकरण नहीं किया गया ।

6. रिपोर्ट के अनुसार कि 1985-90 के दौरान श्रमिक विद्यापीठ के द्वारा आयोजित किये जाने वाले रोजगार संबंधित कार्यक्रमों की संख्या की कमी आई है। शहरी एवं औद्योगिक मजदूरों एवं उनके परिवारों को दक्ष्य बनाने वाले ये कार्यक्रम अपने लंक्ष्य से 26 से 50 प्रतिशत तक पीछे रह गये ।

7. यह कहा जाता है कि सिर्फ 7.09 करोड़ रूपये ही व्यावहारिकता शिक्षा के बड़े कार्यक्रम में जिसमें कि छात्र स्वयं सेवकों को भी शामिल किया गया, खर्च किये गये, यद्यपि बजट में इस कार्यक्रम के लिये 35 करोड़ रूपये स्वीकृत किये गये थे ।

8. गुजरात की एक स्वयंसेवी संस्था को 17 लाख रूपये मार्च से जुलाई 1988 के बीच दिये गये, परन्तु इसका जिसमें 5-59 लाख लोगों को शिक्षित किया गया, प्रमाणित नहीं हो सका सी0 ए0 जी0 के अनुसार ध्यान देने योग्य यह बात है, कि 136 लाख रूपये फिर से उसी संस्था को और दिये गये जिसने कि बचे हुये 22-96 लाख रूपये वापस नहीं किये। साक्षरता से संबंधित सामान का जिसकी लागत 35.10 लाख है, अभी

तक उपयोग नहीं किया जा सका है ।

9. सी0 ए0 जी0 के अनुसार यद्यपि नेहरू युवा केन्द्र संगठन ने 17000 केन्द्र स्थापित किये इनमें 5.11 लाख अशिक्षित लोग पंजीकृत किये गये जबकि लख्य 16000 केन्द्रों का था, जिसमें कि 5,484 केन्द्र मार्च 31 1989 तक स्थापित किये गये तथा 3540 केन्द्र 1989-90 में स्थापित हुये। सिर्फ 2.66 लाख लोग 1989-90 में पंजीकृत हुये ।

10. रिपोर्ट में यह कहा गया है कि बजट में 24.17 करोड़ रूपये तकनीकी शिक्षा कि लिये 40 जिलों का दिये गये जिसमें से सिर्फ 9.61 करोड़ रूपये खर्च किये गये। इनमें रूपये 5.58 करोड़ रूपये नेहरू युवा केन्द्र संगठन के कार्यों में खर्च किये गये ।

इस प्रकार की विसंगतियां एंव अनियमितताओं के होने के बाव जूद भी निरक्षरता उन्मूलन जैसे राष्ट्रीय हित के कार्यक्रम को आगे बढ़ाना ही होगा । इस कार्यक्रम की विसंगतियों एवं अनियमितताओं को दूर करने उपाय भी ढूंढ़ने होंगे ।

---

सन्दर्भ द टाइम्स आफ इण्डिया दिनांक 16- 5-92 पृ0 5

## द्वितीय अध्याय

**संदर्भित अध्ययन :**

संदर्भित साहित्य का अध्ययन व्यक्ति के योजनाबद्ध शोध परियोजना से संबंधित विचारों तथा कार्यकारण अवलोकन का प्रतिवेदन तथा शोध के प्रतिवेदन के मूल्यांकन, पाठन और स्थापन को निरूपित करता है : -

संबंधित अध्ययनों पर पुनर्विचार के लिये ग्यारह महत्त्वपूर्ण कारणों का उल्लेख किया है : -

(1) साहित्य का पुनर्विचार समाजविज्ञान और मानविकी, प्राकृतिक विज्ञानों तथा भौतिक विज्ञानों में शोध परियोजनाओं का आधार है।

(2) संबंधित साहित्य का पुनर्विचार शोधार्थी को किये गये कीमती अध्ययनों की एक समझ प्रदान करता है।

(3) पुनर्विचार के परिणाम वास्तव में शोध में इस्तेमाल किये गये आंकड़े प्रदान करता है ।

(4) यह हमारी समस्या के क्षेत्र में सीमा प्राप्त करने के साधनों की जानकारी प्राप्त करने के योग्य बनाता है।

(5) साहित्य पर पुनर्विचार गवेषक की अन्तर्दृष्टि विकसित करता है।

(6) पुनर्विचार की महत्ता शोध समस्या को सीमित करती है और इसे भलीभांति परिभाषित करती है ।

(7) साहित्य का पुनर्विचार शोधार्थी को अपनी शोध समस्या को विशिष्ट तथा संक्षिप्त करने की अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है।

(8) साहित्य का पुनर्विचार शोधार्थी को शोध संभावनाओं के प्रति सावधान करने में सहायता कर सकता है।

(9) साहित्य के पुनर्विचार करने की प्रक्रिया में शोधार्थी को उन शोध उपागमों की खोज में जागरूक करता है जो व्यर्थ सिद्ध हो गइ थी ।

(10) साहित्य पर पुनर्विचार अन्य शोधकर्ताओं द्वारा इस्तेमाल उपागमों विषयों, मापों, तथा पद्धतियों में अन्तदृष्टि प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध कराता है ।

(11) विभिन्न शोध अध्ययनों में **"पुनः अध्ययन के लिये सुझाव"** जैसे अध्याय शोधार्थी को शोध समस्यों के परिसीमन और समस्या की उपयोगिता के प्रति मार्गदर्शन करते हैं।

वाल्टर[1] आ० बोर्ग के शब्दों में, **"किसी भी क्षेत्र में साहित्य नींव डालता है जिसके उपर भविष्य का कार्य निर्मित होता है"।**

काटर, वी०[2] गुड के अनुसार "प्रकाशित साहित्य भंडार गृह की चाबी सार्थक समस्याओं के तथा अन्वेषणात्मक उपकल्पनाओं के द्वारा खोल सकती है तथा परिणाम के विश्लेषण के लिये तुलनात्मक आंकड़े, कार्यप्रणाली के चुनाव के लिये वातावरण तथा समस्या की परिभाषा के लिये सहायक रूझान उपलब्ध करा सकते हैं। वास्तव में रचनात्मक और मौलिक होने के लिये

1. बोर्ग, वाल्टर आर० एजूकेशनल रिसर्च- एन इन्ट्रोडक्शन, न्यूयार्क; डेविड मैके कम्पनी, इनक, 1965
2. गुड, कार्टर वी, इन्ट्रोडक्शन टू एजूकेशनल रिसर्च, न्यूयार्क, एप्पलीटन सेन्चुरी, क्राफ्त्स, 1959

प्रत्येक व्यक्ति को विस्तार से पढ़ना चाहिए ।

बुश ने **"सर्वे आफ रिसर्चस इन एजूकेशन"** में प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययनों को 12 विभागों में चित्रित किया है । जो इस प्रकार है ।

1. प्रौढ़ में सीखना
2. सीखने के लिये प्रेरणा
3. आवश्यकता और रूचि
4. सहभाग और सहभागिता
5. कार्यक्रम और कार्यक्रम नियोजन
6. विधियां
7. प्रशासन और प्रबन्धान
8. पढ़ाने की प्रविधियां और माध्यम
9. प्रशिक्षण और प्रौढ़ नेतृत्व
10. सामुदायिक शिक्षा और सामुदायिक विकास
11. पठन-पाठन सामग्री का निर्माण और
12. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों की प्रभावोत्पादकता का पुनर्मूल्यांकन

जिन क्षेत्रों में अब तक अनुसंधान हुये है वे हैं ।

1. ऐतिहासिक तथा विकासात्मक पृष्ठभूमि
2. विकास सम्बन्धी प्रयत्नों के साथ प्रौढ़ शिक्षा का सम्बन्ध
3. प्रौढ़ अधिगम
4. कार्यक्रम संगठन एवं मूल्यांकन
5. साक्षरता एवं उत्तर साक्षरता विषयक सामग्री
6. अनुदेशन विषयक विधियां

(अ) **भारत के बाहर किये गये अध्ययन :**

पश्चिमी लोकतंत्रों ने जो कि मुख्यत: प्रकृति से उदारवादी तथा पूंजीवादी है, आर्थिक विकास के स्तर को प्राप्त कर लिया है। वहां निरक्षरता के रूप में प्रौढ़ शिक्षा की समस्या नहीं है उनके लिये व्यावसायिक अवसरों में सुधार, वैज्ञानिक, प्राविधिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों में विभिन्न नवीनतम विकासों का पुनर्नवीनीकरण आदि मौलिक विषय है। यद्यपि आजकल यू०एस०ए०, यू० के०, फ्रांस, कनाडा, आदि में बेरोजगारी आदि की समस्यायें हैं किन्तु ये समस्यायें विकासशील देशों जैसे कि भारत आदि की तुलना में उतनी नहीं है ।

सामाजिक आर्थिक विकास तथा सरकारी प्रयासों को ध्यान में रखते हुऐ पंडित[1] ने यू०एस०एस०आर०, चीन, डेनमार्क, तथा भारत में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों का अध्ययन किया । पंडित के अनुसार प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के दर्शन, इतिहास संस्कृति और भावी आर्थिक उद्देश्यों का अध्ययन करके एक विशाल शोध को लिखा जा सकता है ।

**प्रौढ़ शिक्षा – सोवियत संघ और क्यूबा :**

निरक्षरता की समस्या केवल भारत की ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व की समस्या है । हर राष्ट्र अपने निरक्षर नागरिकों को साक्षर बनाने की दिशा में व्यापक प्रयास कर रहें है। और राष्ट्रीय व्यय का अधिकांश भाग शिक्षा प्रचार पर खर्च कर रहे हैं। इस क्षेत्र में सोवियत संघ का निरक्षरता उन्मूलन अभियान विश्व के लिये प्रेरणादायक है क्योंकि सोवियत संघ में जहां सन् 1920 में निरक्षरता प्रतिशत 75 प्रतिशत थी वहां 1941 में नगण्य हो गई। इसी प्रकार का प्रयास क्यूबा में भी किया गया और उन्हें सफलता भी मिली क्यूबा में जहां 17.09 प्रतिशत निरक्षरता थी वहां 5 वर्षों में घटकर 3 प्रतिशत रह गई। प्राय: सभी विकासशाली देश प्रौढ़ शिक्षा की अनिवार्यता को समझ रहे हैं। दक्षिण अमरीका, अफ्रीका और एशिया के विभिन्न देश प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम को सफल बनाने में संलग्न है। ईरान, ब्राजील और इण्डोनेशिया जैसे देशों ने भी इस दिशा में अत्यधिक प्रगति की

1. पंडित के०एल०, "एडल्ट एजूकेशन प्रोग्राम – ए कम्पैरेटिव स्टडी आफ डिफरेन्ट एप्रोचेज, कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी, लेक्चर सीरीज, 1980 मेमोग्रैफ्ड ।
2. पूर्व उदघृत ।

(ब) **भारत में हुये अध्ययन :**

भारत में निम्नलिखित संस्थाओं/संगठनों ने प्रौढ़ शिक्षा विषयक अनुसंधानों में रूचि ली है।

1. गुजराज विद्यापीठ
2. कौंसिल फार सोशियल डेवलपमेन्ट
3. सेन्टर फार एडवांस्ड स्टडीज इन एजूकेशन, बड़ौदा।
4. प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, दिल्ली ।
5. अखिल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, दिल्ली।
6. साक्षरता निकेतन, लखनऊ ।
7. अनौपचारिक शिक्षा निदेशालय, दिल्ली ।
8. विश्व विद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली ।
9. लेबर रिलेशन इन्स्टट्यिूट, बिहार ।
10. टाटा इन्स्टीट्यूट आफ सोसल साइन्सेज, बम्बई ।
11. पन्त इन्स्टीटयूट आफ शोसल साइन्सेज इलाहाबाद ।

इसके अतिरिक्त कुछ शोध कर्ताओं ने पी0एच0डी0 उपाधि हेतु प्रौढ़ शिक्षा पर कार्य किया है। इनका उल्लेख शोधकर्ता ने आगे किया है। शोध कर्ता की भी रूचि इस क्षेत्र में होने के कारण शोधार्थी भी इस पंक्ति में है ।

**भारत में हुये शोध ।**

**साहित्य का सर्वेक्षण :**

सामाजिक शोध के क्षेत्र में प्रौढ़ शिक्षा अभी तक शोध साहित्य की एक विचारणीय आधार शिला के रूप में अभी तक प्रतिस्थापित नहीं हो पाया अधिकतर शोध स्थानीय सर्वेक्षणों पर आधारित हैं। ऐतिहासिक अध्ययन लगभग नगण्य हैं। कुछ अध्ययन प्रौढ़ शिक्षा के इतिहास से संबंधित हैं। लेकिन वे किसी एक विशेष क्षेत्र तक ही सीमित हैं। उदाहरणार्थ मोहिसिनी का प्रौढ़ व सामुदायिक शिक्षा पर कार्य, मुख्य रूप से, जामिया मिलिया की

1917 की क्रांति के समय, जहां तक निरक्षरता की समस्या का संबंध है, यू0एस0एस0आर0 अन्य यूरोपी देशों में सर्वाधिक पिछड़ा था 9 वर्ष की आयु के ऊपर लगभग 74 प्रतिशत जनता निरक्षर थी। किन्तु 1917 से निरक्षरता को दूर करने के कार्य किये गये निरक्षरता की समाप्ति हेतु जुलाई 1920 में आल रशा एक्स्ट्रा आर्डिनरी कमीशन की स्थापना की गई। पुनः 1923 में"डाउन विथ इलिट्रेसी" नामक एक समूह संस्था की स्थापना की गई। साक्षरता आन्दोलन द्वारा किये गये परिणामों के फलस्वरूप 1939 सम्पूर्ण देश व्यापी जनगणना से ज्ञात हुआ कि देश ने साक्षरता का 89 पतिशत प्राप्त कर लिया है ।

100% साक्षरता प्राप्त करने हेतु एक नई संस्था, "रैबफैक्स" बनी। यह सैकेन्डरी स्कूलों का ही एक प्रकार था जो कि कार्यरत व्यक्तियों के प्रयासों से विश्वविद्यालयीय स्तर पर स्थापित किया गया । जिसका उद्देश्य नवयुवकों व नवयुवतियों का उच्च कक्षाओं में प्रवेश के लिये तैयार करना था और यहां के शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों ने 1966-67 तक सम्पूर्ण जनसंख्या के एक तिहाई भाग ने विभिन्न प्रकार के शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश ले लिया था ।

**डेनमार्क में प्रौढ़ शिक्षा :**

डेनिश लोक हाई स्कूल विश्व में पुरातन शैक्षिक परम्परायें है। डेनमार्क में प्रौढ़ शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मशीनी कुशलता या साक्षर कुशलता या तक सीमित रखने की अपेक्षा व्यक्तियों को शिक्षित करना है।

डेनिश लोक स्कूल, जो कि एक शताब्दी पुराने हैं, एक ऐसी शक्ति के रूप में जाने जाते हैं उन्होने डेनिश संसदीय लोकतंत्र, कृषि सहकारिता आन्दोलन तथा ट्रेड यूनियनों तक को प्रभावित किया है। लोक हाई स्कूल का योगदान डेनिश अर्थ-व्यवस्था में भी प्रभावशाली है ।

डेनमार्क में अब साक्षरता की समस्या नहीं है। वहां पर प्रौढ़ शिक्षा सफल रही क्योंकि लोक से ही लोक हाई स्कूल का विचार उत्पन्न हुआ ।

**चीन में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम :**

चीन में समूह शिक्षा कार्यक्रम को बढ़ाने का श्रेय वाई०एम०सी०ए० ( YMCA ) को है जिसने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान फ्रांस में चीनी श्रमिकों के लिये साक्षरता कक्षायें प्रारंभ की। इसके पश्चात् उसी कार्यकारी समूह ने चीन में कार्य किया और 1923 में समूह शिक्षा की राष्ट्रीय समिति को बनाया 1922 में माओ–त्से–तुंग ने हुनान में एक उसी प्रकार के आन्दोलन की शुरूआत की। माओ–त्से–तुंग के सह कार्यकर्ताओं द्वारा चलाया गया आन्दोलन था **"पति–पत्नी को पढ़ाये और पुत्र पढ़ाये पिता को"**।

निरक्षरता को समाप्त करने के लिये 1950 के पश्चात् प्रयास किये गये जब यह अनुभव किया गया कि श्रमिक समूहों के प्राविधिक स्तर तथा राजनीतिक शिक्षा को बढ़ाने में रिक्त समय शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन होगी।

जांबिया में कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम 1969 में प्रारंभ हुआ था । उक्त परियोजना कार्य आधारित थी। वहां किसान औसतन एक एकड़ में पांच बोरे मक्का पैदा करता था । मक्का को ही साक्षरता के लिये केन्द्रीय विषय बनाया गया । मक्का की उत्पादन विधियों आदि की जानकारी साक्षरता के माध्यम से की गई। केन्द्र (कक्षा ) में सैद्धान्तिक जानकारियाँ देने के बाद शिक्षार्थियों से उन्हें व्यवहार में लाने के लिये कहा गया । पढ़ना लिखना सिखाने के लिये 16 महीनों का समय रखा गया था । जिन शिक्षार्थियों ने उक्त कोर्स पूरा कर लिया उन्हें 4000 मीटर मक्का के खेत के लिये बीज, खाद और कीटाणु निरोधक सामग्री दी गई। 1972 में फसल आने के बाद देखा गया कि उन शिक्षार्थियों ने प्रति हे० औसतन 15 बोरे मक्का पैदा की जो पहले से 300 प्रतिशत अधिक थी[1] ।

---

1. **"प्रौढ़ शिक्षा:** वर्ष:35 अंक 12 मार्च 1992 पृ0 22

कार्य प्रणाली, वृद्धि तथा भारत में प्रौढ़ शिक्षा आन्दोलन में इसके स्थान के वर्णन को प्रदर्शित करता है ।

1964-66 में शिक्षा आयोग की रिपोर्ट **"शिक्षा और राष्ट्रीय विकास"** शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित हुई। जो कि भारत के शैक्षिक इतिहास में एक नया मोड़ था । जे० पी० नायक ने अपनी पुस्तक **"द एजूकेशन कमीशन एण्ड आफ्टर"** में शिक्षा आयोग की संस्तुतियों के क्रियान्वयन को विस्तारपूर्वक विश्लेषित किया है ।

---

### प्रौढ़ शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

"इतिहास मानव प्रयासों का एक अर्थपूर्ण दस्तावेज है। यह केवल घटनाओं के तिथिवार अंकन की सूची ही नहीं है, बल्कि स्थानों, कालों, घटनाओं तथा व्यक्तियों के बीच संबंधों का एक एकीकृत सत्य संग्रह है। हम अतीत को समझने के लिये इतिहास का उपयोग करते हैं तथा वर्तमान को अतीत की घटनाओं तथा विकास के परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास करते हैं"।

जे0 डब्लू0 वेस्ट

### स्वतंत्रता से पूर्व भारत में प्रौढ़ शिक्षा :

भारत में प्रौढ़ शिक्षा की परम्परा उतनी ही प्राचीन है जितनी सभ्यता। भारत में प्रौढ़ शिक्षा की परम्परा एवं विरासत को विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं, जैसे **"कथाकार"** रामलीला, भागवत, कीर्तन, रंगमंच, और ग्रामीण बाजारों, द्वारा अपने परम्परात्मक मूल्यों और ज्ञान संजाया गया है। ये संस्थायें राज्य की सम्पत्ति के अधीन नहीं थी। यह केवल ब्रिट्रिश काल रहा जबकि हम पाते हैं कि प्रौढ़ शिक्षा धीरे-धीरे राज्य नीति बन गई ।

सर्वप्रथम साक्षरता के विषय में आंकड़े विलियम एडम के प्रतिवेदन से प्राप्त होते हैं । बंगाल और बिहार के कुछ शहरी व ग्रामीण इलाकों के निर्देशन सर्वेक्षण के आधार पर 1986-37 में एडम ने भारत में साक्षरता को 6% पाया ।

फाडनीस के अनुसार 1844 में लार्ड हार्डिंग ने निश्चय किया

---

1. फाडनीस, यू0 एन0 "एडल्ट एजूकेशन मूवमेन्ट इन इण्डिया" इण्डियन जरनल आफ एडल्ट एजूकेशन वा xx, नं0 4, दिसम्बर 1959 पृ 22

कि "सर्वाधिक निम्न पद के चयन मे उस व्यक्ति को वरीयता दी जायेगी। कि जो निरक्षार व्यक्ति की अपेक्षा कुछ पढ़ लिख सकता है"। किन्तु 1854 में कम्पनी ने देश में एक शिक्षा व्यवस्था के विकास की ओर कदम उठाया। 1860 तक प्रौढ़ जनसंख्या के एक वर्ग ने अपने को अत्यधिक असमर्थ पाया और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये प्रौढ़ों के लिये रात्रि विद्यालय प्रारंभ किये गये ।

1917 तक ब्रिटिश शासकों ने प्रौढ़ों की शिक्षा की ओर बहुत कम ध्यान दिया । औद्योगिक क्रान्ति के दौरान इंग्लैंड में खुले भारतीय प्रान्त में रात्रि विद्यालयों को अनुदान देने के लिये कुछ आर्थिक सुविधायें दी गई ।

भारतीय शिक्षा आयोग (1881-83) ने सूचित किया कि बम्बई में 134 रात्रि विद्यालय हैं जिसमें 3.919 लोग हैं। बंगाल में 1,000 से भी अधिक रात्रि विद्यालय थे तथा मद्रास में 291। इस आयोग ने समस्त प्रान्तों में इस कार्यक्रम के विस्तार को अत्यधिक मजबूती से अनुमोदित किया।

रात्रि विद्यालयों के कार्यक्रम ने बहुत सारी बाधाओं का सामना किया तथा योजना में भी एकरूपता नहीं थी। यह कथन नीचे दिये गये आंकड़ों से और स्पष्ट हो जाता है ।

**तालिका - 2.1**

**1896-1917 की अवधि में रात्रि विद्यालयों की स्थिति**

| प्रान्त | विद्यालय | | | शिक्षार्थी | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1896-97 | 1901-02 | 1916-17 | 1896-97 | 1901-02 | 1916-17 |
| मद्रास | 1,437 | 775 | 707 | 25,424 | 14,212 | 17,606 |
| बम्बई | 239 | 100 | 111 | 5,408 | 2.380 | 3,197 |
| बंगाल | 1,587 | 1,082 | 886 | अप्राप्त | 19,516 | 18,563 |

**स्त्रोतः** ए हिस्ट्री आफ एजूकेशन इन इण्डिया, द्वारा एस0 नुरूल्ला और जे0पी0 नायक, मैकमिलन एण्ड कम्पनी, लिमि0 1951 पृ 814

एक महत्त्वपूर्ण प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रम का प्रारंभ 1851-1868 की अवधि में मैसूर में राज्य के दीवान श्री एम0 विश्वेश्वरय्या द्वारा किया गया। लगभग साठ से सत्तर हजार साक्षरता कक्षायें चलीं। दूसरा महत्त्वपूर्ण कदम था 1851 से 1868 की अवधि में जेल-विद्यालयों के अभ्युदय का विचार डा0 वाकर द्वारा जेल विद्यालयों से संबंधित निम्नांकित सारिणी जेल कक्षाओं और इसमें नामांकन की स्थिति को दर्शाती है : -

तालिका - 2.2

**1851-1868 की अवधि में जेल विद्यालयों की स्थिति**

| जेल का नाम | वर्ष | स्कूलों की संख्या | नामांकित संख्या |
|---|---|---|---|
| आगरा जेल | 1851 | 1 | 2,000 |
| बाम्बे जेलों में | 1877-78 | 21 | 1,257 |
| बाम्बे जेलों में | 1884-85 | 29 | 1,126 |
| सी0 पी0 | 1963-68 | 22 | 4,000 |

**स्त्रोतः** एडल्ट एजूकेशन इन इण्डिया, सम्पादित ए0 बोर्डिया तथा अन्य, नचिकेता पब्लिकेशन्स लिमिटेड, जे0 टाटा रोड बाम्बे, कापीराइट इडियन एडल्ट एजूकेशन एसोसियेशन, 1973, पृ0 13

1918 से 36 अवधि में सहकारिता आन्दोलन ने प्रौढ़ साक्षरता कक्षाओं को वृद्धि के लिये मजबूत आधार का काम किया । वर्ष 1919 में गांधीजी ने एक कार्यक्रम चलाया जो कि एक बड़े जनसमूह में फैल गया । इसके अतिरिक्त प्रथम विश्वयुद्ध के अनुभवों सहित बहुत सारे जवान घरों को

लौटे थे, उनके सहयोग का अभूतपूर्व परिणाम यह हुआ कि जन समूह में जागरूकता का एक नया स्तर उठा। परिणामस्वरूप प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों में तेजी आई तथा एक विशाल जन समूह उसके चारों ओर क्या हो रहा है यह समझने की योग्यता को अर्जित करने के लिये उत्सुक हुआ । 1920 में कविन्द्र टौगोर ने बंगाल ने शान्तिनिकेतन में सांस्कृतिक विषयों तथा ग्रामीण पुनर्निर्माण में कुछ प्रौढ़ों को प्रशिक्षण देना प्रारंभ किया । इसका अनुसरण पंजाब में सार्थक कार्यों द्वारा किया गया जहां 1925-26 में 3,206 प्रौढ़ साक्षरता कक्षायें थीं जिसमें 85,371 विद्यार्थी थे तथा उनमें से 58,800 कृषक थे। भारत में रायल कृषि आयोग की रिपोर्ट से ज्ञात होने वाली (1928 पृ 529) विभिन्न प्रान्तों में स्थिति निम्नांकित सारिणी में देखी जा सकती है ।

तालिका - 2.3

**1927-1937 की अवधि में विद्यार्थियों सहित प्रौढ़ साक्षरता की स्थिति**

| प्रान्त | विभिन्न वर्षों में संस्थाओं की संख्या | | विद्यार्थियों की संख्या | |
|---|---|---|---|---|
| | 1927 | 1937 | 1927 | 1937 |
| मद्रास | 5,637 | 586 | 1,51,691 | 22,420 |
| बम्बई | 202 | 180 | 7,178 | 6,299 |
| बंगाल | 1,520 | 712 | 30,873 | 13,963 |
| संयुक्त प्रान्त | 26 | 286 | 723 | 8.136 |
| पंजाब | 3,786 | 191 | 98,467 | 4,988 |
| योग | 11,171 | 1,955 | 2,88,932 | 55,806 |

**स्त्रोत:** नूरूल्ला और नायक, पूर्वोवत, पृ 744, 745

चेतसिंह की सूचना के अनुसार श्री सनिवाशप्पु सुभा राव ने 1929 में टाउेप्लेगुडम में ग्रामीण पुनर्निमाण की नींव डाली तथा राजा मुन्डरी में 1931 में तथा 1937 मे आन्ध्र प्रदेश प्रौढ़ शिक्षा कमेटी को प्रारंभ किया प्रोफेसर एन0 जी0 रंगा उनसे तथा उनके कार्यों से बहुत प्रभावित हुये तथा

उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र तथा व्यापकता को देखते हुये, भारत लौटने पर 1900 में उनके पितामह द्वारा बनाये गये ट्रस्ट को भारी अनुदान देकर राम नीड़ प्रौढ़ शिक्षा संस्थान, जिसका नाम उनके बाबा के नाम पर था, तथा रंगा पुस्तकालय जो उनके नाम पर था, खोला । दोनों ही संस्थान तथा पुस्तकालय का उद्घाटन 23 दिसम्बर 1933 को महात्मा गांधी द्वारा किया गया था ।

सेन्ट्रल एड वाइसरी बोर्ड आफ एजूकेशन (CABE) ने 1938 में अपनी चतुर्थ सभा में बिहार के तत्कालीन शिक्षामंत्री डा० सैय्यद महमूद की अध्यक्षता में गठित कमेटी ने साक्षरता के महत्त्व, साक्षरता शिक्षकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता, प्रौढ़ों की अभिप्रेरणा, दृश्य, श्रव्य साधनों के उपयोग तथा सातत्य शिक्षा पर बल दिया । कमेटी ने विभिन्न राज्यों बिहार, बम्बई, मैसूर तथा दिल्ली में प्रौढ़ शिक्षा की वर्तमान स्थिति पर बहुत अच्छे सांख्यिकीय चित्र प्रस्तुत किये। डा० फ्रैंक लिखते हैं। "बिहार प्रौढ़ शिक्षा पर आधुनिक समय में भारत में चलाये गये सर्वाधिक सरकारी प्रयत्न चल रहे हैं। उनका (डा० फ्रैंक) **"ईचवन टीचवन"** का लोकप्रिय नारा उत्तर भारत में एक हिन्दुस्तानी नारे के समकक्ष "पढ़ो और पढ़ाओं" को स्वीकार करने के लिये उठा ।

प्रथम अखिल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा सम्मेलन 1938 में स्व० शाह सुलेमान की अध्यक्षता में 1938 में प्राचीन वाइसरगेल लाज में हुआ ।

द्वितीय सम्मेलन सर रूस्तम मसानी की चेयरमैनशिप में 1939 में बिहार में हुई, इसमें कमेटी की संस्तुतियों को स्वीकार किया गया तथा उसी वर्ष इण्डियन एडल्ट एजूकेशन एसोसियेशन की नींव रखी गई। तब

---

1. चेतसिंह आर० एम० अरली हिस्ट्री आफ एडल्ट एजूकेशन इन इण्डिया, इण्डियन जरनल आफ एडल्ट एजूकेशन वा० XXXI, नं० 10 अक्टूबर 1970 पृ० 4
2. फ्रैंक, सी, लाबाक, इण्डिया शैल बी० लिट्रेट, 1940.

तब से कार्यकर्ताओं के लिये यह एक मंच बन गया तथा उसने प्रौढ़ शिक्षा की भूमिका की गहरी जागरूकता को विकसित करने में सहयोग दिया ।

1931 में ही रनजीति एम0 चेतसिंह का ध्यान द इण्डियन जरनल आफ एडल्ट आफ एडल्ट एजूकेशन को निकालने में गया। समय-समय पर अखिल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा सम्मेलन इसके तीव्र विकास तथा बाधाओं की चर्चा के लिये होते रहें। 1947 में रीवां में पंचम अखिल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा कमेटी मिलाप हुआ तथा यह स्वतन्त्राता से पूर्व का अन्तिम सम्मेलन था ।

**स्वतन्त्राता प्राप्ति के पश्चात् भारत में प्रौढ़ शिक्षा :**

स्वतन्त्राता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्रीय सरकार ने एक विशाल निरक्षर जनसमूह को शिक्षा देने तथा देश में चलाये जा रहे विकास कार्यक्रमों में सक्रिय तथा सार्थक रूप से सहभागी बनाने की आवश्यकता का अनुभव किया 1948 में सेन्ट्रल एडवाइजरी बोर्ड आफ एजूकेशन ने प्रौढ़ शिक्षा में रिपोर्ट के लिये एम0एल0 सक्सेना की चेयनमैनशिप में एक उप-कमेटी नियुक्त की। कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार साक्षरता तथा सामान्य शिक्षा दोनों ही प्रौढ़ शिक्षा के आवश्यक तत्व हैं। सामान्य शिक्षा की इस अवधारणा का विकास तत्कालीन शिक्षा मंत्री अबुल कलाम आजाद द्वारा किया गया । भारत सरकार ने इसे **"समाज शिक्षा"** कहा । सेन्ट्रल एडवाइजरी बोर्ड आफ एजूकेशन ने इलाहाबाद में 1949 में आयोजित 15वीं सभा में साक्षरता विस्तार, सामान्य शिक्षा, नेतृत्व प्रशिक्षण, सामाजिक चेतना को भी समाज शिक्षा में जोड़ा । भारत सरकार ने समाज शिक्षा कार्यक्रम को चलाने के लिये 1950 में विभिन्न प्रान्तों में 60 लाख रूपये वितरित किये ।

सामुदायिक विकास के अभ्युदय के पश्चात समाज शिक्षा का कार्यक्रम विशेष विस्तार सेवा के रूप में होने के बजाय सामुदायिक विकास की प्रक्रिया से जुड़ गया । सामुदायिक केन्द्रों, युवा क्लबों और महिला मंडलों

ने साक्षरता कक्षाओं सहित घरेलू कलाओं पर आधारित, पोषण स्वास्थ्य आदि से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों का संगठन किया सामुदायिक शिक्षार्थि व शिक्षकों को शिक्षा देने के लिए आधुनिक संचार साधनों रेडियो, चलचित्रों तथा पारंपरिक साधनों जैसे प्रर्दशनी, कठपुतली नाम ग्रामीण रंगमंचों आदि पर जोर दिया गया । इस प्रकार समाज शिक्षा के क्षेत्र में हुये विकास को विभिन्न योजना अवधियों द्वारा देखा जा सकता है।

**प्रथम पंचवर्षीय योजना अवधि(अपैल 1951 मार्च 1956)**

प्रथम पंचवर्षीय योजना का प्रारंभ अप्रैल 1951 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू द्वारा किया गया। प्रथम योजना के अंतर्गत ग्रामीण साक्षरों तथा ग्राम्य स्तरीय कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिये अनेकों समाज शिक्षा प्रशिक्षण शिविर लगाये गये। प्रथम योजना के दौरान समाज शिक्षा का कार्यक्रम केन्द्र व राज्य सरकार दोनों का संयुक्त उत्तरदायित्व था। केन्द्रीय स्तर पर शिक्षा मंत्री तथा सामुदायिक विकास मंत्री द्वारा उत्त्तरदायित्व बांट लिया गया ।जो कुछ राशि सामुदायिक विकास बजट में रखी गयी थी उसको हटाकर समाजशिक्षा के लिये प्रथम पंचवर्षीय योजना में प्रावधान 5 लाख रूपया था। यह राशि साक्षरता केन्द्रों, सामुदायिक केन्द्रों पुस्तकालयों तथा जनता कालेजों के बीच बांटी गयी। 1951 से 56 के बीच राज्य शिक्षा विभागों द्वारा चलायी जा रही प्रौढ़ साक्षरता कक्षाओं में 55,00,000 प्रौढ़ों ने साक्षरता प्राप्त की।[1]

**द्वितीय पंचवर्षीय योजना अवधि (अप्रैल 1956 मार्च 1961) :**

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में समाज शिक्षा योजना के लिये 5 करोड़ रूपये का प्रावधान की पुनरावृत्ति की। सामुदायिक विकास कार्यक्रमों के अन्तर्गत

---

1.(रिपोर्ट आन सोशल एजूकेशन, कमेटी आन प्लान प्रोजेक्टस, गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया 1963, पृ0 7)

10 करोड़ रू0 इसके लिये उपलब्ध करायेंगये। शिक्षा मंत्रालय द्वारा ली गई योजना तथा उस पर किये गये व्यय का विवरण निम्नांकित तालिका में प्रस्तुत है।

**तालिका - 2.4**

**प्रौढ़ शिक्षा के मदों पर व्यय (रू0 लाख में)**

| क्रम0सं0 | मद | प्रावधान | व्यय |
|---|---|---|---|
| 1. | नेशनल फन्डामेन्टल एजूकेशन सेन्टर्स | 7.60 | 7.01 |
| 2. | प्रोडक्शन आफ लिट्रेचर फार निओ-लिट्रेट्स | 16.00 | 11.79 |
| 3. | स्वैच्छिक संगठनों को सहायता | 26.00 | 25.12 |
| 4. | पुस्तकालय विान संस्थान | 3.00 | 1.28 |
| 5. | श्रमिक शिक्षा संस्थान | 1.86 | 0.34 |
| 6. | नेशनल बुक ट्रस्ट | 8.00 | 4.12 |
| 7. | समाजिक शिक्षा श्रमिकों हेतु साहित्य का निर्माण | 0.10 | 0.10 |
| | **योग** | 62.50 | 49.76 |

**स्रोत :** रिपोर्ट आन सोशल एजूकेशन, कमेटी आन प्लान प्रोजेक्टस, भारत सरकार 1963 पृ0 19.

द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्ततक 3137 सामुदायिक विकास खण्ड थे इन खण्डों में समाजशिक्षा के क्षेत्र में उपलब्धियों पर पुनर्विचार करने पर ज्ञात होता है कि द्वितीय योजना के दौरान सामुदायिक विकास विभाग द्वारा 9,85,00,000 रू0 का व्यय हुआ था और 1,62,000 साक्षरता केन्द्र प्रारंभ किये गये तथा विभागों की रिपोर्टों के अनुसार उनमें 40,00,000 प्रौढ़ साक्षर किये गये।[1]

1. बोर्डिया ए. तथा अन्य पूर्वोक्त, 1973, पृ0 30.

तृतीय पंचवर्षीय योजना अवधि (अप्रैल 1961- मार्च 1966):

यद्यपि समाज शिक्षा कार्यक्रम को बुद्धिमत्ता पूर्ण लिया गया तथा गंभीरता से समझा गया किन्तु साक्षरता को प्रौढ़ों के कार्यात्मक प्रशिक्षण के साथ समन्वित नहीं किया गया । इसलिये समाज शिक्षा तथा अन्य विकासात्मक प्रक्रियाओं के बीच समन्वय को कभी भी व्यावहारिक रूप में स्थापित नहीं किया जा सका। द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं से समाज शिक्षा के लिये आर्थिक प्रावधान खत्म होने लगे तथा तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त के पहले समाज शिक्षा कार्यक्रम पूरी तरह समाप्त हो गया ।

तृतीय योजना अवधि में सर्वाधिक सार्थक विशेषता यह थी। कि समाज शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत साक्षरता को सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक के रूप में लिया गया । योजना के प्रथम दशक में ही साक्षरता 17 प्रतिशत से 24 प्रतिशत हो गयी । तृतीय पंचवर्षीय योजना में लगभग 25,00,00,000 रू0 का कुल व्यय का प्राविधान किया गया । जिसमें केन्द्र पर 0.92, करोड़ रू0 तथा राज्यों में 5,40,00,000 रू0 और सामुदायिक विकास कार्यक्रमों के अन्तर्गत लगभग 1,90,00,000 रू0 का प्राविधान किया गया था । किन्तु चीनी आक्रमण के कारण तीसरी योजना की राशि में कटौती की गई। देश की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुये विकास योजनाओं को गौण महत्व दिया गया भारत सरकार ने राज्य सरकारों को समाज शिक्षा के लिये कोष देने की असमर्थता के विषय में सूचित किया । कृषि उत्पादन और रक्षा की आवश्यकताओं को प्रमुख वरीयता दी गई। दूसरी ओर राज्य सरकारें भी प्रौढ़ साक्षरता के किसी वृहद कार्यक्रमों की संसाधनों को पाने में असमर्थ रहीं ।[1]

---

महाराष्ट्र के सतारा जिले में 1959 को "ग्राम शिक्षण मोहिम" नाम का आन्दोलन संगठित किया गया।[1] 1963 तक यह उस राज्य के सभी जिलों में फैल गया। प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सारी स्वैच्छिक संस्थायें भी कार्यरत थीं। उनमें से प्रमुख संगठन मैसूर राज्य प्रौढ़ शिक्षा परिषद, बम्बई शहर समाज शिक्षा कमेटी, बंगाल समाज सेवा लीग, भारतीय गिरिजाधर परिषद, रामकृष्ण मिशन और साक्षरता निकेतन थे।

**तीन वार्षिक योजना अवधियां (अप्रैल 1966 – मार्च 1960, अप्रैल 1967–मार्च 1968 और अप्रैल 1968 – मार्च 1969) :**

चीनी आक्रमण के कारण तृतीय योजना अवधि में भारत सरकार चतुर्थ पंचवर्षीय योजना की रूप रेखा नहीं बना सकी। इसलिये तीन वर्षों के लिये वार्षिक योजनायें बनाई गई। इस अवधि में प्रौढ़ शिक्षा के लिये कुल कोष 2.1 करोड़ था। इस अवधि के दौरान प्रौढ़ शिक्षा का प्रमुख **बिन्दु कृषक कार्यात्मक साक्षरता परियोजना** थी जिसे 1968 में भारत सरकार द्वारा चलाया गया। यह शिक्षा को विकास से जोड़ने के लिये विशेष रूप से उत्पादन बढ़ाने के लिये एक प्रयास था। परियोजना कृषि मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय तथा सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय का संयुक्त उद्यम थी। यह तीन तत्वों – कृषक प्रशिक्षण, कार्यात्मक साक्षरता और कृषि प्रसारण की एक समन्वित परियोजना थी।

**चतुर्थ पंचवर्षीय योजना अवधि – अप्रैल, 1969– मार्च 1974 :**

कृषक कार्यात्मक साक्षरता परियोजना तीन प्रदेशों पंजाब, उत्तर प्रदेश, और मैसूर के तदन जिलों में प्रारंभ की गयी थी। 1968–69 में 7 जिलों में और 1969–70 में 15 में इसका विस्तार किया गया। 1970–71

---

1. पाटिल आर० बी० ग्राम शिक्षण मोहिम विन्स यूनेस्को प्राइज, 1973 पूना, महाराष्ट्र।

में 35 अन्य जिले इस परियोजना में सम्मिलित किये गये ।[5] चतुर्थ योजना अवधि के दौरान देश में 20 करोड़ रू0 की योजना की रूपरेखा के तहत एक करोड़ कृषकों को लाभान्वित करना था । यह कार्यक्रम केवल 8 करोड़ रू0 उपयोग कर सका और केवल 3 लाख कृषक लाभान्वित किये गये।[2] इस अवधि के दौरान एक महत्वपूर्ण विशेषता मई 1970 में प्रौढ़ शिक्षा के राष्ट्रीय बोर्ड की स्थापना। बोर्ड का उद्देश्य प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम अस ओर तो केन्द्रीय सरकार और विभिन्न राज्य सरकारों के बीच तथा दूसरी ओर भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों के बीच समन्वित करना था ।

**चतुर्थ योजना अवधि में निम्नांकित योजनायें चलाई गयी :**

1. कृषक शिक्षा और कार्यात्मक साक्षरता
2. स्वैच्छिक संगठनों को सहायता
3. श्रमिक सामाजिक शिक्षा संस्थान
4. प्रौढ़ शिक्षा राष्ट्रीय बोर्ड
5. प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय
6. नव-साक्षरों हेतु साहित्य निर्माण
7. नव-साक्षरों हेतु साहित्य का विकास

**पंचम पंच वर्षीय योजना अवधि (अवधि 1974- मार्च, 1978) :**

पंचम योजना अवधि 1978 में जनता सरकार शक्ति में आयी। केन्द्रीय स्तर पर शासक दल के परिवर्तन के कारण यह सरकार समय से एक वर्ष पूर्व ही समाप्त हो गई। इस योजना अवधि के दौरान कृषक कार्यात्मक साक्षरता परियोजना ने लगभग 150 जिलों में सफलता प्राप्त की। इस परियोजना ने आपर्याप्त देखरेख, अपर्याप्त प्रबन्धन के बिना भी उन लोगों के कृषि व्यवहारों में प्रभाव डाला जिनकी इस परियोजना में सहभागिता थी। 15-25 वर्ष के

---

1. बोर्डिया, ए0 पूर्वोक्त, 1973, पृ 37.
2. बोर्डिया ए0, ए रिव्यू आफ फार्मर्स फन्कशनल लिट्रेसी प्रोग्राम 1969-74, इन्डियन एडल्ट एजूकेशन एसोसियेशन, नयी दिल्ली।

आयु समूह के लिये 1975-76 में अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम चलाया गया जिसका उद्देश्य था जवान लोगों को अर्थपूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना जो कि उनकी आवश्यकताओं प्रेरणाओं तथा स्थानीय दशाओं से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित हो। इस योजना अवधि में 18 करोड़ की वित्तीय सहायता निर्धारित की गई।

**दो वार्षिक योजना अवधियां (अप्रैल, 1978- मार्च, 1979 और अप्रैल 1979- मार्च, 1980):**

जनता शासन ने देश की गंभीर प्रयासों के उपरान्त भी साक्षरता का प्रतिशत संतोषजनक स्तर तक नहीं पहुंच सका । इसलिये 2 अक्टूबर 1978 को गांधी जयंती के अवसर पर भारत में राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम चलाया गया। 1978-79 का वर्ष तैयारी का वर्ष था । राष्ट्रीय सरकार ने राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के लिये तदर्थ आधार पर 200 करोड़ रू0 स्वीकृत किये। यह निम्नांकित विचारों के आधार पर चलाया गया था ।

(अ) साक्षरता देश की सामाजिक आर्थिक प्रगति और व्यक्ति को समृद्ध का एक महत्वपूर्ण अस्त्र है ।

(ब) शिक्षा का तात्पर्य विद्यालय जाने से ही नहीं है अपितु जीवन दशाओं में अधिक कार्य में स्थान लेने से है ।

(स) सीखना, कार्य करना और रहना अपृथकनीय हैं और एक दूसरे से संबंधित होने पर वे एक अर्थ को ग्रहण करती हैं।

(द) साधन, जिसके द्वारा व्यक्ति विकास की प्रक्रिया में लगे हैं, उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितना लक्ष्य तथा ।

(य) निरक्षर और निर्धन अपनी स्वतन्त्रता को क्रिया, संवाद और साक्षरता द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

(एन0 ए0 ई0 पी0 – एन आउटलाइन गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया 1978 ए0 पालिसी स्टेटमेन्ट पृ0 ।)

राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की अवधारणात्मक रूपरेखा को कार्यक्रम के तीन प्रमुख उद्देश्यों पर बल देकर मूर्त बनाया गया, वे इस प्रकार हैं :-

(क) समाज के आर्थिक व सामाजिक रूप से वंचित लोगों को साक्षरता कौशल प्रदान करना ।

(ख) उनकी नि:सहायता को समाप्त करना तथा उनमें जागरूकता उत्पन्न करना : तथा ।

(ग) एक समूह के रूप में अपने लाभों के लिये प्रबन्ध कौशल तथा उनके अपने व्यवसाय में कार्यात्मक क्षमता उत्पन्न करना ।

कार्यक्रम का उद्देश्य देश में 1983-84 के अन्त तक 15-35 वर्ष मे के आयु समूह के 100 करोड़ लोगों को साक्षर बनाना था । राष्ट्रीय स्तर पर उद्देश्यों का प्रक्षेपण इस प्रकार था जो तालिका में प्रस्तुत है: -

तालिका 2.5

राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम द्वारा निरक्षर प्रौढ़ों को साक्षर करने का वर्षवार लक्ष्य

(1978 - 1984) करोड़ों में

| वर्ष | वार्षिक अच्छादन | संचयी आच्छादन |
|---|---|---|
| 1978-79 | 1.5 | 1.5 |
| 1979-80 | 4.5 | 6.0 |
| 1980-81 | 9.0 | 15.0 |
| 1981-82 | 18.0 | 33.0 |
| 1982-83 | 32.0 | 65.0 |
| 1983-84 | 35.0 | 100.0 |

स्त्रोत : "एन0ए0ई0पी0 - एन आउटलाइन, 1978", मिनिस्ट्री आफ एजूकेशन एण्ड सोशल वेलफेयर, गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया नयी दिल्ली, पृ0 8.

**षष्ठ पंच-वर्षीय योजना अवधि (अप्रैल, 1980 - मार्च, 1985) :**

1980 में राष्ट्रीय स्तर पर सरकार में परिवर्तन के साथ, राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के लिये छठी योजना व्यय पर पुनर्विचार किया गया और सौंपी गयी धनराशि कम करके केवल 128 करोड़ रू0 कर दी गई। शिक्षा व समाज कल्याण मंत्रालय ने राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को इसके समस्त पहलुओं तथा सुधारों के सुझाव हेतु डा0 डी0 एस0 कोठारी के चेयरमैनशिप में एक उच्च स्तरीय कमेटी को गठित किया । कमेटी ने अप्रैल 1980 में अपने प्रतिवेदन को प्रस्तुत किया । प्रतिवेदन ने छठीं योजना में सभी नागरिकों को न्यूनतम आवश्यक शिक्षा प्राप्त करने पर जोर दिया । प्रौद्योगिक तंत्र को, व्यावहारिक योजनाओं और साक्षरता के प्रसार के लिये एक महत्त्वपूर्ण अस्त्र के रूप में इस्तेमाल किया गया, विशेष रूप से 15-35 वर्ष के लोगों के लिये इस योजना में वरीयता दी गई। इस आयु समूह के लिये कार्य आधारित पाठ्यक्रम

को वरीयता दी गई। साथ ही समुदाय के कमजोर वर्गों जैसे महिलाओं, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जन जातियां और झोपड़ पट्टी में निवास करने वालों को तथा कृषि-श्रमिकों को शिक्षित करने को प्राथमिकता दी गई। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में प्रौढ़ शिक्षा की धनराशि नीचे तालिका में प्रस्तुत है : -

**तालिका 2.6**

**पंच-वर्षीय योजनाओं में प्रौढ़ शिक्षा पर धनराशि का प्रावधान**

| पंचवर्षीय योजनयें | शिक्षा पर कुल राशि निर्धारण | प्रौढ़/समाजशिक्षा पर राशि निर्धारण | प्रौढ़/समाजशिक्षा पर राशिका (%) |
|---|---|---|---|
| प्रथम 1951-56 | 153.0 | 5.0 | 3.27 |
| द्वितीय 1956-61 | 273.0 | 4.0 | 1.46 |
| तृतीय 1961-66 | 589.0 | 2.0 | 0.34 |
| वार्षिक योजनाओं अप्रैल 1966 से मार्च 1969 | 322.0 | 2.1 | 0.65 |
| चतुर्थ 1967-74 | 786.0 | 4.5 | 0.57 |
| पंचम 1974-79 | 1,285.0 | 18.0 | 1.4 |
| वार्षिक योजनायें 1978-1979 | पंचम योजना में सम्मिलित | | |
| 1979-1980 | अनुपलब्ध | अनु0 | अनु0 |
| छठी 1980-85 | 2,524.0 | 128.0 | 5.07 |
| सातवीं 1985-90 | 11,000.0 | 360.0 | 7.00 |
| वार्षिक योजना 1991-92 | 11,402.68 | 977.0 | - |
| आंठवीं योजना 1992-97 | - | - | - |

**स्त्रोत :** प्लानिंग कमीशन, गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया, नयी दिल्ली ।

(2) **प्रौढ़ शिक्षा पर हुये सामान्य अध्ययन :**

बुश के अनुसार भारत में प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में कमबद्ध अध्ययन की शुरूआत 1945 में गाडगिल द्वारा की गई। शोध अध्ययनों पर पुनर्विचार से ज्ञात होता है कि जो अध्ययन इस क्षेत्र में हुये वह उपरोक्त सभी क्षेत्रों को आच्छादित नहीं करते ।

प्रसाद[1] ने उ0प्र0 में वाराणसी जिले के एक गांव में साक्षरता सर्वेक्षण किया । ग्रामीण लोगों से विस्तृत सूचना प्राप्त करने के लिये जनगणना सर्वेक्षण किया गया था । अध्ययन में पाया गया कि, पुरूषों व स्त्रीयों के बीच साक्षरता प्रतिशत, 48 और 11 था । उच्च जाति के लोगों में साक्षरता प्रतिशत अधिक था । गरीबी पिछड़ापन, इत्यादि निरक्षरता के कारण थे तथा प्रौढ़ों में साक्षरता कक्षाओं के प्रति अत्यधिक उमंग देखने को मिला ।

श्रीवास्तव[2] एवं अन्य ने एक अध्ययन "संक्रमिक क्षेत्र में रहने वाली चयनित जनजातीय समुदाय का एकीकृत तथा तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक के अन्तर्गत किया । अध्ययन के लिये प्रदर्श बिहार और मध्य प्रदेश के संक्रामी क्षेत्रों से लिया गया था । आंकड़ा संग्रह के लिये प्रश्नावलियां, साक्षात्कार अनुसूची, व्यक्तिगत इतिहास, अवलोकन तथा प्रासंगिक दस्तावेजों का अध्ययन प्रमुख यंत्र थे। गवेषकों द्वारा यह निष्कर्ष निकाला गया कि क्षेत्र में जन जातीयों के कल्याण के लिये विभिन्न विकास योजनाओं में से दो प्रमुख थी सरकार और ईसाई मिशनरियां। ये जनजातियें के आर्थिक, शैक्षिक तथा अन्य विकास के पहलुओं से जुड़ी हुई थी ।

श्रीवास्तव ने पुन: 18 जनजातियों के शैक्षिक आर्थिक दशाओं तथा

---

1. प्रसाद, एच0 लिट्रेसी एण्ड डेवलपमेन्ट, गन्धियन इन्स्टीट्यूट आफ स्टडीज, वाराणसी 1967
2. श्रीवास्तव, एल0आर0एन0, डेवलपमैन्ट नीड्स आफ द ट्राइबल पीपुल ट्राइबल एजूकेशन यूनिट, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली 1970.

तथा रोजगारी की स्थिति का अध्ययन किया ।[1] अध्ययन में बिहार मध्य प्रदेश और उड़ीसा की जनजातियों की शैक्षिक, आर्थिक दशाओं व रोजगार स्थितियों के विषय में आंकड़ा संग्रह किये गये। यन्त्र के रूप में साक्षात्कार अनुसूचियां और प्रश्नावलियां प्रयोग की गईं। अध्ययन की महत्वपूर्ण खोज यह थी कि बैगा, गोंड, सोरा, पहारिया, कोखा, कुटियाकोंध, कोया और बिरहोर जनजातियां शैक्षिक विकास के निम्नतम स्तर पर थीं। यह भी पाया गया कि प्रदेश में ली गई जनजातियां भारतीय ग्रामीण जनसंख्या की तुलना में शिक्षित बेरोजगारी के अधार पर सापेक्षिक रूप से अच्छी स्थिति पर थीं ।

माली[2] ने प्रौढ़ नव-साक्षरों के बीच साक्षरता बनी रहने के प्रभावक कारकों का अध्ययन किया । प्रदर्श में 310 प्रौढ़ रखे गये और साक्षात्कार अनुसूची, एक प्रश्नावली सारबोध परिक्षण प्रयुक्त किये गये। प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार थे : -

1. पाठ्य सामग्री का साक्षरता से अत्यधिक सह संबंध है और
2. याद रखने पर पर्यावरणीय कारकों का कोई प्रभाव नहीं होता। गवेषक ने इन कारकों को कक्षाओं में जाने की प्रेरणा, शिक्षण -विधि, कक्षा की बढ़ी अवधि, और प्रभावपूर्ण सीख के लिये साक्षरता पश्चात् अभ्यास के रूप में, गुथा हुआ था ।

---

1. श्रीवास्तव, एल0आर0एन0, आइडेन्टिफिकेशन आफ एजूकेशनल प्राबलम्स आफ द राओरा आफ उड़ीसा, ट्राइबल एजूकेशन यूनिट, एच0 सी0ई0आर0टी0 नयी दिल्ली, 1971

(अ) एन इन्ट्रीग्रेटेड एण्ड कम्पेरेटिव स्टडी आफ एन0सी0ई0आर0टी0 नयी दिल्ली 1971

(ब) एजूकेशन एण्ड इकनामिक कन्डीशन एम्पलोयमेन्ट पोजीशन आफ एट्टीन ट्राइब्स, एन0सी0ई0आर0टी0 नयी दिल्ली 1971

2. माली0एम0जी0, फैक्टर्स अफक्टिंग रिटेनशन आफ लिट्रेसी एमन्त्र एडल्ट न्यू लिट्रेट्स पी0एच0डी0 थीसिस, एजूकेशन शिवाजी यूनिवर्सिटी 1974.

राव[1] ने मैसूर विश्वविद्यालय के 200 चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों का एक साक्षरता सर्वेक्षण एक प्रश्नावली द्वारा किया था । उनकी साक्षरता कौशल; बोधगम्यता तथा गणित का भी परीक्षण किया गया । अध्ययन में पाया गया कि नवयुवकों की अपेक्षा चालीस वर्ष से ऊपर के लोगों में निरक्षरता अधिक थी।

लाकरा[2] ने "बिहार में रांची जिले की जनजातियों में प्रौढ़ शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन किया । अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य जनजातियों को दी गई प्रौढ़ शिक्षा के कारण उनके सामाजिक आर्थिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों में आयी हानियों की खोज करना था । आंकड़ों का संकलन साक्षर शिक्षित जनजातियों से डाक द्वारा प्रेषित प्रश्नावलियों से साक्षात्कार, तथा अवलोकन और व्यक्तिगत जीवन अध्ययन पद्धति द्वारा किया गया था । अध्ययन से संकेत मिलता है कि जनजातियों ने अपनी विरासत को छोड़कर पश्चिमी संगीत और नृत्य में रूचि लेना प्रारम्भ कर दिया था । उनका जीवन स्तर शिक्षा के स्तर के साथ उठ गया था, जिससे वे निर्धनता, अज्ञानता अंधविश्वासों तथा सामाजिक निषेधों से मुक्त हो सके थे। धीरे-धीरे जनजातियाँ शिक्षा के प्रति जागरूक हो गये थे और वे अपने बच्चों को स्कूल भेजने लगे थे। वे राजनीतिक रूप से चेतन हो गये थे और आदिवासी महासभा में अनेकों साहचर्य को पाया गया । इस प्रकार इस अध्ययन से पता लगता है कि प्रौढ़ शिक्षा राजनैतिक व सामाजिक चेतना का एक अस्त्र हो सकती है ।

रतनैहा ने आन्ध्र प्रदेश में जनजातीय शिक्षा के संरचनात्मक अवरोधों का अध्ययन किया । प्राथमिक आंकड़ों के संकलन के लिये संरचित साक्षात्कार अनुसूची तथा प्रश्नावली आदि को यंत्र तथा प्रविधि के रूप में इस्तेमाल किया

---

1. राव, जी0एस0, लिट्रेसी सर्वे आफ द क्लास फोर इम्पलाइज आफ द यूनिवर्सिटी आफ माइसोर, सी0आई0आई0एल0मैसूर 1974.
2. लाकरा, एस0, इम्पैक्ट आफ एजूकेशन आन द ट्राइबल्स आफ रान्ची डिस्ट्रक्ट, पी0एच0डी0 थीसिस, एजूकेशन, पटना यूनिवर्सिटी 1976.

गया था । द्वितीयक आंकड़े विभिन्न कार्यालय अभिकरणों से एकत्रित किये गये थे। उन्होने पाया कि जनजातीय क्षेत्रों में भौगोलिक अवरोध के रूप में अपर्याप्त स्कूल, तथा छात्रावास की सुविधा न होना, जनजातियों के शिक्षा की धीमी प्रगति के लिये उत्तरदायी हैं। इस अध्ययन की दूसरी सार्थक खोज यह है कि जनजातीय क्षेत्रों के प्रथम ग्रेड में नामांकित प्रत्येक सौ बच्चों में केवल तीन बच्चे पांचवीं ग्रेड में पंहुचे। उन्होंने पुनः पाया कि जनजातीय साक्षरों में शिक्षकों की नियुक्तियां, शिक्षण का माध्यम, पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकें मैदानी स्कूलों के ही समान थीं। कुछ माता-पिताओं ने, जिन्होंने अपने बच्चों को विद्यालय भेजा था, बताया कि शिक्षा ने एक अभूतपूर्व दशा उत्पन्न की है। कि एक ओर तो शिक्षितों को आधुनिक वर्गों में नौकरियां उपलब्ध नहीं है और दूसरी ओर अपनी परम्परागत जीवन शैली को छोड़ दिया है।

पाण्डा[2] ने प्रौढ़ शिक्षा की स्थिति पर पुनर्विचार करते हुये लिखा है, "प्रौढ़ शिक्षा में अनुभव ने स्पष्ट कर दिया है प्रौढ़ सीख सकते हैं और अक्सर वे बच्चों की अपेक्षा अच्छी तरह और जल्दी सीख लेते हैं। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम अभिजातीय शिक्षा से उत्पन्न परिणात्मक दूरियों को निश्चित रूप से कम कर सकती है जिसके द्वारा शिक्षा में प्रजातंत्रीकरण को पाने के लिये लागू किया गया था । किन्तु शक्तिशाली सामाजिक शक्तियां प्रौढ़ शिक्षा के एक विस्तृत प्रजातंत्रात्मक आन्दोलन पर अपनी प्रभुता एकाधिकारी सुविधा को खोने की इच्छा नहीं रखती" (पृ0 56-67)।

---

1. रवनैहा, इ0पी0, स्ट्रक्चरल कान्सट्रन्टस इन ट्राइबल एजूकेशन ए रीजनल स्टडी, स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमि0 ए-बी/9 सफदरगंज इन्कलेव, नयीदिल्ली 1977.
2. पान्डा, के0सी0 "एडल्ट एजूकेशन एट द क्रास रोड: ए सिस्टम एप्रोच फार एजूकेशन, प्लानिंग" इन के0सी0 पान्डा एट एल, (एडी0) एडल्ट एजूकेशन, प्लान एण्ड एक्शन स्ट्रेटजीस भवनेश्वर रीजनल कालेज आफ एजूकेशन 1979.

मन्ना[1] ने प्रौढ़ शिक्षा अनुदेशकों के वातावरण को सराहने के लिये एक अध्ययन किया। अध्ययन प्रदर्शी उड़ीसा, के बालासोर जिले के रमुना खण्ड में 10 ग्राम पंचायतों के अन्तर्गत तैंतीस गांवों का था सदर खण्ड में सात ग्राम पंचायतों के अंतर्गत बत्तीस गांवों में किया गया। अध्ययन के उद्देश्य थे(अ) प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में अनुदेशकों का उनके परिवार, शिक्षा, प्रशिक्षण तथा भर्ती के संदर्भ में उनके वातावरण का अध्ययन करना (आ) सुधार के लिये कुछ मापों के लिये सुझाव देना। प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार थे :-

(1) अनुदेशक अधिकतर 16-35 वर्षों के थे और उनमें से 50 प्रतिशत विवाहित थे।

(2) 62 प्रतिशत अनुदेशक मैट्रिक से नीचे थे, 25 प्रतिशत मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त थे तथा बाकी के पास उच्च शिक्षा थी।

(3) केवल 50 प्रतिशत अनुदेशकों ने प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों से पढ़ाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया था।

(4) सभी अनुदेशक उसी गांव के रहने वाले थे जहां पर प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र चल रहे थे और खण्ड स्तर की चुनाव कमेटी द्वारा चयनित थे।

पान्डा[2] ने प्रौढ़ शिक्षा निरक्षरों की विशेषताओं तथा उनके सीखने और पर्यावरण के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन किया। उन्होंने भुवनेश्वर, बालगांव

---

1. मन्ना, बी0बी0, एन एप्रेजल द बैकग्राउण्ड आफ द एडल्ट एजूकेशन इन्स्ट्रक्टर्स, एम0एड0 डिजर्टेशन, उत्कल यून0 1982.
2. पान्डा, डी0एन0, एन्वेस्टीगेशन इन्टू द कैरेक्टरस्टिक्स आफ एडल्ट इलिट्रेट्स एण्ड देयर पर्सेप्शान आफ लर्निंग इनवाइरोनमेंट पी0एच0डी0 थीसिस, एजूकेशन, उत्कल यूनि0 1983.

और अन्गुल के पास के गांवों से 300 का प्रदर्श (150 पुरूष 150 स्त्री) लिया। प्रतिभागियों को समन रूप से 15-24 और 25-35 आयु समूह में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और हिन्दुओं से अपनी उपसंस्कृति समूह को प्रस्तुत करने के लिये लिया गया । उनका साक्षात्कार लिया गया। अभिप्रेरणा प्रश्नावली सुरक्षा असुरक्षा परीक्षण प्रयास उन्मेष परीक्षण (एचीवमेन्ट ओरिएन्टेशन टेस्ट) माउश्ले व्यक्तिगत परीक्षण का संक्षिप्त रूप एवं सोलह व्यक्तित्व कारक परीक्षण का संक्षिप्त रूप एवं सोलह व्यक्तित्व कारक परीक्षण फार्म सी0 इस्तेमाल किये गये। मानसिक परीक्षण अंकों को स्टैन्डर्ड प्रोग्रेसिव मैट्रिक्स के लिये इस्तेमाल किया गया । जनसंख्यात्मक और अभिप्रेरणात्मक गत्यात्मकता तथा विभिन्नता तथा विशिष्ट तुलनाओं के लिये काई स्क्वायर और प्रतिशत का उपयोग करके परिणामों का विश्लेषण किया गया ।

अध्ययन से निकले निष्कर्ष इस प्रकार है: निरक्षर अधिकतर कृषक, बड़े परिवारों तथा गरीब परिवारों, से आये थे। ऐसे घरों में लिंग भूमिका से संबंधित रूढ़ियुक्तियां स्त्री निरक्षरता बढ़ाती हैं। यह सामान्य अवलोकन लिंग, आयु और जाति वातावरण के संबंध में प्रयोग सिद्ध थे। इसके अतिरिक्त अभिप्रेरणात्मक गत्यात्मकता के संदर्भ में सार्थक विभिन्नतायें पाई गई। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजातियों के समूह में अनुकूल सीखने का पर्यावरण शुभचिन्तक शिक्षकों की पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता, की आवश्यकता थी। शैक्षिक केन्द्रों का पास होना आधार होना नहीं था । इसके अतिरिक्त प्रौढ़ निरक्षर विशेष रूप से स्त्रियां खुश मिजाज कल्पनात्मक, और पुरूषों की तुलना में परम्पराओं से बंधी थीं। पुरूष व्यावहारिक, साहसिक, तथा अपने जीवन तथा परिवारिक व्यवसाय की परिस्थितियों से सरलता से संतुष्ट होने वाले थे। अनुसूचित जाति/अनूसूचित जातियों में यह भावना पायी गयी कि शिक्षा प्राप्त कर लेने के पश्चात भी वे वृहत-समाज से विरसित ही रहेंगें उनमें सार्थक लिंग, लिंग जाति अन्तर्कियायें पाई गई। प्रौढ़ शिक्षा साक्षरता कार्यक्रम में आयु प्रमुख कारक के रूप में नहीं पाया गया ।

उपरोक्त सभी शोध अध्ययनों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि उपरोक्त सभी अध्ययन सर्वेक्षण प्रकार के थे। समस्त अध्ययनों में प्रश्नावलियां तथा साक्षात्कार अनुसूची द्वारा आंकड़े एकत्रित किये गये। लगभग अधिकतर अध्ययनों में दैव प्रदर्श का प्रयोग किया गया। इसके अतिरिक्त पद्धतिशास्त्रीय कमियां तथा परीक्षण का अभाव उपरोक्त अध्ययनों में प्रतीत होता है। उपरोक्त क्षेत्र में क्रमबद्ध अध्ययन की आवश्यकता अनुभव होती है।

**साक्षरता के लिये अभिप्रेरणा पर अध्ययन :**

अब्दुर राशिद[1] ने साक्षरता के लिये एक व्यक्ति की अभिप्रेरणा को मापने के लिये एन0सी0ई0आर0टी0 द्वारा दी वित्तीय सहायता पर एक परियोजना ली। अध्ययन का प्रदर्श दिल्ली में 44 गांवों से लिया गया था। जिसमें 442 स्त्री पुरूष और उत्तरदाता थे। एचीवमेन्ट टेस्ट, और नवसाक्षरों के साध्य प्रति व उनके आकांक्षास्तर के अध्ययन के लिये एचीवमेन्ट टेस्ट व प्रक्षेपण प्रविधियां (प्रोजेक्टिव टेक्नीक्स) प्रयुक्त की गई। उनके सामाजिक आर्थिक स्तर को मापने के लिये पारीक व त्रिवेदी का सामाजिक आर्थिक परिस्थिति पैमानों को प्रयुक्त किया गया । अध्ययन से ज्ञात होता है कि व्यक्तियों की साक्षरता और सामाजिक आर्थिक परिस्थिति में घनिष्ठ संबंध हैं। गवेषक सुझाव देता है कि साक्षरता कार्यक्रम, यद्यपि भलीभांति निर्मित है। किन्तु यदि विशेष रूप से जीवन की सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति द्वारा आरोपित सीमाओं को ध्यान में रखने में असफल है, तो बहुत ही सीमित ही सफलता प्राप्त करेगा ।

**अभिवृत्ति, आवश्यकताओं और रूचियों पर अध्ययन :**

अहमद ने नव साक्षरों के लिये पाठ्य सामग्री के मूल्यांकन के लिये अध्ययन किया तथा उनकी पाठ्य आवश्यकताओं और अभिरूचियों का

---

1. अब्दुर राशिद, एन इन्क्वाइरी इन्टू द प्रोबलम आफ मोटीवेशन फार एडल्ट लिट्रेसी जामिया मिलिया, नयी दिल्ली 1966

अध्ययन किया।[1] उन्होंने 1314 नव साक्षरों को प्रदर्श के रूप में 5 हिन्दी भाषा-भाषी राज्यों मध्य-प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर-प्रदेश और बिहार से लिया। प्रदर्श में 5 राज्यों में एकरूपता नहीं थी। उन्होंने प्रश्नावली, विचारावली, वरीयता कार्ड और व्यक्तिगत भ्रमणकों आंकड़ा संग्रह के लिये यंत्र के रूप में प्रयुक्त किया। उन्होंने पाया कि नव साक्षरों का एक बड़ा प्रतिशत कृषि पुस्तकों को पढ़ने की अभिरूचि रखता है। जबकि कृषि पुस्तकों ने उत्पादन में दूसरा स्थान प्राप्त किया। दूसरी वरीयता धार्मिक पुस्तकों को पढ़ने की थी इन पुस्तकों ने आठवां स्थान प्राप्त किया (उत्पादन में) उन्होंने पाया कि नव-साक्षरों के लिये सामग्री का उत्पादन उपयुक्त नहीं है और नव-साक्षर जिन पुस्तकों को पढ़ना पसन्द करते हैं वे पस्तकालयों में उपलब्ध नहीं थी।

नागप्पा[2] ने प्रश्नावली के माध्यम से 410 नव साक्षरों की अभिवृत्तियों और पाठ्य आवश्यकताओं का अध्ययन किया। उन्होने निष्कर्ष दिया कि नवीन विचारों के प्रस्तुतीकरण की पद्धति नव-साक्षरों को अधिक उत्तेजित करती है। नव साक्षर जिन पाठों को पढ़ना चाहते हैं उनमें वे उनको अधिक वरीयता देते हैं जिनके विषय में वे पहले से कुछ ज्ञान रखते हैं, तथा जो सामुदायिक बीमारियों और परिवार के स्वास्थ्य व व्यवसाय से संबंधित हैं। गवेषक के अनुसार पठन अभिरूचि को आवश्यक सामग्री की आपूर्ति करके तथा विभिन्न भागों में सामुदायिक साक्षरता केन्द्रों को खोलकर कायम रखा जा सकता है।

---

1. अहमद, एम0एन, इवैल्यूएशन आफ रीडिंग मैटीरियल्स फार न्यू लिट्रेट्स एण्ड स्टडी आफ देयर रीडिंग नीड्स एण्ड इन्ट्रेस्ट्स" रिसर्च ट्रेनिंग एण्ड प्रोडक्शन सेन्टर जामिया मिलिया नयी दिल्ली 1958.
2. नागप्पा, टी0आर0, सर्वे आफ रीडिंग नीड्स एण्ड इन्टरेस्ट्स आफ एडल्ट न्यू-लिट्रेट्स इन माइसोर स्टेट, माइसोर स्टेट एडल्ट एजूकेशन काउन्सिल, माइसोर 1966.

दूसरी परियोजना मल्लिकार्जुन स्वामी[1] द्वारा उन प्रौढ़ों की पठन अभिरूचि के अध्ययन के लिये जो पठन का आधारभूत कौशल रखते हैं, ली गई थी। उन्होंने कन्नड़ भाषा में एक शब्द सूची तैयार की जो लेखकों को पाठ्य पुस्तकें तैयार करने और नव-साक्षरों को अन्य पाठ्य सामग्री तैयार करने में सहायक हो सके। अध्ययन की विषय वस्तु कन्नड़ भाषा के विभिन्न द्वन्द्वात्मक विभिन्नताओं के साथ मैसूर राज्य की सम्पूर्ण कन्नड़ भाषी जनसंख्या से संबंधित थी। उनके अध्ययन से संकेत मिलता है कि उनमें धार्मिक और लोक-साहित्य के प्रति अधिक आकर्षण है। उनके लिये व्यवसाय से संबंधित अध्याय भी तैयार किये गये।

श्रीवास्तव[2] (1970) ने जनजातिय लोगों की विकासात्मक आवश्यकताओं पर एक सर्वेक्षण किया । अध्ययन का उद्देश्य कल्याण योजनाओं के प्रशासन तथा नियोजन के लिये सामग्री उपलब्ध करने के विचार के साथ कुछ जनजातीय समुदायों की विकासात्मक आवश्यकताओं को जानना था। गहन अध्ययन के लिये बाहर गांवों में 100 परिवारों आसाम और बिहार में दो जिलों से 6-6 परिवार प्रदर्श के लिये चुने गये। 3 माह से अधिक की अवधि में आंकड़ा संग्रह किया गया । अध्ययन की प्रमुख उपलब्धियां थी:

1. अच्छी शिक्षा द्वारा उनके रहने की दशाओं में सुधार किया जा सकता है।
2. जनजातीय लोग शिक्षा के मूल्य के प्रति चैतन्य हो गये हैं,
3. जनजातीय लोगों के बीच सहकारी ऋण समितियां असफल हो गई हैं,
4. जनजातियों को ऐसी सहायता उपलब्ध कराने के उद्देश्यों में विभिन्न वित्तीय सहायताओं का नियमित भुगतान है और ।
5. जनजातीय क्षेत्रों के विकास में संचार एक बड़ा साधन सिद्ध हुआ था ।

---

1. मल्लिकार्जुन स्वामी एम0, सर्वे आफ रीडिंग नीड्स एण्ड इन्टरेस्ट्स आफ एडल्ट न्यू लिट्रेट्स इन माइसोर स्टेट, माइसोर स्टेट एडल्ट एजूकेशन काउन्सिल माइसोर 1969.
2. श्रीवास्तव, एल0आर0एन0 पूर्वोक्त, 1970.

दीक्षित[1] ने राजस्थान के शहरी, ग्रामीण और जनजातीय समुदायों में प्रौढ़ों की शैक्षिक आवश्यकता प्रतिमान का अध्ययन किया। अध्ययन का आधार प्रश्नावलियां और साक्षात्कार अनुसूची थे। अध्ययन से ज्ञात होता है कि आधे से अधिक उत्तरदाताओं के लिये, उनकी नौकरियों के लिये व्यावसायिक प्रशिक्षण अत्यधिक सहायक सिद्ध हुआ। अध्ययन की दूसरी खोज यह थी कि उत्तरदाताओं की एक बड़ी संख्या शिक्षा के अवसर नहीं प्राप्त कर सकी, यद्यपि जनजातीय गांवों में साक्षरता कक्षायें उपलब्ध थीं।

मरिअप्पन और रामकृष्णन[2] ने पान्डिचेरी और तमिलनाडु के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में साक्षरता के प्रति सीखने वालों की अभिरूचि का अध्ययन किया प्रदर्श स्वैच्छिक अभिकरणों और राज्य सरकार द्वारा चलाये जा रहे केन्द्रों से लिया गया था । 450 अधिगमर्थियों में तमिलनाडु के 15 जिलों से 420 और पांडिचेरी से 30 अधिगभार्थी लिये गये थे।

आंकड़ों का संग्रह साक्षात्कार अनुसूची द्वारा किया गया था । अध्ययन से ज्ञात होता है कि पुरूषों का 96 प्रतिशत और महिलाओं का 94 प्रतिशत सीखने में रूचि रखता था। 63 प्रतिशत व्यक्तियों ने प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों से सामाजिक परिस्थिति संस्कृति, अर्थ-व्यवस्था, जागरूकता, व्यवसाय, तथा लिखने पढ़ने का अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा प्रदर्शित की शोधकर्ता का सुझाव है कि प्रौढ़ों की अभिरूचि सीखने में बनाये रखने के लिये अधिक समय

---

1. दीक्षित, ए० "ए स्टडी आफ एजूकेशनल नीड़ पैटर्नस आफ एडल्टस इन अरबन, रूरल एण्ड ट्राइबल कम्युनिटीज आफ राजस्थान पी०एच०डी० थीसिस, एजूकेशन, राजस्थान यूनिवर्सिटी 1975.
2. मरिअप्पन, एस० और रामकृष्णन, सी०, "एन इवैल्यूएटिव स्टडी आफ द नेशनल एडल्ट एजूकेशन प्रोग्राम इन द यूनियन टेरिटरी आफ पान्डिचेरी" स्टेट रिसोर्स सेन्टर फार नान फारमल एजूकेशन 18, एडम्स रोड, चेपाडक मद्रास 1980.

समूह चर्चा, भूमिका मंचन में व्यतीत करना चाहिए। साथ ही सीखने वालों को इन क्रिया कलापों में सक्रिय भूमिका निभाने के लिये कहना चाहिये।

उपरोक्त अध्ययनों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि उनमें से चार अध्ययन प्रौढ़ों की आवश्यकताओं और अभिरूचियों पर, एक सीखने वालों की अभिवृत्तियों पर, और एक जनजातियों के विकासात्मक आवश्यकताओं पर था ।

सिंह[2] का कार्य उल्लेखनीय है। सिंह ने भारत में शिक्षा और जन साक्षरता के प्रसार की सामाजिक पक्षों कारणों का अध्ययन किया । उन्होंने नव साक्षरों के लिये बनाई गई 304 फिल्मों और 174 पुस्तकों का विश्लेषण किया । उन्होंने पाया कि प्रौढ़ शिक्षा साहित्य के अन्तर्गत इतिहास की पुस्तकें सामाजिक समस्यायें कृषि और ग्रामीण कल्याण, स्वास्थ्य और सफाई सामान्य ज्ञान, प्रसिद्ध कवियों और लेखकों की आत्मकथायें, लोक साहित्य आदि को संचार साधन के रूप में इस्तेमाल किया गया था । इन पुस्तकों में सभी धर्मों की एकता, नागरिक कर्तव्यों, शिक्षा की आवश्यकता जैसे मूल्यों पर बल दिया गया था । इस साहित्य के माध्यम से रूढ़िवादिता जादू तथा अंधविश्वास के विरोध में अभिवृत्ति विकसित करने का प्रयास भी किया गया था ।

**प्रौढ़ प्रशिक्षण पर किये गये अध्ययन :**

गोरखपुर विश्वविद्यालय (उ0प्र0) के सहयोग से प्रौढ़ शिक्षा समिति द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यप्रणाली के प्रशिक्षण पर एक अध्ययन किया गया

---

1. ————————"लर्नर्स एट्टीट्यूडस टूवर्डस लिट्रेसी इन एडल्ट एजूकेशन सेन्टर्स आफ तमिलनाडु एण्ड पाण्डिचेरी – एन अप्रेजल स्टेट रिसोर्स सेन्टर 18, एडम्स मद्रास 1980.
2. सिंह, बी, क्यू0, "द कम्यूनिकेशन आफ आइडियाज थ्रू एडल्ट एजूकेशन इन इण्डिया, पी0एच0डी0 सोशियोलोजी, बाम्बे यूनिवर्सिटी, 1957 .

अनुदेशक को देना चाहिये।

एन0एस0एस0 के संयोजक[1] के निर्देशन तथा प्रत्यक्ष देख रेख में गोरखपुर विश्वविद्यालय से संबधित विभिन्न कालेजों के एन0एस0एस0 के कार्यकर्ता के सहयोग से यह अध्ययन किया गया था । इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य यह है। (क) प्रौढ़ शिक्षा कार्यकर्ता को यह कार्य लेने के पहले क्या कोई प्रशिक्षण दिया गया था और (ख) उनके दिन प्रतिदिन के कार्य में यह अशिक्षण कहां तक सहयोगी था। प्रदर्श के आधार पर 67 पर्यवेक्षकों/परियोजना अधिकारियों को चुना गया । यन्त्र के रूप में अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में छपी 13 बिन्दुओं वाली पश्नावली को प्रयुक्त किया गया ।

अध्ययन की प्रमुख खोजें इस प्रकार रहीं : –

1. विभिन्न केन्द्रों में एक दिन में 2 घंटे का पढ़ाई का समय भिन्न-भिन्न था कुछ केन्द्रों पर यह दिन में होता था कुछ में रात में
2. अधिकतर केन्द्रों में उपस्थिति 20–30 थी ।
3. बहुत सारे उत्तरदाताओं ने अपना कार्य बिना किसी प्रशिक्षण के प्रारंभ किया था। उनमें से कुछ ने 2 सप्ताह और कुछ ने एक सप्ताह का प्रशिक्षण प्राप्त किया था । अधिकतर ने प्रशिक्षण को उपयोगी माना।
4. अनुदेशकों की एक बड़ी संख्या ने बताया कि प्रौढ़ अधिगमार्थी को साक्षरता शिक्षा के साथ ही आय बढ़ाने वाले कार्यक्रम, पशु-पालन, लघु उद्योग, तथा कृषि पर कुछ ज्ञान की आवश्यकता है।

---

1. पति, एस0पी0, एडल्ट एजूकेशन, आशीष पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, 1988 पृ0 53–54, में उद्धृत ।

## प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के मूल्यांकन पर हुये अध्ययन

त्रिवेदी[1] ने गुजरात के कैरा जिले में समाज शिक्षा के अध्ययन के लिये दस तालुका से विकसित, अर्द्ध-विकसित, और अविकसित के आधार पर कुछ गांवों का चयन किया । प्रश्नावली, साक्षात्कार अनुसूची गोष्ठी प्रतिवेदन तथा क्षेत्रीय कार्य को यंत्र और प्रविधि के रूप में प्रयुक्त किया । इससे ज्ञात हुआ कि कार्यक्रमों को नवयुवक क्लबों,महिलाओं अर्द्धसरकारी संस्थाओं आयोजित किया गया था । प्रौढ़ शिक्षा तथा साक्षरता कक्षायें प्राइमरी स्कूल के शिक्षकों द्वारा चलाई जा रही थी। स्वैच्छिक संगठनों को अनुदान की कमी ने कार्यक्रम को बुरी तरह प्रभावित किया था । कार्यक्रम के संगठन में समुचित नेतृत्व का अभाव, स्थानीय संघर्ष तथा कार्यकर्ताओं की कमी कुछ प्रमुख परेशारियां थीं। दूसरी सार्थक पहलू जो सामने आया उनके अनुरक्षण महिलायें औपचारिक साक्षरता कक्षाओं से लाभ नहीं प्राप्त करती ।

चतुर्वेदी[2] द्वारा मथुरा, लखनऊ, झांसी गोरखपुर के जिलों का अध्ययन- उ0 प्र0 में व्यक्तियों के सामाजिक जीवन पर समाज शिक्षा के प्रभाव को जानने के लिये किया । उत्तरदाताओं का स्तरीकृत प्रदर्श चुना तथा 700 उत्तरदाताओं को विशेष रूप से साक्षात्कार के लियेचुना सीमाओं के होते हुए भी ग्रामीण इलाकों में लोगों के जीवन पर निश्चित प्रभाव डालता है। इसके अतिरिक्त, क्षेत्र में न तो लोगों में न ही कार्यकर्ताओं में कार्यक्रम के प्रति या इसके लक्ष्यों की प्राप्ति के प्रति कोई विशेष उत्साह पाया गया ।

---

1. त्रिवेदी आर0एस0 ए क्रिटिकल सर्वे आफ सोशल एजूकेशन प्रोग्राम्स एण्ड प्रोसीटजर्स इन कैरा डिस्ट्रिक्ट, एम0बी0, पटेल कालेज आफ एजूकेशन, बल्लभ विद्यानगर 1966.
2. चतुर्वेदी, एस0सी0 इम्पैक्ट आफ सोशल एजूकेशन आन द लाइफ एण्ड लिविंग आफ द पीपुल इन ब्लाक एरियाज इन द डिस्ट्रिक्ट आफ गोरखपुर, झांसी, लखनऊ, एण्ड मथुरा पी0एच0डी0 थीसिस, सोशल वर्क, लखनऊ, यूनिवर्सिटी 1969.

अन्सारी[1] ने अपनी पी०एच०डी० उपाधि हेतु समाज शिक्षा कार्यकर्ताओं के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम पर अध्ययन किया । उनके मुख्य उद्देश्य कार्यकर्ताओं पर प्रशिक्षण का प्रभाव, उद्देश्य तथा प्रकृति को अध्ययन करना था । प्रदर्श में 19 प्रधानाचार्य/प्रशिक्षण केन्द्रों के निर्देशक, 31 अधिकारी तथा 221 भूतपूर्व प्रशिक्षार्थी थे। आंकड़ों का संग्रह प्रश्नावली, साक्षात्कार, प्रासंगिक दस्तावेजों के अध्ययन, तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम के अवलोकन द्वारा किया गया था। अध्ययन की प्रमुख उपलब्धियां इस प्रकार थी ।

1. समाज शिक्षा कार्यकर्ताओं के लिये प्रशिक्षण में तकनीकी निर्देशन, नियोजन, प्रशासन तथा कार्यक्रम का संयोजन होना चाहिए।

2. प्रशिक्षण कार्यक्रम में, सिद्धान्त, व्यक्तिगत अध्ययन, पुस्तकालय अध्ययन, पुस्तकालय कार्य, विशेष प्रपत्र, गोष्ठी, चर्चायें क्षेत्रीय भ्रमण व्यावहारिक कार्य और अध्ययन भ्रमण सम्मिलित होना चाहिए ।

3. लगभग 60 प्रतिशत समय सैद्धान्तिक कार्य तथा शेष समय व्यावहारिक कार्य के लिये निर्धारित रहे ।

4. अधिकारियों ने सुझाव दिया कि एक राज्य के भीतर विभिन्न समाज शिक्षा विभागों के बीच में समुचित सम्पर्क होना चाहिए।

---

1. अन्सारी, एन०ए०, "एन एप्रेजल आफ द ट्रेनिंग प्रोग्राम फार द सोशल एजूकेशन वर्कर्स", पी०एच०डी० थीसिस, एजूकेशन दिल्ली यूनिवर्सिटी 1969.

2. डाइरेक्टरेट आफ एडल्ट एजूकेशन, मिनिस्ट्री आफ एजूकेशन एण्ड सोशल वेलफेयर, क्विक एसेसमेन्ट आफ रूरल फन्कशनल लिट्रेसी प्रोग्राम इन लखनउ डिस्ट्रिक्ट इन यू०पी० (एबस्ट्रेक्ट्रेड) इनः बोर्डिया अनि एडीटर फार्मर ट्रेनिंग एण्ड फन्कशनल लिट्रेसी इण्डियन एडल्ट एजूकेशन एसोसिएशन 17-बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग, नयी दिल्ली 1975 1970.

5. भूतपूर्व प्रशिक्षणार्थियों तथा अधिकारियों ने महसूस किया कि खण्ड समाज शिक्षा कार्यकर्ताओं के लिये प्रशिक्षण के व्यावहारिक पहलू पर बल नहीं दिया गया है।

शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय के प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय ने नवम्बर दिसम्बर 1970 में उ0 प्र0 में उखनउँ जिले में ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम के मूल्यांकन हेतु अध्ययन किया । यह प्रयोगात्मक और नियंत्रित समूहों पर एक कार्यान्तर परीक्षण अध्ययन था। और चार खण्डों में 16 ग्रामों में किया गया तथा उत्तरदाताओं की संख्या 320 थी। कार्यक्रम को (क) साक्षरता कौशल विकसित करने में और (ख) सहभागियों में निश्चित अभवृत्यात्मक परिवर्तनों को प्रभावित करने में, उपयोगी पाया गया।

जान्सटन[1] ने तमिलनाडू में प्रौढ़ शिक्षा की स्थिति के मूल्यांकन का प्रयास किया । अध्ययन किया उद्देश्य राज्य मे प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रम की स्थिति की खोज करना तथा प्रौढ़ शिक्षा के सार्थक राज्यव्यापी व्यवस्था के लिये सुझावों को देना था । यह सुझाव दिया गया कि विद्यालय स्तर पर अवरोध और ह्रास की समस्या को निरक्षरता वृद्धि समाप्ति करने हेतु प्रभावपूर्ण ढंग से सुलझाना चाहिए। अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों को व्यावसायिक उन्मेषा वाले होने चाहिए। उन्होने निष्कर्ष दिया कि समाज शिक्षा कार्यक्रम इस उद्देश्य की बहुत अधिक पूर्ति नहीं करता ।

पटेल[2] ने गुजरात राज्य में समाज शिक्षा का समालोचनात्मक अध्ययन

---

1. जान्सटन, जे0पी0 "ए प्रपोसल फार द. इस्टैब्लिशमेन्ट आफ ए स्टेट-वाइड एडल्ट एजूकेशन प्रोग्राम फार मद्रास (तमिलनाडु) पी0एच0डी0, थीसिस, एजूकेशन मद्रास यूनिवर्सिटी 1970.
2. पटेल, आर0बी0 "ए क्रिटीकल स्टडी आफ सोशल एजूकेशन इन द स्टेट आफ गुजरात, पी0एच0डी0 थीसिस, एजूकेशन सरदार पटेल यूनिवर्सिटी 1970.

करते समय एक प्रश्नावली व विचारावली को आंकड़े संग्रह करने के लिये तैयार किया। सभी समाज शिक्षा केन्द्रों को राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर कमेटियों के प्रतिवेदन के विश्लेषण और क्षेत्रीय कार्य द्वारा सर्वेक्षण किया । यह ज्ञात हेतु कि समाज शिक्षा की अवधारणा के प्रति विभिन्न मत हैं। कुछ के लिये यह सामाजिक परिवर्तन के लिये शिक्षा थी। पुनः यह संकेत मिला कि केन्द्रों का एक बड़ा भाग (93 प्रतिशत) प्राथमिक स्कूलों द्वारा देखा जा रहा था । 2.3 प्रतिशत सेकेन्ड्री स्कूलों द्वारा 1.4 प्रतिशत ग्राम पंचायतों द्वारा और 3.3 प्रतिशत स्वैच्छिक संगठनों द्वारा। पर्यवेक्षक और अधिकारी अन्य क्रियाकलापों की अपेक्षा मनोरंजनात्मक क्रियाकलापों में ही भाग लेते थे। समाज शिक्षा में लगे अधिकारियों ने प्रचलित प्रशासन व्यवस्था में परिवर्तन का पक्ष लिया।

प्रसाद[1] ने उ0प्र0 में मिर्जापुर जिले के कुछ ग्रामों में साक्षरता कार्यक्रम के मूल्यांकन पर अध्ययन किया। उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रौढ़ सीखने वालों के सामाजिक आर्थिक विकास का अध्ययन किया । स्तरीकृत यादृच्छिक प्रदर्श द्वारा 78 स्कूलों का प्रदर्श लिया गया । विभिन्न प्रकार की सर्वेक्षण व अनुसूचियों को आंकड़ा संग्रह हेतु तैयार किया । अध्ययन के प्रमुख परिणाम (क) कुछ क्षेत्रों में साक्षरता प्रतिशत बढ़कर 4 से 9 प्रतिशत हो गया। (ख) कृषि, स्वास्थ्य, ऋण आदि पर अर्जित किये गये अध्ययन को लोगों द्वारा सही ढंग से प्रयुक्त नहीं किया गया। (ग) प्रौढों में शिक्षा के प्रति जागरूकता थी तथा (घ) प्रौढ़ महिलायें शिक्षा पुरूषों से कम रूचि लेती थीं।

कुदेसिया[2] ने मध्य प्रदेश के ग्रामीण विकास में समाज शिक्षा की भूमिका की खोज की। दत्त-संग्रह प्रश्नावली तथा साक्षात्कार प्रविधि द्वारा

---

1. प्रसाद एच,एडल्ट एजूकेशन एण्ड सोशियो इकोनोमिक डेवलपमेन्ट एजूकेशन आफ द लिट्रेसी स्कीम इन विलेजेस आफ मिरजापुर,यू0पी0 गान्धियन इन्स्टिट्यूट आफ स्टडीज वाराणसी 1971.

1. कुदेसिया,यू0सी0,"द रोल आफ सोशल एजूकेशन इन रूरल डेवलपमेन्ट आफ मध्य प्रदेश," पी0एच0डी0 थीसिस, एजूकेशन,सागर यूनि0 1973.

किया गया । समाज शिक्षा कार्यक्रम का प्रभाव और उसकी प्राप्ति को पंच-बिन्दु मापनी पर मूल्यांकित किया । अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि स्वास्थ्य शिक्षा का कार्यक्रम सुसंयोजित था तथा इस क्षेत्र में प्राप्ति का स्तर भी उच्चतर था । ग्रामीण व्यक्तियों की राजनैतिक चेतना निम्न स्तर पर थी। उन्होंने पाया कि अस्पृश्यता, जाति-प्रथा, सामाजिक न्याय, तथा निर्धनता आज भी ग्रामीण विकास में बाधक शक्तियों के रूप में उपस्थित थीं।

सिंह और नारायण[1] ने खेती के **प्रौद्योगिक** ज्ञान को अपनाने में कृषक प्रशिक्षण की भूमिका के मूल्यांकन हेतु अध्ययन किया । अध्ययन में कानपुर के इन्स्टीट्यूट आफ एग्रीकल्चरल साइंस में प्रशिक्षित 50 कृषकों को लिया गया। कृषकों से साक्षात्कार द्वारा आंकड़े एकत्रित किये गये। विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण के प्रभाव को विश्लेषित करने के लिये **"पूर्व और पश्चात्** मूल्यांकनात्मक अभिकल्पना प्रयुक्त की गई। शोधकर्ताओं ने पाया कि कृषकों का प्रशिक्षण उनमें वांछित परिवर्तनों को लाने का एक प्रभावशाली तंत्र हो सकता है।

एक गहन अध्ययन में अग्निहोत्री[2] ने महाराष्ट्र के वर्धा जिले में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव का मूल्यांकन किया। शोध में अवलोकन तथा साक्षात्कार पद्धतियों को प्रयुक्त किया। प्रदर्श में 15-35 वर्षों के 250 पुरूषों तथा 250 महिलाओं को चुना गया । साक्षरता, सामाजिक अभिवृत्तियों, जीवन स्तर, में परिवर्तन, उत्तरदायित्व के प्रति जागरूकता, आर्थिक स्थितिं में सुधार, ज्ञान वृद्धि इत्यादि विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया गया।

---

1. सिंह एण्ड नारायण, आर० फारमर्स ट्रेनिंग एज एन इन्स्ट्रूमेन्ट आफ प्लान्ड एग्रीकल्चरल चेन्ज (एब्सट्रेक्टेड इन: बोर्डिया अनिल, एडि० फार्मर्स ट्रेनिंग एण्ड फन्क्शनल लिट्रेसी इण्डियन एडल्ट एजूकेशन एसोसियेशन, 17-बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग नईदिल्ली 1975) 1973.
2. अग्निहोत्री, एस०"इवैल्यूऐशन आफ द प्रोग्राम एडल्ट एजूकेशन इन आप्रेशन अन्डर द पाइलट प्लान इन वर्धा डिस्ट्रिक्ट, पी०एच०डी० थीसिस, एजू० नागपुर यूनिवर्सिटी 1974.

शोधकर्ता ने ग्रामीण व्यक्तियों के जीवन स्तर में सुधार नहीं पाया। उनकी कार्य निपुणता में कोई वृद्धि नहीं हुई। किन्तु ग्रामीणों ने आधुनिक कृषि विधियों के महत्व को समझना प्रारंभ कर दिया है। उनमें से एक सार्थक प्रतिशत ने स्वच्छता की आवश्यकता को भी समझा है।

ताल्लुकदार[1] ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात की अवधि में आसाम के राज्य में प्रौढ़ शिक्षा की स्थिति का सर्वेक्षण किया। व्यक्तिगत साक्षात्कार के साथ-साथ प्रश्नावली व अवलोकन को दत्त-संग्रह के लिये प्रयुक्त किया गया। उन्होंने पाया कि आसाम में राज्य प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम असंतोषजनक था जिसके कारण संचार तथा आवागमन का अभाव तथा प्रौढ़ शिक्षा के संबंध में विश्वविद्यालयों के स्वस्थ्य अभिवृत्ति का अभाव मुख्य कारण थे।

वेंकटैय्या[2] द्वारा आंध्र प्रदेश के कृषकों पर कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन किया गया । प्रायोगिक समूह में 540 प्रौढ़ प्रतिभागियों को रखा गया तथा नियंत्रण समूह में 270 निरक्षर प्रौढ़ कृषकों को रखा गया जो कि कार्यक्रम में भाग नहीं ले रहे थे तथा परीक्षण ग्राम के भी नहीं थे। प्रदर्श स्तरीकृत दैव निदर्शन के सिद्धान्त पर लिया गया था। उपलब्धि परीक्षण के चार प्रकारों तथा प्रौढ़ साक्षरता पर एक अभिवृत्ति पैमाना प्रयुक्त किया गया । अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष था कि साक्षरता के प्रयास में कोई सार्थक वृद्धि नहीं हुई तथा प्रतिभागियों के सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति में वृद्धि का अभाव पाया गया।

---

1. ताल्लुकदार, बी0के0, एडल्ट एजूकेशन इन आसाम ड्यूरिंग पोस्ट-इनडिपेन्डेन्स पीरियड, पी0एच0डी0, थीसिस एजू0 गोहाटी यूनिवर्सिटी, 1975.
2. वेंकटैय्या, एन0"लिट्रैसी प्रोग्राम आन द पार्टी सिपेन्टस इन आंध्र प्रदेश" पी0एच0डी0, थीसिस, एजूकेशन श्री वेंकटेश्वर यूनि0 1978.

ब्रह्म प्रकाश[1] ने भी हरियाणा और दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यात्मक साक्षरता के प्रभाव का अध्ययन किया । परीक्षणात्मक समूह में 594 प्रतिभागी कृषक (स्त्री व पुरूष) थे। नियंत्रण समूह में 200 निरक्षर प्रौढ़ कृषक (स्त्री और पुरूष) अन्य ग्रामों के थे। एक साक्षात्कार अनूसूची को उत्तरदाताओं के व्यवहार अभिवृत्ति व ज्ञान को परीक्षण करने के लिये प्रयुक्त किया गया था। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम ने प्रतिभागियों के व्यवहार, अभिवृत्ति और ज्ञान में एक सकारात्मक और सार्थक परिवर्तन लाया है।

नन्दा[2] ने पंजाब राज्य में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अध्ययन में पाया कि कार्यक्रम कई खामियां से गुजरा है। प्रदर्श में 97 प्रौढ़ शिक्षा कार्यकर्ताओं तथा 200 प्रौढ़ निरक्षरों को जो कि प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में आ रहे थे उनको रखा। निष्कर्षों से प्राप्त हुआ कि सामाजिक आर्थिक दशायें खेतिहार श्रमिकों को केन्द्रों में उपस्थित होने में अवरोधक है।

शर्मा तथा अन्य[3] ने सरदार पटेल इन्स्टीट्यूट आफ इकनोमिक्स एण्ड सोशल रिसर्च, अहमदाबाद की 47 स्वैच्छिक संस्थाओं का मूल्यांकन कार्य किया। यह अध्ययन भारत सरकार के शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय के अनुसार नीति निर्धारण के लिये सामग्री प्राप्त करने के लिये किया गया। अनुसूची तथा प्रश्नावली द्वारा दत्त-संग्रह किया गया । मूल्यांकन से ज्ञात हुआ कि प्रदर्श में शामिल केवल 94 प्रतिशत केन्द्र ही कार्यकर रहे थे तथा बीच में छोड़ने वालों की दर केवल 2 प्रतिशत थी।

---

1. ब्रह्म प्रकाश, "द इम्पैक्ट आफ फन्कशनल लिट्रेसी इन द रूरल एरियाज आफ हरियाणा एण्ड द यूनियन टेरिटरी आफ दिल्ली," पी0एच0डी0 थीसिस, एजूके0 कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी, 1078.
2. नन्दा, एस0के0"ए क्रिटिकल स्टडी आफ द डेवलपमेन्ट आफ एडल्ट एजूकेशन इन द पंजाब इयूरिंग द पीरियड फ्राम 1947 1972," पी0एच0डी0 थीसिस, एजूके0 पंचाब यूनिवर्सिटी ।
3. शर्मा, ए0 अन्य, एडल्ट एजूकेशन प्रोग्राम इन गुजरात एन एप्रेसल"एलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमि0 नयी दिल्ली, 1979.

अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा अन्य पिछड़े वर्गों का प्रतिशत सम्पूर्ण नामांकन का 75 प्रतिशत था। मूल्यांकन की दूसरी उपलब्धि यह थी कि कार्यात्मक विकास के तत्व तथा जागरूकता के सृजन को साक्षरता की तुलना में अनदेखा किया गया । प्रशिक्षण और पर्यवेक्षण गुणवत्ता संतोषजनक नहीं थी।

राजस्थान में राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का प्रथम मूल्यांकन इण्डियन इन्स्टीटयूट आफ मैनेजमेनट अहमदाबाद में राव तथा अन्य[1] द्वारा किया गया। अध्ययन का शीर्षक "सामाजिक परिवर्तन के लिये प्रौढ़ शिक्षा" था तथा यह राजस्थान राज्य में 4 जिलों में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का आयोजन करने वाली सात स्वैच्छिक संस्थाओं के मूल्यांकन से संबंधित था। साक्षात्कार अनुसूची, प्रश्नावली तथा अनौपचारिक परिचर्चा दत्त-संग्रह की प्रविधियां थीं। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि प्रत्येक केन्द्र में लगभग 50 से 60 प्रतिशत प्रौढ़ साक्षर हो रहे थे। एक अन्य सार्थक खोज यह थी कि क्रियान्वयन प्रक्रिया में विभिन्न स्त्रोत सीमाओं के बावजूद भी राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम राजस्थान में सफल रहा ।

राजस्थान में राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का दूसरा मूल्यांकन इण्डियन इन्स्टीटयूट आफ मैनेजमेन्ट में पेस्टनजी तथा अन्य[2] द्वारा किया गया मूल्यांकन में 50 स्वैच्छिक संस्थाओं, 186 केन्द्रों तथा राज्य में प्रौढ़ शिक्षा कार्य में संलग्न 2360 उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया। साक्षात्कार अनुसूचियां और अवलोकन अनुसूचियों को दत्त-संग्रह के लिये प्रयुक्त किया गया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि राजस्थान में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम संतोषजनक रूप से चल रहा है। कुछ कमियां जैसे मिट्टी के तेल की आपूर्ति, अपर्याप्त बैठने की व्यवस्था और पर्यवेक्षक में रूचि का अभाव पाया गया।

---

1. राव, टी०वी० अन्य, एडल्टएजूकेशन फार सोशल चेन्ज, मनोहर पब्लिकेशान्स, 2 अन्सारी रोड नयी दिल्ली 1980.

2. पेस्टनजी डी०एम०, अन्य, एन०ए०ई०पी० इन राजस्थान सेकन्ड अप्रेसल पब्लिक सिस्टम ग्रुप एजूकेशन सिस्टम यूनिट इन्स्टीटयूट आफ मैनेजमेन्ट, अहमदाबाद 1980

पांडिचेरी में राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का मूल्यांकनात्मक अध्ययन राज्य संसाधन केन्द्र द्वारा किया गया । मरिअप्पन और रामकृष्ण[1] ने शिक्षा विभाग, नेहरू युवक केन्द्रों, समाज कल्याण विभाग तथा स्वैच्छिक संस्थाओं से दैव प्रदर्श के आधार पर 30 केन्द्रों को चुना। दत्त-संग्रह के लिये प्रश्नावलियां तथा साक्षात्कार अनुसूचियां प्रयुक्त की गई। अध्ययन से ज्ञात होता है कि पांडिचेरी में राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम ने वर्ष 1979-80 के कार्यक्रम में लक्षित 99 प्रतिशत साक्षरों को आच्छादित किया है। राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के केन्द्रों की कुछ समस्यायें थीं जैसे- ग्रामीणों द्वारा असहयोग, समय से अनुदान का न मिलना तथा अनुदेशकों को कम भुगतान।

वर्मा तथा अन्य[2] ने बिहार में राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के स्वैच्छिक प्रयास का मूल्यांकन ए0एन0 एस0 इन्स्टीटयूट आफ सोशल स्टडीज की तरफ से किया । यह अध्ययन भारत सरकार को शिक्षा मंत्रालय के निर्देशन में सितम्बर - अक्टूबर 1979 में किया गया । अध्ययन का उद्देश्य अनुदेशाक की संतुष्टि और प्रशिक्षण अभिप्रेरणा तथा आयुलिंग व्यवसाय तथा भर्ती की विधि को जानना था । प्रदर्श में 133 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों से 113 अनुदेशकों (89 पुरूष व 24 महिलाओं) को रखा गया। दत्त प्रश्नावली के माध्यम से संग्रहीत किये गये। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार थे। : -

---

1. मरिअप्पन, एस0एण्ड रामकृष्णन, सी0 "एन इवैल्युएटिव स्टडी आफ द नेशनल एडल्ट एजूकेशन प्रोग्राम इन द यूनियन टेरिटरी आफ पाण्डिचेरी, स्टेट रिसोर्स सेन्टर फार नान फार्मल एजूकेशन 18 एडम्स रोड, चेपाक, मद्रास, 1980.
2. वर्मा तथा अन्य, वाल्युएन्टरी एफर्टस इन एडल्ट एजूकेशन पटना: ए0एन0एस0 इन्स्टीट्यूट आफ सोराल स्टडीज, 1981.

1. अनुदेशकों का 50 प्रतिशत जनसंख्या के अलाभान्वित वर्ग से सम्बद्ध था - 21 प्रतिशत स्त्रियां 18 प्रतिशत हरिजन तथा 11 प्रतिशत जनजातियां

2. अधिकतर अनुदेशक 20-35 वर्ष की आयु के थे।

3. 50 प्रतिशत अनुदेशक मैट्रिक स्तर के नीचे थे तथा उनमें से एक -तिहाई मैट्रिक थे। बाकी के पास उच्च शिक्षा थी।

4. अधिकतर सभी अनुदेशकों ने प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों से शिक्षण का प्रशिक्षण प्राप्त किया था ।

5. अनुदेशक प्राय: खेतिहर थे तथा उसी गांव के निवासी थे जहां पर प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र चल रहे थे।

बाशिया[1] ने उड़ीसा के जनजातीय अंचल में राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का अध्ययन किया । उन्होंने मयूरभंज जिले से तीन जनजातीय ग्राम पंचायतों को चुना, 106 समुदाय नेताओं, 108 निरक्षर प्रौढ़ों तथा 68 कार्यक्रमके बीच में केन्द्र छोड़ने वालों का साक्षात्कार लिया गया। तीन ग्राम पंचायतों की देखरेख में 40 केन्द्रों से 306 सीखने वालों से दत्त-संग्रह हेतु अवलोकन अनुसूची, तथा साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया । महत्वपूर्ण निष्कर्ष इस प्रकार हैं : -

1. केन्द्र में भौतिक सुविधाओं का अभाव ।
2. अनुदेशकों को भुगतान में अनियमितता तथा सरकार की विभिन्न एजेन्सियों में सामंजस्य का अभाव भी कार्यक्रम के क्रियान्वयन में

---

1. बाशिया, के०सी०, ए स्टडी आफ एन०ए०ई०पी०इन द ट्राइबल रीजन आफ उड़ीसा स्टेट, पी०एच०डी० थीसिस, एजूके० एम०एस० यूनिवर्सिटी आफ बड़ौदा 1982.

अवरोध उत्पन्न करता है ।

**प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में समस्याओं का अध्ययन :**

पूर्ववर्ती अध्ययनों के अतिरिक्त यह भी आवश्यक हो जाता है कि प्रौढ़ शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबंधित समस्याओं का भी उल्लेख किया जाये। गाडगिल, रे तथा नान्दी, मुर्मु द्वारा किये गये अध्ययन इस दिशा में कुछ प्रकाश डालते हैं।

गाडगिल[1] ने महाराष्ट्र के सतारा जिले में निरक्षरता में अन्तराल की समस्या में एक शोध किया । केन्द्र छोड़े अध-साक्षर तथा साक्षर के रूप में वर्गीकृत करने के लिये मराठी में लिखने तथा पढ़ने के लिये एक सूची बनायी। उन्होने निरक्षरता में अन्तराल में तीव्र गिरावट तथा मानक की प्रगतिशील वृद्धि जिसमें कि एक विद्यार्थी विद्यालय छोड़ता है, के बीच सकारात्मक संबंध पाया।

खान[2] जबकि कर्नाटक और बम्बई के चार जिलों में समाज शिक्षा की समस्याओं का परीक्षण कर रहे थे तब उन्होंने प्रौढ़ों के बीच निरक्षरता समाप्त करने के लिये सुझाव दिये।

अम्बष्ठ[3] ने जनजातियों की शिक्षा-समस्याओं को समझने के लिये बिहार राज्य के रांची जिले के जनजातीय क्षेत्र में शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था

---

1. गाडगिल, डी0आर, इन्वेस्टीगेशन इन्टू द प्रोबलम आफ लैप्स इन्टू इलिट्रेसी इन द सतारा डिस्ट्रिक्ट, गोखले इन्स्टीटयूट आफ पालिटिक्स एण्ड इकोनोमिक्स पूना 1945.
2. खान, एम0जेड0, "द प्रोब्लम आफ सोशल एजूकेशन इन फोर डिस्ट्रिक्टस आफ बाम्बे-कर्नाटक, पी0एच0डी0 थीसिस एजूके0कर्नाटक यूनिवर्सिटी 1958.
3. अम्बष्ठ, एन0के0"ए क्रिटिकल स्टडी आफ ट्राइबल एजूकेशन" (विथ स्पेशल रिफ्रेन्स टु रांची डिस्ट्रिक्ट एस0चंद0 एण्ड कं0 नयी दिल्ली 1970.

का सर्वेक्षण किया । इस कार्य के लिये गहन क्षेत्र अध्ययन किया गया । उत्तरदाताओं की अभिवृत्तियों को मापने के लिये प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। यह पाया गया कि गैर-जनजातीय क्षेत्रों की भांति ही जनजातीय क्षेत्रों में भी समाज शिक्षा का कार्यक्रम चल रहा था । साक्षरता-कक्षाओं, युवाक्रियाओं तथा लोक नृत्यों पर विशेष जोर था । शोधकर्ता ने पाया कि जनजातियों के जीवन में परिवर्तन के प्रमुख सूचक आधुनिक सुविधायें तथा पोशाक हैं।

उड़ीसा के सओराओं की शैक्षिक समस्याओं को जानने के लिये श्रीवास्तव[1] ने उड़ीसा के गंजम जिले में एक सर्वेक्षण किया । विभिन्न प्रकार की अनुसूचियां प्रपत्र और प्रश्नावलियां आंकड़ां संग्रह के लिये प्रयुक्त की गईं। अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्रौद्योगिक पिछड़ेपन के कारण शैक्षिक विकास प्राप्त करना कठिन हो गया है। यह भी ज्ञात होता है कि केन्द्र छोड़ने वालों के अत्यधिक मामले थे तथा प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में उपस्थिति भी बहुत कम थी। निरक्षरता का अधिक प्रतिशत होने के कारण विकास कार्यक्रमों का परिचय तथा क्रियान्वयन भी कठिन था।

भन्डारी[2] ने राजस्थान में उदयपुर जिले में प्रौढ़ साक्षरता कक्षाओं का अध्ययन किया । दो ग्राम पंचायतों से दैव आधार पर 192 उत्तरदाताओं (जिनमें दोनों सेट ह्रासग्रस्त और केन्द्र छोड़ने वाले सम्मिलित थे) से साक्षात्कार अनुसूची तथा अन्य अनुसूचियों के माध्यम से दत्त-संग्रह किया । शोधकर्ता

---

1. श्रीवास्तव, एल0आर0एन0, डेवलपमेन्ट, नीड्स आफ द ट्राइबल पीपुल, ट्राइबल एजूकेशन यूनिट एन0सी0ई0आर0टी0 नयी दिल्ली 1970.
2. भन्डारी, जे0एस0, फैक्टर्स अफेक्टिंग पर्सिसटेन्सी एण्ड ड्राप आउट आफ एडल्ट लिट्रेसी क्लासेज इन उदयपुर डिस्ट्रिक्ट, पी0एच0डी0 थीसिस, एग्रीकल्चर, उदयपुर यूनिवर्सिटी, 1974.

ने संशोधित कृषि तकनीकी के अपनाने, बचपन की स्कूली शिक्षा, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक समूहों से संबद्ध होना, व्यवसाय, वैवाहिक स्तर, जाति, लिंग, आयु के आधार पर छोड़ने और न छोड़ने के बीच कोई सार्थक विभिन्नता नहीं पाया ।

गेटोंड[1] ने भारत के महाराष्ट्र गुजरात, राजस्थान और कर्नाटक राज्यों में समाज शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन किया । लिकर्ट अभिवृत्ति पैमाना, प्रश्नावलियां तथा साक्षात्कार अनुसूची को यंत्र के रूप में आंकड़ा संग्रह के लिये प्रयुक्त किया गया । शोधकर्ता ने पाया कि : –

1. विश्वविद्यालय शिक्षकों को प्रौढ़ शिक्षा का स्पष्ट ज्ञान नहीं था।
2. यद्यपि प्रौढ़ शिक्षा अधिकारियों की यह मान्यता थी कि सामाजिक परिवर्तन समाज शिक्षा द्वारा लाया जा सकता है, किन्तु अभिजात वर्ग की मान्यता थी कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम हो सकती है ।

मुरमु[2] ने प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों से कार्यक्रम के मध्य केन्द्र छोड़ देने के कारणों का अध्ययन किया और कुछ निदानात्मक सुझाव दिये। प्रदर्श उड़ीसा के मयूरभंज जिले के जामदा खंड से लिया गया था । प्रदर्श में केवल 15–35 आयु समूह के केन्द्र छोड़ने वाले व्यक्तियों को लिया गया था । जिन्होंने प्रवेश के 3 माह के अन्दर ही केन्द्र जाना छोड़ दिया था । साक्षात्कार अनुसूची को आंकड़ा संग्रह के लिये प्रयुक्त किया गया था । महत्वपूर्ण उपलब्धियां इस प्रकार थीं : –

---

1. गेटोन्ड, एन0वी0,द प्रोब्लम आफ सोशल एजूकेशन, इण्डिया विथ स्पेशल रिफ्रेन्स टु महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान म0प्र0 एण्ड माइसोर (कर्नाटक) पी0एच0डी0 थीसिस, एजूके0पूना यूनिव0 1970.
2. मुरमु, आर0सी0,"ए स्टडी आफ द ड्राप आउट्स फ्राम द एडल्ट एजूकेशन सेन्टर्स कालेज एण्ड रिमेडिकल मेजर्स, एम0एड0 डिजर्टेशन, उत्कल यूनिवर्सिटी 1982.

1. केन्द्र छोड़ने वाले के परिवार जन अधिकतर निर्धन व निरक्षर थे ।

2. अरूचिकर कार्यक्रम, संचार साधनों का अभाव पर्याप्त तथा उचित पाठ्य सामग्री का अभाव, प्राकृतिक अवरोध, केन्द्रों में रात्रि में जाने में भूतों का भय, बीमारी ये कुछ कारण केन्द्र न जाने के थे।

3. प्रदर्श का एक बड़ा भाग केन्द्रों में पुनः जाने को तैयार था यदि उन्हें रोजगार के अवसर, आर्थिक सहायता, एक समय का भोजन, पत्र-पत्रिकायें तथा तथा रेडियो केन्द्रों में उपलब्ध कराये जायें ।

लाल एम0[1] ने बिहार के पश्चिमी चम्पारण जिले के नौटन बलाक का वैयक्तिक अध्ययन पद्वति द्वारा अध्ययन किया जहां पर कुछ विगत वर्षों से के0आर0 एजूकेशनल एसोसिएशन द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम चलाया जा रहा है। यह वैयक्तिक अध्ययन मानवशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के आधार पर किया गया है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि हरजिनों द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों में सहभागिता के परिणाम स्वरूप उनमें **"शक्तिहीनता"** की भावना कम हो रही है। तथा समाज में उन्हें सवर्णों के समकक्ष स्थान मिल रहा है ।

मूल्यांकन प्रभाग राज्य नियोजन संस्थान, उ0प्र0लखनऊ, से मार्च 1982 में "उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा का समवर्ती मूल्यांकन" किया गया । कार्यक्रम के समवर्ती मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य कार्यक्रम नियोजन एवं कार्यान्वयन की अध्यतन स्थिति तथा समग्र रूप में उसका प्रभाव ज्ञात करना

---

1. लाल मनोहर, रोल आफ एडल्ट एजूकेशन इन द रिमूवल आफ सिविल डिसएबिलिटीज आफ हरजिनस: ए केस स्टडी आफ हरिजन्स स्ट्रंगल फार टेम्पिल इन्ट्री" द डिप्रेस्ड क्लासेज आफ इण्डिया सम्पादन आर0जी0सिंह में उदधृत बी0आर0 पब्लिशिंग कारपोरेशन दिल्ली, (123-129) 1986.

था। कार्यक्रम से लाभान्वित किये जानेवाले निरक्षर प्रौढ़ों का अभिज्ञान तथा उनकी सहभागिता स्तर का अध्ययन करने के साथ ही कार्यक्रम, के प्रति उनकी एवं अनुदेशकों की रूचि, प्रशिक्षण, पठन-पाठन, व प्रशिक्षण की आपूर्ति, केन्द्र संचालन में जन साधारण से प्राप्त सहयोग, आदि पक्षों का अध्ययन सम्मिलित था। कार्यक्रम का प्रभाव ज्ञात करने के लिये केन्द्र संचालन के परिणाम स्वरूप प्रौढ़ प्रतिभागियों की साक्षरता व्यावहारिक दक्षता एवं चेतना जागृति के स्तरों में वृद्धि और उनके द्वारा अन्य विकास कार्यक्रमों में सहभागिता आदि ज्ञात करना भी अध्ययन के उद्देश्यों में निहित था ।

अध्ययन के उद्देश्य तथा इस कार्य हेतु उपलब्ध जनशक्ति और वर्ष 1980-81 में किये गये मूल्यांकन अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को ध्यान में रखते हुये प्रदेश के पर्वतीय, पश्चिमी, पूर्वी, मध्य तथा बुन्देलखण्ड और जनजाति बहुल क्षेत्र में संचालित की जा रही एक परियोजना यथा, कलजखाता (गढ़वाल), सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर), हाटा, (देवरिया), मोहनलाल गंज (लखनऊ), बड़ा गांव (झांसी) तथा रूद्रपुर (नैनीताल) का सोद्देश्य चयन कियागया था । इन परियोजनाओं से वर्ष 1981-82 में प्रारंभ किये गये 10-10 केन्द्रों के संचालन के परिणाम स्वरूप हुये परिवर्तनों का अध्ययन किया गया । इस हेतु चयनित केन्द्रों पर पंजीकृत 10 प्रतिशत प्रौढ़ों का न्यादर्श चुना गया तथा उनके प्रारंभिक एक अन्तिम स्तरों का अध्ययन किया गया ।

उपरोक्त अध्ययन में प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार रहे : -

1. परियोजना कार्यान्वयन के लिये उत्तरदायी प्रमुख अधिकारी जल्दी-जल्दी स्थानान्तरित किये जाने के कारण कार्यक्रम के विभिन्न पक्षों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

2. प्रथम चक्र में संचालित 30 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के प्रतिभागियों के मूल्यांकन परिणाम उपलब्ध नहीं थे। शेष केन्द्रों पर भरे गये

प्रश्न-पत्र (मूल्यांकन परिणाम) तथा मूल्यांकन एवं प्रगति पंजिकायें भी परियोजना कार्यालय में जमा नहीं की गई थी ।

3. परियोजना क्षेत्र में केन्द्र प्रारंभ किये जाने के लिये निर्धारित समय सारिणी तथा केन्द्रों के लिये पठन-पाठन सामग्री की आपूर्ति में ताल-मेल नहीं किया गया था । परिणामस्वरूप केन्द्रों के पठन-पाठन कार्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा था ।

4. अनुदेशक-अनुदेशिका को स्पष्ट नहीं था कि उन्हें प्रतिभागियों के चेतना जागृति एवं व्यावहारिक दक्षता वृद्धि के लिये क्या प्रयास करने थे। अतः निरक्षर प्रतिभागियों के लिये क्या प्रयास करने थे। अतः निरक्षर प्रतिभागियों की चेतना जागृति एवं व्यावहारिक दक्षता वृद्धि के लिये आशा कल्पना मात्र थी ।

**ए०एन० सिन्हा इन्स्टीट्यूट आफ सोशल साइन्सेज, बिहार :**

1979 में बिहार में राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के क्रियान्वयन का मूल्यांकन इस एजेन्सी द्वारा किया गया । अध्ययन हेतु 19 स्वैच्छिक संस्थाओं का चयन किया गया । प्रदर्श में 113 केन्द्र (10 प्रतिशत), 339 साक्षर 67 ड्राप आउट्स तथा 11 अनुदेशक सम्मिलित थे। प्रदर्श में पुरूष केन्द्रों की संख्या अधिक थी तथा स्त्री केन्द्रों की संख्या बहुत कम थी। अध्ययन किये

---

1. एडल्ट एजूकेशन फार डेवलपमेन्ट : स्टडी आफ एन०ए०ई०पी० इन बिहार (पटना: ए०एन०सिनहा इन्स्टीट्यूट आफ सोशल स्टडीज 1981 पृ० 169-179, एडल्ट एजूकेशन : पालिसी एण्ड परफार्मेन्स आई रामब्रह्मम ज्ञान पब्लिशिंग में उदधृत

गये 48 प्रतिशत प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र पूर्णतः अनुसूचित जातियों के लिये तथा 185 प्रतिशत अनुसूचित जनजातियों के लिये थे। औसत नामांकन 31.1 था। अध्ययन, में उन समस्याओं का उल्लेख भी किया गया जिनका सामना स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा किया जाता है जैसे- केन्द्रों की स्थापना, अनुदेशकों की भर्ती व प्रशिक्षण-शिक्षण सामग्री को पाने में विलम्ब, तथा स्वैच्छिक संस्थाओं को मिलने वाले अनुदान में विलम्ब।

**टाटा इन्स्टीट्यूट आफ सोशल साइंसेज बाम्बे :**

टाटा इन्स्टीट्यूट आफ सोशल साइन्सेज बाम्बे द्वारा महाराष्ट्र में राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा का अध्ययन किया गया । अध्ययन केवल स्वैच्छिक संस्थाओं तक ही सीमित नहीं था । सरकारी एजेन्सियों तथा विश्वविद्यालयों द्वारा चलाये जा रहे केन्द्रों को भी इस अध्ययन में लिया गया था ।

स्तरीकृत दैव प्रदर्श द्वारा 292 केन्द्रों को चयनित किया गया । प्रदर्श में 292 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को लिया गया था । जो कि प्रदर्श का 6 प्रतिशत था। राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं पर आंकड़ों को 1,102 सीखने वालों में 232 ड्रापआउट्स 249 सक्षम साक्षरों और 292 अनुदेशकों से एक साक्षात्कार द्वारा एकत्रित किया गया । केन्द्रों का 58 प्रतिशत पुरूष केन्द्र थे तथा 23 महिला केन्द्र थे। जबकि सम्मिलित केन्द्रों की संख्या सम्पूर्ण निदर्शन का केवल 5 प्रतिशत थी। जाति विशेष द्वारा केन्द्रों का खुलना यह प्रदर्शित करता है कि 23 प्रतिशत केन्द्र पूर्णतः अनुसूचित जातियों के लिये खोले गये 17 प्रतिशत अनुसूचित जनजातियों के लिये 9 प्रतिशत अन्य पिछड़े वर्गों के लिये तथा शेष 51 प्रतिशत सम्पूर्ण राज्य में जाति समूहों के लिये । यह पाया गया कि प्रत्येक केन्द्र में 30 प्रौढ़ों का औसत नामांकन अनुमोदित था किन्तु महाराष्ट्र में नामांकन कुछ अधिक (30.9 प्रतिशत) था ।

मूल्यांकन से ज्ञात होता है कि प्रशिक्षण कार्यक्रम के कम फैलाव के कारण समस्त अनुदेशकों के 100 प्रतिशत आच्छादन का परिणाम नहीं था। राजस्थान, गुजरात और तमिलनाडु के प्रतिवेदन मूल्यांकन से ज्ञात होता है

कि राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यात्मकता के कारणों की जिम्मेदारी लेते हुये स्वैच्छिक एजेन्सियों द्वारा कम वरीयता दी गई। महाराष्ट्र के मूल्यांकन से ज्ञात होता है कि उपरोक्त दो तत्वों को आच्छादित करने के लिये कुछ एजेन्सिया बनायी गई थी ।[1]

एम0आर0निम्बालकर[2] द्वारा गोआ जनपद के प्रौढ़ आयुवर्ग 15-35 के 11 गावों पर वर्ष 1978-82 तक खोले गये प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के 20 प्रतिशत को न्यादर्श में सम्मिलित किया है 1978-82 तक 923 केन्द्र खोले गये इस में से 276 केन्द्रों पर अध्ययन किया । चार पत्रियाँ प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र स्तरीय पत्री शिक्षक पत्री, पूर्व प्रतिभागी पत्री तथा छोड़ने वाले भागी पत्री परिणाम निम्नवत मिले ।

1. 73 प्रति भागियों की औसत उपस्थिति थी।
2. पुरूष और महिलाओं के केन्द्र छोड़ने की संख्या लगभग बराबर थी ।
3. तीन आर (3 R'S) की सामाजिक जागरूकता सन्तोषजनक नहीं थी शोध में प्रेरणा देने का सुधार दिया गया फसल काटने के पहले प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र चलाये जायें । अनुदेशकों को ही लिया जाये।

---

1. आई0 रामब्रह्मन, एडल्ट एजूकेशन पालिसी एण्ड परफार्मेन्स, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली में उदघृत पं0 58-59

2. निंबालकर एम0आर0 एडल्ट एजूकेशन एण्ड इट्स इवैल्यूऐशन सिस्टम (ए स्टडी आफ गोवा) मित्तल पब्लिकेशन्स, दिल्ली 110035 (भारत) 1987.

**"एक पढ़ाये एक"**

1987 में बड़ौदा विश्वविद्यालय द्वारा बड़ौदा जनपद में "एक पढ़ाये एक" कार्यक्रम चलाया गया । इसमें 15-35 वर्ष के निरक्षर ग्रामीण व्यक्तियों को साक्षर करने का कार्य किया गया । इसके परिणाम निम्नवत थे। 40 प्रतिशत कुछ नहीं सीख सके। 60 प्रतिशत साक्षर हुये मौखिक, लिखित तथा संख्या लिखने में 30 प्रतिशत प्रथम श्रेणी में, 15 प्रतिशत द्वितीय श्रेणी में तथा 15 प्रतिशत तृतीय श्रेणी में पाये गये।

---

1. योजना वाल्यू0 32, नं0 7 अप्रैल 16-30, 1988 पृ0 20.

(स) **राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण :**

परिषद (एन0सी0ई0आर0टी0) नई दिल्ली द्वारा चतुर्थ सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन 1983-88 वालूम II पृष्ठ 1172 - 1215 तक में प्रौढ़ शिक्षा से सम्बन्धित को भी अध्ययन अंकित है इन का अध्ययन इस शोध अध्ययन में सारांश में पन्ना ---123--- से ---169--- तक अंकित है।

**मुस्ताक अहमद** का निरक्षरों के पठन-पाठन से सम्बन्धित सर्वेक्षण भारत के सभी राज्यों का प्रतिनिधित्व करता है। सर्वेक्षण में पत्री, साक्षात्कार एवं विचार विमर्श प्रणाली अपनाई गई। निष्कर्ष निकला कि बहुत ही कम लेखक, इस क्षेत्र में विशिष्ट प्रशिक्षण प्राप्त किये। . . लेखकों को दिये निर्देश अत्यन्त अस्पष्ट थे। कमी सामग्री में विभिन्नता थी। जो भी पठन सामग्री थी वह बच्चों के पाठ्यक्रमों से ली गई थी।

इनके ही द्वारा हिन्दी की शिक्षण सामग्री और उन के अध्ययन के प्रति रूचि को ज्ञान करने तथा मूल्यांकन विधि के विषय में अध्ययन किया गया है। इस सर्वेक्षण विधि में प्रश्नावली तथा प्रशिक्षण पैराग्राफ प्रयोग किया गया । न्यादर्श में सभी पुस्तकों को लिया गया (संख्या नहीं दी) जिनको प्रौढ़ शिक्षा में प्रयोग में लाया गया था। इस सर्वेक्षण के परिणाम निम्नवत थे।

1. पठन-पाठन में भौतिक सामग्री सन्तोष जनक है
2. पुस्तकों में उदाहरण और देने की आवश्यकता प्रतीत होती हैं।
3. कुछ पुस्तकों के दाम अधिक प्रतीतहोते पाये गये ।
4. अधिक विषय वस्तु जीव विज्ञान, कृषि एवं सामाजिक अध्ययन के थे।
5. विषय वस्तु निरक्षरों के समझ में आने योग्य पाई गई।
6. बहुत कम ही लेखकों को प्रौढ़ शिक्षा साहित्य लिखने का प्रशिक्षण । मिला था ।

अल्कारा,जे0 तथा हेन रकिवस जे0 ने महाराष्ट्र के प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम पर अध्ययन किया । इसमें प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों (महाराष्ट्र) के प्रतिभागियों की उपस्थिति, उन के आन्तरिक कार्यक्रम, तथा शासन द्वारा निर्देशित कार्यक्रमों पर अध्ययन किया गया । 315 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, जिन में दो एजेन्सी राजकीय तथा विश्वविद्यालय ने कार्य किया है, लिया गया ।131 प्रतिभागी 177 छोड़कर जाने वाले, 247 पोटेन्शन प्रशिक्षार्थी साक्षात्कार पत्री अवलोकन विधि द्वारा अध्ययन किये गये। इन अध्ययन के निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुये ।

1. जिन केन्द्रों को प्राथमिकता के आधार पर खोला गया था उनसे सन्तोष जनक उत्तर मिले।

2. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र अधिकांश अनुदेशकों के घर में खोले गये थे।

3. 37 प्रतिशत अनुदेशकों को 30 प्रतिभागी कठिनता से मिले।

4. 296 केन्द्रों में 15 केन्द्रों में हाजरी में हेराफेरी करने के प्रमाण मिले ।

5. छोड़कर जाने वाले प्रतिभागियों में, आर्थिक एवं समय न मिलने की कठिनाईयां थी।

6. केवल 1 प्रतिशत प्रतिभागियों ने शत प्रतिशत अंक पाये थे।

7. साक्षरता से सभी प्रति भागियों को सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक गतिविधियां में लाभ हुआ ।

8. लगभग 25 प्रतिशत प्रतिभागियों ने गणित और गणना में शतप्रतिशत अंक पाये ।

**भौमिक के०एल०,** द्वारा अध्ययन समाज शिक्षा इन त्रिपुरा एण्ड कछार पी०एच०डी० उपाधि हेतु 1981 में कियागया । इस शोध अध्ययन में समाज शिक्षा के विभिन्न पहलुओं में आंकड़े एकत्र किये गये । सतत् शिक्षा को भी इस अध्ययन में लिया गया है। इसमें प्रश्नावली विधि, साक्षात्कार केन्द्र रिकार्ड द्वारा आंकड़े किये गये। निष्कर्ष निम्नवत हैं।

1. त्रिपुरा एवं कछार जनपद का समाज शिक्षा के परिणाम सराहनीय हैं।

2. पहाड़ी भौगोलिक स्थिति, आर्थिक तथा मनुष्यों के रहन-सहन की दशा तथा कार्य प्रणाली को देखते हुये कार्य करने में प्रोत्साहन की आवश्यकता है ।

3. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में महिलाओं की नितान्त असन्तोष जनक उपस्थिति विभिन्न कारणों से पाई गई ।

4. निरक्षर प्रौढ़ शिक्षा शिक्षण में अधिक रूचि लेते पाये गये।

**चतुर्वेदी यस०के०** द्वारा भारत में 11 अनौपचारिक शिक्षा के ऐतिहासिक पक्ष पर पी०एच०डी० हेतु 1986 में अध्ययन किया गया । इसमें भारतीय पद्वति तथा वैज्ञानिक पक्ष को लेकर कार्य 300 विशेष व्यक्तियों से जिन्होंने प्रौढ़ शिक्षा में कार्य किया गया, प्रश्नावली एवं साक्षात्कार तथा विचार विनिमय करके देखा गया । इसके प्रमुख निष्कर्ष निम्नवत प्राप्त हुये ।

1. भारतीय पद्वति से निरक्षरों को शिक्षा देने का इतिहास 4000 बी०सी० में प्रारम्भ हुआ।

2. उस समय अनौपचारिक शिक्षा अर्थ, धर्म, कर्म, और मोक्ष पर आधारित थे।

3. अध्ययन की विधि धार्मिक कार्य कलापों पर आधारित थी ।

4. सभी पाठ्यक्रम धार्मिक कार्यों से जुड़े हुये थे।

5. धीरे-धीरे इस प्रकार की शिक्षण व्यवस्था पाठशालाओं मकतबों में बदल गई ।

6. शिक्षा का उद्देश्य, मनुष्य को पवित्र विचारों को अपनाने की ओर अग्रसर करना था ।

**कौन्शिल फार सोशल डेवलपमेन्ट** के अन्तर्गत फंकशनल लिट्रेसी प्रोग्राम आफ आई०सी०डी० स्कीम कथुरा, हरियाणा नई दिल्ली द्वारा 1982 में अध्ययन किया गया । प्रतिभागियों को प्रथम एवं द्वितीय चरणों में कुछ समय देने के बाद अध्ययन किया गया । इसमें प्रश्नावली तथा साक्षात्कार विधि अपनाई गई। इसके मुख्य निष्कर्ष निम्नवत हैं ।

1. प्रतिभागी 90 प्रतिशत निरक्षर थे। केन्द्रों में औसत उपस्थिति 50 प्रतिशत थी ।

2. पुस्तक प्राइमर, जो प्रयोग की जाती थी, वह कक्षा 1 के प्राइमरी स्कूल के बालकों के समान थी।

3. प्रतिभागियों का सामान्य ज्ञान मौखिक स्तर पर सन्तोष जनक पाया गया ।

4. अनुदेशकों द्वारा देखभाल तथा निर्देशन कार्य सन्तोषजनक नहीं था ।

**दत्ता एस०सी० तथा केमफायर हेलेन** ने "समाज शिक्षा इन दिल्ली" 1969 में शोध कार्य किया । इस सर्वेक्षण में तीन समाज सेवी एजेन्सी से साक्षात्कार द्वारा आंकड़े एकत्र किये गये। इससे प्राप्त परिणाम निम्नवत हैं।

1. प्रतिभागी 35 वर्ष से कम आयु के थे, जो प्राइमरी स्कूल स्तर की ही शिक्षा प्राप्त किये थे। ये प्रतिभागी, चौकीदार, चपरासी, आदि थे।

2. औरतों को क्राफ्ट का प्रशिक्षण पसन्द था। उसमें वे रुचि लेती थीं एवे उपस्थित रहती थी।

3. प्रशिक्षण की सामग्री, औजारों का अभाव है ।

4. सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं मनोरंजन सम्बन्धी कार्यक्रमों की और आवश्यकता प्रतीत होती लगी।

5. कार्यक्रम में **"शिशु कार्नर"** की भी आवश्यकता प्रतीत हुई।

**देसाई, राम पाटिल, वी० बी० एवं शाह एस०जी०** द्वारा गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद में 1982 में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की समीक्षा की गई। प्रशासन द्वारा देख भाल के प्रति जानकारी, कार्यक्रमों से लाभ तथा आने वाली कठिनाइयों के विषय में जानकारी प्राप्त करना इसका उद्देश्य था। प्रदर्श के 53 प्रोजेक्ट अधिकारी 8 सुपरवाइजर तथा बहुत से प्रोजेक्ट अधिकारियों ने सुपरवाइजर का कार्य किया । प्रश्नावली तथा साक्षात्कार ने माध्यम से दत्त एकत्र किये गये। खोज परिणाम निम्नवत हैं : -

1. 91 प्रतिशत प्रतिभागी 35 वर्ष से कम आयु के थे।

2. सभी सुपरवाइजर 40 वर्ष से अधिक आयु के थे।

3. सुपरवाइजर एस0एस0सी0 पास थे तथा कुछ पी0टी0सी0 प्रशिक्षित थे।

4. 2459 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में से 581 महिलाओं के थे। 1418 पुरूषों के तथा शेष मिश्रित केन्द्र थे।

5. 64 प्रतिशत प्रतिभागियों का मत था कि सुपर विजन कार्य ठीक प्रकार से किया गया ।

6. केन्द्रों में सभी प्रकार की सुविधायें होते हुए भी प्रतिभागीयों को 10 प्रतिशत ही लाभ होता मापा गया ।

7. निरीक्षकों का मत था कि प्रशिक्षण कार्य एक ही स्थान पर हो

**गंगोली पी0के0 पाठक, के0एन0 मिर्जा एस0** द्वारा 1983 में (पटना) बिहार में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के मूल्यांकन पर कार्य किया गया । इस में 5 एन0ए0इ0पी0 की योजना के 458 प्रतिभागियों 13 छोड़ने वाले तथा 5 परियोजना अधिकारियों 45 सुपरवाइजर, 96 अनुदेशक दृच्छ विधि से चुना गया । इन्हें 6 प्रश्नावलियों (साक्षात्कार) दी गई। निष्कर्ष निम्नवत हैं।

1. जितना साक्षरता के लिये व्यय होता है उसकी तुलना में लोगों को बहुत कम लाभ हुआ ।

2. सम्पूर्ण लाभ को देखते हुये लाभार्थियों का प्रतिशत सन्तोषजनक था ।

3. प्रतिभागियों का व्यावहारिक ज्ञान सन्तोषजनक नहीं था।

4. कार्यक्रम से जितनी आशय की जाती थी वह सन्तोषजनक नहीं थी ।

**गंगोली पी०के०** 1984 में बिहार विश्वविद्यालय पटना द्वारा 40 प्रौढ़ प्रतिभागियों 8 अनुदेशक एवं 2 सुपरवाइजर प्रतिदर्श पर केस स्टडी की गई। निष्कर्ष निम्नांकित प्राप्त हुये ।

1. बिहार विश्वविद्यालय द्वारा चलाये कार्यक्रम सन्तोषजनक थे।

2. सभी क्षेत्रों (व्यावहारिक पक्ष, आर्थिक सामाजिक राजनैतिक पक्ष) में लाभ सन्तोषजनक नहीं था ।

3. लाभार्थियों को अपने अधिकारों कर्तव्यों का ज्ञान सन्तोषजनक नहीं था ।

**गंगोली पी०के०, पाठक के० ए० तथा मिर्जा एस०** ने वर्ष 1984 में शीघ्र सीखने पर अध्ययन किया । इन्होंने 4.650 पूर्व प्रतिभागियों जिन्होंने 31 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों से शिक्षा प्राप्त की थी। नयादश में आयु, स्त्री, पुरूष, जाति का ध्यान रखा गया था । प्रयुक्त साक्षात्कार पत्र के अध्ययन से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुये ।

1. प्रत्येक केन्द्र में प्रतिभागियों को कुछ लाभ हुआ ।

2. प्रतिभागी पढ़ अधिक सकते थे किन्तु लिखने का कार्य नहीं कर सकते थे।

3. शिक्षण का लाभ धीरे-धीरे समाप्त होता पाया गया ।

4. 31 परियोजना केन्द्र में 9 केन्द्रों में गणित की जानकारी प्रतिभागियों में अधिक थी ।

**गंगोली पी0के** द्वारा 1983 में एक प्रारम्भिक अध्ययन किया गया। यह अध्ययन भोजपुर जनपद (बिहार) में हुआ जे0के0 नायक के तृतीय माडल के आधार पर कार्य किया । यह प्रश्न-अध्ययन कार्यक्रम था। साक्षात्कार पद्धति भी अपनाई गई । निष्कर्ष निम्नवत निकले।

1. तृतीय माडल प्रतिभागियों में अच्छा कार्य कर रहा है।

2. कुछ सुधार माडल में करना उचित होगा ।

**गोड़ एम0ए0** ने बाम्बे विश्वविद्यालय से 1987 में पी0एच0डी0 उपाधि हेतु "प्रौढ़ शिक्षा 20 सूत्रीय कार्यक्रम के रूप में" अध्ययन किया। पुस्तकालय से आंकड़े एकत्र करना, चयनित 774 प्रतिभागियों तथा 24 कालेज अध्यापकों का साक्षात्कार किया । प्रश्नावली के माध्यम से निम्नवत परिणाम मिले।

1. साक्षरता उस गति से नहीं हुई है जिस गति से जनसंख्या की वृद्धि हो रही है।

2. प्रौढ़ प्रतिभागियों को दर में निरन्तर प्रयास के बाद भी सन्तोषजनक बदलाव नहीं रहा ।

3. अध्यापकों के प्रयास से भी सन्तोषजनक सुधार नहीं हो रहा है। लाभ का प्रतिशत अच्छा नहीं है।

4. वर्णमाला कुछ को याद है कुछ को नहीं।

5. गणित के प्रति उदासीनता प्रतिभागियों में पाई गई ।

**हरिहर, आर0 तथा राव टी0वी0** द्वारा 1982 में, प्रौढ़ शिक्षा तृतीय अवलोकन झुनझूनू जनपद (राजस्थान) में की गई। सर्वेक्षण विधि द्वारा 10 सुपरवाईजर, 31 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र 31, इंस्ट्रक्टर तथा 129 प्रतिभागियों का यदृच्छ चयनित न्यादर्श लिया गया । साक्षात्कार एवं परिनिरीक्षण पत्री प्रयोग की गई। इसके निष्कर्ष निम्नवत प्राप्त हुये ।

1. अधिकांश अनुदेशक युवक थे एवं हाई स्कूल पास थे।

2. अधिकांश समाज सेवा में रूचि रखने के कारण प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में लिये गये थे।

3. आधे अनुदेशकों का मत था कि वह प्रौढ़ शिक्षा की उपलब्धियों से सन्तुष्ट है।

4. सभी का कहना था कि उन्हें समय से सामग्री पढ़ाने को मिल जाती थी।

5. प्रत्येक केन्द्र में 20-30 प्रतिभागी पंजीकृत थे।

6. अनुदेशक गांव की समस्याओं से परिचित थे किन्तु बैंक तथा कृषि से सम्बन्धित ज्ञान की कमी थी।

7. अधिकांश प्रतिभागी अनुसूचित जाति के थे।

8. प्रतिभागियों का ज्ञान गणित एवं भाषा में सन्तोषजनक था।

9. प्रतिभागियों में सामाजिक राजनैतिक चेतना तथा कृषि की जानकारी सन्तोषजनक है ।

**कान्ता, ऋषि एवं दत्त, नारायण** द्वारा हरियाणा में 1984 में प्रौढ़ शिक्षा के मूल्यांकन पर अध्ययन किया गया । नयादर्श में तीन जनपद के 20 प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी 20 सुपरवाइजर, 39 अनुदेशक 37 प्रौढ़ प्रतिभागी 36 अनौपचारिक शिक्षा के प्रतिभागी लिये गये। साक्षात्कार पत्री प्रयोग की गई। इस अध्ययन के निष्कर्ष निम्नवत हैं : -

1. प्रतिभागियों में 93 प्रतिशत लिख पढ़ सकते थे।

2. 97 प्रतिशत 100 तक गिनती गिन सकते थे।

3. प्रतिभागी राम चरित मानस पढ़ना, मजदूरी में प्राप्त धनराशि को गिनना, अधिकार कर्तव्य के विषय में ज्ञान जान गये थे।

4. महिलाओं ने शिक्षण में अधिक रूचि ली। विभिन्न क्राफ्ट के के जानने में रूचि लेती थी।

5. अनुदेशक कम वेतन से असंन्तुष्ट थे।

6. अनौपचारिक शिक्षा के छात्र 70 प्रतिशत आगे शिक्षा जारी रक्खे। 14 प्रतिशत ने चाय की दुकान, घर का कार्य करने लगे।

7. प्रतिभागियों का मत था कि केन्द्रों में बैठने की व्यवस्था, पानी की व्यवस्था, पठन-पाठन के सामग्री की व्यवस्था सन्तोष जनक बताई।

8. सभी का कहना था कि पुस्तकालय की व्यवस्था नहीं है।

9. प्रौढ़ शिक्षा में 70 प्रतिशत सामान्य दक्षता रखने के तथा अनौपचारिक शिक्षा 49, 45 प्रतिशत सामान्य दक्षता तथा अन्य जानकारी रखते पाये गये।

**खजुरिया के0 डी0, राही ए0 एल0** द्वारा 1985 में प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन पर कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम पर अध्ययन हुआ। सर्वेक्षण विधि अपनाई गई इस अध्ययन के निम्नवत निष्कर्ष प्राप्त हुये।

1. विश्वविद्यालय के सफाई करने वाले, चौकीदार 100 तक गिनती जानने लगे।

2. हिन्दी के वर्णमाला जानने लगे।

3. यू0जी0सी0 द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रतिभागी जानकारी प्राप्त कर चुके थे।

4. 3512 प्रतिभागियों में से 1991 पढ़ना लिखना सीख गये।

5. प्रतिभागियों को साक्षर करने में विश्वविद्यालय के छात्रों ने भाग लिया उन्हें यह अनिवार्य रूप से कुछ समय कार्य करना पड़ा ।

**कुण्ड्ड सी0एल0** ने बाम्बे विश्वविद्यालय में 1985 में प्रौढ़ शिक्षा के शिक्षण विधि पर अध्ययन किया । इसमें 100 प्रतिभागी आयुवर्ग 15-25 के । प्रतिभागियों को 20 कार्ड दिखाये गये जो एक पुस्तिका के रूप में थे। कार्ड में शरीर के अंग, तथा वर्णमाला के अक्षर थे। तथा सामान्य जानकारी के थे। इस अध्ययन से समिति निष्कर्ष प्राप्त हुये।

1. बाम्बे विश्वविद्यालय का माडल पढ़ाने हेतु उपयोगी सिद्ध हुआ

2. माडल में शिक्षण के पैरामीटर सन्तोषजनक थे।

**लक्ष्मीनारायण पी0 च0** ने विशाखापट्नम (आन्ध्र प्रदेश) मे अनुसूचित जनजाति के प्रौढ़ों पर 1983 में अध्ययन किया । न्यादर्श चार प्रकार के थे।

अ. वह जो अनुसूचित जनजाति के बारे में जानते थे।

ब. वह जो अनुसूचित जनजाति के शिक्षण के विषय में जानते थे।

स. वह जो अनुसूचित जनजाति के विषय में विशिष्ट शिक्षण के बारे में ज्ञान दे सकते थे।

द. वह जो व्यावहारिक कार्यक्रम का रूप देख सकते थे।

इनकी संख्या क्रमशः 377, 131, 31, 12 की साक्षात्कार पत्री द्वारा अध्ययन कार्य किया गया । इसके निष्कर्ष निम्नलिखित प्राप्त हुये।

1. 94.96 प्रतिशत प्रतिभागी 35 वर्ष से कम आयु के थे।

2. 45.89 प्रतिशत कक्षाओं को कार्यदिवस में उपस्थिति रहे।

3. 72.94 प्रतिभागी किसी प्रकार की पहिले शिक्षा नहीं प्राप्त किये थे ।

4. 37.66 प्रतिशत ने बताया उन्हें शिक्षा से लाभ हुआ ।

5. 63.66 प्रतिशत और ज्ञान प्राप्त करना चाहते थे।

**लाल, एम0 एवं मिश्रा, आर0** द्वारा 1983 में प्रौढ़ शिक्षा का तृतीय अवलोकन पटना (बिहार) अध्ययन किया गया । **न्यादर्श दो** चरणों में लिये गये ।. प्रथम चरण में 20 प्रतिशत प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र जिन्होंने कम से कम 6 माह पूरे कर लिये हो तथा द्वितीय चरण में 5 वर्तमान प्रतिभागी प्रत्येक प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र से लिये गये।

| प्रतिदर्श | प्रथम चरण | प्रतिभागी | अनुदेशक | निरीक्षक |
|---|---|---|---|---|
| | द्वितीय | 800 | 40 | 43 |

निरीक्षण प्रपत्र प्रयोग में लाया गया । इस अध्ययन के निष्कर्ष निम्नवत हैं।

1. अनुसूचित जाति की महिलाओं का प्रतिनिधित्व सन्तोषजनक नहीं था।

2. अधिकांश प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र बिना भवन के थे कक्षायें खुले स्थान पर लगती थी।

3. प्रकाश की कमी शिक्षण कार्य में बाधक थी।

4. प्रतिभागी गणना, करने में, लिखने में सन्तोषजनक कार्य करते थे।

5. राजनैतिक, सामाजिक चेतना सन्तोषजनक थी।

**मद्रास इन्स्टीट्यूट आफ डेवलपमेन्ट स्टेडीज(तमिलनाडु)** 1984 में अध्ययन ने ज्ञान, रूचि तथा दक्षता विभिन्न प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की थी। न्यादर्श में 16 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र धर्मपुरी, थानजवर तथा तिरनूलवेली जनपदों को लिया । 36 प्रतिभागी तथा 56 छोड़नें वाले प्रतिभागियों का 16 अनुदेशकों ने आंकड़े लिये। साक्षात्कार तथा सूचना पत्री प्रयोग में लाई गई। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत हैं।

1. जिन प्रतिभागियों की पूर्ण उपस्थिति थी उन्होने शतप्रतिशत लिखने पढ़ने का ज्ञान अर्जित किया ।

2. लगभग पचास प्रतिशत को पूर्ण रूप से लिखना पढ़ना आ गया

3. एक तिहाई प्रतिभागी शत प्रतिशत उपस्थिति रहते थे।

4. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में पठन-पाठन सामग्री का अभाव था।

5. स्वयं सेवी संस्था ने प्रौढ़ शिक्षा कार्य क्रम को चलाने का कार्य नहीं किया ।

6. सुझाव यह दिया गया कि स्वयं पढ़ने की सामग्री का विकास किया जाये ।

**अ॰ि यायन, सुशीला** ने ऐहसा (मद्रास) 1987 में प्रौढ़ शिक्षा पर अध्ययन कि॰ा । दस माह कार्यक्रम चलने के बाद लाभ का अध्ययन किया ॰या साक्षात्कार पत्री द्वारा आंकड़े प्राप्त किये गये। नयादर्श का उल्लेख नहीं है, इस अध्ययन से निम्नवत निष्कर्ष प्राप्त हुये ।

1. सांस्कृतिक कार्यक्रम, फिल्म, कार्यक्रम को रोचक बताते हैं।

2. 60 प्रतिशत प्रतिभागियों ने पढ़ने लिखने का लाभ प्राप्त किया

3. 63 प्रतिशत ने कार्य जगत में दक्षता पाने का लाभ पाया ।

इनके द्वारा ही एक और अध्ययन पाण्डेचरी में 1981 में किया गया । आंकड़े साक्षात्कार एवं प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त किये गये। (न्यादर्श नहीं अंकित किया गया ) इस अध्यन के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये।

1. वर्ष 1979-80 में निर्धारित संख्या का 99 प्रतिशत भाग प्रौढ़ शिक्षा में लिया गया ।

2. प्लेट पेन्सिल, नोट बुक निःशुल्क प्रतिभागियों को दिये जाते थे।
3. लेक्चर प्रणाली पढ़ाने की विधि थी।

4. साथ में विकास के और कार्यक्रमों की सूचना दी जाती थी।

5. प्रतिभागियों को कार्यक्रम नीरस लगता था।

**मिश्रा एन0** ने 1986 में सालपुर कालेज (कटक) में प्रौढ़ों के पाठ्यक्रम, व्यवस्था तथा प्रेरणा पर अध्ययन किया । अध्ययन केवल यू0जी0सी0 के कार्यक्रम से सम्बन्धित था। न्यादर्श में 10 पुरूष एवं 10 महिला केन्द्र लिये। 100, 100 प्रतिभागी तथा 19 इन्स्ट्रेक्टर लिये, अनपढ़ केन्द्र छोड़ने वाले, तथा नेता लोगों के आंकड़े प्राप्त किये गये। रिकार्ड भी देखे गये। प्रश्नावली, निरीक्षण पत्रावली को माध्यम बनाया गया । इस अध्ययन की निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए ।

1. 5 प्रतिशत प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र शुरू होते ही बन्द हो गये।

2. सभी केन्द्र ग्रामीण पाठशालाओं में चलाये जा रहे थे।

3. सफाई की दशा सन्तोषजनक नहीं थी।

4. प्रतिभागियों की उपस्थिति सन्तोषजनक नहीं थी।
5. पठन-पाठन सामग्री की कमी की ।

6. पाठ्य क्रम ग्रामीण प्रौढ़ों के कार्य कलापों से तालमेल नहीं रखता था ।

**महापात्र पी0एल0** ने 1987 में (भुवनेश्वर) में एक तुलनात्मक अध्ययन किया । प्रत्येक वर्ग विवाहित, अविवाहित की 100, 100 महिलाओं का न्यादर्श था तथा शिक्षित एवं अशिक्षित का भी ध्यान रखा गया । इन दोनों की विश्वनीयता 0.87 के लगभग थी। इसके निष्कर्ष निम्नवत थे।

1. लगभग सभी शिक्षित छोटे परिवार एवं देर से शादी के पक्ष में थे।

2. इसी प्रकार कुछ अशिक्षित महिलायें भी छोटे परिवार तथा देर से विवाह के पक्ष में थीं 24 प्रतिशत जल्द विवाह के पक्ष में थी।

3. अशिक्षित महिलायें 5 या 6 का परिवार पसन्द करती है।

4. शिक्षा परिवार को सीमित करने में मदद देती है।

**मुस्ताक अहमद** का 1984 में हुआ अध्ययन रूचि सम्बन्धी था। अध्ययन बिहार राजस्थान, उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के एक एक जनपद पर आधारित है। प्रत्येक जनपद से 100 शिक्षित प्रतिभागी लिये गये। (संख्या 263 पुरूष 89 महिला) प्रौढ़ शिक्षा की पुस्तकें प्रयोग में लाई गई। साथ में साक्षात्कार भी लिया गया । अध्ययन के निष्कर्ष निम्नवत हैं।

1. शिक्षण स्तर केवल प्राइमरी स्तर का ही पाया गया ।

2. विभिन्न जगहों पर भिन्न परिणाम में 33 प्रतिशत राजस्थान, 14 प्रतिशत मध्य प्रदेश 24 प्रतिशत उत्तर प्रदेश, 18 प्रतिशत बिहार ।

3. 57 प्रतिशत प्रतिभागियों ने स्वयं किताब खरीदी थी ।

4. कहानियों की किताब अधिक थी।

5. 21 प्रतिशत के पास पुस्तकें नहीं थी।

इनके द्वारा ही पढ़ने के स्तर तथा समय का अध्ययन 1984 में इन्हीं चारों स्थान पर किया गया निष्कर्ष निम्नवत थे।

1. 27 प्रतिशत पढ़ने की दक्षता पाये थे।

2. तीन माह में 70 घन्टे पढ़ने पर तीन शब्दों के समूह को पढ़ने लगे थे।

3. 76 प्रतिशत थोड़ा पढ़ने लगे थे।

4. 73 प्रतिशत लिखे को कापी कर लेते थे।

5. 36 प्रतिशत तीन शब्द के जोड़े लिख लेते थे।

**नैम्बालकर एम० बी०** द्वारा 1978-82 में गोआ में पी०एच०डी० हेतु अध्ययन हुआ 1985 में कार्य पूरा किया । अध्ययन में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के कार्य प्रणाली कार्मियों एवं साक्षरता के विषय थे। रेन्डम प्रतिदर्श विधि से 15-35 वर्ष के 100 केन्द्रों के 100 प्रतिभागी तथा 100 अनुदेशक 200 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र छोड़ने वाले प्रतिभागियों का अध्ययन टेस्ट द्वारा अध्ययन किया गया । निष्कर्ष निम्नवत है।

1. अधिकांश केन्द्रों को चार्ट, समाचार पत्र, पुस्तिकायें तथा प्रौढ़ शिक्षा के फोल्डर्स नहीं दिये गये।

2. कृषि व्यवसाय के श्रमिकों ने प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र छोड़े थे।

3. प्रतिभागियों में से सब अपने हस्ताक्षर करना सीख लिया था।

4. फसल काटने के समय उपस्थिति बहुत कम हो जाती थी।

5. अधिकांश को छोटे परिवार की सूचनायें थीं।

6. श्रव्य-दृश्य तथा फिल्म शो केन्द्र में दिखाने का कार्य होता था।

7. अधिकांश महिलायें वर्णमाला के कुछ शब्द लिखना जान गई की।

**सुप्पय्या वी०सी० एवं हेमलता एल०पी०** द्वारा 1982 में विकास खण्ड स्तर पर प्रौढ़ शिक्षा के कार्य क्रम का अध्यन महाराष्ट्र में किया गया न्यादर्श में 20 प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी 10 स्थानीय नेता तथा 60 प्रतिभागी थे। इनका साक्षात्कार किया गया और ज्ञात किया गया कि जनपद स्तर के अधिकारियों एवं विकास खण्ड स्तर के व्यक्तियों के कार्यक्रम में क्या मुख्य बाते हैं। अध्ययन के निष्कर्ष निम्नवत हैं।

1. जनपद तथा विकास खण्ड के अधिकारियों कार्यकर्ताओं को विभिन्न विकास योजनाओं का आंशिक ज्ञान ही है। उनको जो भी प्रशिक्षण दिया गया है वह अपर्याप्त है।

2. राज्य सरकार/प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय द्वारा मूल्यांकन सम्बन्धी सर्वेक्षण अभी तक नहीं किया गया ।

3. राज्य प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय द्वारा केन्द्र खोलने एवं प्रतिभागियों के केन्द्र में उपस्थिति होने का ही कार्य किया है।

4. प्रतिभागियों का दृष्टिकोण प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र को आते रहने का है।

5. प्रतिभागियों को प्रौढ़ शिक्षा से लाभ होने के प्रमाण नहीं है।

**नाग राजू सी0एस0** द्वारा 1986 में बंगलौर (कर्नाटक) में व्यावहारिक शिक्षण के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया । अध्ययन में 332 सिल्क के कीड़े पालने वालों का अध्ययन किया गया जिनमें प्रौढ़ शिक्षा के प्रतिभागी भी थे। निष्कर्ष निम्नवत हैं।

1. प्रतिभागियों ने सिल्क कीड़े पालने का प्रशिक्षण लिया था उन्होंने दूसरे किस्म के कीड़े भी पालना प्रारम्भ किया और उन्हें अपेक्षाकृत अधिक लाभ हुआ ।

2. जिन्होंने प्रशिक्षण नहीं लिया उनके कार्यप्रणाली में बहुत अन्तर था ।

3. दोनों ही प्रकार के कार्यों में कीड़ों के नष्ट होने का दशा एक समान थी।

**पारिख जी0ओ0** द्वारा 1985 में गुजरात में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में अध्ययन किया गया । न्यादर्श में प्रौढ़ शिक्षा के तीन प्रकार के केन्द्र ए0ई0पी0 आर0एफ0एल0आर0, एस0ई0पी0 के 159 केन्द्र रेन्डम विधि से लिये गये। 12 जनपद के 144 अनुदेशक, 193 ग्रामीण नेता चार समाज सेवी संगठन थे। साक्षात्कार, व्यक्तिगत रूप से जाकर लिये गये। अध्ययन के निष्कर्ष निम्नवत थे।

1. प्रौढ़ शिक्षा में व्यक्तियों की भागीदारी आशा से कम थी।

2. अनुदेशकों ने सर्वेक्षण कार्य में रुचि नहीं दिखाई।

3. ग्रामीण प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में रूचि नहीं दिखाई ।

4. प्रतिभागी केन्द्रों में बहुत कम उपस्थिति रहे।

5. अपेक्षाकृत प्रौढ़ शिक्षा के प्रतिभागियों ने अधिक रूचि अध्ययन में दिखाई ।

**पती एस०पी०** उत्कल विश्वविद्यालय (उड़ीसा) 1985 द्वारा प्रौढ़ शिक्षा के अध्ययन सामग्री की आवश्यकता का विश्लेषण हुआ। अध्ययन का न्यादर्श निरक्षर 400 प्रौढ़ 100 प्रत्येक ग्रामीण, जनजाति, उद्योगिक क्षेत्र तथा शहर के मलिन बस्तियों के 50,50 पुरूष महिला प्रतिभागी थे। दो प्रश्नावली तथा साक्षात्कार विधि से अध्ययन किया गया । प्रमुख निष्कर्ष निम्नवत हैं।

1. निरक्षर अधिकांश विवाहित थे तथा कृषि एवं उद्योगों में कार्य करते थे।

2. उनकी अध्ययन रूचि कहानियों को सुनने में रूचि लेना, महिलाओं के विषय में जानना था ।

3. महिलाओं की रूचि भिन्न-भिन्न, भाग में भिन्नता रखती थी।

4. चारों वर्ग की महिलाओं की अध्ययन की आवश्यकता एक जैसी थी।

5. प्रतिभागी मध्यम टाइप की कोई सामग्री तथा काले रंग को पसन्द करते थे।

**पोतेदार एम0डी0**, द्वारा 1986 में पूना विश्वविद्यालय में पी0एच0डी0 उपाधि हेतु प्रौढ़ प्रति भागियों के मूल्यांकन पर अध्ययन किया गया । प्रतिभागियों के सामाजिक स्तर, पाठ्यक्रम योजना, राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की रूप रेखा विषय सामग्री का, न्यादर्श संख्या का उल्लेख नहीं है। इस अध्ययन द्वारा निम्नवत निष्कर्ष प्राप्त हुये।

1. अधिकांश अनुदेशक पुरूष थे और कम आय वर्ग के थे। और अधिकांश कक्षा 7 पास थे। कुछ कक्षा 12 पास थे।

2. अनुसूचित जाति जनजाति के केन्द्रों में अनुदेशक भी अनुसूचित जाति के थे।

3. समाज सेवी संस्था द्वारा चलने वाले प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में अनुदेशक स्नातक थे।

4. सभी अनुदेशक अस्थाई थे।

5. कागजों में विभिन्न कमेटियां राष्ट्रीय राज्य स्तर तथा जनपद स्तर की बनी थी। किन्तु उनकी गोष्ठी बहुत कम हो पाती थी।

**प्रीतिसिंह द्वारा** 1987 में कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय (हरियाणा) से पी0एच0डी0 की उपाधि के लिये प्रौढ़ शिक्षा के प्रतिभागियों की रूचि, उनके व्यक्तित्व के आधार पर राष्ट्रीय कार्यक्रम के सम्बन्ध में है। अध्ययन न्यादर्श में 500 अनुदेशक 100 सुपरवाइजर को रेन्डम विधि से चुना गया था। इसमें 16 पी0एफ, स्वयं निर्मित व्यक्तित्व पत्री, तथा विवरण पत्र प्रयोग किये गये। अध्ययन के निष्कर्ष निम्नवत थे।

1. फैक्टर "ए" में अनुदेशकों के अभिरूचि मध्यांक अंको में महत्वपूर्ण अन्तर था ।

2. फैक्टर बी0सी0डी0ई0एफ0 में कम और अधिक में महत्वपूर्ण स्तर नहीं था ।

3. जी0 फैक्टर में अधिक और कम मनिस्कोर में महत्वपूर्ण अन्तर नहीं था ।

4. सुपरवाइजरस् में फैक्टर बी0एच0ओ0 क्यू-1, क्यू 4 में अधिक और क्रम मध्यमान में महत्वपूर्ण अन्तर था ।

**राजेन्द्र सिंह** द्वारा 1987 में कुर विश्वविद्यालय में पी0एच0डी0 उपाधि हेतु प्रौढ़ शिक्षा के प्रशिक्षण एवं लाभ का अध्ययन किया । न्यादर्श 20 कार्यकर्ताओं का जो कि डेयरी प्रशिक्षण केन्द्र के थे दो भागों में बॉट कर देखा । विभाजित तथा प्रायोगिक समूह दोनों के अन्तर को देखा गया। निष्कर्ष निम्नवत निकले ।

1. दोनों वर्ग के प्रौढ़ों में महत्वपूर्ण अन्तर मिला।

2. प्रायोगिक समूह प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में आने के बाद, उत्पादन के कार्य में रूचि लेने लगे।

3. इनके सामाजिक चेतना में महत्वपूर्ण अन्तर आया।

4. प्रतिभागियों में प्रौढ़ शिक्षा के प्रति अच्छी भावना हो गई।

5. उत्पादन के वृद्धि के साथ साथ उनमें साक्षरता का स्तर भी ऊपर उठ गया ।

**राव वासुदेव बी०एस०** द्वारा 1983 में विशाखापट्नम जनपद में प्रौढ़ शिक्षा के असर पर पी०एच०डी० उपाधि हेतु अध्ययन किया गया । आन्ध्र प्रदेश के राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत चलाये जाने वाले 8 केन्द्रों के 86 अनुदेशक, 430 प्रतिभागी प्रतिदर्श के रूप में अध्ययन को लिये गये। एक प्रश्नावली बनाई गई और उनके आधार पर आंकड़े एकत्र किये गये। निष्कर्ष निम्नवत हैं ।

1. समाजसेवी संस्थाओं द्वारा चलाये गये केन्द्रों की प्रगति अच्छी थी।

2. महिलाओं में सीखने की प्रगति पुरूषों की अपेक्षा कम अच्छी थी।

3. जिन प्रतिभागियों की उपस्थिति अधिक थी उनको प्रौढ़ शिक्षा से अधिक लाभ हुआ ।

4. 16.3 प्रशिक्षण प्रतिभागी को लिखना पढ़ना अच्छी प्रकार आ गया था । 97.4 प्रतिशत को अंको का ज्ञान था ।

5. 47 प्रतिशत केन्द्र बरामदे में चल रहे थे, 4 प्रतिशत खुले स्थान पर तथा शेष भवनों में चल रहे थे।

**रघु, वी०** द्वारा 1983 में कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में पी०एच०डी० के उपाधि के लिये प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के सामग्री तथा प्रयोग पर अध्ययन

किया गया । न्यादर्श में 60 केन्द्र, चार जनपद, 300 प्रतिभागी तथा 480 अनुदेशक थे। प्रश्नावली निर्मित करके दी प्रमुख निष्कर्ष निम्नवत् है ।

1. अधिकांश केन्द्रों में । निर्देशों पर विचार विमर्श किया जाता था। प्राइमर पढ़ाने से सम्बन्धित विषय थे।

2. समाचार पत्र अधिकांश केन्द्रों पर पढ़े। जाते थे।

3. अनुदेशक वर्णमाला अधिक सिखाते थे।

4. सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होते थे।

5. अनुदेशक नवीनतम सामग्री के प्रयोग की जानकारी रखते थे।

**सच्चिदानंद एवं गंगोली पी0 के0** द्वारा ए0एन0एस0 सामाजिक प्रशिक्षण केन्द्र पटना द्वारा प्रौढ़ किया गया । न्यादर्श में 20 प्रतिशत नेहरू युवक केन्द्रों को छात्रों द्वारा पढ़ाने वाले थे।

इन्हें यदृच्छ विधि से चुना गया । एक प्रश्नावली (निर्मित) प्रयोग की गई। अध्ययन के निष्कर्ष निम्नवत हैं।

1. प्रतिभागियों को लाभ सन्तोषजनक ढंग से मिला ।

2. गिनने का कार्य तथा अन्य चेतना भी सन्तोष जनक ढंग से मिली।

3. नवयुवक केन्द्र के अनुदेशकों को प्रति भागियों के छोड़कर जाने की समस्या की ।

4. सुधार के लिये आवश्यकता थी।

**सरकार एम0** द्वारा भागलपुर विश्वविद्यालय द्वारा पी0एच0डी0 उपाधि हेतु 1984 में राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का अध्ययन किया गया । विश्लेषण विधि अपनाई गई। प्रतिभागियों का साक्षात्कार किया गया । निष्कर्ष निम्नवत प्राप्त हुये ।

1. राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम कुछ कारणों से पूर्णतः ठीक से नहीं चल रहे ।

2. **"सामूहिक आंदोलन"** ही प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को सफल बना सकते हैं।

3. कार्यकर्ता प्रौढ़ शिक्षा में अधिक रूचि नहीं दिखाते ।

4. विश्वविद्यालय द्वारा चलाये कार्यक्रम को आर्थिक संकट का सामना करना पढ़ता है।

5. साक्षरता का प्रतिशत के पढ़ने का ढंग कम है।

6. दीर्घकालीन योजना के साथ शीध्र कालीन कार्यक्रम से लाभ होगा।

**सत्य नारायण राव, पी0पी0** द्वारा 1986 में , आन्ध्र विश्वविद्यालय में पी0एच0डी0 उपाधि हेतु अध्ययन किया गया । प्रौढ़ शिक्षा व्यक्ति आधुनिक ग्रामीण एवं जनजाति के विकास खण्डों के सन्दर्भ में अध्ययन"। इसमें प्रदेश के प्रौढ़ शिक्षा के प्रतिभागी तथा सामान्य व्यक्तियों को तुलनात्मक अध्ययन हेतु, 100, 100 लिया गया । पद नवीनिकरण, स्वतन्त्र, भविष्य से सम्बन्धित तथा व्यापक दृष्टिकोण एवं उत्साह वर्धन से सम्बन्धित थे। सामाजिक, आर्थिक चेतना व्यक्ति के सन्दर्भ में शैक्षिक सम्प्राप्ति के लिये लिखना, पढ़ना एवं गिनती गिनना आदि पद थे। इस अध्ययन के निम्नवत निष्कर्ष प्राप्त हुये।

1. अनुसूचित जनजाति में दो वर्ग के लोगों में आधुनिकता के विषय में सोजन्ने का स्तर समान था ।

2. प्रौढ़ शिक्षा तथा आधुनिकता का सम्बन्ध अच्छा मिला ।

3. जाति एवं आधुनिकता में दोनों वर्गों में विरोधाभास सम्बन्ध किसी किसी में था ।

**सहसरा बन्धु ए0** ने 1988 में पी0 एच0 डी0 उपाधि हेतु प्रौढ़ शिक्षा महिलाओं में मातृत्व का विकास एवं गुणात्मक विकास में अध्ययन पूना विश्वविद्यालय से किया । चल रहे महिलाओं के कार्यक्रम से एक माडल निर्मित किया गया इसमें अदर क्राफ्ट प्रशिक्षण, महिलाओं के आत्म सम्मान के विकास, मातृत्व के गुण, आदि पर माडल आधारित है। 32 प्रौढ़ केन्द्रों को प्रदर्श में सम्मिलित किया गया । 18 केन्द्र प्रायोगिक और 14 केन्द्र नियंत्रित समूहों में बांट दिये गये।

प्रायोगिक समूह को आधुनिकतम कार्यक्रम का प्रशिक्षण दिया गया निष्कर्ष निम्नवत हैं : -

1. संकल्पना कि महिलाओं को प्रशिक्षण से अच्छे माता के गुणों का विकास होता है स्वीकार की गई।

2. लगातार विकास होता है स्वीकार की गई।

3. एक आवश्यकता के आधार पर प्रशिक्षण लाभदायक होता है।

4. श्रवय-दृश्य, पुस्तकालय तथा अच्छे पाठ लाभ दायक परिणाम देते हैं।

**सेठ मृदुला** द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय से पी0एच0डी0 उपाधि हेतु प्रौढ़ शिक्षा में प्रोत्साहन पर अध्ययन 1984 में किया गया । प्रश्नावली तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति के आधार पर अध्ययन दिल्ली में किया गया । इस अध्ययून के निम्नवत निष्कर्ष निकले।

1. परिवार के मुख्य व्यवसाय तथा रूचि का प्रभाव साक्षरता के विकास में सहायक होता है।

2. प्रतिभागी साक्षरता के लिये अन्य प्रोत्साहनों को स्वीकार करने का जोखिम नहीं लेता ।

3. सामाजिक चेतना, साक्षरता के कारण होने के प्रमाण कम ही मिला ।

4. साक्षरता से आगे अध्ययन में भाग लेने के प्रमाण मिलते हैं।

**शाह, के0 आर0** द्वारा अहमदाबाद (गुजरात) में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम तृतीय मूल्यांकन 1983 में किया गया । प्रदर्श में 191 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र 8 जनपदों से लिये गये। 548 प्रतिभागी, 191 प्रमुख सीखने वाले, 111 छोड़ने वाले, 164 अनुदेशक 159 पहिले के प्रतिभागी थे। सात पत्री तथा प्रश्नावली, शोधकर्ता की डायरी, से आंकड़े प्राप्त किये गये। शोध के परिणाम निम्नवत प्राप्त हुये ।

1. 1978-79 में 4 लाख प्रौढ़ों को साक्षर करने की योजना थी किन्तु तीन लाख ही प्रशिक्षित हुये। अर्थात 75% भाग ही साक्षर हो सका ।

2. निर्धारित कार्यक्रम ही, शिक्षण कार्यक्रम में लिये गये थे।

3. 63 प्रतिशत पुरूष प्रतिभागियों में 74 प्रतिशत अनुदेशक थे।

4. 75 प्रतिशत अनुदेशक मैट्रिकुलेट थे।

5. 17 प्रतिशत प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र चलाने के अयोग्य थे।

**शकर, राम** लिट्रेसी हाउस लखनऊ द्वारा 1983 में, दो प्रौढ़ शिक्षा प्राइमर्स का तुलनात्मक अध्ययन किया गा । एक प्राइमर फोनिटिक विधि तथा दूसरा पाठ्यक्रम आधारित शिक्षण विधि पर था । . चार वर्षीय टैस्ट साक्षरता नापने के लिये प्रयोग किये गये। इन के निष्कर्ष यह प्राप्त हुये कि दोनों वर्ग में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं मिला ।

इन्हीं के द्वारा 1982 में पठन-पाठन की रूचि पर लिट्रेसी हाउस लखनऊ जनपद के एक विकास खण्ड में वेल साइकिल साक्षरता कार्यक्रम द्वारा किया गया । साक्षात्कार द्वारा आंकड़े एकत्र किये गये। इस अध्ययन के निम्नवत निष्कर्ष प्राप्त हुऐ ।

1. पुरूषों की संख्या महिलाओं से अधिक थी। और यही निष्कर्ष लाइब्रेरी सदस्य वर्ग की थी।

2. अधिकांश प्रतिभागी 15-35 आयु वर्ग के थे।

3. वी0वी0एल0 (पुस्तकालय) मध्यम वर्ग के परिवार में अधिक लोकप्रिय थी।

**सिंह जे0 एन0** द्वारा 1985 में भागलपुर विश्वविद्यालय में पी0एच0डी0 उपाधि हेतु प्रौढ़ शिक्षा पैट्रन इन बिहार अध्ययन किया गया । इस के निम्नवत निष्कर्ष निकले ।

1. स्वास्थ्य, आर्थिक एवं सामाजिक सांस्कृतिक आधार साक्षरता को बढ़ाते है।

2. आवागमन के साधन, आर्थिक, सामाजिक, चेतना, साक्षरता को पढ़ाने में सहायक होती हैं।

3. प्रतिभागियों में अधिकांश गरीबी की रेखा से नीचे के थे।

4. बिहार में साक्षरता तथा शिक्षा के लिये बजट बहुत कम था ।

**सौडियन सेलवराज एम0** द्वारा 1987 में पी0एच0डी0 हेतु प्रौढ़ शिक्षा द्वारा मनुष्य के बर्ताव में सुधार पर अध्ययन किया गया । पूर्व परीक्षण एवं अन्तिम परीक्षण की विधि अपनाई गई। प्रायोगिक और नियंत्रित पर कार्य किया गया 16,16 सदस्य दोनों के चयनित किये गये। दोनों वर्ग के सदस्यों को पुरस्कार दिये गये। इस अध्ययन के निम्नवत निष्कर्ष प्राप्त हुये।

1. निरक्षरों को स्वभाव के परिवर्तन के प्रशिक्षण से लाभ हुआ ।

2. प्रयोगिक वर्ग में चार, योग्यता उद्देश्य, पूर्व विधि में परिवर्तन तथा नियम (प्रशिक्षण विषय) में सन्तोषजनक परिणाम मिले।

3. प्रत्येक को पुरस्कार देने से कोई महत्वपूर्ण परिणाम नहीं मिले।

**राज्य नियोजन मशीनरी** द्वारा 1985 में भुवनेश्वर (उड़ीसा) के प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम नियोजन एवं क्वार्डीनेशन परियोजना विभाग द्वारा मूल्यांकन अध्ययन किया गया । कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों के कारण रूकावटें, आवश्यकताओं पर अध्ययन किया गया । प्रदर्श में 6 जनपद से 18 ब्लाक के पुराने 72 प्रशिक्षित प्रौढ़ तथा 880 प्रतिभागी, 440 लाभार्थी 144 व्यक्ति जिनको इस क्षेत्र में ज्ञान था 36 नेता, स्वयंसेवी सस्था के 12 व्यक्तियों को चयनित किया गया । सूचनापत्री सभी को दी गई। अध्ययन से निम्नवत प्रपत्र परिणाम प्राप्त हुये।

1. राज्य प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय पूर्णरूप से कार्यक्रम को अकेले चलाने में समर्थ हैं।

2. कार्यकारणी समिति कार्य विहीन मिली।

3. राज्य जनपद एवं विकास खण्ड के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के आपसी तालमेल की कमी से शिक्षण कार्य सन्तोष जनक नहीं चला ।

4. सभी स्तर पर सुधार की आवश्यता है।

**सुब्रमनियम के०, खन्ना, आई० भट्ट ए०, एवं सिंह, ए० के०,** द्वारा 1983 में अहमदाबाद में प्रौढ़ शिक्षा के मैनेजमेन्ट तथा पब्लिक ग्रुप प्रोजेक्ट पर अध्ययन किया । उद्देश्य यह था कि प्रशासनिक व्यवस्था में कौन सुधार अपेक्षित है। 6 जनपदों के 12 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र रेन्डम विधि से चयनित किये गये। सूचना पत्री, साक्षात्कार पत्री द्वारा विभिन्न सम्बन्धित मशीनरी के व्यक्तियों से कराकर सूचना प्राप्त की गई। अध्ययन के निष्कर्ष निम्नवत हैं।

1. प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय एक सुदृढ़ प्रशासनिक नियम प्रौढ़ शिक्षा से सम्बन्धित व्यक्तियों के चयन में तथा अनुभवी कार्यरत अधिकारी कर्मचारियों को वित्तीय सुविधा नहीं देना ।

2. अनुदेशकों को जो भी भत्ता दिया जाता है वह कम है।

3. रोशनी का प्रबन्ध ठीक नहीं है।

4. प्रौढ़ शिक्षा की महिला अच्छी इन्सट्रेक्टरों का न मिलना भी कारण है।

5. प्रौढ़ शिक्षा के विभिन्न विभागों में क्वार्डिनेशन नहीं है।

**त्रिवेदी एन0एस0** द्वारा 1984 में भुज विश्वविद्यालय से पी0एच0डी0 उपाधि हेतु, प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागियों के समय से पूर्व केन्द्र छोड़ने के कारणों पर अध्ययन किया गया । अहमदाबाद जनपद के सात प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र सरगमाई स्तर के प्रदर्श के रूप में चयनित किये गये । 1987 एवं 1980 के पंजीकृत प्रतिभागी रिकार्ड से लिये गये जिन्होंने केन्द्र समय से पहिले छोड़ दिया था। चेक लिस्ट तथा अभिरूचि परीक्षण निर्मित कर दिये गये। 316 समय से पहिले छोड़ने वाले तथा 109 अध्ययन पूरा करने वाले प्रतिभागियों को देखा गया। अध्ययन के निम्नवत हैं।

1. समय से पहिले छोड़ने वाले प्रतिभागी क्रमशः वर्ष 1979, 1980 के 5.6 7.5 प्रतिशत थे।

2. पुरूष महिलाओं की अपेक्षा अधिक छोड़ने वाले थे।

3. बड़े परिवार के लोग कम छोड़ने वालों में से थे।

4. छोड़ने का कारण, कठिन परिश्रम, खेती, रूचि न होना, समय न मिलना था ।

वर्मा कृष्णा द्वारा 1986 में पी0एच0डी0 उपाधि हेतु हिमांचल प्रदेश विश्वविद्यालय में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम हिमांचल प्रदेश के अनुसूचित जाति के लोगों को साक्षर बनाने में प्रभाव पर अध्ययन किया गया । सर्वेक्षण विधि काम में लाई गई। प्रदर्श में 100 अध्यापक, 50 केन्द्र तथा 150 अनुसूचित जाति के प्रतिभागियों को चयनित रेन्डम विधि से चयनित किया गया । केस निरीक्षण विधि अपनाई गई। अध्ययन के परिणाम निम्नवत हैं।

1. हिमांचल प्रदेश की सरकार ने साक्षरता के बढ़ाने के लिये अनेक कार्यक्रम अच्छी प्रकार चलाये हैं। दोपहर का नाश्ता, पुस्तकें सामग्री, वजीफा का समुचित प्रबन्ध है।

2. तीन कारण गरीबी, मातापिता का पढ़ा न होना, तथा दूरदराज स्थानों में केन्द्र स्कूल का न होना कारण है।

3. केन्द्रों में व्यवस्थापिक शिक्षा का न होना साक्षरता के उपाय में कमी है।

वसरिया, एल0 तथा पाटिल, एच0टी0 द्वारा 1984 से सरदार पटेल सामाजिक संस्थान में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम गुजरात में अध्ययन किया गया गुजरात के 13 जनपदों में 12 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, 12 गांव के अध्ययन के प्रतिदर्श थे। सेन्सस आंकड़े प्रयोग में लाये गये। अध्ययन के निष्कर्ष निम्नवत थे।

1. प्रौढ़ शिक्षा का कोई केन्द्र 10 माह तक नहीं चलता था।

2. प्रशिक्षण में सामाजिक चेतना के विकास का बिन्दु नहीं ध्यान में रखा गया ।

3. सभी केन्द्रों में केवल साक्षरता पढ़ने का ही कार्य होता था ।

4. प्रतिभागी लिखने पढ़ने की योग्यता ही रखते थे।

5. प्रतिभागियों में रूचि नहीं दिखाई और न कार्यक्रम ही रोचक थे।

इसके अतिरिक्त विभिन्न संगठनों ने प्रौढ़ शिक्षा के मूल्यांकन तथा कार्य प्रणाली एवं सम्प्राप्ति पर अध्ययन किया है।

जेवियर लेबर रिलेशन्स इन्स्टीट्यूट (बिहार) 1981 में प्रौढ़ शिक्षा का अध्ययन किया गया प्रदर्श 236 में से 71 केन्द्र नये केन्द्रों को छोड़ दिया गया । प्रत्येक केन्द्र से 120 प्रतिभागी 24 छोड़ने वाले, 24 अनुदेशकों से आंकड़े सूचना के आधार पर प्राप्त किये गये। प्रमुख निष्कर्ष निम्नवत हैं।

1. 79.2 प्रतिशत प्रतिभागी कृषि से जीविका उपार्जन करते थे।

2. 89.2 प्रतिशत इसके पूर्व स्कूल नहीं गये थे।

3. 87.2 प्रतिशत केवल पढ़ने लिखने सीखने के उद्देश्य से केन्द्र आते थे।

4. 87.5 प्रतिशत को कार्यक्रम से लाभ पढ़ने का हुआ

5. प्रतिभागियों में जातिवाद बहुत कम मिला ।

6. 5 प्रतिशत प्रतिभागी प्रबल शब्दों में व्यावसायिक शिक्षा चाहते थे।

7. 14.2 प्रतिशत ने यह अनुभव किया कि उनको कार्यक्रम से लाभ होता है।

8. 94.2 प्रतिशत ने यह इच्छा दिखाई कि उनकी बचत बैंक में जमा होना ठीक है।

**जेवियर लेबर रिलेशन्स इन्स्टीट्यूट** बिहार द्वारा 1983 में भारत सरकार की योजना के अन्तर्गत अध्ययन किया गया । इसका प्रमुख उद्देश्य तीन बातें साक्षरता, कार्यक्रम से चेतना के विकास तथा केन्द्रीय कार्य विधि के विषय में जानकारी है। इस कार्य के लिये पांच जनपदों के पांच विकास खण्ड को लिया गया । प्रत्येक विकास खण्ड के 14 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को इस प्रकार लिया गया कि प्रत्येक जाति का प्रतिनिधित्व हो। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र समय से पहिले छोड़ने वालों को रेन्डम विधि से लिया गया। 75 इन्सट्रेक्टर 35 सुपरवाइजर्स 5 परियोजना अधिकारी भी प्रतिदर्श में लिये गये। साक्षात्कार पत्री साक्षरता निर्देशिका साक्षात्कार पत्री छोड़ने वालों के प्रयोग की गई। इस अध्ययन के निम्नवत निष्कर्ष प्राप्त हुये ।

1. प्रतिभागी अधिकांशतः किसान (छोटे) तथा गरीबी की रेखा के नीचे के थे जिनकी प्रति व्यक्ति मासिक आमदनी 60 रूपये के लगभग थी।

2. आदेशानुसार परियोजना हस्ताक्षर करने तक सीखने की थी ।

3. अनुदेशक के शिक्षण कार्य से प्रतिभागी सन्तुष्ट थे किन्तु सभी के लिये हिन्दी की पुस्तकें कुछ कठिनाई पैदा करती थी।

4. 40 प्रतिशत को अन्य विषयों का ज्ञान नहीं था । कृषि, मुर्गी पालन, जानवरों को ठीक से रखने का ज्ञान 40 प्रतिशत से कम था ।

5. कृषि में खाद का ज्ञान तो था किन्तु सिंचाई का ज्ञान कम था

6. भूमि सुधार योजना, दहेज, विवाह की आयु, अन्तरजातीय विवाह के 50 प्रतिशत लोगों को था ।

7. अनुसूचित जाति जनजाति उत्तर देने में संकोची मिले

8. वोट डालना, देना, नेता के चुनाव की जानकारी देने की कमी थी।

**लेबर रिलेशन इन्स्टीट्यूट जमशेदपुर** द्वारा 1981 में मदनपुर विकास खण्ड में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के विषय में अध्ययन किया गया। इसका उद्देश्य तीन बातें साक्षरता, कार्यविधि तथा चेतना का अध्ययन था। प्रदर्श में 38 केन्द्रों को 150 केन्द्रों में चयन किया गया । स्त्री, पुरूष तथा प्रत्येक जाति का उचित प्रतिनिधित्व किया गया । 190 प्रतिभागी तथा 38 केन्द्र छोड़ने वाले 38 इन्स्ट्रेक्टर्स चयन किये गये। प्रमुख निष्कर्ष निम्नवत है।

1. 52.7 प्रतिशत प्रतिभागी हरिजन तथा 43.7 प्रतिशत अन्य जाति के लोग थे।

2. प्रतिभागियों के बच्चे आयुवर्ग 6-14 के 65.1 प्रतिशत स्कूल जाते थे।

3. 92.5 प्रतिशत प्रतिभागी स्वयं सीखने के लिये केन्द्र में आने के पूर्व स्कूल नही गए थे ।

4. 68.2 प्रतिशत प्रतिभागी स्वयं सीखने के लिये केन्द्र पर पंजीकृत हुये ।

5. 98.8 प्रतिशत प्रौढ़ शिक्षा से प्राप्त सुविधा को और लेना चाहते थे।

6. 32.9 प्रतिशत को अध्ययन से लाभ हुआ ।

7. 60.6 प्रतिशत अनुभव करते थे कि कार्यक्रम से लाभ होता है।

8. 88.4 प्रतिशत अनुभव करते थे कि उनको जीविका उपार्जन में सहायता मिली ।

9. जातिवाद प्रतिभागियों में नहीं था ।

10. 98.9 प्रतिशत प्रतिभागी जानते थे कि दहेज कानून के सामने अपराध है।

11. 90.8 प्रति का विचार का महिला श्रमिकों को पुरूष के बराबर मजदूरी दी जाये। न्यूनतम मजदूरी की दर का ज्ञान था ।

12. प्रोग्राम, कम समय के कारण, लाभ-दायक कम हो जाते हैं।

**लेबर रिलेशन्स इन्स्टीट्यूट पटना** द्वारा 1982 में, पुन पुन विकास खण्ड में इन्ही बातों को लेकर अध्ययन किया। प्रतिदर्श 227 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में 30 केन्द्र इस प्रकार लिये गये कि महिला तथा पुरूष दोनों के तथा प्रत्येक जाति का प्रतिनिधित्व हो । रेन्डम विधि से 5 प्रतिभागी तथा एक बीच में छोड़कर जाने वाले का प्रतिनिधित्व हो। इस प्रकार 150 प्रतिभागी, 30 छोड़ कर जाने वाले 30 अनुदेशक लिये गये इनको अलग अलग प्रश्नावली के माध्यम से अध्ययन किया गया । निष्कर्ष इस प्रकार है : -

1. 68 प्रतिशत प्रतिभागी कृषि पर निर्भर करते हैं।

2. 28 प्रतिशत महिलायें भी कृषि पर आधारित है।

3. 55 प्रतिशत अनुसूचित जाति तथा 45 प्रतिशत अन्य जाति के प्रतिभागी थे।

4. सभी प्रति भागी कभी स्कूल नहीं गये थे।

5. 52.3 प्रतिशत प्रतिभागियों के बच्चे, 6-14 वर्ष के स्कूल नहीं जाते थे।

6. 54.5 प्रतिशत प्रतिभागी के ज्ञान में वृद्धि हुई।

7. 96.7 प्रतिशत प्रौढ़ों को प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में पंजीकृत करने के लिये सलाह दी गई।

8. 96.7 प्रतिभागी आगे शिक्षा ग्रहण करना चाहते थे।

9. 28.7 प्रतिशत ने और ज्ञान प्राप्त किया ।

10. जातिवाद कम प्रतिभागियों में था ।

11. 90 प्रतिशत को दहेज के कानून के विरूद्ध कार्य की जानकारी थी ।

12. अधिकांश प्रतिभागी, डाकघर, पशु चिकित्सा केन्द्र तथा विकास खण्ड अधिकारी के कार्यों को थोड़ा बहुत जानते थे ।

13. प्रतिभागी अनुभव करते थे कि उसे प्रशिक्षण सामग्री और मिलना अच्छा होगा ।

**इसी संस्थान** द्वारा 1981 में शिकरीपाड़ा विकास खण्ड संथाल परगना (बिहार) में इन्हीं बातों का अध्ययन किया । प्रतिदर्श में 300 केन्द्रों में 30 केन्द्र के 150 प्रतिभागी 30 छोड़कर जाने वाले, 30 अनुदेशक लिये गये। प्रत्येक को अलग अलग प्रश्नावली देकर अध्ययन किया गया प्रमुख निष्कर्ष निम्नवत हैं : -

1. 93.9 प्रतिशत प्रतिभागी आदिवासी थे। 5.4 प्रतिशत दूसरे वर्ग के तथा 0.7 प्रतिशत हरिजन थे।

2. प्रतिभागियों के 22.2 प्रतिशत बालक 6-14 वर्ष के स्कूल जाते थे।

3. प्रतिभागियों में 26.7 प्रतिशत पहिले प्राइमरी स्कूल जाते थे ।

4. 91.3 प्रतिशत आदिवासी कार्यकताओं के कहने पर केन्द्र पर आये थे।

5. 98.7 प्रतिशत प्रतिभागी अपनी शिक्षा आगे चलने देना चाहते थे ।

6. 42.6 प्रतिशत कार्यों में दक्षता पाना चाहते थे और 31.1 प्रतिशत साक्षर बनना चाहते थे।

7. 85.3 प्रतिशत अनुभव करते थे कि उन्हें कृषि तथा अन्य व्यवसाय में ज्ञान वृद्धि हुई हैं।

8. 33.3 प्रतिशत अनुभव करते थे कि उन्हें कृषि तथा अन्य व्यवसाय में ज्ञान वृद्धि हुई है।

9. जाति भेदभाव कुछ प्रतिभागियों में पाई गई ।

10. 50 प्रतिशत दहेज को कानून के विरूद्ध मानते थे विवाह की आयु को उन्हें अध्ययन में नहीं बताया गया ।

11. 41.4 प्रतिशत न्यूनतम मजदूरी का ज्ञान रखते थे। तथा महिला पुरूष के मजदूरी में अन्तर नहीं चाहते थे।

12. वोट देने, पंचायत, ग्राम प्रधान के विषय में थोड़े लोग ही जानते थे ।

**इसी संस्थान** द्वारा 1981 में अमरपुर विकास खण्ड जनपद भागलपुर (बिहार) में इन्ही बातों का अध्ययन किया गया । 191 बन्द + 65 चल रहे केन्द्रों के 32 केन्द्रों के महिला, पुरूष, हरिजन तथा अन्य वर्ग के लोगों के प्रतिनिधित्व को ध्यान में रखकर प्रतिदर्श में 160 प्रतिभागी, 32 छोड़ने वाले 32 अनुदेशक को अलग अलग प्रश्नावली द्वारा अध्ययन किया गया। मुख्य निष्कर्ष निम्नवत प्राप्त हुये : -

1. 67 प्रतिशत प्रतिभागी कृषि से अपनी जीविका उपार्जित करते थे ।

2. प्रतिभागी 15-35 आयु वर्ग के थे ।

3. 22 प्रतिशत हरिजन के 78 प्रतिशत दूसरे वर्ग के थे।

4. 86.5 प्रतिशत कभी पहिले स्कूल नहीं गये थे।

5. 50 प्रतिशत, लिखने पढ़ने हेतु प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में पंजीकृत हुये थे।

6. 62 प्रतिशत अपने रोजगार में अच्छे अवसर प्राप्त करने की दृष्टि से शिक्षण में आये थे।

7. अधिकांश लोगों ने लिखना पढ़ना कुछ सीख लिया था।

8. 42 प्रतिशत ने कहा कि उन्हें शिक्षा से लाभ हुआ है।

9. 11.6 प्रतिशत ने बताया कि उन्हें कार्यक्रम से लाभ नहीं हुआ ।

10. 60 प्रतिशत ने गांव से बाहर जाकर अपनी जीविका उपार्जन की इच्छा बताई ।

11. 25.5 प्रतिशत ने अपनी जाति के अनुदेशकों के होने की इच्छा व्यक्त की ।

12. दहेज को अधिकांश ने अपराध बताया। विवाह की आयु का ज्ञान लोगों को सन्तोषजनक रूप से नहीं था ।

13. पंचायत, वोट तथा पशु चिकित्सा का ज्ञान कुछ लोगों को ही था ।

इसी संस्थान ने यू0जी0सी0 के देखरेख में, भारत सरकार की योजना में 1983 में धनबाद में अध्ययन किया । 70 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र एस0एस0एल0एन0टी0 महिला कालेज धनबाद में चल रहे थे। जिसमें 30 यू0जी0सी0 के द्वारा दिये धनराशि से चल रहे थे। इसमें 20 प्रतिशत केन्द्रों को गहराई से देखने के लिये चयन किया गया । 6 अनुदेशक, तीन सुपरवाइजर भी साक्षात्कार में प्रतिदर्श के रूप में लिये गये। अध्ययन के निष्कर्ष निम्नवत हैं : -

1. महिलाओं के साक्षरता का स्तर पुरूषों की अपेक्षा उच्च था ।

2. 20 वर्ष तक के प्रतिभागियों के सीखने का स्तर अपेक्षाकृत अधिक था ।

3. साक्षरता की प्रगति, किसानों, मजदूरों, में अपेक्षाकृत नौकरी करने वाले तथा व्यापारियों से अधिक थी ।

4. पढ़ने में 53 प्रतिशत प्रतिभागी अच्छे थे।

5. सामाजिक चेतना प्रतिभागियों में कम आ पाई थी।

6. अधिकांश प्रतिभागी कहते थे कि प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से लाभ कम है।

7. परिवार नियोजन का ज्ञान सन्तोषजनक प्रतीत होता था।

8. अनुदेशकों ने नागरिक कर्तव्य एवं अधिकारों का ज्ञान प्रचुर मात्रा में दिया था ।

**इसी संस्थान** द्वारा 1981 में नबाद जनपद के सिरदाला विकास खण्ड (जमशेदपुर) में इन्हीं बातों का अध्ययन किया । प्रतिदर्श 35 केन्द्रों में 28 केन्द्र, पुरूष एवं महिलाओं का अनुदान में प्रतिनिधित्व तथा छोड़ने वालों में प्रत्येक पांच में एक तथा एक पाच में एक अनुदेशक थे। इस प्रकार 140 प्रतिभागी 108 पुरूष 32 महिलायें 28 छोड़ने वाले तथा 28 इन्सट्रेक्टर्स चयन किये गये। प्रत्येक को अलग अलग प्रश्नावली देकर अध्ययन किया गया । निष्कर्ष निम्नवत प्राप्त हुये ।

1. प्रतिभागी भौतिक सुविधाओं से पूर्णतः सन्तुष्ट थे।

2. 46.8 प्रतिशत प्रतिभागी पढ़ना लिखना तथा साधारण गणित सीख गये ।

3. 91.4 प्रतिशत और अध्ययन की इच्छा रखते थे।

4. 22.1 प्रतिशत ने अपने साक्षरता स्तर को उपर उठाने में सफल हुए ।

5. 82.5 प्रतिशत प्रतिभागी कार्यकर्ताओं के कहने पर आये।

6. 85.7 प्रतिशत पढ़ सकते थे, 81.4 प्रतिशत लिख लेते थे, 63.6 प्रतिशत साधारण गणित कर लेते थे।

7. 47.5 प्रतिशत का कथन था कि वह कृषि, कार्यों में लाभ प्राप्त कर सकें ।

8. 90.2 प्रतिशत को अनुदेशक से किसी भी जाति का हो उन्हें कोई परेशानी नहीं थी ।

9. 67.9 प्रतिशत कानून द्वारा निर्धारित विवाह की आयु नहीं जानते थे।

10. अधिकांश तीन व्यक्तियों के परिवार वाले थे।

11. 63.1 प्रतिशत महिलाओं एवं पुरूष मजदूरों में मजदूरी में अन्तर ठीक नहीं कहते थे।

12. 64 प्रतिशत को वोट देने की आयु का ज्ञान था ।

**इसी संस्थान** के द्वारा 1981, में पतभदा विकासखण्ड सिंघ भूमि (जमशेदपुर जनपद) में इन्हीं बातों का अध्ययन किया। प्रतिदर्श में 300 केन्द्रों में 30 केन्द्र महिला तथा पुरूष के 150 प्रतिभागी 30 छोड़ने वाले, 30 अनुदेशक लिये गये। इन्हें भी अलग अलग प्रश्नावली देकर अध्ययन किया गया । निष्कर्ष निम्नवत हैं : -

1. 138 प्रतिभागियों में 8 हरिजन 62 आदिवासी, 68 अन्य जाति के थे ।

2. 7.4 प्रतिशत प्रतिभागी प्राइमरी पाठशाला में अध्ययन कर चुके थे।

3. लगभग सभी केन्द्रों के भौतिक सामग्री से सन्तुष्ट थे।

4. 65.9 प्रतिशत ने लिखने पढ़ने तथा साधारण जोड़ के लिये केन्द्र आये थे ।

5. 99.3 प्रतिशत आदिवासी केन्द्र के चलाने वालों के कहने से आये थे।

6. 22.7 प्रतिशत को कार्यक्रम से लाभ हुआ ।

7. 98.7 प्रतिशत आगे शिक्षा प्राप्त करने की इच्छुक थे।

8. 56 प्रतिशत ज्ञान प्राप्त करके अपनी आय को बढ़ाना चाहते थे।

9. 19.6 प्रतिशत का कहना था कि उसे कार्यक्रम बहुत लाभ हुआ ।

10. जातिवाद बहुत कम देखने को मिला ।

11. 92.6 प्रतिशत दहेज को कानूनन जुर्म मानते थे।

12. छोटे परिवार के पक्ष में थे।

13. महिलाओं एवं पुरूषों को समान मजदूरी के पक्ष में थे।

**इसी संस्थान** ने 1981 में नगर विकास खण्ड रांची जनपद जमशेदपुर (बिहार) में इन्हीं तीन बातों साक्षरता, जागरूकता, एवं कार्यक्रम से लाभ का अध्ययन किया गया । प्रतिदर्श में 20 केन्द्र 247 केन्द्रों में से लिये गये। सभी वर्ग के लोगों का प्रतिनिधित्व, महिला पुरूष का प्रतिनिधित्व रखने का ध्यान में रखा गया । सभी को अलग अलग प्रश्नावली दी गई एवं साक्षात्कार किया गया ।

1. औसत उपस्थिति 53 प्रतिशत थी।

2. 83.16 प्रतिशत प्रतिभागी अपनी जीविका उपार्जन कृषि से करते थे।

3. प्रतिभागी केन्द्र के भौतिक सुविधाओं से सन्तुष्ट थे।

4. रोशनी का प्रबन्ध सन्तोषजनक नहीं था ।

5. कार्यक्रम से सभी सन्तुष्ट थे।

6. 88.40 प्रतिशत आगे इस कार्य क्रम में भाग लेने को तैयार थे।

7. 50 प्रतिशत पढ़ना, लिखना सीख चुके थे।

8. 20 प्रतिशत का कहना था कि कार्यक्रम लाभदायक हैं।

9. 47.37 प्रतिशत अपने कार्य को अच्छी प्रकार करने लगे थे।

10. 50 प्रतिशत का कहना था कि मजदूरी की दर और अधिक होना चाहिये ।

11. 68.49 प्रतिशत को किसी भी जाति का अनुदेशक होने पर आपत्ति नहीं थी।

12. 50 प्रतिशत दहेज लेना बुरा समझते थे।

13. 5.46 प्रतिशत विवाह की कानून द्वारा निर्धारित आयु जानते थे।

xxxxxxxxxxx

## तृतीय अध्याय

### अ. 1. प्रस्तुत शोध अध्ययन अभिकल्प का निर्धारण एवं स्पष्टीकरण

सामाजिक अनुसंधान और सामाजिक सर्वेक्षण, दोनों ही प्रकार के विभिन्न पक्षों का गहन अध्ययन करने के उपरान्त, यह स्पष्ट हो जाता है कि शोधार्थी का प्रस्तुत शोध कार्य **"सामाजिक सर्वेक्षण"** की कोटि में आता है क्योंकि सम्बन्धित शोध कार्य में निम्नवत बातें विद्यमान हैं : -

1. सामाजिक प्रघटना का अध्ययन ।
2. सामाजिक व्यवहार पर नियन्तत्राण।
3. वैज्ञानिक पद्धति।
4. अध्ययन पद्धति ।
5. अध्ययन प्रविधियां तथा उपकरण ।
6. नूतन तथ्यों की खोज ।

प्रस्तुत शोध में सामाजिक तथ्यों के अध्ययन के लिये दो प्राक्कल्पनाओं का निर्माण किया गया है, समस्या का स्पष्टीकरण किया गया है, उसे परिभाषित किया गया है। इसका भौगोलिक क्षेत्र विस्तृत है, बुन्देलखण्ड प्रभाग के अन्तर्गत पांच बड़े बड़े क्षेत्रफल रखने वाले जनपद सम्मिलित हैं, जिनमें चल रही प्रौढ़ शिक्षा का मूल्यांकन कार्य से सम्बन्धित सर्वेक्षण कार्य इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है। इसका एक उद्देश्य प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में गुणात्मक सुधार प्रस्तावित करना है, उसके माध्यम से ग्रामीण अनपढ़ प्रौढ़ों में वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा अन्य विषयों के प्रति चेतना लाना है। इन के प्रति जागरूकता विकसित करनी है, जिससे सही अर्थ में समाज सुधार या समाज कल्याण हो सके। ऐसा होना समाज के लिये उपयोगी है और व्यावहारिक भी है, क्योंकि इसमें समाज कल्याण और सुधार

से सम्बन्धित कार्य निहित हैं। प्रौढ़ शिक्षा, अनपढ़ों की सामाजिक समस्या है। इस शोध का अध्ययन, आकार, सीमित है और इस का सम्बन्ध विशिष्ट लोगों (अशिक्षित प्रौढ़ों) विशिष्ट स्थानों (ग्रामीण क्षेत्रों) विशिष्ट समस्या (निरक्षरता) से है। यह शोध तत्कालिक समस्या (निरक्षरता) तथा निरक्षरता उन्मूलन से सम्बन्धित है। इस निरक्षरता को कुशल नियन्त्रण, कठिनाइयों के समाधान से एक निश्चित समय में दूर किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध कार्य से कुछ निष्कर्ष प्राप्त हुये हैं उनके आधार पर भविष्य में प्रौढ़ों निरक्षरता उन्मूलन सम्बन्ध कार्यक्रम की योजना, सरकार एवं समाज सेवी संस्थाओं द्वारा नये आयामों को जोड़कर, बनाई जा सकती है।

इस प्रकार से प्रस्तुत शोध, प्राक्कल्पना, भौगोलिक क्षेत्र, अध्ययन के उद्देश्य, अध्ययन की प्रकृति, अध्ययन की विषय वस्तु, अध्ययन के आकार, समय, संगठन, सिद्धान्तों के आधार पर सामाजिक सर्वेक्षण के अन्तर्गत कहा जा सकता है।

**२.प्रस्तुत शोध का अभिकल्प :**

प्रस्तुत शोध का अभिकल्प वर्णनात्मक एवं निदानात्मक दोनो हैं। क्योंकि इस के द्वारा समस्या के यथार्थ तथ्यों का वर्णनात्मक विवरण कर सूचनायें संकलित की गई है। सूचनाओं एवं तथ्यों के जानने के लिये उपकरण प्रयोग, दत्त संकलन, दत्त विश्लेषण तथा दत्त निर्वचन, एक निश्चित समय सीमा में किया गया है। प्रौढ़ शिक्षा-मूल्यांकन के द्वारा समस्या के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त होने पर, उसके निदान के लिये सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं। प्रौढ़ों में निरक्षरता उन्मूलन के सम्बन्ध में उपयोगी एवं व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं।

सारांश में प्रस्तुत शोध, सामाजिक सर्वेक्षण है एवं इसका अभिकल्प वर्णनात्मक एवं निदानात्मक दोनों ही है।

3. समग्र संग्रह स्त्रोत

प्रदर्शीकिरण सामाजिक अनुसंधान और सर्वेक्षण का मुख्य आधार है। इसके सुदृढ़ होने से सर्वेक्षण के परिणाम विश्वसनीय होते हैं। प्रदर्श के लिये, समग्र की प्रत्येक इकाई प्रतिनिधित्व पा जाये, को, ध्यान में रखना होता है। सिम्पसन तथा काफ्का के अनुसार **"एक प्रदर्श समग्र का वह अंश है जिसका चयन हम अनुसंधान के उद्देश्य के लिये करते हैं"।** प्रदर्श पद इकाइयों के एक समूह का एक अंश है जो इकाई के समूह का प्रतिनिधत्व करता है।

ई0 एस0 बोगार्डस के अनुसार **"निर्दशन एक पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार इकाइयों के एक समूह में से निश्चित प्रतिशत का चयन है"।**

इस प्रकार निर्दशन अनुसंधान अभिकल्प की वह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत एक पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार नियन्त्रित स्थितियों में इकाइयों की एक विशेष समग्र में से एक निश्चित प्रतिनिधित्व संख्या में कुछ इकाइयों का चयन किया जाता है।

प्रयुक्त शोध में दर्ज बुंदेलखण्ड प्रभाग के पांच जनपद जालौन, झांसी, बांदा, ललितपुर एवं हमीरपुर के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की सूची जिला प्रौढ़ शिक्षा कार्यालयों से प्राप्त करने के बाद प्रत्येक जनपद को ध्यान में रखकर सूची के अनुसार 1,16,31,........ क्रम के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को प्रदर्श में सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक केन्द्र (प्रदर्श के सदस्य) जिसमें 30-30 प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी है, दस-दस प्रतिभागियों साक्षात्कार किया गया है।

4. **समंक विवेचन :**

**शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वयं अपने द्वारा**

निर्मित उपकरणों (अनुसूचियों) के माध्यम से सीधे, प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में, प्रतिभागियों से साक्षात्कार प्रक्रिया की है अतः निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन के दत्त (समंक) मौलिक एवं प्राथमिक हैं।

प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन के दन्तों (समंकों) के स्त्रोत क्षेत्रीय है। यह क्षेत्रीय स्त्रोत जीवित प्रौढ़ प्रतिभागियों से प्राप्त किये गये हैं। उनके व्यवहारों, प्रदत्त योग्यता का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया है। अतः प्राथमिक दत्त प्रत्यक्ष स्त्रोत हैं। यह व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से संकलित किये गये हैं। अतः यह संकलन मौलिक है, विश्वसनीय है एवं वास्तविक है कुछ अंश में वस्तुपरक अध्ययन भी हैं। कई बार प्रतिभागियों से मिलकर, अनुरोध कर, सूचनायें प्राप्त की गई हैं अतः इसमें लचीलापन भी है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध द्वैतीयक दत्त आधारित हैं, क्योंकि दो-दो, तीन-तीन बार प्रतिभागियों के पास जाकर, उनसे मिलकर, सूचनायें प्राप्त की गई हैं।

5. **संग्रहित समंकों की विश्वसनीयता :**

अनुसूचियों के निर्माण तथा उनके उपयोग की प्रक्रिया में विशेष सावधानी रखी जाती है। फिर भी उसके निर्माण एवं उपयोग प्रक्रिया की विश्वसनीयता सदैव एक समस्या बनी रहती हैं। दोनों ही प्रक्रियाओं में शोधकर्ता ने पूर्ण सावधानी रखने का प्रयास किया है : -

1. प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन अनुसूची का निर्माण करने में सामाजिक सर्वेक्षण के निपुण तथा अनुसूची के निर्मित करने वाले विशिष्ट व्यक्तियों से पूर्व परामर्श शोधकर्ता ने प्राप्त किया । अनुसूचियों का निर्माण, प्रश्नों को, उन विशिष्ट समाज शास्त्रियों की देख रेख में, सम्पादित किया गया । प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन अनुसूची, अनुदेशक सूची, ग्राम प्रधान सूची के निर्माण में

उनके सुझावों को पूर्ण रूप से माना गया है। इन अनुसूचियों को क्रमशः 10 और पांच-पांच उत्तरदाताओं (प्रतिभागियों एवं अनुदेशक तथा ग्राम प्रधान) पर सम्पादित किया गया ।

2. शोधकर्ता ने स्वयं अपने चार सहयोगियों सहित एक प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र से सम्पर्क किया। इसका उद्देश्य शोधकर्ता द्वारा पूंछताछ की मानक प्रणाली से उन्हें अवगत कराना था । साथ ही पायलट अध्ययन के रूप में पांच प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के अनुदेशकों तथा उन्हीं केन्द्रों के ग्राम प्रधान से उनसे संबंधित अनुसूचियों को भरा कर देखा। यह पांच-पांच भरी अनुसूचियों से इस बात के संकेत मिले कि अनुसूचियों के प्रश्न उत्तर कर देने में सफल रहे। इस आधार पर कहा जा सकता है कि विशिष्ट व्यक्तियों के परामर्श से शोधकर्ता द्वारा निर्मित प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन अनुसूची अनुदेशक अनुसूची तथा ग्राम प्रधान (ग्राम प्रमुख) अनुसूची विश्वसनीय है। पांच जनपदों से पांच सहयोगी जिससे समंकों के संग्रह में सहायता लेनी थी को एक विशिष्ट मनोवैज्ञानिक द्वारा तकनीकी रूप से प्रशिक्षित कराया गया । उन्होंने अपने-अपने जनपदों में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में जाकर प्रदर्श सदस्यों से अनुसूची के एक-एक बिन्दु को पढ़कर बुन्देलखण्डी भाषा में सरल करके अर्थ बताकर सूचनायें प्राप्त की हैं। अनुदेशक अनुसूची भरमें सभी अनुदेशक निपुण थे फिर भी पूछने पर उन्हें पूण रूप से समझाकर अनुसूची को पूरा कराया गया । इसी प्रकार ग्राम प्रधान या ग्राम प्रमुख अनुसूची को पूर्ण रूप से भरने में जिन प्रश्नों में उन्होंने सहायता मांगी, शोधकर्ता के सहयोगियों ने उन्हें सहायता प्रदान की ।

इन सभी सावधानियों को हर स्तर पर ध्यान दिये जाने पर यह आशा की जाती है, कि संग्रहित समंकों में पूर्ण विश्वसनीयता है और वह शोधकर्ता के लिये उपयोगी हैं, उनके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष भी सही एवं उपयोगी होगें । जहां तक वैधता का प्रश्न है अनुसूची को 10 लाभार्थियों में पूण प्रशासित करके देख लिया गया कि वह पूर्ण रूप से प्रयुक्त करके योग्य हैं, जिससे उद्देश्य के लिये अनुसूची निर्मित की गई है वह उद्देश्य पूरा हो रहा है ।

**6. विश्लेषणात्मक उपकरण (प्रयुक्त उपकरण) :**

प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन में शोधकर्ता ने गहन अध्ययन करने के बाद तथा प्रमुख समाज शास्त्रियों एवं विशिष्ट व्यक्तियों से परामर्श लेकर निम्नलिखित अनुसूचियां स्वयं निर्मित की हैं : -

1. प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन अनुसूची तथा उत्तर पत्र
2. अनुदेशक अनुसूची
3. ग्राम प्रधान अनुसूची

**1. प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन अनुसूची :**

शोधकर्ता ने प्रौढ़ शिक्षा के लाभार्थियों से पूर्व निर्मित प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन अनुसूची के सहारे प्रश्नों को पूछ-पूछ कर उत्तर पत्र में उत्तर लेखन अथवा टिक मार्क ( ✓ ) अंकित किया है। उसने लाभार्थियों से सम्पर्क करके व्यक्तिगत साक्षात्कार, अपने प्रशिक्षित सहयोगियों के माध्यम से कराया है (परिशिष्ट - 3)

अनुसूची संख्या 2 एवं 3 में शोधकर्ता ने अपने शोधकार्य में मिश्रित अनुसूची का प्रयोग किया है। इसमें सभी प्रश्न संरचित हैं। सभी प्रश्नों में छूट दी गई है ताकि उत्तरदाता अपनी बात खुलकर कह सके। उत्तरदाताओं के एक वर्ग ने स्वतन्त्र रूप से पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखित

रूप में दिये हैं।

ये अनुसूची अनुदेशक तथा ग्राम प्रधान द्वारा **दी** गई है (परिशिष्ट - 3)

7. **शोध अध्ययन परिसीमन :**

1. शोधकार्य के करने के लिये एक समय निर्धारित है उस समय को ध्यान में रखते हुये समयबद्ध कार्य करने के लिये समयचक्र निर्धारित किया गया । प्रत्येक जनपद के हर न्यादर्श प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र से सर्वेक्षण प्रपत्रों के भरने के लिये चार-चार दिन का समय निर्धारित किया गया । इस समय सीमा को परिस्थितियों के अनुसार एक दो दिन कम या अधिक करने का भी प्रावधान रखा गया ।

2. बुंदेलखण्ड प्रभाग के पांच जनपदों पर वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक चेतना से संबंधित शोध सर्वेक्षण कार्य तक सीमित किया गया है।

3. पांच जनपद, जालौन, झांसी, बांदा, ललितपुर तथा हमीरपुर के विकास खण्डों के उन गांवों तक ही सीमित किया गया जहां प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र कार्यरत हैं।

4. शोधकार्य में प्रौढ़शिक्षा केन्द्रों के उन व्यक्तियों को लिया गया है। जो केन्द्र में आकर शिक्षार्थी के रूप में अध्ययन किये हैं। इस प्रकार स्त्री-पुरूष दोनों को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया है। शिक्षार्थी की आयुसीमा में कोई प्रतिबन्ध नहीं रखा गया है ।

8. **परिकल्पना :**

सामाजिक सर्वेक्षण तथा सामाजिक अनुसंधान के अन्तर्गत तथ्यों का नियंत्रित और वस्तुनिष्ठ रूप से अध्ययन करने में परिकल्पना की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है यह सच है कि सामाजिक सर्वेक्षण के लिये परिकल्पना का निर्माण करना प्रत्येक स्थिति में आवश्यक नहीं होता लेकिन कुछ विशेष अध्ययनों में परिकल्पना का निर्माण करना उपयोगी अवश्य होता है ।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रौढ़ शिक्षा के मूल्यांकन के पूर्व यह माना गया कि ग्रामों में प्रौढ़ शिक्षा से वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक चेतना जागृत होती है। स्त्री एवं पुरूषों दोनों में ही प्रौढ़ शिक्षा से समान रूप से जागरूकता आती है। ये दोनों तथ्य, अध्ययन के विश्लेषण से स्वीकृत अथवा अस्वीकृत हो सकते हैं।

जब ये दोनों तथ्य, सत्य के रूप में जांचने के पहले ही माने जा सकते हैं तब इस सामाजिक सर्वेक्षण में परिकल्पना को स्थान दिया गया है। इस प्रकार शोधकर्ता द्वारा दो परिकल्पनायें ली गई हैं। इन परिकल्पनाओं में

1. स्पष्टता
2. अनुभव सिद्धता
3. विशिष्टता

तीनों गुण हैं।

**परिकल्पना का निर्धारण :**

इस सामाजिक सर्वेक्षण में निम्नलिखित प्राक्कल्पनायें निर्धारित की गई हैं : -

1. प्रौढ़ शिक्षा से वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक चेतना में बृद्धि होती है।

2. महिलाओं तथा पुरूषों दोनों में ही जागरूकता, शिक्षा के माध्यम से, हो जाती है।

**ब. अध्ययन विधि :**

शोधकर्ता के प्रस्तुत शोध अध्ययन के न्यादर्श चयन विधि निम्नलिखित है । बुन्देलखण्ड प्रभाग के पाचों जनपदों का प्रतिनिधित्व किया गया है। इस प्रभाग में प्रौढ़, शिक्षा केन्द्रों की संख्या 2100 है। प्रत्येक जनपद से प्रत्येक पन्द्रहवां केन्द्र (सूची के अनुसार) लिया गया है। (2100 ÷ 15 = 140 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र न्यादर्श में सम्मिलित हैं।

**स. न्यादर्श चयन :**

बुंदेलखण्ड प्रभाग में पांच जनपद जालौन, झांसी, ललितपुर, और हमीरपुर हैं। प्रत्येक जनपद में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र कार्यरत हैं। जिनकी संख्या निम्नवत हैं : -

**तालिका - 3.1**

**बुंदेलखण्ड प्रभाग में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र संख्या**

| क्0सं0 | जनपद | संख्या | विवरण |
|---|---|---|---|
| 1. | जालौन | 600 | |
| 2. | झांसी | 300 | |
| 3. | बांदा | 300 | |
| 4. | ललितपुर | 300 | |
| 5. | हमीरपुर | 600 | |
| **योग** | | **2100** | |

तीन जनपदों झांसी, बांदा, और ललितपुर में प्रत्येक में 300 केन्द्रों में से 20-20 केन्द्र तथा दो जनपदों जालौन और हमीरपुर में 600, 600 केन्द्रों में से 40-40 केन्द्रों को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया है। (परिशिष्ट - 3)

**तालिका - 3.2**

**जनपद अनुसार न्यादर्श केन्द्र संख्या**

| क्र0सं0 | जनपद | न्यादर्श प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र |
|---|---|---|
| 1. | जालौन | 40 |
| 2. | झांसी | 20 |
| 3. | बांदा | 20 |
| 4. | ललितपुर | 20 |
| 5. | हमीरपुर | 40 |
| | योग: | 140 |

बुंदेलखण्ड प्रभाग के उपरोक्त पांचों जनपदों के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को न्यादर्श में सर्वेक्षण हेतु चयनित किया गया है।

प्रत्येक केन्द्र में पूर्व शिक्षा प्राप्त किये हुये व्यक्तियों में से दस व्यक्तियों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया। प्रत्येक प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र से दस-दस व्यक्तियों से शोध सर्वेक्षण प्रपत्रों के माध्यम से सूचनायें एकत्र करने का कार्यक्रम बनाया गया। इस प्रकार पांच जनपदों से प्राप्त कुल प्रदर्श, 140 × 10 = 1400 व्यक्तियों का प्राप्त हुआ।

इस प्रदर्श में सजातीयता है और प्रतिनिधयकता को अभीष्ट मानकर चयन किया गया है और पर्याप्त परिशुद्धता का ध्यान रखा गया है।

तालिका – 3.3

**जनपद अनुसार परियोजना न्यादर्श केन्द्र संख्या**

| क्र0सं0 | जिला का नाम | परियोजना | केन्द्रों की संख्या | प्रत्येक पन्द्रहवां नम्बर के अनुसार | 1987–88 से 1989–90 तक (प्रत्येक केन्द्र से 10 प्रत्येक वर्ष – 2) |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | जालौन (उरई) | (क) कालपी (डकोर) | 300 | 20 | 200 |
| | | (ख) कोच | 300 | 20 | 200 |
| 2. | झांसी | (क) गरूसरांय | 300 | 20 | 200 |
| | | (ख) – | – | – | – |
| 3. | बांदा | (क) कर्वी, मानिकपुर, | 300 | 20 | 200 |
| 4. | ललितपुर | (क) तालवेहट | 300 | 20 | 200 |
| | | (ख) | – | – | – |
| 5. | हमीरपुर | (क) सुमेरपुर | 300 | 20 | 200 |
| | | (ख) कुरारा (राठ) | 300 | 20 | 200 |
| | **योग** | **नौ परियोजनायें** | 2100 | 140 | 1400 |

1. **प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन अनुसूची**

प्रौढ़ शिक्षा से ग्रामीण जनता को प्रत्येक क्षेत्र में लाभ होने की संकल्पना की गई है यह भी मानकर चला गया है कि ग्रामीण अशिक्षित व्यक्तियों को प्रौढ़ शिक्षा से लाभ हुआ है किन्तु अभी तक इस सम्बन्ध में यह निश्चित रूप से नहीं बताया जा सका कि ग्रामीण अशिक्षित व्यक्तियों को, जिन्होंने प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में शिक्षा प्राप्त की है, वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं अन्य क्षेत्रों में कितने सीमा तक, जागरूकता अर्जित की है। इन क्षेत्रों में जागरूकता का ज्ञान प्राप्त करने के लिये शोधार्थी द्वारा एक प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन अनुसूची निर्मित की गई है। इस मूल्यांकन अनुसूची को निर्मित करने में प्रमुख समाज शास्त्रियों; एवं मनोवैज्ञानिकों से, प्रारूप बनाने के पूर्व मन्त्रणा ली है। उनके व्यावहारिक पक्ष एवं सुझावों को ध्यान में रक्खा गया है। प्रत्येक भाग के निर्मित प्रश्नों (पदों) पर विचार विनिमय किया गया है, इसके पश्चात् पदों को रखने का कार्य किया गया है। पदों में प्रौढ़ शिक्षा के विषय में जानकारी हेतु पूर्व एवं वर्तमान शिक्षा स्तर में विभाजित किया गया है। प्रत्येक क्षेत्र वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं अन्य के विषय में जागरूकता, आकलन करने का प्रयास किया गया है इसके लिये, पदों को अ, ब, स, द, और य खण्डों में बांटा गया है। प्रत्येक क्षेत्र के पदों को 12, 12 पदों में विभाजित करके प्रश्न निर्मित किये गये। इन प्रश्नों को अंतिम रूप देने में पुनः प्रमुख समाज शास्त्रियों, शिक्षाविद् एवं मनोवैज्ञानिकों से परामर्श लिया गया है। उनके परामर्श से इन पांच क्षेत्रों के पूर्व एवं वर्तमान जागरूकता के विश्लेषण को सरल बनाने के लिये उत्तर पत्र निर्मित किया गया। (परिशिष्ट - 3)

प्रौढ़ शिक्षा-मूल्यांकन अनुसूची के निर्मित करने में निर्धारित बिन्दुओं पर सतर्कता से कार्य किया गया ताकि इसमें विश्वसनीयता सन्निहित रहे। इस अनुसूची में वैधता देखने के लिये एक छोटे प्रदर्श पर पायलट अध्ययन से यह पता चला कि उद्देश्य पूरे होते पाये गये और उनके

निष्कर्ष भी सही दिशा का संकेत देने लगे।

2. **अनुदेशक अनुसूची :**

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में अनुदेशक प्रमुख अधिकारी होता है जिसकी देख रेख में प्रौढ़ शिक्षण कार्यक्रम चलता है। इन अनुदेशकों को प्रौढ़ शिक्षा के चलाने में अनेक कठिनाईयां अनुभूत हैं। इस योजना को व्यावहारिकता प्रदान करने के लिये, उनके सुझाव लेना अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इसको ध्यान में रखते हुये, अनुदेशक **सूची** का निर्माण किया गया है। इसके निर्मित करने में विशिष्ट समाज शास्त्रियों एवं शिक्षा विदों से परामर्श लिया गया है। उनके सुझावों के आधार पर अनुदेशक अनुसूची निर्मित की गई है। **सूची** निर्मित करके, इसके प्रारूप को पुनः उन्हें दिखाया गया है और तदनुकूल सुधार किया गया है। इस अनुदेशक सूची में 14 बिन्दु हैं। (परिशिष्ट-3) इसको प्रत्येक प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के अनुदेशक से भराया गया है उनकी प्रतिक्रिया, इस अनुदेशक अनुसूची के माध्यम से जानने का प्रयास किया गया है।

इस अनुदेशक अनुसूची में विश्वनीयता और वैद्यता दोनों ही पर्याप्त मात्रा में पायी गई क्योंकि प्रश्नावली, उन उद्देश्यों को पूरा करती है जिसके लिये इसका प्रयोग हुआ है। निष्कर्ष के संकेत भी उपयोगी एवं विश्वनीय रहें।

3. **गांव प्रधान अनुसूची :**

इस अनुसूची द्वारा, गांव के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के विषय में, अन्य जानकारी लेने का प्रयास किया जाना, उद्देश्य रहा। इस अनुसूची का निर्माण विशिष्ट समाज शास्त्रियों के परामर्श से किया गया। अनुसूची में 11 बिन्दु हैं इन बिंदुओं के माध्यम से गांव के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के विषय में ग्राम प्रधान से सूचनायें प्राप्त करनाआपेक्षित हैं। गांव प्रधान या गांव के प्रमुख व्यक्ति के द्वारा भरने से, प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की कार्यप्रणाली आदि का ज्ञान सही-सही प्राप्त होने की पूर्ण आशा की गई है। अतः इस अनुसूची के माध्यम से प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की कार्य प्रणाली ज्ञात करने

का प्रयास किया गया । उनके आधार पर प्रौढ़ शिक्षण में सुधार के लिये मार्ग दर्शन संभव हुआ है (परिशिष्ट - 3)

गांव प्रमुख अनुसूची में विश्वसनीयता एवं वैधता प्रचुर मात्रा में देखने को मिली क्योंकि जिस समूह में अनुसूची प्रशासित की गई उनके उत्तर उप उद्देश्यों को पूरा करते पाये गये, जिनके लिये वे निर्मित हुये। इससे जो भी निष्कर्ष प्राप्त हुये वह उपयोगी हैं एवं उन पर निर्भर किया जा सकता है ।

# चतुर्थ अध्याय

## दत्त विश्लेषण एवं निर्वचन :

शोधकर्ता ने स्वयं रचित प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन से सम्बन्धित, अनुसूची अनुदेशक, अनुसूची और ग्राम प्रमुख पत्री द्वारा प्राप्त दत्तों का विश्लेषण निर्वचन किया है। इस शोध अध्ययन के निर्वचन को सम्मिलित करते हुये, प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में हुये अन्य शोध सर्वेक्षणों एवं अध्ययनों के परिणामों एवं निष्कर्षों को ध्यान में रखकर विवेचन किया गया है। विश्लेषण निर्वचन और विवेचन में प्रतिशत तुलना विधि का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया गया है। विश्लेषण, निर्वचन और विवेचन में विश्वसनीयता एवं वैधता को उच्च स्तरीय बनाये रखने का प्रयास किया गया है। सारणियों को इस प्रकार अंकित किया गया है, कि वे महत्त्वपूर्ण सूचनायुक्त हो, जिन के आधार पर प्रौढ़ शिक्षा के अग्रिम कार्यक्रम को सुदृढ़ करने में सभी स्तर पर वांछित बल दिया जा सके। शोध अध्ययन में प्रदर्श से प्राप्त दत्तों का विश्लेषण लिंग भेद, शिक्षा स्तर, आयु वर्ग, व्यवसाय (कार्य) एवं वार्षिक आय के अनुसार किया गया है, प्रश्नावली एवं पत्री से प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण एवं निर्वचन, को, वैयक्तिक, सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक एवं अन्य प्रकार के ज्ञान, जागरूकता के परिप्रेक्ष्य में देखा गया है। साथ ही अनुदेशक एवं ग्राम प्रमुख/ग्राम प्रधान अनुसूची का भी विश्लेषण एवं निर्वचन प्रस्तुत किया गया है ।

अ) लिंग भेद अनुसार प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों की संख्या प्रतिदर्श में अपनाई गई विधि से (सूची क्रम से) इस प्रकार है। महिलायें 744, पुरूष 656 योग 1400

तालिका – 4.1

(ब) आयुवर्ग के अनुसार दत्त आवंटन (सभी पांच जनपदों का योग)

| आयुवर्ग | महिला | पुरूष | योग |
|---|---|---|---|
| 15–20 | 228 | 93 | 321 |
| 21–25 | 218 | 206 | 424 |
| 26–30 | 171 | 185 | 356 |
| 31–35 | 97 | 88 | 185 |
| 36–40 | 23 | 70 | 93 |
| 41–45 | 05 | 14 | 19 |
| 46–50 | 01 | 00 | 01 |
| 51–55 | 00 | 00 | 00 |
| 56–60 | 00 | 00 | 00 |
| 61–65 | 01 | 00 | 01 |
| योग | 744 | 656 | 1400 |

तालिका – 4.2

(स) शिक्षा स्तर के अनुसार दत्त–आवंटन (सभी पांच जनपदों का योग)

| शिक्षा स्तर | महिला | पुरूष | कुल योग |
|---|---|---|---|
| अशिक्षित (निरक्षर) | 448 | 439 | 887 |
| कक्षा 1–2 कक्षा 2 पास नहीं | 279 | 200 | 479 |
| कक्षा 2–3 2 पास | 17 | 17 | 34 |
| योग | 744 | 656 | 1400 |

तालिका 4.3

(द) जाति/वर्ग के अनुसार दत्त आवंटन(सभी पांच जनपदों का योग)

| बहुसंख्यक (सामान्य वर्ग) | | अनुसूचित जाति | अनु0ज0जाति | पिछड़ी जाति | अन्य जाति | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 133 | 271 | 01 | 322 | 17 | 744 |
| पुरूष | 151 | 230 | 01 | 246 | 28 | 656 |
| योग | 284 | 501 | 02 | 568 | 45 | 1400 |

तालिका – 4.4

(य) प्रदर्श का व्यवसाय अनुसार विवरण (सभी पांच जनपदों का)

| लिंग भेद | कृषि | मजदूरी | नौकरी | गृहकार्य | व्यापार | कुछ नहीं | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 255 | 188 | 04 | 278 | 00 | 19 | 744 |
| पुरूष | 453 | 184 | 04 | 04 | 09 | 02 | 656 |
| योग | 708 | 372 | 08 | 282 | 09 | 21 | 1400 |

तालिका – 4.5

(र) प्रदर्श प्रतिभागियों का वार्षिक आय वर्गीकरण (संख्या)

| रूपये 3600 तक | 3601 से 6000 | 6901 से 7200तक | 7201 से ऊपर | कुछ नहीं बताया | योग |
|---|---|---|---|---|---|
| 895 | 394 | 34 | 07 | 70 | 1400 |

कोई भी देश और समाज तब तक उन्नति नहीं कर सकता जब तक उसके नागरिक शिक्षित न हों। शिक्षा के सार्वभौमीकरण की बात को हमारे संविधान ने भी स्वीकारा है। यद्यपि शिक्षा के प्रचार प्रसार की दिशा में बहुत कार्य हुआ है, शैक्षिक सुविधाओं में क्रमिक बढ़ोत्तरी भी हुई है, फिर भी शतप्रतिशत शिक्षा के लक्ष्य से हम अभी काफी दूर हैं।

हमारे बालकों और किशोरों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति सामान्य विद्यालयों द्वारा की जा रही है। पुरानी पीढ़ी जो भूतकाल में इस सुविधा अथवा अन्य वैयक्तिक कारणों से शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकी ; उन्हें शिक्षित करने के लिये शासन द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया।

इस शोध अध्ययन का केन्द्र बिन्दु यह ज्ञात करना है, कि प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों से सम्बद्ध व्यक्ति इस कार्यक्रम से कितना लाभान्वित हो रहे हैं। शोध अध्ययन के अंतर्गत पांच खण्ड व्यक्तिगत (शैक्षिक प्रगति, और उसका दैनिक जीवन में उपयोग), सामाजिक (सामाजिक जागरूकता, सामाजिक उन्नयन, सामाजिक सदभाव आदि), आर्थिक(परम्परागत व्यवसायों से हटकर आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु नवीन उद्योग धन्धों आदि सम्बन्धी दृष्टिकोण, राजनैतिक ( राजनैतिक जागरूकता, प्रक्रिया, आदि) और अन्य (इसके अन्तर्गत विविध दृष्टिकोणों स्वास्थ्य, प्रौढ़ शिक्षा, परिवार आदि) में प्रौढ़ शिक्षा के योगदान का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। अध्ययन बुन्देलखण्ड प्रभाग के जनपदानुसार जालौन, झांसी, बांदा, ललितपुर, हमीरपुर, में स्थित 140 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के 1400 प्रतिभागियों पर किया गया है। क्रमानुसार विश्लेषण निर्वचान और विवेचन निम्नलिखित है।

**खण्ड - 1**

**वैयक्तिक**

सर्वेक्षण प्रपत्र के प्रत्येक खण्ड द्वारा 12-12 विभिन्न दिशाओं में जिज्ञासायें की गई हैं। वैयक्तिक खण्ड का प्रथम पद शिक्षा में हुये लाभों का आंकलन करता है। जो प्रतिशत तालिका 4.6 में प्रदर्शित है : -

## तालिका - 4.6

### शिक्षा की स्थिति (प्रतिशत में)

| प्रभाग/ जनपद | कुछ न जानना जानना | वर्णमाला का ज्ञान | हस्ताक्षर कर लेना | कुछ लिख पढ़ लेना | किताब पढ़ लेना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड (महिलयें) | 11.42 | 32.39 | 37.90 | 44.75 | 31.31 |
| पुरूष | 17.68 | 54.42 | 45.73 | 42.83 | 35.06 |
| **योग** | **14.36** | **42.27** | **41.64** | **43.85** | **33.07** |
| जालौन | 9.75 | 42.25 | 48.50 | 41.75 | 33.75 |
| झांसी | 5.00 | 35.5 | 44.5 | 27.00 | 32.00 |
| बांदा | 52.50 | 47.50 | 41.00 | 41.0 | 39.5 |
| ललितपुर | 4.50 | 78.0 | 15.0 | 51.0 | 00.00 |
| हमीरपुर | 8.75 | 51.75 | 47.00 | 52.75 | 46.25 |

अ. उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 14.36% प्रतिभागी प्रौढ़ शिक्षा से लाभान्वित नहीं हुये हैं।

ब. लाभान्वित न होने वाले पुरूषों का प्रतिशत (17.63) महिलाओं की (11.42) प्रतिशत से अधिक है।

स. बांदा जनपद के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के आधे से कुछ अधिक 52.5% प्रतिभागी शैक्षिक दृष्टि से कोई लाभ नहीं उठा पा रहे है। झांसी जनपद में यह संख्या (5%) न्यूनतम है।

द. शेष (85.64%) प्रतिभागी प्रौढ़ शिक्षा से एक या इससे अधिक

दृष्टि से लाभान्वित हुये हैं। वे वर्णमाला, हस्ताक्षर कर लेने की क्षमता, कुछ पढ़ सकने या पुस्तक पढ़ लेने की योग्यता में से एक अथवा इन सब लाभों को प्राप्त कर पाये हैं।

य. सर्वाधिक संख्या वर्णमाला ज्ञान, थोड़ा बहुत पढ़ लेने वाले प्रतिभागी की रही है।

2. वैयक्तिक खण्ड के अंतर्गत दूसरा बिन्दु धन के लेन देन की गणना और मुद्रा परिचय से सम्बन्धित है, जो तालिका 4.7 में उद्घृत है: -

**तालिका - 4.7**

**(रूपये गणना करने सम्बन्धित स्थिति)**

| प्रभाग/ जनपद | बिना गिने रूपया लेना | गिनकर लेना | अच्छे खराब की पहिचान | नये पुराने सिक्कों की पहिचान | नोटों की पहिचान |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 18.01 | 31.72 | 30.77 | 25.13 | 20.56 |
| पुरूष | 36.58 | 51.52 | 46.95 | 43.44 | 38.10 |
| **योग:** | **26.71** | **41.00** | **39.35** | **33.71** | **28.78** |
| जालौन | 9.75 | 42.25 | 48.50 | 41.75 | 33.75 |
| झांसी | 6.0 | 12.0 | 10.0 | 10.5 | 12.5 |
| बांदा | 65.50 | 68.5 | 69.0 | 71.0 | 70.5 |
| ललितपुर | 1.0 | 40.0 | 35.5 | 10.0 | 00.00 |
| हमीरपुर | 44.0 | 56.5 | 53.5 | 48.75 | 37.0 |

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि : -

अ) लगभग एक चौथाई व्यक्ति (26.71%) बिना गिने ही रूपया पैसा रख लेते हैं। हो सकता है कि इनमें से कुद स्वभाव से ऐसा करते हों, अन्यथा बांदा जनपद में यह प्रतिशत (65.5) इतना

अधिक न होता। यह सम्भव है कि इनमें से एक अधिकांश भाग गिनने की प्रक्रिया से परिचित हैं।

पुरूषों की अपेक्षा महिलायें गणना करने में अधिक सतर्क हैं ।

ब) महिलाओं की अपेक्षा पुरूष वर्ग धन सम्बन्धी गणना और पहिचान में अधिक लाभान्वित हुये हैं। प्रौढ़ शिक्षा द्वारा सर्वाधिक लाभ भी धन सम्बन्धी गणित प्रक्रिया में ही हुआ है।

स) झांसी जनपद के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के प्रतिभागियों के एक बड़े भाग ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की है। इसी कारण अन्य जनपदों की अपेक्षा इस जनपद के प्रतिभागी प्रौढ़ शिक्षा से कम लाभान्वित होते प्रतीत हो रहे हैं।

द) धन सम्बन्धी विभिन्न प्रक्रियाओं में लाभान्वित होने में बांदा जनपद अग्रणी है।

2. अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति प्रौढ़ों का दृष्टिकोण सर्वेक्षण का तृतीय बिन्दु हैं, विश्लेषण निम्नलिखित है : –

**तालिका – 4.8**

**बच्चों की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण**

| प्रभाग जनपद | शिक्षित होना आवश्यक | खेती घर को वरीयता | लाभकारी | आवश्यक नहीं | शिक्षित होने पर घर के बाहर में होना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 25.0 | 15.32 | 26.61 | 14.25 | 13.84 |
| पुरूष | 22.71 | 26.21 | 32.92 | 26.76 | 15.54 |
| **योग** | **23.92** | **20.42** | **29.57** | **20.14** | **14.64** |
| जालौन | 23.25 | 8.0 | 16.5 | 9.0 | 6.50 |
| झांसी | 17.0 | 2.5 | 12.0 | 12.5 | 4.0 |
| बांदा | 34.5 | 32.5. | 37.5 | 31.5 | 25.0 |
| ललितपुर | 14.0 | 2.5 | 40.0 | 0.5 | 0.5 |
| हमीरपुर | 27.75 | 44.75 | 42.25 | 42.25 | 30.0 |

## निष्कर्ष

अ) प्रौढ़ों की सर्वाधिक संख्या अपने बालकों को शिक्षित होना लाभकारी तो मानते हैं परन्तु लगभग एक चौथाई प्रौढ़ उनके शिक्षित होने की अपेक्षा उन्हें कृषि कार्य में लगाने को अधिक उपयोगी मानते हैं।

ब) पुरूषों की अपेक्षा महिलायें अपने बालकों का शिक्षित होना अधिक आवश्यक मानती हैं।

स) लगभग 15% प्रौढ़ों को भय है कि पढ़ कर बालक घर के बाहर हो जाते हैं। इस भय से शिक्षा के महत्त्व को मानते हुये भी बालकों को सम्भवतः उच्च स्तर की शिक्षा नहीं दिलाना चाहते।

द) ललितपुर जनपद के अधिकांश प्रौढ़ इस दिशा में अधिक जागरूक हैं।

4. वैयक्तिक खण्ड के अन्तर्गत चौथा पद सामान क्रय में पारिवारिक सदस्यों में से किसी की सलाह लेने के विषय में है। विश्लेषण सारणी में अंकित हैं :-

तालिका - 4.9

घर का सामान खरीदने में सलाह लेना

| प्रभाग/ जनपद | बड़ों से | पत्नी से | बच्चों से | बहू से | किसी से नहीं |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | 21.23 | 26.88 | 28.36 | 23.38 | 18.27 |
| महिला | | | | | |
| पुरूष | 40.39 | 41.92 | 42.22 | 44.51 | 33.68 |
| **योग** | **30.21** | **33.92** | **34.78** | **33.28** | **25.50** |
| जालौन | 16.50 | 24.25 | 25.75 | 21.75 | 10.0 |
| झांसी | 11.0 | 10.0 | 9.0 | 11.0 | 5.0 |
| बांदा | 70.0 | 77.5 | 73.0 | 73.0 | 71.5 |
| ललितपुर | 13.5 | 00.00 | 00.00 | 00.00 | 20.0 |
| हमीरपुर | 42.0 | 52.75 | 55.00 | 52.75 | 31.0 |

**निष्कर्ष:**

सारणी 4.9 से स्पष्ट है कि : -

अ. अधिकांश व्यक्ति घर के लिये सामान खरीदने से पूर्व परिवार के किसी न किसी सदस्य से सलाह लेते हैं। फिर भी प्रतिदर्श के लगभग एक चौथाई प्रतिभागी किसी से परामर्श नहीं लेते पाये गये।

महिलाओं में परामर्श न लेकर स्वयं अपनी इच्छा से क्रय करने का प्रतिशत (18.28) पुरूषों के (33.68) प्रतिशत की अपेक्षा कहीं कम है।

ब) लगभग 75% व्यक्ति परिवार में से किसी एक अथवा कई व्यक्तियों के परामर्श और अनुमोदन के पश्चात सामग्री क्रय करते हैं।

स) प्रतिदर्श में सम्मिलित ललितपुर जनपद के प्रतिभागी उपर्युक्त निष्कर्षों के अपवाद हैं; वे या तो किसी से परामर्श लेते ही नहीं, यदि लेते भी हैं तो केवल अपने बड़ों से ।

द) झांसी और ललितपुर के सीमित प्रतिभागियों ने ही अपना मन्तव्य व्यक्त किया है।

5. पद 5 में प्रौढ़ों के स्वास्थ्य सम्बन्धी दृष्टिकोण की जिज्ञासा की गई है। विश्लेषण निर्वचन और विवेचन निम्नवत हैं : -

**तालिका - 4.10**

**(स्वास्थ्य के प्रति दृष्टिकोण)**

| प्रभाग/जनपद | दूसरों पर आश्रित | स्वयं डा0 से बात करना | बीमारी दवा की जानकारी लेना | अपनी जानकारी से दवा लेना | गलत दवा पर डा0 को संकेत करना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 23.65 | 22.98 | 24.19 | 17.74 | 24.19 |
| पुरूष | 40.39 | 45.57 | 45.73 | 45.27 | 38.26 |
| **योग:** | **31.57** | **33.57** | **34.35** | **30.64** | **30.78** |
| जालौन | 12.75 | 20.0 | 12.25 | 9.0 | 16.75 |
| झांसी | 6.0 | 18.50 | 18.5 | 13.0 | 13.5 |
| बांदा | 68.0 | 72.5 | 74.5 | 72.5 | 74.0 |
| ललितपुर | 34.5 | 0.50 | 20.5 | 00 | 22.0 |
| हमीरपुर | 43.5 | 51.75 | 50.75 | 55.5 | 36.5 |

**निष्कर्ष:**

तालिका को देखने से ज्ञात होता है कि : -

अ) महिलायें पुरूषों की अपेक्षा अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हैं, वे अपनी जानकारी की अपेक्षा चिकित्सक के परामर्श से बीमारियों के निदान को वरीयता देती हैं। वे पुरूषों की अपेक्षा कम संख्या में बीमारी के ईलाज में दूसरों पर आश्रित हैं।

ब) लगभग एक तिहाई प्रौढ़ केवल चिकित्सक से केवल परामर्श ही नहीं लेते, वरन् अपनी बीमारी और निदान की उनसे विवेचना भी करते हैं। बांदा जनपद में यह संख्या अत्यधिक है।

स) बांदा और हमीरपुर जनपद में ऐसे व्यक्तियों की संख्या बहुत अधिक है जो स्वयं अपनी जानकारी से बीमारी के उपचार के लिये दवा ले लेते हैं, जबकि ललितपुर जनपद में यह संख्या शून्य है।

द) लगभग एक तिहाई प्रौढ़ स्वास्थ्य के बारे में जागरूक नहीं है, वे उपचार के लिये स्वयं पहल न कर दूसरों पर आश्रित रहते हैं।

6. नवीन कृषि उपकरणों की जानकारी और उपयोग प्रश्नावली का छठां बिन्दु है। प्राप्त दत्त तालिका [illegible] में अंकित है : -

तालिका - 4.11

**कृषि सम्बन्धी उपकरणों के क्रय प्रतिदृष्टिकोण**

| पद /प्रभाग जनपद | विज्ञापन पढ़कर क्रय करना | बिना सोचे समझे | दूसरों पर पर निर्भर | प्रयोग को देखने के पश्चात | कृषि विशेषज्ञों की सलाह के बाद |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 22.17 | 24.66 | 25.26 | 32.12 | 18.02 |
| पुरूष | 40.24 | 44.97 | 48.93 | 44.2 | 30.48 |
| **योग:** | **30.64** | **34.07** | **36.35** | **37.78** | **23.85** |
| जालौन | 19.25 | 12.75 | 14.5 | 15.0 | 12.75 |
| झांसी | 7.0 | 3.5 | 7.5 | 4.0 | 3.5 |
| बांदा | 73.5 | 68.5 | 68.5 | 75.0 | 73.5 |
| ललितपुर | 18.5 | 51.0 | 50.5 | 59.0 | 12.0 |
| हमीरपुर | 38.5 | 45.0 | 49.5 | 48.25 | 26.25 |

**निष्कर्ष :**

तालिका के प्रदत्तों का विवेचन और निष्कर्ष निम्नलिखित हैं : -

अ) कृषि विशेषज्ञों की सलाह के पश्चात ही कृषि उपकरणों को क्रय करने वाले प्रौढ़ों की संख्या अपेक्षाकृत कम है बांदा जनपद इसका अपवाद है, जहां प्रौढ़ों ने इस बिन्दु के पांचों पदों पर लगभग समान प्रतिक्रिया दी है। इसका मुख्य कारण कृषि विशेषज्ञों की सहज सुलभता की कमी प्रतीत होती है।

ब) कृषि उपकरण बिन्दु पर झांसी जनपद के प्रौढ़ों की प्रतिक्रिया अत्यधिक सीमित हैं ।

स) कृषि उपकरणों के क्रय में एक बड़ी संख्या में प्रौढ़ उपकरण के प्रायोगिक लाभ और दूसरों का अनुकरण करते हैं।

द) एक बड़ी संख्या में प्रौढ़ उपकरण की उपयोगिता पर ध्यान न देकर बिना सोचे समझे क्रय कर लेते हैं, जो सुखद स्थिति नहीं है ।

7. सांस्कृतिक कार्यक्रमों और धार्मिक आयोजनों के प्रति प्रौढ़ों के मतों का विश्लेषण तालिका 4.12 में प्रस्तुत हैं।

**तालिका - 4.12**

**सांस्कृतिक और धार्मिक आयोजनों के प्रति दृष्टिकोण**

| पद प्रभाग/जनपद | समय का सदुपयोग | समय खराब | अपव्यय होना | सभी को लाभप्रद | व्यक्तिगत लाभप्रद |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | 28.76 | 24.86 | 24.59 | 19.08 | 16.8 |
| महिला | | | | | |
| पुरूष | 32.77 | 30.33 | 35.51 | 29.74 | 17.07 |
| योग: | 30.64 | 27.42 | 29.71 | 24.07 | 16.92 |
| जालौन | 29.0 | 11.75 | 9.75 | 13.75 | 15.75 |
| झांसी | 14.5 | 7.5 | 4.5 | 9.0 | 6.5 |
| बांदा | 38.5 | 28.0 | 27.5 | 28.0 | 22.0 |
| ललितपुर | 15.0 | 31.5 | 46.5 | 00.00 | 00.00 |
| हमीरपुर | 44.25 | 50.75 | 55.0 | 51.25 | 29.25 |

निष्कर्ष इस प्रकार है : -

अ) न्यूनतम महिलायें ( पुरूषों के अपेक्षा कम प्रतिशत में ) सांस्कृतिक और धार्मिक आयोजनों के व्यक्तिगत रूप से लाभ प्रद मानती हैं। सार्वजनिक लाभ और उपयोगिता को स्वीकारने की स्थिति भी बहुत उत्साहजनक नहीं है।

ब) इन आयोजनों पर अपव्यय ही होता है" ऐसा दृष्टिकोण प्रमुखता से उभर कर आया है।

स) झांसी जनपद की प्रतिक्रिया अन्य बिन्दुओं की भांति इस बिन्दु पर भी सीमित ही हैं।

द) प्रतीत होता है कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों और धार्मिक आयोजनों के प्रति अधिकांश प्रौढ़ों का दृष्टिकोण नकारात्मक है। वे इन्हें एक सीमा तक समय का दुरूपयोग मानते हैं।

8. प्रौढ़ों द्वारा प्रौद्योगिक संचार माध्यमों की जानकारी और उनके उपयोग का आंकलन वैयक्तिक खण्ड के पद 8 द्वारा किया गया है। विश्लेषण निम्नवत हैं : -

तालिका — 4.13

**प्राथौगिक संचार माध्यमों का उपयोग**

| पद प्रभाग/ जनपद | रेडियो के सही स्टेशन | टेलिविजन कार्यक्रम पढ़ लेना | देश-विदेश के समाचार सुनने में रूचि | मौसम की जानकारी | परिवार नियोजन की जानकारी लेना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 31.18 | 25.13 | 30.77 | 34.67 | 43.0 |
| पुरूष | 47.1 | 45.57 | 47.71 | 50.76 | 42.98 |
| **योग:** | **38.64** | **34.85** | **38.71** | **42.21** | **43.0** |
| जालौन | 29.25 | 22.25 | 21.25 | 24.0 | 35.5 |
| झांसी | 13.5 | 22.0 | 13.5 | 27.5 | 31.0 |
| बांदा | 81.5 | 80.5 | 79.0 | 81.0 | 81.0 |
| ललितपुर | 44.5 | 00.0 | 34.50 | 35.0 | 46.50 |
| हमीरपुर | 36.5 | 48.0 | 50.75 | 52.0 | 35.75 |

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि : -

अ) संचार माध्यमों से परिवार नियोजन की सूचना और लाभ प्रौढ़ केन्द्रों के प्रौढ़ों का मुख्य आकर्षण है। महिलाओं की सर्वाधिक रूचि इन कार्यक्रमों के प्रति है अतएव इससे परिवार नियोजन कार्यक्रमों सम्बन्धी महत्व और उपादेयता प्रकट होती है। हमीरपुर जनपद के प्रौढ़ों ने इन कार्यक्रमों में कम रूचि प्रकट की है।

ब) प्रौढ़ पुरूषों का सर्वाधिक उपयोगी कार्यक्रम मौसम सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करना है । प्रभाग का मुख्य व्यवसाय कृषि होने के कारण यह स्वाभाविक ही है।

स) एक बड़ी संख्या में प्रौढ़ संचार माध्यमों के रख रखाव और प्रयोग से परिचित हैं। टेलीविजन का प्रयोग कम ही किया जाता है, सम्भवतः ये सीमित संख्या में ही उपलब्ध हों।

द) देश-विदेश के समाचारों को सुनने में भी प्रौढ़ पर्याप्त रूचि रखते हैं।

9. डाक-तार विभाग सम्बन्धी ज्ञान . दत्त पद 9 के माध्यम से एकत्र किये गये हैं। जिनका विश्लेषण तालिका 4.14 में प्रस्तुत हैं : -

**तालिका - 4-14**

**डाक-तार विभाग सम्बन्धी दृष्टिकोण**

| पद प्रभाग/ जनपद | दूसरों से पढ़वाना | अंगूठा लगाना | स्वयं पढ़ लेना | वापस कर देना | तार, मनीआर्डर नोटिस के अंतर का ज्ञान |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 24.59 | 22.71 | 28.36 | 15.99 | 30.51 |
| पुरूष | 45.12 | 42.07 | 45.88 | 40.09 | 40.54 |
| **योग:** | **34.21** | **31.78** | **36.57** | **27.28** | **35.21** |
| जालौन | 16.5 | 10.75 | 26.5 | 8.5 | 19.0 |
| झांसी | 12.5 | 2.0 | 6.5 | 00.60 | 10.5 |
| बांदा | 78.0 | 78.5 | 78.0 | 75.5 | 79.5 |
| ललितपुर | 34.0 | 18.5 | 3.0 | 0.50 | 45.5 |
| हमीरपुर | 41.0 | 51.0 | 57.75 | 49.0 | 37.0 |

तालिका से संकेत मिलते हैं कि : -

अ) अधिकांश संख्या में महिला और पुरूष प्रौढ़ पत्रों को स्वयं पढ़ लेने में सक्षम हैं और वे तार, मनीआर्डर तथा नोटिस के अन्तर से अनभिज्ञ है। ललितपुर के प्रौढ़ों की स्वयं पढ़ लेने की क्षमता सीमित है। हमीरपुर के प्रौढ़ विभिन्न प्रकार के डाक सम्बन्धी पत्राजात से अपेक्षाकृत कम परिचित हैं।

ब) डाक द्वारा पंजीकृत पत्रों को पुरूष, महिलाओं की अपेक्षा अधिक संख्या में वापस कर देते हैं। बांदा और हमीरपुर के प्रौढ़ों का प्रतिक्रिया प्रतिशत इस पद पर अधिक है ।

स) आज भी एक बड़ी संख्या में प्रौढ़ पत्रों के समझने में दूसरों का सहारा लेते हैं, तथा पत्र प्राप्ति की स्वीकृति अंगूठा लगाकर करते हैं।

10. घरेलू समस्याओं के निदान के लिये प्रौढ़ों द्वारा अपनाये जाने वाले उपायों की जानकारी दसवें पद के माध्यम से एकत्र की गई है। प्रदत्त पदों का विश्लेषण तालिका में है : -

तालिका - 4.15

घरेलू समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण

| पद प्रभाग/ जनपद | अशिक्षित होने के के कारण ठीक से समझा न पाना | घबड़ा जाना | दूसरों की सहायता लेना | घर के लोगों से सलाह लेना | स्वयं निर्णय लेना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 24.59 | 28.76 | 28.76 | 35.75 | 27.68 |
| पुरूष | 46.34 | 53.96 | 53.81 | 51.06 | 39.03 |
| **योग** | **34.78** | **40.57** | 40.5 | **42.92** | **33.0** |
| जालौन | 17.0 | 16.5 | 15.75 | 17.25 | 26.5 |
| झांसी | 12.0 | 12.5 | 12.0 | 13.0 | 10.0 |
| बांदा | 76.5 | 76.5 | 77.5 | 78.0 | 78.0 |
| ललितपुर | 50.0 | 50.0 | 50.5 | 67.5 | 27.0 |
| हमीरपुर | 35.5 | 56.0 | 56.0 | 53.75 | 31.0 |

उपर्युक्त तालिका इस बात का प्रमाण है कि : -

अ) लगभग दो तिहाई (67%) प्रौढ़ कोई भी परिवारिक समस्या उत्पन्न हो जाने पर स्वयं निर्णय लेने और उपाय खोजने से कतराते हैं। वे मुख्यत: निदान हेतु पारिवारिक सदस्यों से सलाह मशविरा करके समाधान सम्बन्धी उपाय खोजते हैं ।

ब) प्रौढ़ पुरूष अपेक्षाकृत अधिक संख्या में परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त अन्य लोगों से भी परामर्श लेते हैं ।

स) कोई भी समस्या आ जाने पर महिलाओं की अपेक्षा पुरूष ज्यादा घबरा जाते हैं। वे अधिक संख्यामें समस्या के सवरूप को समझने में भी असमर्थ रहते हैं ।

11. प्रौढ़ों की विवाह प्रथाओं के प्रति धारणा का मूल्यांकन सर्वेक्षण प्रपत्र आंकड़ों का अंकन तालिका में प्रस्तुत है : -

**तालिका - 4.16**

**वैवाहिक दृष्टिकोण**

| पद प्रभाग/ जनपद | 18 वर्ष से पूर्व उचित | बाल विवाह उचित | विधवा विवाह उचित | विवाह ईश्वर आधारित | वैवाहिक नियमों की जानकारी |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 20.56 | 20.98 | 26.74 | 20.69 | 24.32 |
| पुरूष | 37.19 | 41.92 | 45.12 | 42.07 | 37.34 |
| **योग :** | **28.35** | **30.78** | **35.35** | **30.71** | **30.42** |
| जालौन | 18.5 | 11.75 | 16.0 | 14.0 | 15.25 |
| झांसी | 00.00 | 14.5 | 21.0 | 7.0 | 15.5 |
| बांदा | 76.5 | 78.5 | 80.5 | 76.0 | 82.0 |
| ललितपुर | 00.00 | 00.00 | 12.0 | 3.5 | 11.5 |
| हमीरपुर | 42.5 | 54.5 | 51.0 | 50.25 | 36.75 |

तालिका से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं : -

अ) किसी स्त्री के वैधव्यता के प्रति प्रौढ़ों का दृष्टिकोण उदार है, जो स्वागत योग्य है। सर्वाधिक महिलाओं और पुरूषों ने विधवा को उचित माना है।

ब) विवाह सम्बन्धी नियमों की जानकारी प्रौढ़ों का प्रतिशत सीमित है। 30.4% व्यक्ति ही इन नियमों से परिचित हैं। बांदा जनपद के प्रौढ़ों का यह प्रतिशत सर्वाधिक 82% रहा है।

स) बाल विवाह का आज भी प्रचलन है और लगभग 1/3 प्रौढ़ बाल विवाह के पक्ष में हैं। लगभग इसी प्रतिशत में प्रौढ़ विवाह को ईश्वर की इच्छा पर निर्भर होना मानते हैं। ललितपुर जनपद के प्रौढ़ों की यह संख्या शून्य अथवा नगण्य है जो उनके व्यावहारिक दृष्टिकोण का परिचायक हैं।

द) ग्रामों सम्बन्धी नियमों की प्रौढ़ों द्वारा जानकारी सर्वेक्षण प्रपत्र में वैयक्तिक खण्ड के अंतिम पद द्वारा ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। प्राप्त दत्त निम्नलिखित तालिका में अंकित हैं : -

**तालिका - 4.17**

**ग्रामीण नियमों सम्बन्धी जानकारी**

| पद प्रभाग/ जनपद | दहेज सम्बन्धी | मताधिकार | अपृश्यता सम्बन्धी | न्यूनतम मजदूरी | भूमि सम्बन्धी |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 17.2 | 34.27 | 25.0 | 26.88 | 25.8 |
| पुरूष | 35.21 | 45.12 | 48.47 | 46.95 | 39.03 |
| **योग** | **25.64** | **39.35** | **36.0** | **36.28** | **32.0** |
| जालौन | 11.0 | 22.75 | 20.5 | 20.75 | 20.25 |
| झांसी | 5.0 | 16.5 | 11.5 | 11.0 | 3.0 |
| बांदा | 80.0 | 81.0 | 83.0 | 82.5 | 82.0 |
| ललितपुर | 3.0 | 37.5 | 12.5 | 12.0 | 11.5 |
| हमीरपुर | 34.75 | 47.5 | 52.0 | 53.5 | 43.5 |

तालिका से स्पष्ट है कि : -

अ) दहेज सम्बन्धी नियमों की जानकारी प्रौढ़ों (महिला और पुरूष) में न्यूनतम है। यही स्थिति जनपद अनुसार विश्लेषण (झांसी के अतिरिक्त) उभरती है।

ब) मताधिकार अस्पृश्यता और न्यूनतम मजदूरी, सम्बन्धित नियमों की जानकारी अपेक्षाकृत अच्छी है। लगभग आधे पुरूष प्रौढ़ और लगभग 30% महिलायें इन नियमों को जानती और समझती हैं। कहा जा सकता है कि पुरूष महिलाओं की अपेक्षा इस सम्बन्ध में अधिक जागरूक हैं।

स) भूमि सम्बन्धी नियमों की जानकारी सीमित संख्या (32%) में होना आश्चर्यजनक तो है, जिसका लाभ भूमि पति और सम्पन्न किसान वर्ग उठा रहा होगा ।

## सारांश

सर्वेक्षण प्रपत्र के वैयक्तिक खण्ड के अंतर्गत निहित 12 बिन्दुओं से निम्नलिखित बातें उभर कर आई हैं : -

1. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र प्रौढ़ों को शिक्षित अथवा व्यावहारिक जानकारी कराने में महत्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं। लगभग 85% प्रौढ़ प्रतिभागी कुछ पढ़ सकने और संख्या ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम हो सके हैं ।

2. धन के विनिमय में भी प्रौढ़ों के सज्ञान (दक्षता) में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है ।

3. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र प्रौढ़ों में शिक्षा के महत्व के भाव विकसित करने में सक्षम रहे हैं। आज के प्रौढ़ बालकों के लिये शिक्षा की आवश्यकता को महत्वपूर्ण समझने लगे हैं। महिलाओं का दृष्टिकोण इस विषय में अधिक सकारात्मक है ।

4. जहां तक घरेलू सामान अथवा कृषि उपकरणों का क्रय या पारिवारिक समस्या के निदान के लिये विचार विनिमय की बात है, अधिकांश प्रौढ़ पारिवारिक सदस्यों की सलाह लेने की वरीयता देते हैं।

5. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र प्रौढ़ों को स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक करने में योगदान करते भी प्रतीत होते हैं। महिलायें अपेक्षाकृत अधिक संख्या में जागरूक हुई हैं। वे निदान हेतु चिकित्सक से रोग के कारणों और उपचार में परामर्श लेती हैं।

6. कृषि उपकरणों के क्रय और उपयोगिता में कृषि विशेषज्ञों का उतना सहयोग और परामर्श नहीं लिया जा रहा है जितना अपेक्षित है। सम्भवत: ऐसा कृषि विशेषज्ञों की सहज उपलब्धता न होने के

कारण है । कृषि उपकरणों की खरीद में प्रौढ़ उपकरण की उपयोगिता और दूसरों के अनुकरण को स्थान देते हैं।

7. सांस्कृतिक कार्यक्रमों और धार्मिक आयोजनों के प्रति प्रौढ़ों का दृष्टिकोण नकारात्मक रहा है। वे इन आयोजनों को **"अपव्यय"** की संज्ञा देते हैं। इस दृष्टिकोण को बदलने में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को अभी अपनी योगदान विधा में परिवर्तन करना अपेक्षित है।

8. प्रौद्योगिक संचार माध्यमों की जानकारी और उपयोग को आज अधिक प्रौढ़ समझते हैं। संचार माध्यम उन्हें परिवार नियोजन और कल्याण के बारे में भलीभांति समझते प्रतीत हो रहे हैं। कृषि उपयोगी मौसम की जानकारी में भी उनकी रूचि है।

9. इसी प्रकार प्रौढ़ डाक-तार विभाग की कार्यप्रणाली से भी परिचित हो रहे हैं। फिर भी वे पत्रजात को भलीभांति समझने में दूसरों का सहारा लेते हैं।

पंजीकृत पत्रों को स्वीकार करने में प्रौढ़ पुरूषों के अपने पूर्वाग्रह हैं।

10. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र द्वारा विधवा विवाह की सकारात्मकता में उल्लेखनीय वृद्धि करना एक सुखद पहलू हैं।

विवाह सम्बन्धी नियमों की जानकारी उतनी संख्या में नहीं हो पाई है जितना कि अपेक्षित है। बाल विवाह बन्धन आज भी विधाता पर निर्भर माना जाता है।

11. मताधिकार, न्यूनतम मजदूरी नियमों के ज्ञान में, प्रौढ़ों में, उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। दहेज सम्बन्धी नियमों की जानकारी कम ही है।

खण्ड - 2

## सामाजिक

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में आने वाले प्रौढ़ों की सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन, परिष्कार और उन्नयन का अध्ययन करना सर्वेक्षण का दूसरा महत्वपूर्ण बिन्दु है। उनका सामाजिक कार्यक्रमों के प्रति दृष्टिकोण विकास कार्यक्रमों सहभागिता, सामाजिक पूर्वाग्रहों के प्रति बदलते दृष्टिकोण और सामाजिक आदान प्रदान आदि सम्बन्धी पदों के माध्यम से एकत्र सामग्री का विश्लेषण, निर्वचन और विवेचन किया गया है।

सामाजिक भाग के अंतर्गत प्रथम पद द्वारा प्रौढ़ों के सामाजिक मानसिकता विकास योजनाओं सम्बन्धी दृष्टिकोण की जानकारी विश्लेषण तालिका 4.18 में प्रस्तुत हैं : -

**तालिका 4-18**

**सामाजिक, विकास और योजनाओं के प्रति दृष्टिकोण**

| पद/ प्रभाग/ जनपद | निष्क्रिय | तत्परता से कार्य करना | दूसरों के अनुसार कार्य करना । | समझ न पाना | कुछ न करना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 19.75 | 34.67 | 22.98 | 24.46 | 16.12 |
| पुरूष | 22.25 | 34.14 | 32.75 | 34.75 | 24.54 |
| **योग:** | **20.92** | **34.42** | **27.57** | **29.28** | **20.71** |
| जालौन | 11.0 | 25.5 | 15.75 | 14.25 | 7.5 |
| झांसी | 12.0 | 23.5 | 17.5 | 12.5 | 1.0 |
| बांदा | 37.0 | 39.5 | 32.0 | 35.5 | 26.0 |
| ललितपुर | 32.5 | 36.5 | 35.5 | 38.5 | 0.50 |
| हमीरपुर | 21.5 | 45.25 | 38.25 | 46.5 | 49.0 |

तालिका के सहज निष्कर्ष निम्नवत हैं।

अ. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर उपस्थिति के कारण प्रौढ़ अधिक संख्या (34.42%) में सामाजिक विकास और योजनाओं के संचालन में काफी बदलाव आया है। पुरूषों और महिलाओं का इस दिशा में लगभग बराबर का प्रतिभाग है।

ब. एक सुखद बिन्दु यह उभर कर आया है कि कम ही प्रौढ़ इन कार्यक्रमों के प्रति विमुखता का भाव रखते हैं, और विकास कार्यक्रमों में अपना योगदान करते हैं। हमीरपुर जनपद के प्रौढ़ इसके अपवाद हैं, जो एक बड़ी संख्या में अपने योगदान से विमुख है। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के संज्ञान में यह बात लाई जानी अपेक्षित है जिससे वे इस ओर सक्रिय सहयोग कर सकें।

स. एक बड़ी संख्या में (27.57%) प्रौढ़ों के विकास कार्यक्रमों के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव अनुकरण के कारण भी है। पुरूषों की अपेक्षा कम महिलाओं के दृष्टिकोण का आधार अनुकरण रहा है।

द. लगभग 30% प्रौढ़ अशिक्षा के कारण इन कार्यक्रमों के महत्त्व और होने वाले लाभों को समझ नहीं पाये।

य. झांसी जनपद के प्रौढ़ों की प्रतिक्रियायें एक अंश तक सीमित रही हैं।

2. ग्राम्य विकास गोष्ठियों में प्रौढ़ों की सहभागिता की जानकारी सर्वेक्षण प्रपत्र के सामाजिक भाग के दूसरे पद के माध्यम से एकत्र की गई है। दत्त तालिका 4.19 में उदधृत हैं : –

## तालिका - 4.19

## विकास गोष्ठियों में सहभागिता

| पद प्रभाग/ जनपद | भाग लेना | विचारों का प्रस्तुतीकरण | सम्बद्ध साहित्य पढ़ना जानकारी रखना | सुझाव देना | बेकार समझाना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 40.86 | 32.52 | 26.74 | 26.47 | 20.02 |
| पुरूष | 47.25 | 46.03 | 46.18 | 42.68 | 32.16 |
| योग : | 43.85 | 38.85 | 35.85 | 34.07 | 25.71 |
| जालौन | 34.0 | 33.75 | 25.0 | 19.25 | 10.5 |
| झांसी | 17.5 | 14.0 | 14.0 | 8.0 | 11.0 |
| बांदा | 75.5 | 76.5 | 78.0 | 78.0 | 57.5 |
| ललितपुर | 36.0 | 00.00 | 00.00 | 35.5 | 34.5 |
| हमीरपुर | 55.0 | 55.5 | 53.0 | 39.25 | 28.0 |

उपर्युक्त तालिका से निम्नलिखित संकेत मिलते हैं : -

अ) खण्ड और ग्राम स्तरीय विकास गोष्ठियों में सर्वाधिक महिलायें और पुरूष प्रतिभाग लेते हैं।

ब) लगभग 40% व्यक्ति इन गोष्ठियों में अपने-अपने विचार भी प्रस्तुत करते हैं।एवं विकास सम्बन्धी जानकारी भी प्राप्त करते हैं। महिलाओं की संख्या अपेक्षाकृत कम है।

ललितपुर जनपद के प्रौढ़ों का प्रतिशत शून्य है। सम्भवतः ललितपुर जनपद के प्रौढ़ अपने विचार रखने में कुछ संकोच का अनुभव करते

हों। वे विकास सम्बन्धी साहित्य से अपनी जानकारी भी नहीं बढ़ा रहे हैं।

स) गोष्ठियों में विकास सम्बन्धी सुझाव प्रस्तुत करने में प्रौढ़ पुरूष महिलाओं से आगे हैं। लगभग एक तिहाई व्यक्ति ऐसा कर पाते हैं।

द) झांसी जनपद के प्रौढ़ों की प्रतिक्रियायें इस पद पर भी सीमित ही है।

3. समाज के दूसरे लोगों से सम्पर्क का संज्ञान तीसरे पद के माध्यम से किया गया है। विश्लेषण निम्न तालिका में दर्शाया गया है :-

**तालिका - 4.20**

**बाह्य समूहों से सम्पर्क**

| पद प्रभाग/ जनपद | निकट गांव के विकास कार्यों की जानकारी | अन्य जातियों से भाई चारा | छुआछुत से दूर रहना | अन्य जाति के समूहों के विवाह में योग | अपने आप में ही रहना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 25.4 | 29.7 | 22.44 | 25.26 | 20.56 |
| पुरूष | 28.35 | 36.43 | 29.74 | 30.64 | 20.12 |
| **योग:** | **26.78** | 32.85 | 25.85 | 27.92 | 20.35 |
| जालौन | 20.25 | 17.5 | 10.0 | 15.0 | 9.25 |
| झांसी | 17.0 | 16.0 | 7.5 | 12.0 | 11.5 |
| बांदा | 40.0 | 39.0 | 39.5 | 38.0 | 20.5 |
| ललितपुर | 15.5 | 31.5 | 4.5 | 13.5 | 19.5 |
| हमीरपुर | 37.25 | 54.25 | 54.75 | 51.0 | 36.25 |

तालिका 4.20 से निम्नलिखित तथ्य उभरते हैं : -

अ) अपनी से अन्य जाति के लोगों से सम्बन्ध रखने वाले प्रौढ़ों की सख्या सर्वाधिक है। पुरूष इस सम्बन्ध में महिलाओं की अपेक्षा अधिक उदार दृष्टिकोण रखते हैं लगभग सभी जनपद स्तर के आंकड़े भी इसी तथ्य की पुष्टि करते हैं।

ब) अपने आस पास के गांवों में हो रहे विकास कार्यों की जानकारी में भी लगभग एक चौथाई प्रौढ़ों ने रूचि प्रदर्शित की है।

स) अन्य जातियों के विवाह समारोह में भी सामान्य संख्या में प्रौढ़ प्रतिभाग करते हैं तथा छुआछुत के आडम्बरों से दूर रहते हैं।

ललितपुर जनपद छुआछूत के मामले में अपवाद है, जहां प्रौढ़ अब भी प्रचलित रूढ़ियों और परिपाटियों से बंधे हैं।

द) समाज से अलग थलग रहने की प्रवृत्ति न्यूनतम है। फिर भी 20% प्रौढ़ों को एकांकी जीवन प्रिय है।

य) जालौन, झांसी और ललितपुर जनपद के प्रौढ़ों की प्रतिक्रियायें इस पद पर सीमित हैं ।

4. सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक समारोहों के प्रति प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में आने वाले प्रौढ़ों के दृष्टिकोण में आये परिवर्तन का आंकलन सर्वेक्षण प्रपत्र के भाग 2 के चौथे पद से किया गया है। आंकड़े इस प्रकार हैं : -

## तालिका – 4.21

## सामाजिक, धार्मिक सांस्कृतिक आयोजनों सम्बन्धी दृष्टिकोण

| पद/ प्रभाग/ | भाग लेना | जीवन चरित्रों को पढ़ कर प्रेरणा लेना | धार्मिक पुस्तक पढ़ना | आयोजनों में स्त्रियों के भाग लेने का पक्ष लेना | आडम्बर समझना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 26.61 | 35.21 | 29.62 | 24.05 | 21.1 |
| पुरूष | 43.14 | 47.71 | 44.35 | 36.58 | 36.18 |
| **योग:** | **34.35** | **41.07** | **36.0** | **29.92** | **28.21** |
| जालौन | 23.5 | 22.75 | 23.75 | 19.5 | 11.5 |
| झांसी | 13.0 | 17.0 | 17.0 | 11.5 | 10.5 |
| बांदा | 81.5 | 80.0 | 79.0 | 52.5 | 70.5 |
| ललितपुर | 0.5 | 36.0 | 0.5 | 00.00 | 35.5 |
| हमीरपुर | 49.25 | 54.5 | 54.0 | 53.25 | 30.5 |

तालिका 4.21 से संकेत मिलते हैं कि

अ) विभिन्न समारोहों में लगभग एक तिहाई व्यक्ति प्रतिभाग करते हैं। महिलाओं की अपेक्षा पुरूष अधिक संख्या में भाग लेते हैं। ललितपुर जनपद के प्रतिभागी प्रौढ़ों की संख्या न्यूनतम है।

ब) 28% से कुछ अधिक प्रौढ़ इन आयोजनों को आडम्बर मानते हैं। महिलाओं का दृष्टिकोण आयोजनों के प्रति अधिक सकारात्मक है। ललितपुर जनपद के प्रौढ़ अधिक संख्या में सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों को आडम्बर मानते हैं।

स)　　धार्मिक पुस्तकों और जीवन चरित्रों को पढ़ कर प्रेरणा लेने की बात को प्रौढ़ों ने एक बड़ी संख्या में स्वीकार किया है।

द)　　इन समारोहों में स्त्रियों के समान रूप में प्रतिभागी होने की बात को लगभग 30% प्रौढ़ ही मान्यता देते प्रतीत होते हैं। ललितपुर, झांसी और जालौन जनपदों के प्रौढ़ स्त्रियों के भाग लेने को कम ही मान्यता देते हैं।

य)　　बांदा जनपद के आंकड़ों से ज्ञात होता है कि अधिकांश प्रौढ़ इन समारोहों में भाग लेते हुये भी इन्हें आडम्बर ही मानते हैं ।

5.　　प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर शिक्षा प्राप्त करते हुये विभिन्न मान्यताओं के प्रति दृष्टिकोण में आये परिवर्तन और जागरूकता का मूल्यांकन अगले पद 5 में किया गया है ।

**तालिका - 4.22**

**विभिन्न सुविधाओं के प्रति जागरूकता**

| पद<br>प्रभाग<br>जनपद | सीमित परिवार सम्बन्धी | प्रौढ़ शिक्षा की पुस्तकों के प्रति | स्त्री-पुरूष समान अधिकार के प्रति | विकास संगठनों के प्रति | रोचक ग्रामीण कार्यक्रमों के प्रति |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 56.18 | 45.29 | 47.17 | 45.83 | 54.16 |
| पुरूष | 50.76 | 54.42 | 55.03 | 55.06 | 50.6 |
| **योग:** | **53.64** | **49.57** | **50.85** | **50.42** | **52.5** |
| जालौन | 77.25 | 54.75 | 60.25 | 51.75 | 58.75 |
| झांसी | 36.5 | 27.5 | 42.0 | 36.5 | 44.0 |
| बांदा | 78.0 | 79.0 | 80.0 | 78.0 | 76.00 |
| ललितपुर | 30.0 | 16.5 | 1.0 | 28.5 | 62.0 |
| हमीरपुर | 38.25 | 57.25 | 56.25 | 53.25 | 34.0 |

तालिका से ज्ञात होता है कि : -

अ) सीमित परिवार और ग्रामीण कार्यक्रमों की रोचकता के प्रति प्रौढ़ों की जागरूकता उत्पन्न करने में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र सफल रहे हैं। महिलायें अपेक्षाकृत अधिक संख्या में इन कार्यक्रमों के प्रति उत्साही हैं। हमीरपुर जनपद के अतिरिक्त अन्य जनपदों के आंकड़े भी उपर्युक्त कथन की पुष्टि करते हैं।

ब) हमीरपुर जनपद के प्रौढ़ों ने प्रौढ़ शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकों, स्त्री, पुरूषों के समान अधिकार, विकास संगठनों के प्रति अधिक जागरूकता प्रदर्शित की है । ललितपुर जनपद के प्रौढ़ों के अतिरिक्त अन्य जनपदों के प्रौढ़ों ने भी इन विषयों में रूचि दिखाई है। ललितपुर जनपद के प्रौढ़ समान अधिकार और प्रौढ़ शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकों को नकारते प्रतीत होते हैं ।

6. प्रौढ़ों में ग्राम संचालित सामूहिक विकास कार्यक्रमों सम्बन्धी दृष्टिकोण के आंकड़े अगले पद द्वारा एकत्र किये गये हैं, जो प्रस्तुत तालिका में अंकित हैं :

## तालिका - 4.23

## ग्राम में संचालित विकास कार्यक्रमों के प्रति दृष्टिकोण

| पद प्रभाग/ जनपद | अपने कामों से ही मतलब | विकास कार्यक्रमों की मांग करना | कार्यक्रमों की जानकारी लेना | कृषि उद्योगों की जानकारी कार्यालय से प्राप्त करना | गोष्ठियों में प्रतिभागिता |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | 23.52 | 37.63 | 39.38 | 25.26 | 23.38 |
| महिला | | | | | |
| पुरूष | 41.92 | 46.03 | 45.57 | 45.27 | 36.58 |
| योग: | 32.14 | 41.57 | 42.28 | 34.64 | 29.57 |
| जालौन | 18.25 | 26.50 | 25.25 | 20.75 | 25.25 |
| झांसी | 7.0 | 19.0 | 22.5 | 12.5 | 16.0 |
| बांदा | 74.0 | 79.0 | 80.5 | 77.5 | 76.0 |
| ललितपुर | 19.0 | 46.5 | 47.0 | 11.5 | 11.5 |
| हमीरपुर | 44.25 | 46.75 | 47.75 | 49.75 | 28.5 |

उपर्युक्त तालिका का विश्लेषण निर्वचन और विवेचन इस प्रकार है : -

अ) ग्राम विकास गोष्ठियों में प्रतिभागी प्रौढ़ों की संख्या न्यूनतम है। फिर भी लगभग 30% प्रौढ़ गोष्ठियों में भाग लेते हैं। महिलाओं की प्रतिभागिता अपेक्षाकृत कम (23.38%) है। ललितपुर जनपद के प्रौढ़ों की संख्या (11.5%) न्यूनतम है।

ब) विकास कार्यक्रमों की जानकारी ब्लाक स्तरीय कार्यालय से प्राप्त करने वाले प्रौढ़ों की संख्या (42.28%) अधिकतम है। बांदा जनपद में यह संख्या 80% से भी अधिक है।

स) क्षेत्र में अधिक विकास कार्यक्रमों की मांग करने वाले प्रौढ़ों की संख्या (41.57%) अच्छी है। महिलाओं का यह प्रतिशत 37.63% रहा है। जबकि पुरूषों का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक 46.03% है।

द) क्षेत्र में हो रहे कृषि कार्यों और स्थापित उद्योग धंधों के प्रति जिज्ञासा 34.64% प्रौढ़ों ने ही व्यक्त की है। महिलाओं का प्रतिशत केवल 25.26% ही है।

य) जहां तक अपने कार्यों से ही मतलब रखने की बात है तो प्रौढ़ पुरूष महिलाओं की अपेक्षा अधिक संख्या में अपने कार्यों से सम्बन्ध रखते हैं। महिलायें अधिक संख्या में बर्हिमुखी प्रतीत होती है।

7. आप किन लोगों के बीच उठते बैठते हैं - इसकी जानकारी पद का मुख्य विषय है। प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण निर्वचन और विवेचन निम्नवत हैं : -

**तालिका 4.24**

**विभिन्न जाति समुदायों में उठने-बैठने का विवरण**

| पद /प्रभाग/ जनपद | सवर्ण वर्ग | पिछड़ जाति वर्ग | हरिजन समुदाय | कार्य सम्बन्धी वर्ग | रूचि सम्बन्धी |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 26.88 | 26.34 | 21.5 | 18.95 | 18.27 |
| पुरूष | 35.36 | 35.21 | 32.16 | 29.88 | 27.42 |
| **योग :** | **30.85** | **30.5** | **26.5** | **24.07** | **22.57** |
| जालौन | 23.5 | 15.25 | 14.75 | 13.75 | 12.75 |
| झांसी | 14.5 | 15.0 | 15.0 | 10.0 | 11.0 |
| बांदा | 40.5 | 39.0 | 41.0 | 43.0 | 44.0 |
| ललितपुर | 16.5 | 18.0 | 4.5 | 5.0 | 5.0 |
| हमीरपुर | 48.75 | 55.5 | 47.75 | 41.5 | 36.25 |

तालिका प्रमाणित करती है कि : -

अ) अधिकांश प्रौढ़ (पुरूष और महिला) सवर्ण और पिछड़ी जाति वर्गों में भेदभाव नहीं करते हैं। जालौन जनपद के प्रौढ़ मिलने जुलने में सवर्णों को वरीयता देते हैं।

ब) हरिजन वर्ग के लोगों से मिलने जुलने में पुरूष वर्ग महिलाओं की अपेक्षा कम भेदभाव करता है। ललितपुर जनपद अभी भी पूर्वाग्रहों से ग्रस्त है जहां केवल 4.5% प्रौढ़ ही हरिजन व्यक्तियों से मिलते जुलते हैं। वैसे भी ललितपुर जनपद के प्रौढ़ों की प्रतिक्रिया इस पद पर सीमित ही हैं।

स) कार्य पड़ने पर ही लोगों से (स्वार्थ वश) समान रूचि के व्यक्तियों से ही मिलने की बात को अपेक्षाकृत कम प्रौढ़ों से स्वीकारा है। महिलाओं की संख्या पुरूषों की अपेक्षा कम ही है। ललितपुर और झांसी जनपदों में इनकी संख्या तो और भी कम है।

8. कौन-कौन सी सामाजिक कुरीतियों को आप नापसन्द करते हैं - सर्वेक्षण प्रपत्र का अगला बिन्दु है। प्राप्त प्रतिक्रियायें अगली. तालिका में प्रस्तुत है : -

**तालिका 4.25**

**सामाजिक कुरीतियों की नापसन्दगी**

| पद प्रभाग/ जनपद | स्त्री अशिक्षा | पर्दा प्रथा | दहेज प्रथा | धार्मिक आडम्बर | अंधविश्वास |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 42.6 | 33.06 | 30.37 | 30.24 | 35.21 |
| पुरूष | 41.76 | 44.05 | 43.9 | 45.12 | 42.68 |
| **योग :** | **42.21** | **38.21** | **36.71** | **37.21** | **38.71** |
| जालौन | 35.0 | 26.5 | 20.0 | 22.25 | 23.0 |
| झांसी | 26.5 | 22.5 | 24.5 | 26.0 | 28.0 |
| बांदा | 76.0 | 72.0 | 75.0 | 76.0 | 77.5 |
| ललितपुर | 52.0 | 18.0 | 17.0 | 17.5 | 51.0 |
| हमीरपुर | 35.5 | 51.0 | 50.25 | 48.25 | 36.75 |

आंकड़े का विवेचन निम्नवत हैं : -

अ) प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र पर आने वाले प्रौढ़ों की सामाजिक कुरीतियों को नकारने की संख्या लगभग 40% है। स्त्री शिक्षा के पक्ष में महिलाओं की संख्या पुरूषों से अधिक है। शेष कुरीतियों के नकारने में पुरूषों की संख्या अधिक है ।

ब) बांदा जनपद के प्रौढ़ सामाजिक कुरीतियों को नकारने में अधिक अग्रगामी है।

स) पर्दा प्रथा दहेज प्रथा और धार्मिक आडम्बरों को ललितपुर, झांसी और जालौन के प्रौढ़ों ने कम संख्या में नकारा है ।

9. सामाजिक समारोहों और पूजा, स्थलों सम्बन्धी दृष्टिकोण का सर्वेक्षण सामाजिक भाग के नवें पद द्वारा किया गया है। प्राप्त दत्त निम्न तालिका में अंकित हैं ।

**तालिका - 4.26**

**सामाजिक समारोहों, धार्मिक स्थलों के प्रति दृष्टिकोण**

| पद प्रभाग/ जनपद | स्वयं न जाना | उच्च वर्ग के लोगों हेतु | व्यक्ति विशेष हेतु | सभी जाति यों हेतु | पुजारियों हेतु |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 18.14 | 19.88 | 18.81 | 35.48 | 15.99 |
| पुरूष | 39.03 | 40.09 | 41.31 | 48.78 | 33.38 |
| **योग:** | **27.92** | **28.92** | **29.35** | **41.71** | **24.14** |
| जालौन | 14.75 | 12.05 | 12.25 | 23.5 | 12.0 |
| झांसी | 7.0 | 3.5 | 3.5 | 17.5 | 3.5 |
| बांदा | 75.5 | 76.0 | 75.5 | 75.01 | 77.5 |
| ललितपुर | 0.5 | 0.5 | 0.5 | 60.0 | 1.0 |
| हमीरपुर | 41.5 | 48.75 | 50.75 | 46.25 | 31.5 |

तालिका के विवेचन से ज्ञात होता है कि : -

अ) सर्वाधिक प्रौढ़ (41.71%) सामाजिक समारोहों और धार्मिक स्थलों को सार्वजनिक रूप में लेते हैं। वे इन्हें व्यक्ति विशेष के लिये नहीं मानते हैं ।

ब) इन समारोहों में स्वयं न भाग लेने धार्मिक स्थलों को उच्चवर्ग या व्यक्ति विशेष, के लिये मानने वाले पुरूषों की संख्या, महिलाओं की अपेक्षा, अधिक है। सम्भवतः कुछ पुरूषों ने बिना सोचे समझे प्रतिक्रिया दी है, अन्यथा ऐसे दृष्टिकोण के लिये अन्य कोई कारण नहीं है।

स) झांसी और ललितपुर के प्रौढ़ों की प्रतिक्रियायें सीमित रही हैं।

10 किसी अन्य जाति के लोगों पर संकट आने पर प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में आने वाले प्रौढ़ों की प्रतिक्रिया अगला सर्वेक्षण बिन्दु है। विश्लेषण निम्नतालिका में प्रस्तुत है : -

**तालिका - 4.27**

**दूसरी जाति के व्यक्ति के संकट ग्रस्त होने पर प्रतिक्रिया**

| पद प्रभाग/ जनपद | स्वयं जाना | उसी जाति के लोगों का जाना | किसी का न जाना | विशिष्ट व्यक्तियों का ही जाना | अपनी जाति को लोगों को जाने से मना करना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 31.72 | 21.5 | 19.89 | 19.22 | 17.87 |
| पुरूष | 40.71 | 40.54 | 40.24 | 40.24 | 32.62 |
| **योग:** | **35.92** | **30.42** | **29.42** | **29.07** | **24.78** |
| जालौन | 26.25 | 13.5 | 12.0 | 11.5 | 17.75 |
| झांसी | 10.5 | 00.00 | 1.0 | 1.5 | 1.5 |
| बांदा | 77.5 | 78.0 | 76.5 | 77.5 | 77.0 |
| ललितपुर | 28.5 | 2.5 | 1.0 | 4.0 | 0.5 |
| हमीरपुर | 41.25 | 52.75 | 51.75 | 48.75 | 30.0 |

तालिका से संकेत मिलते हैं कि : -

अ) सर्वाधिक प्रौढ़ (35.92) विभिन्न जाति के व्यक्तियों को संकट में देखकर सान्त्वना हेतु स्वयं उनके यहां जाना उपयुक्त समझते हैं। कहा जा सकता है कि जातिगत पूर्वाग्रह धीरे-धीरे टूट रहे हैं ।

ब) महिलाओं की प्रतिक्रिया पुरूषों की अपेक्षा कम अवश्य है परन्तु वे भी सर्वाधिक संख्या में यही उपयुक्त समझती हैं।

स) सम्पूर्ण न्यादर्श में उसी जाति के लोगों को आना चाहिए" किसी को नहीं जाना चाहिए" विशिष्ट लोगों को ही जाना चाहिए" - अपनी जाति को लोगों को रोकना चाहिए"- प्रौढ़ों की प्रतिक्रिया सामान्य संख्या में प्राप्त हुई है, फिर भी जालौन, झांसी और ललितपुर जनपदों की प्रतिक्रियायें वास्तविकता के अधिक निकट हैं, जिनकी नकारात्मक प्रतिक्रियायें कम हैं।

द) बांदा तथा हमीरपुर जनपद के प्रौढ़ों ने सभी उपपदों पर समान प्रतिक्रियायें दी हैं, सम्भवतः वे ठीक से समझ नहीं सके ।

य) झांसी और ललितपुर के प्रौढ़ों की प्रतिक्रियायें सीमित संख्या में प्राप्त हुई हैं।

11. सर्वेक्षण अनुसूची के सामाजिक भाग के अंतर्गत ग्यारहवें पद में संयुक्त परिवार के प्रति प्रौढ़ों के मत प्राप्त किये गये हैं। प्राप्त आंकड़ों का विवरण इस प्रकार हैं : -

## तालिका - 4.28

## परिवार सम्बन्धी दृष्टिकोण

| पद/ प्रभाग जनपद | संयुक्त परिवार के पक्ष में | एकांकी परिवार के | संयुक्त सम्पत्ति के पक्षधार | संयुक्तता से सुरक्षा | पुत्र वधुओं की शिक्षा के पक्ष धर |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 25.94 | 22.31 | 24.59 | 26.07 | 30.64 |
| पुरूष | 39.49 | 44.97 | 44.2 | 47.25 | 42.22 |
| **योग:** | **32.28** | **32.92** | **33.78** | **36.0** | **36.07** |
| जालौन | 21.25 | 19.25 | 14.25 | 16.5 | 23.5 |
| झांसी | 8.5 | 16.0 | 9.0 | 18.5 | 13.5 |
| बांदा | 74.0 | 75.5 | 79.5 | 77.5 | 78.0 |
| ललितपुर | 19.5 | 1.5 | 19.0 | 19.5 | 45.0 |
| हमीरपुर | 40.75 | 49.5 | 50.25 | 51.75 | 34.5 |

उपर्युक्त तालिका से निम्नलिखित तथ्य उभरते हैं ।

अ) महिला शिक्षा के प्रति विशेष रूप से पुत्र वधुओं के सन्दर्भ में सर्वाधिक प्रौढ़ (महिला और पुरूष) के पक्षधर हैं। पुरूषों की सकारात्मक प्रतिक्रिया का प्रतिशत (42.22%) महिलाओं की अपेक्षा (30.64%) अधिक है। ललितपुर जनपद के प्रौढ़ों की प्रतिक्रिया (45.0%) इस उप पद पर अन्य उपपदों की तुलना में विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

ब) संयुक्त परिवार और एकांकी परिवार पर प्रतिक्रियायें लगभग समान हैं। सम्भवतः दोनों प्रकार के परिवारों के अपने-अपने गुण और दोष होने के कारण ग्रामीण अंचलों के प्रौढ़ एक मत होने में सक्षम नहीं हैं ।

स) संयुक्त परिवार सुरक्षा की दृष्टि से अधिक उपयोगी होते हैं। इस मत को कुछ अधिक प्रौढो (36.0%) ने स्वीकारा है।

12. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में अध्ययन हेतु आने वाले प्रौढ़ों में विवाह सम्बन्धी दृष्टिकोण में आये परिवर्तन का आकलन सामाजिक भाग का अंतिम पद है। आंकड़ों का विश्लेषण नीचे की तालिका में अंकित है : -

**तालिका - 4.29**

**विवाह सम्बन्धी दृष्टिकोण**

| पद प्रभाग/ जनपद | स्थानीय विवाहके पक्षधार | उपजाति विवाह के पक्षधार | 21 वर्ष में पुत्र के विवाह पक्षधार | 18 वर्ष में पुत्री के विवाहके पक्षधार | दहेज रहित विवाहके पक्षधार |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 22.71 | 39.38 | 37.9 | 28.76 | 43.54 |
| पुरूष | 36.89 | 47.71 | 49.55 | 44.51 | 44.2 |
| **योग:** | **29.35** | **43.28** | **43.35** | **36.14** | **43.85** |
| जालौन | 16.25 | 25.75 | 20.5 | 18.75 | 28.75 |
| झांसी | 16.0 | 21.0 | 32.0 | 31.0 | 30.0 |
| बांदा | 77.5 | 79.0 | 80.5 | 81.5 | 78.0 |
| ललितपुर | 1.5 | 49.0 | 40.0 | 6.5 | 78.5 |
| हमीरपुर | 39.0 | 51.25 | 54.5 | 48.25 | 31.5 |

तालिका के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं : -

अ) स्थानीय विवाह की बात को न्यूनतम प्रौढ़ महत्त्व देते हैं। महिलाओं और पुरूषों ने समान रूप से न्यूनतम संख्या में इस पद में मत व्यक्त किया है। यद्यपि कम ही महिलायें स्थानीय विवाह को महत्त्व देती प्रतीत होती हैं। ललितपुर जनपद के प्रौढ़ों का प्रतिशत न्यूनतम हैं ।

ब) अधिकांश प्रौढ़ विवाह सम्बन्ध अपनी ही उपजाति में करना पसन्द करते हैं। ललितपुर जनपद के प्रौढ़ों का यह प्रतिशत उल्लेखनीय है।

स) नियमानुसार विवाह योग्य आयु में ही प्रौढ़ अपने पुत्र और पुत्री के विवाह के पक्षधर हैं। ललितपुर जनपद के प्रौढ़ पुत्री का विवाह इससे कम आयु में भी कर देने में संकोच नहीं करते।

द) अधिकांश प्रौढ़ों ने विवाह सम्बन्धों में दहेज की आवश्यकता को नकारा है।

## सारांश

सर्वेक्षण अनुसूची द्वारा प्रौढ़ों के सामाजिक दृष्टिकोण में आये परिवर्तनों के सम्बन्ध में संक्षेप में कहा जा सकता है कि : -

1. ग्रामीण अंचलों के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के प्रौढ़ों में विकास कार्यक्रमों के प्रति चेतना जागृत हो रही है। वे अन्य विकास कार्यक्रमों के महत्त्व को केवल समझते ही नहीं वरन् प्रतिभाग भी करते हैं।

   ब्लाक स्तरीय विकास गोष्ठियों में अपना-अपना प्रतिभाग, विचार और सुझाव भी प्रस्तुत करते हैं। इस परिवर्तन का आधार मुख्य रूप से शिक्षित होने के अतिरिक्त एक सीमा तक अनुकरण भी है।

2. सामाजिक सम्बन्धों में उदारीकरण आया है। जातिगत पूर्वाग्रह समाप्त हो रहे हैं। छुआछूत में भी क्रमशः कम होने का संकेत स्पष्ट है।

   फिर भी वे वैवाहिक सम्बन्ध अपनी ही जाति अथवा उपजाति में करने को वरीयता देते हैं। सामाजिक समारोहों में प्रतिभागिता के प्रति उदार दृष्टिकोण है।

3. धार्मिक जंजीरे धीरे-धीरे टूट रही हैं। धार्मिक क्रियाकलापों और समारोहों को आज अधिक संख्या में प्रौढ़ आडम्बर मानते हैं।

4. प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से प्रौढ़ों के सीमित परिवार के पक्ष मे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलता है। समान अधिकार और विकास संगठनों की उपयोगिता सम्बन्धी चेतना जागृत हुई है।

5. सामाजिक कुरीतियों और उनका प्रभाव सम्बन्धी चेतना भी प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से प्रौढ़ों की प्रतिक्रियाओं में परिलक्षित हुई हैं ।

6. ये प्रौढ़ दूसरी जाति के लोगों को भी संकट में पाकर उनकी पहिले से अधिक सहायता के प्रति अग्रसर होते हैं।

7. संयुक्त अथवा एकांकी परिवार में से किसका चयन श्रेयष्कर होगा, इस बारे में प्रौढ़ों ने कोई स्पष्ट मत व्यक्त नहीं किया है। फिर भी अधिकांश प्रौढ़ संयुक्तता को सुरक्षा का एक बड़ा सिम्बल मानते हैं।

खण्ड - 3

## आर्थिक

प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन सर्वेक्षण अनुसूची का तीसरा भाग प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में अध्ययन के लिये आने वाले प्रौढ़ों के आर्थिक दृष्टिकोण, आय वृद्धि के स्त्रोतों की जानकारी आदि से सम्बन्धित है। इस भाग में भी आर्थिक पहलू सम्बन्धित विभिन्न बारह पद सम्मिलित किये गये हैं। प्रौढ़ शिक्षा से उनके आर्थिक दृष्किोण की जानकारी और चेतना में आये परिवर्तन ही अध्ययन का मुख्य लक्ष्य हैं। पदवार प्रतिक्रियाओं का गणनात्मक और गुणात्मक विश्लेषण और विवेचन नीचे दिया गया है।

1. आर्थिक पक्ष का पहला पद प्रौढ़ों की अपनी आमदनी बढ़ाने की सोच के विषय में है। प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण तालिका में प्रस्तुत है।

**तालिका - 4.30**

**आय वृद्धि के प्रति दृष्टिकोण**

| पद<br>प्रभाग/<br>जनपद | कृषि के नये उपकरणों के प्रयोग द्वारा | रासायनिक खाद के उपयोग का ज्ञान | आधुनिक कृषि द्वारा | पशु-पालन और हस्त कौशल द्वारा | सरकारी योजनाओं की जानकारी |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 41.53 | 40.99 | 45.83 | 43.41 | 50.67 |
| पुरूष | 43.9 | 52.74 | 54.87 | 60.06 | 63.11 |
| **योग:** | **42.64** | **46.53** | **50.07** | **51.21** | **56.5** |
| जालौन | 34.5 | 37.0 | 39.0 | 39.75 | 44.5 |
| झांसी | 39.0 | 35.5 | 42.0 | 35.5 | 43.0 |
| बांदा | 76.5 | 80.0 | 81.0 | 80.5 | 80.0 |
| ललितपुर | 82.5 | 37.5 | 65.0 | 66.5 | 80.5 |
| हमीरपुर | 15.75 | 49.25 | 42.25 | 48.25 | 51.5 |

तालिका से संकेत मिलता है कि : -

अ) अधिकांश प्रौढ़ो का आय वृद्धि के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है। वे आधुनिक तरीकों का उपयोग कर आय वृद्धि का प्रयास करते हैं। महिलाओं और पुरूषों का इस दिशा में समान ही दृष्टिकोण है। यद्यपि महिलाओं की संख्या अपेक्षाकृत कम है।

हमीरपुर जनपद के प्रौढ़ अवश्य ही कृषि के आधुनिक उपकरणों का कम प्रयोग करते हैं।

ब) सर्वाधिक प्रौढ़, कृषि के अतिरिक्त आय वृद्धि हेतु पशु पालन हस्त कौशलों सम्बन्धी कार्यों को करते हैं। इस ओर पुरूष प्रौढ (60.06%) प्रौढ़ महिलाओं की अपेक्षा (43.41%) अधिक प्रयास रत हैं।

स) ग्रामीण अंचलों के लिये विकास और आर्थिक उन्नति की शासकीय योजनाओं के प्रति उनकी जानकारी और चेतना सर्वाधिक (56.5%) प्रौढ़ों (महिलाओं और पुरूषों) समान रूप से हैं।

2. पारिवारिक वस्तुओं के सही रख रखाव उपयोगी वस्तु परन्तु सस्ती वस्तुओं का क्रय करना और जोखिम बीमा की जानकारी का आंकलन द्वितीय पद द्वारा किया गया है। ब्यौरा निम्नवत हैं : -

## तालिका - 4.31

## घर की वस्तुओं सम्बन्धी जानकारी

| पद प्रभाग/ जनपद | मकान के लिये ऋण स्त्रोतों की जानकारी | सस्ते समान मिलने के स्थान का ज्ञान | सही रखरखाव आधुनिक ज्ञान | कृषि बीमा योजना की जानकारी | पशु बीमा की जानकारी |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 36.15 | 38.84 | 33.73 | 37.36 | 28.62 |
| पुरूष | 43.29 | 52.89 | 49.4 | 51.67 | 42.07 |
| योग: | 39.5 | 45.42 | 40.07 | 44.07 | 34.92 |
| जालौन | 29.5 | 26.25 | 26.25 | 23.75 | 19.25 |
| झांसी | 22.0 | 21.0 | 11.0 | 25.0 | 20.5 |
| बांदा | 80.5 | 79.0 | 80.0 | 81.0 | 80.0 |
| ललितपुर | 37.5 | 52.5 | 45.5 | 48.0 | 43.5 |
| हमीरपुर | 38.75 | 56.5 | 49.0 | 53.5 | 31.0 |

विभिन्न उपपदों पर प्राप्त आंकड़ों में अत्याधिक अन्तर तो नहीं है फिर भी कहा जा सकता है कि : -

अ) पशु बीमा योजना की जानकारी अपेक्षाकृत कम प्रौढ़ों को है। और महिलाओं को यह जानकारी और कम है। विभिन्न जनपदों के आंकड़े भी इसकी पुष्टि करते हैं।

ब) मकान बनाने के लिये ऋण आंवटित करने वाली संस्थानों की जानकारी भी कुछ कम तो है, परन्तु फिर भी लगभग 40% प्रौढ़ों को इन संस्थानों का ज्ञान है।

स) कृषि बीमा योजना, सस्ते घरेलू सामान क्रय के स्थानों और सामान के सही उपयोग सम्बन्धी जानकारी में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के अध्ययन से 40% से 45% प्रौढ़ों के ज्ञान में वृद्धि हुई है।

झांसी जनपद के प्रौढ़ों के सामान के सही उपयोग और रख रखाव से कम ही, केवल 11% प्रौढ़, लाभान्वित हुये हैं।

3. आर्थिक आय वृद्धि के लिये विभिन्न व्यवसायों की जानकारी और पसन्द का विवरण तृतीय पद द्वारा एकत्र किया गया है। जो तालिका 4.32 में उदघृत है : -

**तालिका 4.32**

**आर्थिक आय वृद्धि हेतु व्यवसाय की पसन्द**

| पद प्रभाग/ जनपद | पैतृक व्यवसाय | नौकरी | बड़ी और प्रतिष्ठित जगहों पर | साधारण छोटी बड़ी | कुटीर उद्योग |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 19.75 | 36.15 | 32.52 | 23.52 | 27.82 |
| पुरूष | 35.06 | 49.40 | 49.65 | 43.14 | 37.34 |
| योग: | 29.92 | 42.35 | 39.71 | 32.31 | 32.28 |
| जालौन | 16.0 | 25.75 | 22.0 | 16.75 | 25.0 |
| झांसी | 4.0 | 14.5 | 11.0 | 00.00 | 11.0 |
| बांदा | 82.0 | 84.5 | 83.0 | 81.5 | 81.0 |
| ललितपुर | 15.0 | 48.5 | 36.0 | 15.5 | 31.5 |
| हमीरपुर | 27.75 | 48.75 | 50.5 | 49.25 | 26.25 |

उपर्युक्त तालिका के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गये हैं : -

अ) ग्रामीण अंचलों के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में आने वाले सर्वाधिक प्रौढ़ बड़े और प्रतिष्ठित स्थानों पर कोई कार्य या नौकरी अपनी आय वृद्धि का स्त्रोत मानते हैं महिलाओं की धारणा भी इसी के अनुरूप है यद्यपि उनका प्रतिशत पुरूषों की अपेक्षाकृत कम है। जनपदीय आंकड़े इस कथन की पुष्टि कर रहे हैं।

ब) प्रौढ़ों द्वारा कुटीर उद्योग धन्धों को आय वृद्धि का द्वितीय कारक (साधन के रूप में) माना गया है।

स) साधारण खेतीबाड़ी और पैतृक व्यवसाय से आय में वृद्धि सम्भव है, ऐसी धारणा कम ही प्रौढ़ों की है, यद्यपि हमीरपुर के प्रौढ़ साधारण खेती बाड़ी में भी संतुष्टि अनुभव करते हैं।

द) बांदा जनपद के आंकड़े सभी उपपदों पर लगभग समान रूप से अधिक होने के कारण भ्रमाक माने जा सकता है।

4. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर अध्ययन हेतु आने के पश्चात् प्रौढ़ों के आर्थिक दृष्टिकोण में आये परिवर्तन और जागरूकता का मूल्यांकन अगले पद का विषय है। प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण तालिका – में प्रस्तुत है।

## तालिका - 4.33

## अपनी आर्थिक दशा में आये परिवर्तन के प्रति दृष्टिकोण

| पद प्रभाग/ जनपद | आमदनी कम होने के कारणों का ज्ञान | आमदनी बढ़ने के उपायों का ज्ञान | बढ़ने की विधियों का ज्ञान | यथास्थिति में संतोष | कोई बदलाव नहीं |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 24.73 | 26.61 | 33.33 | 19.62 | 20.9 |
| पुरूष | 45.57 | 47.71 | 47.25 | 41.76 | 41.92 |
| **योग:** | **34.5** | **36.5** | **39.83** | **30.0** | **31.28** |
| जालौन | 21.0 | 18.25 | 20.75 | 11.5 | 14.0 |
| झांसी | 29.5 | 11.5 | 12.0 | 00.00 | 7.5 |
| बांदा | 79.5 | 80.5 | 80.00 | 79.0 | 77.5 |
| ललितपुर | 20.5 | 17.0 | 35.0 | 0.5 | 35.0 |
| हमीरपुर | 40.0 | 55.0 | 55.25 | 53.75 | 35.5 |

उपर्युक्त तालिका का विवेचन निम्नवत है : -

अ) कहा जा सकता है कि अधिकांश प्रौढ़, प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र पर आने के पश्चात अपनी वर्तमान आर्थिक स्थिति से सन्तुष्ट नहीं है। आर्थिक स्थिति में परिवर्तन की चाह और चेतना उनमें जागृत हुई है। इस उप पद पर प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत न्यूनतम है। महिलायें पुरूषों की अपेक्षा अधिक असन्तुष्ट और जागरूक है। और आर्थिक-स्थिति में बदलाव की कामना करती है। झांसी और ललितपुर के तो सभी प्रौढ़ बदलाव चाहते हैं। बांदा और हमीरपुर के प्रौढ़ों में सम्भवत: उतनी जागरूकता नहीं आई है।

ब) लगभग यही स्थिति - आमदनी ज्यों की त्यों उप पद पर रही लगभग 70% प्रौढ़ों ने अपनी आर्थिक स्थिति में बदलाव आने का संकेत दिया है। पुरूष महिलाओं की अपेक्षा इस बदलाव को कम महसूस करते हैं।

स) प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की एक बड़ी उपलब्धता यह रही है। कि लगभग 40% प्रौढ़ों में पढ़ाई के पश्चात आर्थिक उन्नति के विधियों की चेतना आई है। पुरूष प्रौढ़ों में आई इस चेतना का प्रतिशत 47.25% महिलाओं के प्रतिशत ( 33.33%) से अधिक है। हमीरपुर, ललितपुर और बांदा जनपद के प्रौढ़ अपेक्षाकृत अधिक लाभान्वित हुये हैं।

द) शेष अन्य दो उपपदों आमदनी कम होने के कारणों और उसे बढ़ाने के उपायों की जानकारी पर भी बिन्दु (ii) के निष्कर्ष लागू होते हैं। प्रौढ़ों ने स्वीकार किया है कि प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के अध्ययन से उनकी इन चेतनाओं में वृद्धि हुई है।

5. मासिक अथवा वार्षिक आय में वृद्धि के लिये किये गये प्रयासों की आंकलन सम्बन्धी सूचना . तालिका में अंकित हैं : -

तालिका - 4 34
मासिक वार्षिक आय वृद्धि क उपाय

| पद प्रभाग/ जनपद | कुटीर उद्योग | नई विधि से कृषि | पुराने ढंग से खेती | अन्य धंधे | कुछ नहीं करना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 41.34 | 39.51 | 20.16 | 40.99 | 15.45 |
| पुरूष | 48.21 | 57.16 | 43.14 | 56.40 | 32.01 |
| **योग:** | **44.57** | **47.78** | **30.92** | **48.21** | **23.21** |
| जालौन | 39.0 | 34.0 | 15.0 | 24.75 | 10.5 |
| झांसी | 16.5 | 27.0 | 00.00 | 24.5 | 00.00 |
| बांदा | 79.5 | 80.5 | 78.0 | 80.0 | 77.5 |
| ललितपुर | 69.0 | 47.0 | 1.0 | 79.50 | 1.5 |
| हमीरपुर | 34.5 | 56.0 | 53.75 | 52.0 | 31.25 |

तालिक के अध्ययन से ज्ञात होता है कि : -

अ) प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में अध्ययन करने वाले प्रौढ़ों में आय वृद्धि सम्बन्धी दृष्टिकोण में सुखद परिवर्तन और चेतना आयी है। वे आय वृद्धि के लिये कृषि के अतिरिक्त कुटीर उद्योग अथवा अन्य धंधों की ओर उन्मुख हुए हैं। सर्वाधिक प्रौढ़ अपने स्थायी व्यवसाय के अतिरिक्त अन्य उद्योग धंधों के माध्यम से आय बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं। नई और वैज्ञानिक विधि से कृषि क्रिया को भी प्रौढ़ोंने आय वृद्धि का साधन (एक कारक) व्यक्त किया है। यद्यपि महिलाओं की इस सम्बन्धा में अभिव्यक्ति पुरूषों की अपेक्षा कम तो है परन्तु अपने वर्ग में इन पदों पर सर्वाधिक है। जनपदों से प्राप्त आंकड़े

भी इस बात की पुष्टि प्रमाणित कर रहे हैं।

ब) यह भी उल्लेखनीय है कि एक बड़ी संख्या में प्रौढ़ों ने पुराने ढंग से खेती के माध्यम से आय मे वृद्धि संभव है- कथन को नकारा है। यद्यपि हमीरपुर और बांदा जनपदों का प्रतिशत अपेक्षा से कुछ अधिक तो है, फिर भी उपर्युक्त निष्कर्ष (एक) से कम ही है।

स) अधिकांश प्रौढ़ यह कल्पना ही नहीं करते कि कुछ न करके, निष्क्रिय रहकर भी आय वृद्धि सम्भव है। झांसी और ललितपुर में प्रौढ़ों की ऐसी धारणा रखने वालों की संख्या लगभग शून्य है।

6. अपने उत्पादनों के विक्रय माध्यम सम्बन्धी दृष्टिकोण को जानने का प्रयास सर्वेक्षण प्रपत्र के अगले पद द्वारा किया गया है। प्राप्त प्रतिक्रियायें तालिका में अंकित है : -

**तालिका - 4.35**
**उत्पादन विक्रय सम्बन्धी दृष्टिकोण**

| पद प्रभाग/ जनपद | गांव में ही बेचना | सहकारी समितियां को बेचना | बाहर बेचना | अधिक दाम पर बेचने में उपाय करना | कुछ न सोचना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 18.41 | 26.47 | 40.99 | 35.08 | 18.41 |
| पुरूष | 40.39 | 45.73 | 46.95 | 47.1 | 38.1 |
| **योग:** | **28.71** | **35.5** | **43.78** | **40.71** | **27.64** |
| जालौन | 12.5 | 24.0 | 32.5 | 39.0 | 11.25 |
| झांसी | 0.00 | 17.5 | 21.0 | 22.0 | 20.0 |
| बांदा | 80.0 | 81.5 | 80.0 | 80.5 | 77.5 |
| ललितपुर | 18.0 | 3.5 | 43.5 | 33.5 | 21.0 |
| हमीरपुर | 39.0 | 49.0 | 48.5 | 45.5 | 35.25 |

तालिका से स्पष्ट है कि : -

अ) अधिकांश प्रौढ़ पुरूष और महिलाओं अपने कृषि और उद्योग धंधों के उत्पादनों को अधिक से अधिक मूल्य पर ग्राम से बाहर बेचने को वरीयता देते हैं। जनपदों से प्राप्त अभिव्यक्तियाँ भी कथन को प्रमाणित करती हैं। बांदा जनपद के प्रौढ़ों की अभिव्यक्तियां अधिकांश उपपदों पर लगभग समान होने से उनके विषय में कुछ कहना सम्भव नहीं है।

ब) सहकारी समितियों को अपने उत्पादन बेचने को भी प्रौढ़ सामान्य रूप से तैयार हो जाते हैं; यद्यपि महिलायें इस पक्ष में कुछ कम हैं। ललितपुर के प्रौढ़ सहकारी समितियों को उत्पादन बेचने के पक्ष में नहीं है।

स) ग्राम के व्यापारियों को अपने अपने उत्पादन बेचने को वरीयता क्रम इसके पश्चात आता है। झांसी जनपद के प्रौढ़ ग्राम में ही विक्रय करना पसन्द नहीं करते ।

द) उत्पादन बेचने के बारे में कोई योजना न बनाने वाले प्रौढ़ों की संख्या न्यूनतम है जो प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र की शिक्षा से आयी सुखद चेतना का प्रतीक है ।

7. आप अपना समय किन कार्यों में व्यतीत करते हैं । यह जिज्ञासा सर्वेक्षण पत्र के आर्थिक भाग के अगले बिन्दु में की गयी है। प्राप्त दत्तों का विश्लेषण तालिका में प्रस्तुत हैं ।

**तालिका - 4.36**

**समय व्यतीत करने वाले कार्य**

| पद प्रभाग/ जनपद | कृषि कार्य | गपशप | बेकार बैठना | कुटीर उद्योग धंधे | नौकरी |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 24.32 | 17.87 | 16.66 | 28.36 | 18.81 |
| पुरूष | 42.22 | 42.37 | 41.0 | 44.35 | 33.38 |
| **योग:** | **32.71** | **29.35** | **28.07** | **35.85** | **25.64** |
| जालौन | 16.5 | 10.00 | 8.5 | 15.25 | 10.75 |
| झांसी | 8.5 | 5.0 | 1.5 | 14.0 | 10.5 |
| बांदा | 80.5 | 80.5 | 79.5 | 79.5 | 77.5 |
| ललितपुर | 29.5 | 1.0 | 1.5 | 33.0 | 12.5 |
| हमीरपुर | 38.75 | 52.75 | 52.5 | 52.25 | 31.25 |

तालिका के विवेचन से ज्ञात होता है कि : -

अ) सर्वाधिक प्रौढ़ (महिलायें और पुरूष) कुटीर उद्योग और कृषि कार्यों में अपना समय व्यतीत करते हैं। जनपदीय आंकड़े भी उपर्युक्त कथन की पुष्टि करते हैं। झांसी जनपद के प्रौढ़ कम संख्या में ही कृषि कार्यों में समय लगाते हैं। यहाँ उनका प्रतिशत केवल 8.5 ही रहा है।

ब) न्यूनतक संख्या (25.64%) में प्रौढ़ नौकरी सम्बन्धी कार्यों में संलग्न हो, अपना समय व्यतीत करते हैं। बांदा और ललितपुर

जनपदों के प्रौढ़ अच्छी संख्या में सेवा कार्यों में समय लगाते हैं।

स) दूसरों के साथ गपशप और खाली अनुत्पादक कार्यों के माध्यम से समय काटने वाले प्रौढ़ पुरूषों की एक बड़ी संख्या है। महिलायें अपेक्षाकृत उद्देश्यपूर्ण कार्यों में संलग्न रहती हैं। झांसी और ललितपुर जनपदों में यह संख्या न्यूनतम है ।

8. प्रपत्र के अगले पद एक सीमा तक पूर्व पदों के और स और य में साम्य है जो आय बढ़ाने के प्रयासों के विषय में है। प्राप्त आंकड़ों का विवरण निम्नलिखित तालिका में उदघृत है : -

**तालिका - 4.37**

**आय वृद्धि के प्रयास माध्यम**

| पद प्रभाग/ जनपद | कारीगरी | मजदूरी नौकरी | सघान वैज्ञानिक कृषि | कुटीर उद्योग | व्यापार |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 25.13 | 35.48 | 37.76 | 24.32 | 16.66 |
| पुरूष | 38.26 | 47.85 | 46.79 | 45.57 | 32.62 |
| **योग:** | **31.28** | **41.28** | **42.0** | **34.28** | **24.21** |
| जालौन | 18.0 | 16.0 | 26.25 | 17.0 | 9.75 |
| झांसी | 8.5 | 8.5 | 9.5 | 4.0 | 4.5 |
| बांदा | 80.0 | 80.5 | 77.5 | 79.5 | 78.0 |
| ललितपुर | 18.0 | 63.5 | 46.0 | 17.5 | 3 .0 |
| हमीरपुर | 38.25 | 52.75 | 52.5 | 52.25 | 31.25 |

तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि : -

अ) प्रौढ़ पुरूष और महिलायें पारिवारिक आय वृद्धि के लिये एक से अधिक माध्यमों को अपनाते हैं। कृषि प्रधान होने के कारण वैज्ञानिक कृषि प्रथम और स्वाभाविक माध्यम है। द्वितीय माध्यम मजदूरी है। दूसरों के कार्य करके वे अपनी आय में वृद्धि करते हैं। यही स्थिति जनपदीय विश्लेषण से भी उभरती है।

ब) व्यापार से आय में वृद्धि करने वालों का मण्डलीय और जनपदीय प्रतिशत न्यूनतम है। केवल बांदा और हमीरपुर के प्रौढ़ कुछ अधिक संख्या में व्यापार को आय वृद्धि का माध्यम बनाते हैं। सम्भवतः आर्थिक सीमायें उन्हें व्यापारोन्मुखी न होने का बाधित करती है। महिलाओं का प्रतिशत (16.66) बहुत ही कम है।

स) कारीगरी और कुटीर उद्योग धंधे अपनाकर पारिवारिक बढ़ोत्तरी एक अच्छी संख्या में करते हैं। बांदा और हमीरपुर जनपदों में यह संख्या उल्लेखनीय है।

९. सर्वेक्षण का अगला बिन्दु भी पिछले पद के समान तो हैं, परन्तु उप-पदों में आय वृद्धि के अन्य उपायों को जानने का प्रयास किया गया है। उप-पदों सहित आंकड़े प्रस्तुत हैं ।

**तालिका - 4.38**

**पारिवारिक आय वृद्धि के उपाय**

| पद प्रभाग/ जनपद | शहर जाकर कार्य सीखना | गांव में रह कर ही सीखाना | व्यावसायिक केन्द्रों से सीखाना | कहीं से न सीखाना | ईश्वर आधारित |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 32.39 | 35.54 | 32.93 | 24.46 | 22.17 |
| पुरूष | 44.51 | 52.11 | 49.4 | 48.62 | 38.56 |
| **योग:** | **38.07** | **42.78** | **40.64** | **38.78** | **29.85** |
| जालौन | 36.5 | 18.0 | 35.5 | 9.0 | 8.25 |
| झांसी | 18.5 | 23.0 | 29.5 | 7.0 | 7.5 |
| बांदा | 80.0 | 80.5 | 77.5 | 79.5 | 78.0 |
| ललितपुर | 11.0 | 50.5 | 5.0 | 35.5 | 33.5 |
| हमीरपुर | 42.0 | 54.75 | 50.75 | 55.25 | 36.75 |

तालिका के विश्लेषण से निम्नलिखित बिन्दु उभरते हैं : -

अ) अपने - अपने ग्रामों से बाहन निकलकर शहरों में जाकर आय वृद्धि के नये - नये कार्यों को सीखने का प्रयास सर्वाधिक प्रौढ़ों ने, तो नहीं, परन्तु एक बड़ी संख्या में करने की अभिव्यक्ति की है। महिलायें भी इस दिशा में बहुत पीछे नहीं है। जालौन जनपद में तो यह संख्या सर्वाधिक है कहा जा सकता है कि ग्रामीण अंचलों में आवागमन की वृद्धि हुई है । आज आय वृद्धि की लालसा में पैतृक निवास छोड़ने में बहुत संकोच नहीं है।

ब) फिर भी सर्वाधिक प्रौढ़ (42.78%) अपने ग्राम में रहकर ही नये नये कार्य (यदि सम्भव होतो) सीखने को वरीयता देते हैं। जालौन और झांसी के अतिरिक्त अन्य जनपदों के आंकड़े भी इसी के अनुरूप हैं।

स) व्यावसायिक केन्द्रों का लाभ भी एक बड़ी संख्या में प्रौढ़ उठा रहे प्रतीत होते हैं। झांसी इस दृष्टि से अग्रतम है। जबकि अन्य जनपद भी (ललितपुर के अतिरिक्त) प्रौढ़ों के नये-नये कार्य सीखने का उपयोगी माध्यम है। ललितपुर में यह संख्या न्यूनतम 5% प्रतिशत ही है।

द) कहीं से भी कुछ न सीख पाने और आय को ईश्वर आधारित मानकर आय वृद्धि का प्रयास न करने वालों की संख्या भी अच्छी खासी है। अतएव सक्रिय प्रयासों सम्बन्धी चेतना जागृत करने की दिशा में अभी भी बहुत कुछ करना शेष है। यह प्रसन्नता की बात है, कि दो जनपदों झांसी औन जालौन के आंकड़े इस कथन को नकार रहे हैं।

10. व्यक्तिगत आय वृद्धि से हटकर सार्वजनिक हित और ग्रामीण आय वृद्धि के लिये भी प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के प्रौढों के ' दृष्टिकोण में आये परिवर्तन को जानने का प्रयास किया गया है। आंकड़े तालिका में उदघृत है : -

तालिका - 4.39

**ग्राम की आर्थिक दशा के सुधारने के प्रयास**

| पद प्रभाग/ जनपद | चकबन्दी में रूचि | बैंक खुलवाने का प्रयास | बैंक खाते खुलवानेमें योगदान | उत्पादन को बाहर बेचने का प्रोत्साहन | ऋण समितियों की जानकारी |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 13.52 | 30.1 | 33.6 | 38.17 | 28.09 |
| पुरूष | 40.39 | 45.57 | 47.25 | 50.6 | 40.24 |
| **योग:** | **31.42** | **37.35** | **40.0** | **44.0** | **33.78** |
| जालौन | 23.25 | 24.5 | 20.0 | 30.75 | 26.75 |
| झांसी | 11.0 | 18.0 | 10.0 | 23.5 | 18.0 |
| बांदा | 83.5 | 81.5 | 82.5 | 81.0 | 80.5 |
| ललितपुर | 4.5 | 14.0 | 45.5 | 46.5 | 16.5 |
| हमीरपुर | 39.75 | 49.5 | 51.0 | 47.75 | 34.0 |

तालिका से स्पष्ट होता है कि : -

अ) ग्राम हित में प्रौढ़ महिलाओं की अपेक्षा प्रौढ़ पुरूष कहीं अधिक जागरूक हैं। ग्राम आर्थिक रूप में, अधिक आत्मनिर्भर हो, वे ऐसा प्रयास स्वयं तो करते ही हैं, साथ ही दूसरों में ऐसी चेतना जागृत करते हैं ।

ब) उनके सर्वाधिक योगदान- उत्पादन को लाभकारी मूल्य पर बाहर बेचना और बैंक खाते खुलवाने के क्षेत्र में हुआ है। झांसी जनपद के प्रौढ बैंक खाते खुलवाने के लिये दूसरों को उत्साहित करने में कम ही योगदान कर रहे हैं।

स) बैंकों द्वारा विकास में किये जा रहे योगदान और महत्व को दृष्टि में रखते हुये एक बड़ी संख्या में प्रौढ़ अपने ग्रामों में बैंक शाखायें खुलवाने का प्रयास करते प्रतीत होते हैं।

द) विकास कार्यों के लिये ऋण उपलब्ध कराने वाली समितियों की जानकारी को अधिक से अधिक लोगों को उपलब्ध कराने का प्रयास भी करते हैं।

य) चकबन्दी में रूचि लेने और दूसरों को इसकी जानकारी देने वाले प्रौढ़ों की संख्या न्यूनतम हैं। महिलायें तो इस दिशा में बहुत ही पीछे हैं, जो स्वाभाविक और तथ्य पर ही है, फिर भी झांसी और हमीरपुर के प्रौढ़, इस ओर कुछ अधिक रूचि ले रहे प्रतीत होते हैं।

11. सर्वेक्षण प्रपत्र के ग्यारहवां पद में जिज्ञासा की गयी है। -- "प्रौढ़ शिक्षा का प्रौढ़ों की आर्थिक दशा में सुधार का क्या योगदान रहा है?" विभिन्न उपपदों पर प्राप्त आंकड़ों का विवेचन इस प्रकार है।

## तालिका - 4.40

## आर्थिक दशा पर प्रभाव सम्बन्धी दृष्टिकोण

| पद प्रभाग/ जनपद | स्त्रियों की आर्थिक समृद्धि बढ़ाने में | स्वयं में आर्थिक उन्नयन में, | अर्थ सम्बन्धी नियमों की जानकारी में | नये उद्योगों के सम्पर्क में | कोई लाभ नहीं |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 31.72 | 40.45 | 24.86 | 30.51 | 25.80 |
| पुरूष | 48.21 | 55.03 | 51.23 | 53.20 | 43.29 |
| **योग:** | **39.42** | **47.28** | **37.21** | **41.14** | **34.00** |
| जालौन | 39.25 | 38.50 | 28.75 | 25.25 | 25.25 |
| झांसी | 25.50 | 29.50 | 11.00 | 19.00 | 09.50 |
| बांदा | 80.50 | 80.50 | 80.50 | 79.50 | 78.50 |
| ललितपुर | 13.50 | 43.00 | 13.00 | 46.00 | 30.50 |
| हमीरपुर | 43.50 | 54.50 | 50.00 | 42.50 | 31.25 |

अ) प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त प्रौढ़ों को सर्वाधिक लाभ स्वयं की आर्थिक दशा के सुधार के रूप में हुआ है। प्रौढ़ महिलाओं की संख्या पुरूषों से कम तो अवश्य है, परन्तु अपने वर्ग में सर्वाधिक लाभ उन्हें ही हुआ है। जनपदों के आंकड़े भी इसी के अनुरूप हैं।

ब) आर्थिक रूप से समृद्धि उद्यमियों के साथ भी सम्पर्क में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। ललितपुर में इस सम्पर्कों से लाभान्वित होने वालों की संख्या सर्वाधिक है।

स) अधिकांश प्रौढ़ पुरूषों और महिलाओं का मानना है कि प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है।

द) फिर भी लगभग एक तिहाई प्रौढ़ों ने मत व्यक्त किया है कि प्रौढ़ शिक्षा के उनकी आर्थिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। झांसी जनपद के प्रौढ़ों की यह संख्या 9.5% रही है, अर्थात झांसी जनपद के अधिकांश प्रौढ़ शिक्षा, उनकी आर्थिक स्थिति में उन्नति का, एक कारक रही है।

12. सर्वेक्षण के आर्थिक भाग का अंतिम बिन्दु "ऋण लेना उपयुक्त है अथवा नहीं," की जिज्ञासा करता है। प्राप्त आंकड़े निम्न तालिका में अंकित है : -

**तालिका - 4.41**

**कर्ज या ऋण लेने के प्रति दृष्टिकोण**

| पद<br>प्रभाग<br>जनपद | बुरी चीज | अच्छी बात | कर्ज लेकर व्यापार करना | कर्ज लेकर जुआ खेलना | कर्ज लेन देन दोनों खराब बातें |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 22.84 | 38.70 | 37.76 | 16.12 | 17.84 |
| पुरूष | 35.67 | 50.00 | 48.21 | 38.56 | 32.01 |
| **योग:** | **28.85** | **44.00** | **42.64** | **26.64** | **23.07** |
| जालौन | 12.00 | 25.00 | 26.50 | 8.25 | 7.25 |
| झांसी | 8.50 | 6.00 | 12.00 | 1.50 | 5.00 |
| बांदा | 80.50 | 80.00 | 83.50 | 80.50 | 79.00 |
| ललितपुर | 2.00 | 63.00 | 50.00 | 3.00 | 0.50 |
| हमीरपुर | 43.50 | 54.50 | 50.00 | 42.50 | 31.25 |

तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि : -

अ) ऋण लेने को सर्वाधिक प्रौढ़ बुरी बात नहीं मानते। ऋण लेकर व्यापर अथवा अन्य उत्पादन कार्यों, जिनसे आय में वृद्धि हो सके, अच्छी बात है। पुरूष और, महिलाओं की अभिव्यक्ति समान रूप से अपने 2 वर्ग में सर्वाधिक है। झांसी के अतिरिक्त (जहां प्रतिक्रियायें अत्यधिक सीमित संख्या में हैं) जनपदीय आंकड़े उपर्युक्त कथन की पुष्टि करते हैं ।

ब) लगभग एक चौथाई प्रौढ़ कर्ज लेने और देने, दोनों को ही अच्छा नहीं मानते। ललितपुर, जनपद के प्रौढ़ों का दृष्टिकोण इससे भिन्न है, जहां लगभग 2% प्रौढ़ों ने ही ऐसी अभिव्यक्ति दी है।

स) हां, कर्ज बुरे कार्यों, जैसे जुआ आदि में लगाना बुरा है, ऐसा मत एक चौथाई प्रौढ़ों से कुछ अधिक ने ही व्यक्त किया है।

द) कर्ज से, लेन देन में, पूरे बुंदेलखण्ड प्रभाग के लोगों ने बुरा समझते हैं। जनपद के अनुसार बांदा और हमीरपुर के लोग इसे अधिक बुरा समझते है, किन्तु ललितपुर, झांसी तथा जालौन के लोग कर्ज लेना अपेक्षाकृत कम बुरा समझते हैं, सम्भवतः ऐसा इसलिए है कि वह व्यापार एवं कमाने के उद्देश्य से कर्ज लेना अच्छा समझते होंगे।

## सारांश

आर्थिक सर्वेक्षण से जो बिन्दु उभर कर आये हैं, उनके आधार पर संक्षेप में कहा जा सकता है कि : -

1. प्रौढ़ों में अपनी आर्थिक दशा सुधारने की चेतना उत्पन्न हो रही है, वे परम्परागत तरीकों की अपेक्षा आधुनिक, वैज्ञानिक तरीकों से कृषि आय में वृद्धि के लिये जागरूक हैं।

2. उन्हें पूर्व की अपेक्षा उन राजकीय विकास योजनाओं की अच्छी जानकारी है जो उनकी आय वृद्धि में सहायक हैं।

3. वे कृषि के अतिरिक्त अन्य हस्त कौशल के कार्यों में भी रूचि रखते हैं। पशु बीमा, फसल बीमा की भी जानकारी रखते हैं ।

4. कृषि और हस्तकौशल कार्यों के साथ-साथ खाली समय में सेवा कार्य उनकी आय वृद्धि का एक साधन है। यद्यपि कम ही प्रौढ़ सेवा कार्य कर पाते हैं।

5. आय में आई क्रमिक वृद्धि और बदलाव को प्रौढ़ महसूस भी करतें हैं। प्रौढ़ शिक्षा के प्राप्ति के साथ आर्थिक दृष्टिकोण में आये बदलाव और जागरूकता प्रौढ़ शिक्षा की उपादयता के द्योतक हैं।

6. वे किसी क्षेत्र विशेष या स्थानीय बाजार की अपेक्षा दूर के शहरों में उत्पादनों को बेचने को वरीयता देते हैं, जहां उन्हें अधिक मूल्य मिल सके। इससे उनके आवागमन में वृद्धि हुई है।

7. आय वृद्धि के लिये एक बड़ी संख्या में प्रौढ़ कृषि के साथ अन्य स्त्रोतों (घरेलू कुटीर उद्योग, धंधों, मजदूरी, हस्तकौशल आदि) में संलग्न

होते हैं।

8. वाणिज्य-व्यापार को अपनाने की क्षमता उनमें कम है। सम्भवतः इसका कारण आर्थिक रूकावटें सीमित साधन और व्यापार कला की, उनमें कमी होना है।

9. व्यावसायिक केन्द्रों के सम्भावित लाभों के प्रति प्रौढ़ आज अधिक जागरूक हैं। उनमें इन केन्द्रों से नये नये कार्यों को सीखने और निपुणता प्राप्त करने की जागरूकता उत्पन्न हुई है।

10. प्रौढ़ों की मानसिकता का भी क्रमिक उदारीकरण हुआ है। वे स्वयं हित के साथ-साथ क्षेत्र के हित की बात सोचने लगे हैं। अंचल-विकास में उनके स्वयं अपने हित निहित हैं - ऐसी चेतना का विकास एक सुखद पहलू है।

11. वे आज विकास में, बैंकों और सहकारी और ऋण समितियों की उपयोगिता को समझने लगे हैं और प्रयास करते हैं कि उनके क्षेत्र में इनकी अधिक से अधिक शाखायें खुलें ।

12. विलासिता और अनुत्पादक कार्यों के लिये ऋण लेने को वे अच्छा नहीं समझते । उत्पादक और आय वृद्धि में सहायक साधनों के लिये ऋण लेने को बुरा भी नहीं मानते ।

## खण्ड - 4

## राजनैतिक

एक लम्बे समय तक की विदेशी दासता तो एक सीमा तक हमारी राजनैतिक आकांक्षाओं को जकड़े रखा है। निरक्षरता भी राजनैतिक अधिकारों की वंचना का एक कारक रही है। शिक्षा राजनैतिक चेतना का एक अनिवार्य और महत्वपूर्ण कारक है, इस तत्य को नकारा नहीं जा सकता। अशिक्षित व्यक्ति तो समाज और राष्ट्र द्वारा प्रदत्त अधिकारों, राजनैतिक प्रक्रियायों से अनभिज्ञ ही रहता है। उसका समाज और राष्ट्र केप्रति बहुत सीमित ही योगदान रहता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय देश में अशिक्षित व्यक्तियों का एक बड़ा भाग था। देशवासियों में सामाजिक और राजनैतिक चेतना का विकास हो, सामाजिक, राजनैतिक प्रक्रियाओं में वे प्रतिभागी बनें, उनमें राष्ट्रीयता और राष्ट्र सम्मान के भाव उत्पन्न हों, इस सब के लिये शिक्षा के महत्त्व को ध्यान में रखकर शैक्षिक सुविधाओं का विकास हुआ ।

जीविकोपार्जन में लगे प्रौढ़ों को शिक्षित करने के लिये प्रौढ़ शिक्षा का आरम्भ हुआ। बुन्देलखण्ड मंडल में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में अध्ययन कर रहे प्रौढ़ों की राजनैतिक मानसिकता का मूल्यांकन सर्वेक्षण प्रपत्र के चौथे भाग का मुख्य उद्देश्य रहा है। इस भाग के विभिन्न बारह पदों पर प्रौढ़ों की प्रतिक्रियाओं को संग्रह कर, उनकी राजनैतिक चेतना और जागरूकता को जानने का प्रयास किया गया है। प्राप्त दत्तों का विश्लेषण निर्वचन और विवेचनआगे के पृष्ठों पर दिया जा रहा है।

1. क्या प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के प्रौढ़ों को स्वतंत्रता की सही-सही अवधारणा है? सर्वेक्षण प्रपत्र का प्रथम महत्वपूर्ण बिन्दु है। वे उपपदों में दिये गये स्वतंत्रता के विभिन्न पक्षों में से किस पक्ष को स्वतंत्रता का पर्याय मानते हैं - इसका आंकलन प्राप्त प्रतिक्रियाओं द्वारा किया गया है। आंकड़ों का विवेचन इस प्रकार है : -

तालिका - 4.42

## स्वतंत्रता का सही अर्थ

| पद प्रभाग/ जनपद | मनमाने कार्य करना | निर्देशानुसार कार्य करना | अधिकार कर्तव्यों के अनुसार तर्कसंगत कार्य करना | सही-गलत समझना | गांव-देश के प्रति सोचना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 16.39 | 33.33 | 26.07 | 29.16 | 34.27 |
| पुरूष | 27.16 | 50.60 | 47.40 | 47.25 | 48.93 |
| **योग:** | **21.42** | **41.42** | **36.07** | **37.64** | **41.14** |
| जालौन | 11.50 | 29.75 | 18.50 | 18.50 | 24.00 |
| झांसी | 3.00 | 22.00 | 16.00 | 17.00 | 20.00 |
| बांदा | 82.50 | 82.50 | 82.50 | 80.00 | 80.00 |
| ललितपुर | 5.00 | 16.50 | 19.50 | 36.50 | 38.50 |
| हमीरपुर | 18.25 | 54.75 | 49.50 | 46.50 | 50.75 |

दत्तों के विश्लेषण से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं : -

अ) प्रौढ़ों में राजनैतिक चेतना का उतना विकास नहीं हुआ है, जितना सामाजिक और राजनैतिक अवधारणा के लिये आवश्यक है इसके विपरीत मानसिक दासता के संकेत उनकी अवधारणा में आज भी परिलक्षित होता है। लगभग आधे (सर्वाधिक) प्रौढ़ व्यक्ति राजकीय निर्देशों के पालन को ही स्वतंत्रता का पर्याय मानते हैं, उनकी राजनैतिक चेतना का जागृत करने की दिशा में आज भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। महिलाओं की प्रतिक्रियायें भी अन्यथा नहीं है।

केवल ललितपुर जनपद के प्रौढ़ों ने इस कथन को नकारा

है जो स्वतंत्रता को इससे भिन्न संदर्भ में लेते हैं।

ब) एक अच्छी संख्या में प्रौढ़ों ने अभिव्यक्ति दी है कि स्वतंत्रता को व्यक्तियों की गांव और देश के प्रति सोच और चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिये । महिलाओं और ललितपुर के प्रौढ़ों में यह भी प्रमुखता से उभरे हैं।

स) स्वतंत्रता को सही-गलत कार्यों में अन्तर समझने और अधिकार और कर्तव्यों की सीमाओं के अनुसार कार्य करने के अर्थ में समझने वाले प्रौढ़ों के संख्या भी पर्याप्त है। जनपदीय आंकड़े भी इन्हीं के अनुरूप हैं ।

द) सर्वेक्षण का एक सुखद बिन्दु यह रहा है कि न्यूनतम संख्या (21.42%) में प्रौढ़ों ने मनमाने ढंग से कार्य करने को स्वतंत्रता का पर्याय, अभिव्यक्त किया है।

झांसी और ललितपुर में स्वतंत्रता की ऐसी धारणा रखने वाले प्रौढ़ों की संख्या नगण्य है ।

य) बांदा जनपद के आंकड़े सभी उप-पदों पर लगभग समान होने के कारण कोई सार्थक संकेत करते प्रतीत नहीं हो रहे हैं।

2. राजनैतिक भाग के दूसरे पद द्वारा केन्द्रों के प्रौढ़ों के सामान्य ज्ञान- प्रमुख राजनीतिज्ञों और स्थानों के नाम का आंकलन किया गया है। प्राप्त दत्तों का विश्लेषण तालिका 4.43 में प्रस्तुत है : -

**तालिका 4.43**

**सामान्य ज्ञान की जानकारी**

| पद प्रभाग/ जनपद | वर्तमान प्रधानमंत्री | उ0प्र0 के वर्तमान मुख्यमंत्री | प्रमुख दैनिक समाचार पत्र हिन्दी | भारत की राजधानी | उ0प्र0 की राजधानी |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 38.01 | 40.72 | 33.33 | 27.28 | 24.73 |
| पुरूष | 46.03 | 55.18 | 50.00 | 45.12 | 39.03 |
| **योग:** | **41.78** | **47.50** | **41.14** | **35.64** | **31.42** |
| जालौन | 24.50 | 25.25 | 28.25 | 21.25 | 15.75 |
| झांसी | 21.00 | 19.50 | 11.50 | 10.50 | 8.50 |
| बांदा | 77.50 | 82.50 | 77.50 | 79.00 | 79.50 |
| ललितपुर | 38.50 | 52.50 | 28.00 | 7.50 | 20.50 |
| हमीरपुर | 53.25 | 63.75 | 57.25 | 55.00 | 40.00 |

उपर्युक्त सारणी से ज्ञात होता है कि : -

अ) सर्वाधिक प्रौढ़ों महिला और पुरूष को अपने प्रदेश के मुख्य मंत्री की नाम की जानकारी है। परन्तु प्रदेश की जानकारी न्यून (31.42%) प्रौढ़ों की है। झांसी जनपद के प्रौढ़ों की संख्या (8.51%) न्यूनतम है।

ब) देश के प्रधानमंत्री के नाम से भी काफी संख्या में प्रौढ (41.78%) परिचित हैं। महिलाओं की संख्या प्रदेश के मुख्य मंत्री के नाम से भिज्ञता से अधिक है। झांसी जनपद के प्रौढ़ों की यह संख्या सर्वाधिक है ।

स) प्रमुख हिन्दी दैनिक समाचार पत्र और भारतकी राजधानी के नाम से भी एक बड़ी संख्या में प्रौढ़ परिचित हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि लगभग 45% प्रौढ़ों को सामान्य ज्ञान की मोटी मोटी बातों की जानकारी है।

3. चुनाव प्रक्रिया में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के प्रौढ़ों के मतदान के आधार की जानकारी सर्वेक्षण प्रपत्र का अगला बिन्दु है। विभिन्न उपपदों पर प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण इस प्रकार हैं : -

**तालिका - 4.44**

**चुनाव सम्बन्धी जागरूकता (वोट देना)**

| पद प्रभाग/ जनपद | मुखिया के कहने पर | स्वयं निर्णय से | बिरादरी के कहने पर | धन मिलने पर | बेकार की बात |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 22.04 | 33.46 | 24.19 | 20.90 | 18.95 |
| पुरूष | 39.49 | 46.95 | 44.35 | 41.76 | 33.38 |
| **योग:** | **30.21** | **39.78** | **33.64** | **31.21** | **25.71** |
| जालौन | 18.75 | 25.25 | 16.50 | 13.75 | 11.25 |
| झांसी | 7.50 | 11.00 | 07.00 | 2.00 | 3.50 |
| बांदा | 79.50 | 80.00 | 81.50 | 82.00 | 81.50 |
| ललितपुर | 15.50 | 35.50 | 19.00 | 00.00 | 15.00 |
| हमीरपुर | 35.75 | 50.75 | 47.50 | 53.50 | 28.75 |

तालिका से स्पष्ट है कि : -

अ) सर्वाधिक प्रौढ़ (39.78%) स्वयं अपने निर्णय से उम्मीदवार के गुण दोष के आधार पर गुप्त मतदान करते हैं जो उनकी जागरूकता का द्योतक है। महिलाओं का प्रतिशत इस उप-पद पर अन्य उप-पदों की अपेक्षा पुरूषों से अधिक है। जनपदीय आंकड़े भी इस कथन की पुष्टि करते हैं।

ब) मतदान में बिरादरी के महत्त्व को भी एक बड़ी संख्या (33.64%) में स्वीकारा है। ग्राम प्रधान की राय भी एक सीमा तक किसी उम्मीदवार विशेष के पक्ष में मतदान का कारक प्रतीत होती है।

स) लगभग एक तिहाई प्रौढ़ धन प्राप्त कर मतदान करने में संकोच नहीं करते। हमीरपुर जनपद के प्रौढ़ों की संख्या (53.5%) अत्याधिक है जो उनकी राजनैतिक अपरिपक्वता की ओर संकेत करती है। ललितपुर जनपद का कोई भी प्रौढ़ धन के लालच में मतदान नहीं करता ।

द) लगभग एक चौथाई प्रौढ़ मतदान को बेकार की बात समझते हैं उनकी राय में मतदान से कोई लाभ नहीं होता, वरन् जनशक्ति और धन का अपव्यय है। ये प्रौढ़ राजनैतिक दृष्टि से अनभिज्ञ ही कहे जा सकते हैं ।

4. ग्राम और ब्लाक के प्रमुख पद नामों से परिचय उनकी निर्वाचन प्रक्रिया और मतदान के बारे में जानकारी से सम्बन्धित आंकड़े 4.45 तालिका में अंकित है : -

तालिका - 4.45

**गांव के पदाधिकारियों सम्बन्धी जानकारी**

| पद<br>प्रभाग/<br>जनपद | ब्लाक प्रमुख का नाम | ग्राम प्रधान को दूसरे के कहने से चुनना | स्वयं विवेक से, चुनना | पार्टी निर्देश, पर चुनना | चुनाव में भाग न लेना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 37.90 | 19.08 | 24.59 | 17.87 | 16.80 |
| पुरूष | 46.18 | 42.83 | 44.66 | 41.61 | 33.99 |
| **योग:** | **41.78** | **30.21** | **34.00** | **29.00** | **24.85** |
| जालौन | 35.25 | 17.50 | 20.25 | 11.00 | 12.75 |
| झांसी | 18.50 | 4.00 | 10.50 | 4.00 | 13.50 |
| बांदा | 82.00 | 81.50 | 81.00 | 81.50 | 81.50 |
| ललितपुर | 39.50 | 00.00 | 7.00 | 0.50 | 0.50 |
| हमीरपुर | 41.00 | 45.50 | 49.50 | 47.50 | 26.50 |

तालिका के आंकड़ों का विवेचन निम्नवत है : -

अ) सर्वाधिक प्रौढ़ (बुंदेलखण्ड प्रभाग और जनपदों के) अपने-अपने ब्लाक के प्रमुखों के नाम से भली भांति परिचित हैं।

ब) ग्राम निर्वाचन प्रक्रिया के आंकड़े सार्वजनिक निर्वाचन आंकड़ों के अनुरूप ही हैं। सर्वाधिक प्रौढ़ (34%) महिलायें और पुरूष स्वयं निर्णय के आधार पर मतदान करते हैं।

स) अन्य लोगों के कहने अथवा पार्टी विशेष के सदस्य होने के कारण पार्टी के निर्देशों के अनुसार मतदान करने वालों की संख्या भी पर्याप्त है। झांसी और ललितपुर के प्रौढ़ों की यह संख्या नगण्य है।

द) लगभग एक चौथाई प्रौढ़ (24.85%) चुनाव को निरर्थक मानते हैं।

5. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर अध्ययन करने वाले प्रौढ़ों की गांवों की, विकास योजना में रूचि, सहभागिता और योगदान सम्बन्धी एकत्र आंकड़ों का विश्लेषण निम्नवत हैं : -

**तालिका - 4.46**

**ग्राम विकास सम्बन्धी जानकारी और सहभागिता**

| पद प्रभाग/ जनपद | सरकारी अनुदान की जानकारी | गोष्ठियों में प्रतिभाग | धन अपव्यय की सूचना शासन को देना | विकास के बारे में फकारों से वार्ता | विकास के उपाय बताना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 34.67 | 37.06 | 29.02 | 23.64 | 40.05 |
| पुरूष | 46.52 | 51.98 | 49.71 | 46.18 | 42.83 |
| **योग:** | **40.28** | **43.71** | **38.71** | **34.21** | **41.35** |
| जालौन | 30.75 | 27.00 | 24.75 | 23.50 | 35.75 |
| झांसी | 17.00 | 10.50 | 9.50 | 12.00 | 19.00 |
| बांदा | 82.00 | 82.50 | 81.50 | 81.50 | 82.00 |
| ललितपुर | 33.50 | 58.50 | 34.50 | 19.00 | 46.50 |
| हमीरपुर | 44.00 | 50.25 | 48.00 | 40.00 | 35.25 |

तालिका से निम्नलिखित संकेत मिलते हैं : -

अ) सर्वाधिक प्रौढ (43.71%) ग्राम विकास के लिये गठित गोष्ठियों, समितियों की बैठकों में प्रतिभाग कर अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। प्रौढ़ पुरूषों की सहभागिता (51.98%) महिलाओं (37.06%) की अपेक्षा अधिक है। झांसी और जालौन जनपदों में यह संख्या अन्य उप पदों की अपेक्षा कुछ कम है।

ब) ग्रामीण विकास के तरीकों को इंगित करने सम्बन्धी उप-पद पर प्रौढ़ों की प्रतिक्रियाओं को दूसरा स्थान मिला है। इस उप-पद पर महिलाओं और पुरूषों की प्रतिक्रियायें लगभग समान हैं। महिलाओं का प्रतिशत इस उप-पद पर सर्वाधिक है जो विकास सम्बन्धी उपायों को निःसंकोच रूप से प्रस्तुत करती हैं। जालौन और झांसी जनपदों के प्रौढ़ों का प्रतिशत अन्य उपपदों की अपेक्षा अधिक है।

स) ग्राम विकास हेतु सरकारी अनुदानों के आवंटन की जानकारी भी एक अच्छी संख्या (90.28%) में प्रौढ़ रखते हैं।

द) 38.71% प्रौढ़ इस आवंटित धनराशि के सही उपयोग पर दृष्टि रखते हैं और धन के दुर्पयोग न होने देने के प्रति सचेष्ट रहते हैं। वे इस धन के सही कार्यों में उपयोग न होने और प्रशासन द्वारा अपव्यय करने पर शासन को शिकायत करने में भी संकोच नहीं करते हमीरपुर, जनपद के प्रौढ़ इस ओर कुछ अधिक संख्या में सतर्क हैं जबकि झांसी जनपद के प्रौढ़ों की यह संख्या न्यूनतम है।

य) विकास प्रकरणों पर पत्रकारों से वार्ता और जानकारी देने सम्बन्धी उप-पद पर प्रौढ़ों की संख्या सबसे कम तो है फिर भी एक तिहाई प्रौढ़ सूचना माध्यमों से वार्ता करते हैं ललितपुर और जालौन जिलों के प्रौढ़ों की यह संख्या न्यूनतम है।

6. ग्रामों के सही दिशा में विकास के लिये प्रौढ़ों द्वारा अपनाये जाने वाले तरीकों की जानकारी सर्वेक्षण प्रपत्र राजनैतिक भाग के छठें पद के माध्यम से एकत्र की गई है। जिसका विवरण नीचे अंकित है।

**तालिका - 4.47**

**ग्राम के विकास के लिये विधियों के अपनाने के प्रति दृष्टिकोण**

| पद प्रभाग/ जनपद | सही मत दान द्वारा, | जनमत तैयार कर | राजनैतिक दलों के सक्रिय योग-दान द्वारा | अधिकारियों, से तर्क संगत जवाबद्वारा | निष्क्रिय |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड : | | | | | |
| महिला | 38.44 | 26.47 | 29.30 | 31.31 | 20.83 |
| पुरूष | 47.10 | 47.25 | 47.25 | 44.35 | 37.52 |
| **योग:** | **42.50** | **36.21** | **37.71** | **37.42** | **28.64** |
| जालौन | 40.00 | 22.25 | 18.50 | 26.25 | 10.25 |
| झांसी | 22.00 | 13.50 | 8.00 | 6.00 | 2.00 |
| बांदा | 81.50 | 81.50 | 81.00 | 80.00 | 78.50 |
| ललितपुर | 28.00 | 3.00 | 32.50 | 34.00 | 39.50 |
| हमीरपुर | 43.00 | 55.50 | 52.75 | 44.75 | 30.00 |

तालिका के निष्कर्षों का विवेचन इस प्रकार है : -

अ) सर्वाधिक प्रौढ़ (45.5%) महिला और पुरूष इस बात के लिये सचेष्ट रहते हैं कि ग्राम विकास से जुड़ी समितियों के लिये उपयुक्त सदस्य ही चुने जायें। वे बड़े ध्यान और सतर्कता से इन प्रतिनिधियों के चयन में मतदान करते हैं। ललितपुर और हमीरपुर जनपदों के अतिरिक्त अन्य जनपदों से प्राप्त आंकड़े भी इसी के अनुरूप हैं।

ब) ग्राम विकास के लिये एक बड़ी संख्या में प्रौढ़ ग्राम विकास से जुडे अधिकारियों पर तर्क संगत सुझाव प्रस्तुत कर दबाव डालते हैं। झांसी जनपद के प्रौढ़ इस ओर अधिक सक्रिय नहीं है। लगभग इसी संख्या में प्रौढ़ राजनैतिक दलों के सदस्य बनकर दलों के माध्यम से अपने-अपने अंचल के विकास पर सम्बन्धित अधिकारियों और शासन पर दबाव भी डलवाते हैं। ललितपुर तथा हमीरपुर के जनपदों के प्रौढ़ इस ओर अधिक संख्या में सक्रिय है।

द) एक तिहाई से कुछ अधिक (36.71%) प्रौढ़ों का विश्वास है कि जन जागृति और जनमत तैयार कर ग्राम विकास में योगदान किया जाना चाहिये। ललितपुर के प्रौढ़ों का प्रतिशत (3%) न्यूनतम है।

य) विश्लेषण का सुखद पक्ष यह रहा है कि न्यूनतम संख्या में प्रौढ़ निष्क्रिय रहकर ग्रामीण विकास को ईश्वराधीन छोड़ देते हैं फिर भी ऐसे प्रौढ़ों की संख्या एक चौथाई तो है ही। ललितपुर जनपद के सर्वाधिक प्रौढ़ों का ऐसे दृष्टिकोण में चेष्टापूर्वक परिवर्तन किया जाना चाहिए।

7. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के प्रौढ़ों द्वारा शासन पर, अपने-अपने अचलों के ग्रामों के विकास के लिये, दबाव बढ़ाने के लिये अपनाये जाने वाले विभिन्न तरीकों के बारे में एकत्र आंकड़े निम्न तालिका में प्रस्तुत हैं : -

**तालिका 4.48**

**शासन पर ग्राम विकास के लिये दबाव के तरीके**

| पद प्रभाग /जनपद | संगठित होकर मांग करना | राजनैतिक कार्यकर्ता बनकर मांग करना | ग्रामप्रधान के माध्यम से मांग करना | पत्रकारों से सम्पर्क द्वारा मांग करना | तटस्था रहना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 40.18 | 32.66 | 38.57 | 31.98 | 17.20 |
| पुरूष | 44.05 | 50.00 | 49.40 | 48.78 | 34.14 |
| **योग:** | **42.00** | **40.78** | **43.64** | **39.85** | **25.14** |
| जालौन | 38.75 | 31.50 | 27.50 | 23.00 | 15.75 |
| झांसी | 25.50 | 25.50 | 17.50 | 10.50 | 4.00 |
| बांदा | 81.00 | 79.50 | 80.50 | 79.00 | 78.50 |
| ललितपुर | 32.50 | 26.00 | 62.00 | 51.00 | 1.50 |
| हमीरपुर | 38.75 | 45.75 | 45.25 | 46.25 | 30.25 |

उपर्युक्त तालिका के विवेचन से ज्ञात होता है कि : -

अ) सर्वाधिक प्रौढ़ (43.64%) शासन से ग्रामीण विकास की मांग अपने-अपने ग्राम प्रधानों के माध्यम से शासन और प्रशासन तक पहूंचाने में विश्वास करते हैं। प्रौढ़ पुरूष, महिलाओं की अपेक्षा इस सम्बन्ध में, अधिक अग्रणी प्रतीत होते हैं। ललितपुर जनपद

के सर्वाधिक प्रौढ़ों ने यह मत प्रकट किया है।

ब) 42% प्रौढ़ों का विश्वास है कि संगठन ही शक्ति है अतएव संगठित होकर शासन से ग्राम विकास की मांग प्रभावी उपाय है। सर्वाधिक महिलाओं ने इस उपाय को कारगर माना है। जालौन और झांसी जिलों में यह विश्वास रखने वाले प्रौढ़ों की संख्या सर्वाधिक है ।

द) राजनैतिक दलों के सक्रिय सदस्य बनकर शासन पर ग्राम विकास हेतु दबाव बढ़ाने में विश्वास रखने वाले प्रौढ़ भी बहुत पीछे नहीं हैं।

य) दैनिक समाचार पत्रों को भी शासन का ध्यान इस ओर आकर्षित करने में भी एक अच्छी संख्या में प्रौढ़ दबाव बढ़ाने का एक सशक्त माध्यम मानते हैं।

र) तटस्थ होकर निष्क्रिय रहने वालों की संख्या न्यूनतम तो है, फिर भी पूर्व पद की भांति ऐसे प्रौढ़ों की संख्या लगभग एक चौथाई है। ललितपुर झांसी जनपदों में ऐसे प्रौढ़ों की संख्या नगण्य है।

8. ग्रामों से सम्बद्ध सरकारी और सार्वजनिक संस्थाओं का ज्ञान उनके कार्यक्रमों और कार्य प्रणाली की समुचित जानकारी का आंकलन अगले पद द्वारा किया गया है। प्राप्त दत्तों का विश्लेषण इस प्रकार है -

तालिका – 4.49

ग्राम विकास से सम्बद्ध संस्थानों की जानकारी

| पद प्रभाग/ जनपद | प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के जनकारी | पशु चिकित्सा केन्द्र की जानकारी | ब्लाक कार्यालय की जानकारी | ग्राम पंचायत की जानकारी | ग्रामीण बैंक की जानकारी |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 38.30 | 39.65 | 34.81 | 29.30 | 39.38 |
| पुरूष | 43.67 | 51.23 | 51.06 | 46.95 | 43.44 |
| योग: | 40.78 | 45.07 | 42.42 | 37.57 | 41.28 |
| जालौन | 34.75 | 31.75 | 31.00 | 20.00 | 30.75 |
| झांसी | 24.50 | 24.00 | 24.50 | 12.50 | 31.00 |
| बांदा | 83.50 | 83.00 | 83.00 | 83.00 | 81.00 |
| ललितपुर | 32.00 | 51.50 | 17.00 | 20.00 | 41.00 |
| हमीरपुर | 38.00 | 46.75 | 55.25 | 53.75 | 37.25 |

अ) उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में लाभकारी कार्यों में कार्यरत संस्थानों और सरकारी विभागों, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, पशु चिकित्सा केन्द्र, ब्लाक कार्यालय, ग्रामीण बैंक, की प्रौढ़ों को लगभग समान रूप से जानकारी है।

कृषि प्रधान और पशुओं के ग्रामीण जीवन में महत्व को देखते हुए, पशु चिकित्सा केन्द्रों की सर्वाधिक जानकारी होना स्वाभाविक ही है।

ब) ग्राम पंचायत की कार्य प्रणाली से परिचय कुछ कम ही प्रौढ़ों को है। झांसी जनपद में कम ही प्रौढ़ इससे परिचित हैं ।

९, ग्राम पंचायत को राजनैतिक ढांचे की प्रथम सीढ़ी की संज्ञा दी जा सकती है। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के प्रौढ़ों को ग्राम पंचायतों के कार्यक्रमों और कार्य प्रणाली सम्बन्धी जानकारी की सूचना का संकलन सर्वेक्षण प्रपत्र के राजनैतिक भाग के नवें पद द्वारा किया गया है। आंकड़ों का उल्लेख तालिका में किया जा रहा है : -

**तालिका - 4.50**

**ग्राम पंचायत के कार्य**

| पद प्रभाग/ जनपद | लगान वसूली | सड़क ठीक कराना | सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन | गोष्ठियों का आयोजन | विकास योजनाओं को पूरा करना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 20.69 | 33.33 | 19.62 | 20.90 | 33.87 |
| पुरूष | 38.26 | 44.35 | 40.71 | 42.37 | 41.92 |
| **योग:** | **28.92** | **38.50** | **29.50** | **31.50** | **37.64** |
| जालौन | 17.50 | 22.25 | 20.00 | 15.00 | 22.75 |
| झांसी | 3.50 | 10.50 | 5.00 | 6.00 | 13.00 |
| बांदा | 78.50 | 80.00 | 80.50 | 79.00 | 80.50 |
| ललितपुर | 00.00 | 32.50 | 6.50 | 4.00 | 52.00 |
| हमीरपुर | 42.75 | 51.00 | 44.75 | 50.75 | 36.25 |

तालिका से निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहूंचा जा सकता है -

अ) अधिकांश प्रौढ़ महिला और पुरूष ग्राम पंचायत के मुख्य कार्य ग्राम के सड़कों की मरम्मत और रख रखाव तथा विकास योजनाओं

का तीव्र गति से पूरा करना समझते हैं। उपर्युक्त कार्य ग्राम पंचायत के मुख्य कार्यों में से ही है अतएव प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के अध्ययन से प्रौढ़ों में ग्राम पंचायतों के कार्यों की जानकारी में वृद्धि हुई है।

हमीरपुर जनपद के प्रौढ़ न्यूनतम संख्या (36.25%) विकास योजनाओं की पूर्ति ग्राम पंचायत का कार्य मानते हैं जो कि भ्रामक है। हमीरपुर के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को प्रौढ़ों की जानकारी में उचित सुधार की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

ब) ग्राम में गोष्ठियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को भी एक सामान्य संख्या में प्रौढ़ ग्राम पंचायत के कार्यक्रम के अंतर्गत मानते हैं। झांसी और ललितपुर जनपद के प्रौढ़ कम ही संख्या में इन आयोजनों को ग्राम पंचायत के कार्य समझते हैं ।

स) आश्चर्य की बात है कि 28.92% प्रौढ़ लगान वसूली को ग्राम पंचायत के कार्यों के अन्तर्गत मानते हैं। अतएव प्रौढ़ों को ग्राम पंचायत के कार्यों की स्पष्ट व्याख्या किया जाना अपेक्षित है। ललितपुर और झांसी जनपद में प्रौढ़ों की यह संख्या शून्य है। कहा जा सकता है कि इन जनपदों के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र सही दिशा में कार्यरत हैं।

IC. सर्वेक्षण प्रपत्र के राजनैतिक भाग के अगले पद से प्रौढ़ों की ग्राम प्रधान की नियुक्ति सम्बन्धी जानकारी की जिज्ञासा की गई है। विभिन्न पदों पर प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण इस प्रकार है -

तालिका - 4.51

ग्राम प्रधान की नियुक्ति विधि

| पद प्रभाग/ जनपद | चुनाव द्वारा | निर्विरोध चुनाव | शासन द्वारा मनोनीत | जिलाधिकारी द्वारा मनोनीत | तहसीलदार द्वारा मनोनीत |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 34.40 | 19.89 | 19.62 | 19.48 | 21.10 |
| पुरूष | 42.22 | 42.07 | 40.24 | 38.56 | 33.68 |
| **योग:** | **38.07** | **30.28** | **29.28** | **28.42** | **27.00** |
| जालौन | 29.50 | 9.50 | 9.00 | 10.00 | 14.50 |
| झांसी | 20.00 | 1.00 | 1.00 | 00.00 | 1.00 |
| बांदा | 79.00 | 78.00 | 79.00 | 80.00 | 79.50 |
| ललितपुर | 36.00 | 0.50 | 2.50 | 6.50 | 5.50 |
| हमीरपुर | 36.25 | 56.25 | 52.25 | 46.25 | 37.00 |

अ) पद वस्तुनिष्ठ तथा तथ्यपरक है। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर अध्ययन रत प्रौढ़ों से सही उत्तर की अपेक्षा स्वाभाविक ही है। परन्तु केवल 38.07% प्रौढ़ ही सही सही प्रतिक्रिया देने में सक्षम रहे हैं। जनपदीय आंकड़े भी उत्साहवर्धक नहीं है। हमीरपुर जनपद के सही उत्तर देने वाले प्रौढ़ों की संख्या तो न्यूनतम (36.25%) है।

ब) ग्राम प्रधानों का निर्विरोध चुना जाना आवश्यक तो नहीं, परन्तु सम्भव है। यदि इस उप पद की प्राप्त प्रतिक्रियाओं को प्रथम उप-पद की प्रतिक्रियाओं में जोड़ दिया जाये तो 69% हो जाता है।

झांसी और ललितपुर जनपद के प्रौढ़ों की प्रतिक्रियायें इस उप पद पर नगण्य हैं। कहा जा सकता है कि वे ग्राम प्रधान की नियुक्ति प्रक्रिया को अपेक्षाकृत अच्छी तरह समझते हैं।

स) शासन/जिलाधिकारी/तहसीलदार द्वारा प्रधान की नियुक्ति किये जाने सम्बन्धी अनुकूल प्रतिक्रिया करने वाले प्रौढ़ों की संख्या लगभग एक तिहाई रही है, जो सर्वथा भ्रामक है। जिसे प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को प्रयासपूर्वक दूर किया जाना चाहिए ।

द) बांदा जनपद के आंकड़े सभी उप-पदों पर समान होने के कारण भ्रामक हैं ।

11. सर्वेक्षण प्रपत्र के इस राजनैतिक भाग का 11वां पद विभिन्न राजनैतिक प्रशासनिक प्रमुखों राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, सांसद-जिलाधीश के कार्यों से सम्बन्धित है। पद का मुख्य उद्देश्य प्रौढ़ों का प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के अध्ययन से उपर्युक्त अधिकारियों के कार्यों की समुचित जानकारी का आंकलन किया गया है।

## तालिका – 4.52

## राजनैतिक/प्रशासनिक प्रमुखों के कार्यों की जानकारी

| पद<br>प्रभाग/<br>जनपद | राष्ट्रपति | प्रधानमंत्री | मुख्यमंत्री | सांसद<br>विधायक | जिलाधीश |
|---|---|---|---|---|---|
| बुंदेलखण्ड | | | | | |
| महिला | 31.18 | 27.28 | 29.30 | 37.09 | 35.21 |
| पुरूष | 48.78 | 48.01 | 49.09 | 46.34 | 37.80 |
| **योग:** | **39.42** | **37.00** | **38.57** | **41.42** | **36.42** |
| जालौन | 35.00 | 27.75 | 28.00 | 28.75 | 27.50 |
| झांसी | 26.50 | 15.00 | 16.00 | 21.50 | 16.00 |
| बांदा | 82.50 | 82.50 | 82.50 | 82.00 | 78.00 |
| ललितपुर | 15.50 | 13.50 | 28.00 | 44.00 | 47.50 |
| हमीरपुर | 40.75 | 46.25 | 43.75 | 42.50 | 29.25 |

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि –

अ) विभिन्न राजनैतिक प्रमुखों और प्रशासनिक अधिकारियों के दायित्वों सम्बन्धी जानकारी में वृद्धि समान रूप से लगभग 40% प्रौढ़ों को हुई है।

ब) फिर भी सदस्यों और विधायकों के दायित्वों का बोध सर्वाधिक (4142%) को है। महिलाओं का यह प्रतिशत (37.09%) सर्वाधिक और उल्लेखनीयत है ।

स) जिलाधीश के दायित्वों की जानकारी कुछ कम प्रौढ़ों को है, जिनका प्रतिशत केवल 37.8% रहा है।

महिलाओं और पुरूषों का प्रतिशत लगभग समान है जो उल्लेखनीय है ।

द) मुख्य मंत्री के कार्यों की जानकारी में प्रौढ़ों पुरूषों और महिलाओं में अत्याधिक अन्तर संकेत करता है कि महिलाओं को इस जानकारी में अपने प्रतिशत में वृद्धि किया जाना अपेक्षित है।

य) प्रधानमंत्री की जानकारी, ललितपुर जनपद के न्यूनतम प्रौढ़ों को है ।

12. अन्तिम पद राजनैतिक भाग का, सर्वाधिक रूचिकर है। इसका उल्लेख यह जानकारी देता है कि प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र शिक्षा प्राप्त करने आने वाले प्रौढ़ों को इन कार्यों की समुचित जानकारी है अथवा नहीं। प्राप्त दत्तों का विश्लेषण इस प्रकार है : -

तालिका - 4.53

## प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के कार्यों की जानकारी

| पद प्रभाग/ जनपद | साक्षरता का प्रसार | निरक्षरता उन्मूलन | विकास कार्य करना | कागजी कार्यवाही करना | कृषि यंत्रों का प्रयोग |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 30.91 | 35.48 | 26.47 | 27.82 | 33.87 |
| पुरूष | 47.85 | 50.45 | 48.78 | 44.97 | 44.51 |
| योग: | 38.85 | 42.50 | 36.92 | 35.85 | 38.85 |
| जालौन | 30.75 | 25.00 | 29.25 | 30.25 | 28.50 |
| झांसी | 22.00 | 15.00 | 11.50 | 10.00 | 18.00 |
| बांदा | 81.00 | 80.50 | 81.50 | 81.50 | 82.00 |
| ललितपुर | 13.50 | 46.00 | 15.00 | 15.00 | 45.50 |
| हमीरपुर | 47.00 | 53.00 | 46.00 | 42.00 | 34.75 |

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि -

अ) सर्वाधिक प्रौढ़ पुरूष महिलाओं का मानना है कि निरक्षरता उन्मूलन प्रौढ़ शिक्षा का प्रमुख कार्य है।

ब) 38.85% प्रौढ़ का मानना है कि प्रौढ़ शिक्षा का मुख्य कार्य साक्षरता का प्रचार प्रसार करना है ।

ललितपुर जनपद के प्रौढ़ साक्षरता प्रसार की अपेक्षा निरक्षरता उन्मूलन को प्रौढ़ शिक्षा का मुख्य कार्य मानते हैं ।

स) विकास कार्य में संलग्नता और कृषि यंत्रों के समुचित प्रयोग को भी प्रौढ़ों ने एक अच्छी संख्या में प्रौढ़ शिक्षा का दायित्व इंगित किया है जो प्रत्यक्षतः तो भ्रामक ही है।

द) एक तिहाई से कुछ अधिक प्रौढ़ की यह गलत धारणा है कि प्रौढ़ शिक्षा का कार्य केवल कागजी कार्यवाही अथवा निर्देश निर्गत करना है। यह संख्या न्यूनतम होते हुये भी एक बड़ी संख्या है।

इस धारणा को दूर करने के समुचित प्रयास किये जना अपेक्षित है ।

## सारांश

सर्वेक्षण प्रपत्र के राजनैतिक खण्ड के अन्तर्गत विभिन्न पदों पर प्राप्त दत्तों के विश्लेषण और विवेचन से निम्नलिखित प्रमुख बिन्दु उभरते हैं।

1. राजनैतिक क्षेत्र में अभी भी लगभग आधी संख्या में प्रौढ़ प्रतिभागी स्वतंत्रता को उस के सही अर्थ में नहीं लेते हैं। ग्रामीण अंचलों के वे प्रौढ़ जो प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में आते हैं, शासकीय नियमों के पालन को ही स्वतंत्रता समझते हैं। स्वतंत्रता को सही संदर्भ मे समझने की दिशा में जागृति के लिये सतत प्रयास अपेक्षित हैं।

2. राजनैतिक क्षेत्र की मुख्य-मुख्य सामान्य जानकारी भी प्रौढ़ों को लगभग इसी अनुपात में है।

3. यद्यपि एक अच्छी संख्या में प्रौढ़ो को मतदान का महत्व ज्ञात है, फिर भी मतदान करने में जाति और बिरादरी अथवा ग्राम प्रधानों की राय को वरीयता दी जाती है।

4. लगभग एक चौथाई प्रौढ़ मतदान प्रक्रिया को निरर्थक मानते हैं, जो प्रजातंत्र की परिकल्पना के विपरीत है तथा राजनैतिज्ञों के लिये मतदान की अनियमितताओं के प्रति सचेष्ट होने की ओर संकेत करता है।

5. एक बड़ी संख्या में प्रौढ़ ग्राम विकास के प्रति रूचि और सही दृष्टिकोण रखते हैं, उनमें इतनी जागरूकता है कि वे ग्राम विकास से जुड़े पदाधिकारियों को विकास के उपायों को इंगित कर सकें, और प्रशासन पर उचित तरीकों से प्रभाव डाल सकें। वे ग्राम विकास के लिये आवंटित धनराशि के सही और समुचित उपयोग में विश्वास रखते हैं।

6. ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत सरकारी संस्थानों की उन्हें अच्छी जानकारी है। कृषि और पशु चिकित्सा से जुड़े केन्द्रों की उन्हें समुचित जानकारी है ।

7. ग्राम पंचायतों के अधिकार क्षेत्र और दायित्व सम्बन्धी चेतना का भी उनमें अच्छा विकास हुआ है, फिर भी लगभग एक चौथाई प्रौढ़ों को ग्राम पंचायत की सही कल्पना नहीं है।

8. एक बड़ी संख्या मे प्रौढ़, प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को सही अर्थों में लेते हैं। फिर भी लगभग एक तिहाई प्रौढ़ों में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की सही परिकल्पना की गहन चेतना जागृति किये जाने के संकेत विश्लेषण से उभरते हैं ।

## खण्ड - 5
## अन्य जानकारी

सर्वेक्षण प्रपत्र को अन्तिम और पाँचवे भाग में कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण पद सम्मिलित किये गये हैं, जिनका प्रथम चार भागों में समावेश सम्भव नही हो पाया , अतएव उन्हे अन्य शीर्षक के अंतर्गत रखा गया है ।

इस खण्ड में अधिकांश पद मुख्यत: प्रौढ़ शिक्षा और इससे जुड़े केन्द्रो के उद्‌देश्य और क्रियाकलापों के बारें में प्रतिक्रियाओं और दृष्टिकोण का आंकलन करते हैं ।

अन्य शीर्षक का प्रथम पद प्रौढ़ शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा के श्रोत के विषय में है । पद 2, 3, 5, 7, 8, 9, 10, और 11 भी यद्यपि प्रौढ़ शिक्षा के बारें में हैं, तथापि प्रत्येक पद की विषय वस्तु और जानकारी में विभिन्नता है ।

कुछ पद ग्रामीण समस्याओं शोषण, बेरोजगारी, सामाजिक कुरीतियों, पारिवारिक विकास से सम्बन्धित है । पदानुसार विश्लेषण और आख्या आगामी पृष्ठों पर उल्लिखित है ।

1. अन्य का प्रथम प्रश्न प्रौढ़ शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा श्रोत की जानकारी का विश्लेषण करता है । प्राप्त जानकारियाँ प्रतिशत के रूप में तालिका 4.54 में संगृहीत है ।

तालिका 4.54

प्रौढ़ शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा

| पद / प्रभाग जनपद | | स्वयं द्वारा अ % | कार्यकर्ताओं ब % | अनुदेशकों स % | शिक्षा प्राप्त द % | किसी से य % |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | म0 | 36.29 | 33.06 | 34.67 | 31.45 | 21.10 |
| | पु0 | 32.39 | 48.78 | 49.71 | 53.72 | 43.90 |
| जनपद | योग | 34.50 | 40.42 | 41.71 | 41.85 | 31.71 |
| जालौन | | 32.25 | 27.75 | 36.25 | 25.50 | 12.75 |
| झाँसी | | 28.50 | 22.00 | 29.00 | 15.00 | 6.00 |
| बाँदा | | 80.00 | 80.50 | 82.00 | 83.00 | 80.00 |
| ललित पुर | | 48.00 | 39.00 | 31.50 | 32.50 | 7.00 |
| हमीरपुर | | 10.25 | 43.00 | 38.50 | 55.75 | 52.00 |

अ. तालिका 4.54 पर विहंगम दृष्टि डालने से पता चलता है कि प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में प्रवेश लेने की प्रेरणा में केन्द्र पर जाने वाले प्रतिभागी अधिक अंश तक कारण बने हैं । पुरूषों को महिलाओं की अपेक्षा अधिक प्रेरणा की आवश्यकता हुई है । महिलाओं ने केन्द्र पर आने में स्वयं की प्रेरणा को ही आवश्यक पाया है , इसके पश्चात् वे कार्यकर्ताओं की प्रेरणा से प्रभावित हुई है ।

ब. पुरूष प्रतिभागियों को स्वयं की अपेक्षा अन्य की प्रेरणाओं ने केन्द्र पर आने को अधिक प्रेरित किया है । ललितपुर के प्रतिभागियों ने स्वयं को सबसे अधिक प्रतिभागी बनने का आधार प्रस्तुत किया, जबकि हमीरपुर की अभिव्यक्ति इससे विपरीत है ।

2. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के बीच में छोड़ कर जाने के कारणों का विश्लेषण नीचे दी गई तालिका 4.55 में अंकित है । जो कारण पहले से ही उल्लिखित है (अ) कार्यक्रम अरूचिकर है (ब) समय बेकार जाता है (स) कृषि कार्य में अधिक व्यस्तता (द) इस आयु में पढ़ना लाभकर नहीं और (य) शिक्षा की व्यवस्था का उचित न होना ।

तालिका - 4.55

**बीच में प्रौढ़ शिक्षा छोड़ने के कारण**

| प्रभाग पद जनपद | | कार्यक्रम अरूचिकर होना अ % | समय की बरबादी ब % | कृषि कार्य में अधिक व्यस्तहोना स % | पौढ़ आयु में शिक्षा से कोई लाभ नहीं द % | उचित व्यवस्था न होना य % |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | म0 | 24.05 | 26.61 | 26.47 | 29.02 | 26.21 |
| | पु0 | 45.73 | 48.01 | 46.46 | 50.45 | 43.44 |
| जनपद योग | | 34.21 | 36.64 | 35.85 | 39.07 | 34.28 |
| जालौन | | 19.50 | 17.50 | 23.25 | 23.25 | 21.00 |
| झाँसी | | 6.50 | 4.00 | 4.00 | 4.00 | 8.00 |
| बाँदा | | 81.00 | 81.00 | 80.00 | 81.00 | 81.00 |
| ललितपुर | | 16.00 | 27.50 | 20.50 | 29.50 | 18.50 |
| हमीरपुर | | 48.50 | 54.50 | 50.00 | 56.00 | 45.00 |

स्र. तालिका में उल्लिखित प्रतिशत संकेत देते हैं कि सबसे अधिक कारण केन्द्र के बीच में छोड़ देने का यह मानना है कि इस आयु में पढ़ने से क्या

लाभ होगा । यह धारणा महिलाओं और पुरूषों दोनो की है । हमीरपुर, ललितपुर और जालौन सभी उक्त कथन की पुष्टि करते हैं ।

ब. दूसरा प्रबल कारण प्रतिभागियों का यह मानना है कि इसमें समय बेकार जाता है उस समय में घर के कुछ अन्य कार्य समेटे जा सकते थे। झाँसी के प्रतिभागी केन्द्र छोड़ने के कारणों में शिक्षा की व्यवस्था का दोषी होना ठहराया है ।

3. इस प्रश्न की अपेक्षा रही है कि इस प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने से परिवार के बच्चों के व्यक्तित्त्व के विकास के प्रति किस प्रकार का दृष्टिकोण, हो गया है, जो 5 बिन्दु दिये गये हैं ﴾अ﴿ कम सन्तनोत्पत्ति का दृष्टिकोण, ﴾ब﴿ केवल लड़को को शिक्षित करना आवश्यक, ﴾स﴿ लड़के/लड़कियों को समान रूप से पढ़ने का अवसर देना, ﴾द﴿ शिक्षा की बजाय कृषि कार्यों में ही लगाना और ﴾य﴿ छोटे बालकों को शिक्षा के बजाय घर के कार्यों में डालना । प्रतिशत में व्यक्त विश्लेषण तालिका 4.56 में उद्घृत है ।

तालिका - 4.56

**पारिवारिक बच्चों के व्यक्तित्त्व विकास के प्रति दृष्टिकोण**

| प्रभाग पद जनपद | | सीमित परिवार हितकर | लड़कों को हीशिक्षित कराना | लड़के लड़की हीं समान रूपसेपढ़ाना | शिक्षा की बजाय खेती में लगाना | घर के कार्यों में डालना |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | म0 | 43.54 | 27.28 | 49.19 | 21.63 | 20.56 |
| | पु0 | 48.01 | 50.45 | 56.25 | 41.21 | 36.58 |
| जनपद योग | | 45.64 | 38.14 | 52.50 | 30.70 | 28.07 |
| जालौन | | 42.00 | 22.00 | 32.25 | 13.25 | 12.25 |
| झाँसी | | 30.00 | 12.50 | 23.00 | 0.50 | 0.50 |
| बाँदा | | 80.00 | 79.50 | 80.00 | 79.50 | 80.50 |
| ललितपुर | | 48.50 | 16.00 | 80.00 | 6.00 | 15.50 |
| हमीरपुर | | 47.50 | 57.50 | 60.00 | 51.50 | 37.75 |

ग्र. तालिका4.56 का अवलोकन संकेत करता है कि इस कार्यक्रम से बच्चों के समुचित व्यक्तित्त्व विकास के लिए लड़को और लड़कियों, दोनो को समान मानते हुये शिक्षा का अवसर देना तथा परिवार सीमित रखा जाय (कम सन्तानोत्पत्ति) के प्रति प्रतिभागियों ने अपने दृष्टिकोण में अन्तर पाया है । महिलाओं और पुरूषों दोनो ने ही दोनो दृष्टिकोणों को महत्वपूर्ण माना है । सभी जनपदों से ऐसे ही संकेत मिले है और उन लोगों ने केवल बालकों को पढ़ाने या घर या कृषि कार्य में शुरू से लगा देने को कम वांछित माना है ।

4. इस कार्य क्रम से शोषण, गरीबी, बेरोजगारी आदि से मुक्त होने की दिशा में जो दृष्टिकोण जन्मे हैं वे 5 बिन्दुओं पर है, (अ) कुटीर उद्योग धन्धे सम्बन्धी जानकारी (ब) शिक्षित होना (स) छोटा परिवार होना, (द) अपने अधिकार के प्रति सजग होना और (य) गाँव के प्रति अपने दायित्त्वों का बोध होना । सकारात्मक दृष्टिकोण जो उत्तर के माध्यम से व्यक्त होकर उभरें हैं उनका उल्लेख प्रतिशत में तालिका 4.57 में उद्धृत है ।

**तालिका - 4.57**

**शोषण, गरीबी और बेरोजगारी से बचने के उपायों के प्रति दृष्टिकोण**

| प्रभाग पद जनपद | | कुटीर उद्योग अ % | शिक्षित होना ब % | छोटा परिवार स % | अधिकारों का ज्ञान द % | दायित्त्वों की पूर्ति य % |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | म0 | 34.81 | 30.24 | 40.99 | 33.60 | 26.88 |
| | पु0 | 50.45 | 50.30 | 52.74 | 51.60 | 42.07 |
| जनपद योग | | 42.14 | 39.57 | 46.50 | 42.07 | 34.00 |
| जालौन | | 30.50 | 27.25 | 34.50 | 33.50 | 29.00 |
| झाँसी | | 16.00 | 11.50 | 14.50 | 16.00 | 8.50 |
| बाँदा | | 85.50 | 82.50 | 82.00 | 83.00 | 83.00 |
| ललितपुर | | 54.50 | 28.50 | 65.50 | 29.50 | 29.50 |
| हमीरपुर | | 39.00 | 50.00 | 47.25 | 49.50 | 29.50 |

अ. तालिका 4.57 शोषण, गरीबी, बेरोजगारी से बचने के लिए उभरे दृष्टिकोणों के बारे में संकेत देती है कि प्रतिभागी अधिक जागरूक हो रहे हैं । उनके अनुसार शोषण, बेरोजगारी और गरीबी से मुक्ति पानी है तो परिवार छोटा रखा जाय, कुटीर उद्योग धन्धे अपनाये जाय, उनके अपने भी कुछ अधिकार है और अपने दायित्वों की पूर्ति के लिए शिक्षित होना जरूरी है, इस प्रकार की अभिव्यक्ति में दोनो ही लिंग वर्गों में समरूपता है । ललितपुर और जालौन ने छोटे परिवार होने को महत्वपूर्ण माना है तो हमीरपुर के प्रतिभागियों ने शिक्षित होने को । झाँसी अपने अधिकारों के प्रति सजगता और कुटीर उद्योगों की जानकारी कर उसे अपना कर अपने को समाज में उचित स्थान दिलाया जा सकता है । अपने पैरों पर खड़े होकर तथा शिक्षित होकर अधिकारों को समझते हुये गाँव के कार्यक्रमों के प्रति दायित्वों को पूरा किया जा सकता है, ऐसा दृष्टिकोण प्रतिभागियों में उत्पन्न होने के लक्षण मिल रहे हैं ।

5. अन्य खण्डो के अन्तर्गत पाँचवे पद में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के प्रौढ़ो का सामाजिक बुराईयों के बारे में दृष्टिकोण का आंकलन किया गया है । प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण तालिका 4.58 में अंकित है।

**तालिका – 4.58**

**सामाजिक कुरीतियों के प्रति दृष्टिकोण**

| पद प्रभाग जनपद | | दहेज प्रथा | जुआ | नशा | अंधविश्वास | चोरी मारपीट |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | अ % | ब % | स % | द % | य % |
| बुन्देलखण्ड प्रभाग | म0 | 26.74 | 25.80 | 35.08 | 32.79 | 22.58 |
| | पु0 | 40.54 | 46.03 | 48.62 | 48.93 | 36.89 |
| जनपद योग | | 33.21 | 35.28 | 41.42 | 40.35 | 29.28 |
| जालौन | | 35.25 | 24.00 | 22.25 | 22.00 | 20.75 |
| झाँसी | | 16.00 | 9.50 | 10.00 | 11.00 | 10.00 |
| बाँदा | | 78.00 | 81.00 | 80.50 | 81.00 | 81.00 |
| ललितपुर | | 5.50 | 5.50 | 40.50 | 40.00 | 6.00 |
| हमीरपुर | | 31.25 | 51.50 | 57.25 | 53.25 | 33.25 |

उपर्युक्त तालिका से संकेत मिलते हैं कि :-

{अ} सर्वाधिक प्रौढ़ महिलायें और पुरूष अंध-विश्वास और किसी भी प्रकार के नशा करने को बुरा समझते हैं फिर भी नशीली वस्तुओं को, महिलायें अंध विश्वास की अपेक्षा अधिक बुरा मानती हैं

ललितपुर और हमीरपुर जनपदों के आँकड़े उपर्युक्त तथ्य की पुष्टि करते हैं, परन्तु झाँसी और जालौन के प्रौढ़ो ने इन पदों को सर्वोच्च प्राथमिकता नहीं दी है ।

{ब} द्यूत क्रीड़ा और दहेज प्रथा को लगभग एक तिहाई प्रौढ़ सामाजिक बुराई मानते हैं, परन्तु प्रौढ़ पुरूषों का दहेज प्रथा की अपेक्षा द्यूत क्रीड़ा को कुछ अधिक और महिलाओं द्वारा दहेज प्रथा को द्यूत क्रीड़ा से कुछ अधिक बुरा मानना, और आँकड़ों की असंगति की ओर इंगित करता है, तथापि महिलायें पुरूषो की अपेक्षा कम संख्या में इन कुरीतियों को बुरा मानती है ।

जालौन और झाँसी जनपद के प्रौढ़ इन दोनों कुरीतियों को सर्वाधिक बुरा समझते हैं, जबकि ललितपुर के प्रौढ़ों की यह संख्या सीमित ही है।

{स} **चोरी और मारपीट को अपेक्षाकृत इतनी बड़ी कुरीति नहीं माना जाता । जनपदीय आँकड़े भी यही संकेत करते हैं।** बुन्देलखण्ड प्रभाग की वर्तमान दशा को दृष्टि में रखते हुये यह निष्कर्ष सामान्य ही है ।

6. प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त करने पर प्रौढ़ो के सफाई के प्रति दृष्टिकोण के अन्तर और सफाई स्वच्छता के प्रकार का मूल्यांकन अगले पद द्वारा किया गया है । प्राप्त आँकड़ों का प्रतिशत तालिका 4.59 में उदधृत है ।

तालिका - 4.59

**सफाई और उसके प्रकार सम्बन्धी दृष्टिकोण**

| पद प्रभाग जनपद | | घर की सफाई अ % | नालियों की सफाई ब % | कुँओं की सफाई स % | मोहल्ले की सफाई द % | गाँव की सफाई य % |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड प्रभाग | म0 | 32.39 | 38.44 | 44.35 | 40.99 | 38.84 |
| | पु0 | 48.21 | 54.20 | 55.79 | 53.50 | 46.03 |
| जनपद योग | | 39.78 | 45.78 | 49.71 | 46.85 | 42.21 |
| जालौन | | 22.25 | 22.50 | 28.00 | 26.25 | 24.35 |
| झाँसी | | 20.50 | 18.50 | 16.50 | 17.50 | 17.50 |
| बाँदा | | 84.00 | 82.00 | 82.00 | 81.50 | 81.00 |
| हमीरपुर | | 47.50 | 51.00 | 55.50 | 48.50 | 34.00 |
| ललितपुर | | 34.50 | 73.00 | 62.50 | 79.50 | 80.50 |

उपर्युक्त तालिका से निम्न बिन्दु उभरते हैं : -

अ) सर्वाधिक प्रौढ़ (49.71%) सार्वजनिक कुंओं की सफाई को वरीयता देते हैं, जिससे स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो सके। प्रौढ़ महिलायें भी सफाई के इसी पक्ष पर सर्वाधिक बल देती हैं। जालौन और हमीरपुर जनपदों का भी इससे मतैक्य है।

ब) मुहल्ले और उनकी सफाई पर भी एक अच्छी संख्या में प्रौढ़ों ने रूचि प्रदर्शित की है।

स) झांसी और बांदा जनपदों के प्रौढ़ों के लिये अपने-अपने घरों की सफाई सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, जबकि गांव की सामान्य सफाई में भी प्रौढ़ों ने सामान्यतः रूचि दिखाई है।

7, प्रौढ़ शिक्षा से प्रौढ़ किन-किन लाभों की अपेक्षा करते हैं? यह सर्वेक्षण प्रपत्र के सातवें पद का मुख्य बिन्दु है। आंकड़े निम्न तालिका में प्रस्तुत हैं : -

तालिका 4.60

**प्रौढ़ शिक्षा से लाभों सम्बन्धी धारणा**

| पद प्रभाग/ जनपद | अधिकार कर्तव्यों की जागरूकता | ग्राम विकास कार्यों में मदद | परिवार को सुचारू रूप में चलाने में सहायता | अधिकारियों से ठीक से बात करने की जागरूकता | सही प्रत्याशी चुनने की चेतना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 35.08 | 41.80 | 42.74 | 39.65 | 30.10 |
| पुरूष | 50.76 | 58.68 | 56.25 | 57.00 | 49.61 |
| **योग:** | **42.42** | **49.71** | **49.07** | **47.78** | **39.00** |
| जालौन | 36.75 | 29.75 | 31.25 | 31.00 | 33.25 |
| झांसी | 28.00 | 28.00 | 22.50 | 30.00 | 33.50 |
| बांदा | 84.00 | 83.50 | 82.50 | 81.50 | 82.00 |
| ललितपुर | 29.50 | 77.50 | 80.00 | 65.00 | 26.50 |
| हमीरपुर | 41.00 | 49.75 | 48.00 | 48.00 | 32.25 |

तालिका से ज्ञात होता है कि : -

अ) प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त करने वाले प्रौढ़ों, महिला और पुरूष, का मत है कि इससे इन्हें अपने परिवारों को पहिले से अधिक सुचारू रूप से चलाने में मदद मिली है। ग्राम विकास के कार्यों को भी अधिक सुनियोजित ढंग से करने की शक्ति प्राप्त होती है। ललितपुर और हमीरपुर जनपदों के प्रौढ़ों की भी यही धारणा है ।

ब) जालौन और बांदा जनपदों के प्रौढ़ों की प्रतिक्रियाओं से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक लाभ अधिकार और कर्तव्यों की सुचारू जानकारी के रूप में होता है ।

स) अधिकारियों से निर्भय होकर आत्मविश्वास और तर्कपूर्ण वार्ता करने की दिशा में लाभ की सम्भावना को बड़ी संख्या में प्रौढ़ों ने व्यक्त किया है।

द) सबसे कम प्रौढ़ों (39%) ने व्यक्त किया है कि प्रौढ़ शिक्षा से विभिन्न सार्वजनिक पदों के लिये सही प्रत्याशी निर्वाचित करने में प्रौढ़ शिक्षा सहायक है। परन्तु झांसी जनपद के सर्वाधिक प्रौढ़ों ने इस क्षेत्र में हुये लाभ को इंगित किया है।

9. प्रौढ़ शिक्षा प्राप्ति से प्रौढ़ों को हुये वास्तविक लाभों का आंकलन अगले पद में किया गया है। प्राप्त दत्तों का विश्लेषण इस प्रकार है।

तालिका - 4.61

## प्रौढ़ शिक्षा से हुये लाभ

| पद प्रभाग/ जनपद | दैनिक कार्यों को करने में कुशलता | शोषण से बचाव | आमदनी में वृद्धि के उपाय सोचना | हिसाब किताब ठीक रखना | खाली समय का सदुपयोग |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 46.50 | 59.27 | 46.23 | 55.91 | 48.11 |
| पुरूष | 51.40 | 61.58 | 58.07 | 61.28 | 53.20 |
| योग | 49.00 | 31.71 | 51.78 | 58.42 | 50.50 |
| जालौन | 67.50 | 68.50 | 65.00 | 62.50 | 61.50 |
| झांसी | 29.00 | 40.00 | 34.50 | 27.00 | 24.50 |
| बांदा | 81.00 | 79.00 | 80.00 | 80.00 | 80.00 |
| ललितपुर | 33.00 | 82.00 | 30.50 | 94.50 | 59.50 |
| हमीरपुर | 32.50 | 42.25 | 43.75 | 41.25 | 33.25 |

तालिका से स्पष्ट होता है कि : -

अ) प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर आने वाले सर्वाधिक (58.42%) प्रौढ़ों में आय का ठीक-ठीक हिसाब किताब रखने की चेतना उत्पन्न हुई है। ललितपुर जनपद के सा (94.5%) प्रौढ़ों ने यह मत व्यक्त किया है।

ब) आमदनी में वृद्धि के उपाय सोचने की क्षमता, खाली समय के सदुपयोग और दैनिक कार्यों को कुशलता से करने की जागरूकता क्रमश : 51.78%, 50.5% और 49% प्रौढ़ों में उत्पन्न हुई है । जालौन और ललितपुर से प्राप्त आंकड़े इस की पुष्टि करते हैं ।

स) जालौन, झांसी, और ललितपुर जनपदों के प्रतिशत इंगित करते हैं कि वह इन जनपदों के प्रौढ़ों को एक बड़ी मात्रा में धनी और प्रभावशाली लोगों के शोषण से बचने की शक्ति प्राप्त हुई है ।

9. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को अधिक सफल और प्रभावी बनाये जाने के उपायों और सुझावों की, प्रौढ़ों की प्रतिक्रियाओं की जानकारी, सर्वेक्षण प्रपत्र के नवें पद द्वारा एकत्र की गई है। प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नवत है ।

तालिका 4.62

**प्रौढ़ शिक्षा के सफल संचालन के उपाय सम्बन्धी दृष्टिकोण**

| पद प्रभाग/ जनपद | केवल स्वयं सेवी संगठनों द्वारा | केवल सरकार द्वारा | सरकार और स्वयंसेवी संगठनों के सम्बद्ध प्रयास द्वारा | ग्राम प्रधान की देखरेख द्वारा | प्रभावी शैक्षिक उपकरणों द्वारा |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 23.52 | 22.04 | 40.86 | 35.75 | 42.87 |
| पुरूष | 43.67 | 39.45 | 50.30 | 52.50 | 47.71 |
| **योग:** | **32.92** | **30.21** | **45.21** | **43.64** | **45.14** |
| जालौन | 21.25 | 18.00 | 28.25 | 25.25 | 27.50 |
| झांसी | 12.00 | 12.00 | 31.00 | 32.50 | 32.00 |
| बांदा | 82.00 | 81.00 | 81.50 | 79.50 | 78.50 |
| ललितपुर | 30.50 | 1.50 | 66.00 | 62.00 | 93.50 |
| हमीरपुर | 31.75 | 40.50 | 40.75 | 40.50 | 28.50 |

उपर्युक्त तालिका से प्रमाणित होता है कि : -

अ) प्रौढ़ शिक्षा के अधिक प्रभावी बनाने तथा सफलता पूर्वक चलाने के सम्बन्ध में सर्वाधि प्रौढ़ों का (महिला पुरूष) का मत है कि इन केन्द्रों का संचालन सरकार और स्वयंसेवी संस्थाओं के परस्पर सहयोग से किया जाना चाहिये। जालौन और हमीरपुर जनपदों के सर्वाधिक प्रौढ़ों ने इससे अपनी सहमति व्यक्त की है जबकि अन्य जनपदों ने इस उपपद को वरीयता क्रम में द्वितीय स्थान दिया है।

ब) अधिकांश प्रौढ़ों ने प्रतिक्रिया में कहा है कि इन प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को अधिकप्रभावशाली बनाने के लिये शैक्षिक उपकरणों की उपलब्धता और प्रयोग किया जाना चाहिये। जनपदीय आंकड़े भी इसी के अनुरूप हैं। ललितपुर के प्रौढ़ों ने तो इसे सर्वोच्च प्राथमिकता दी है।

स) एक बड़ी संख्या में प्रौढ़ो की धारणा है कि यदि केन्द्रों का संचालन ग्राम प्रधानों की देख-रेख में हो, तो प्रौढ़ शिक्षा को अधिक सफल बनाया जा सकता है ।

द) इस प्रौढ़ शिक्षा का संचालन केवल सरकार अथवा केवल स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा किये जाने पर, इसकी सफलता का विश्वास सबसे कम प्रौढ़ों ने व्यक्त किया है। बांदा जनपद क प्रौढ़ों के अतिरिक्त अन्य जनपदों में प्रौढ़ों की भी यही धारणा है।

10. सर्वेक्षण प्रपत्र के इस भाग के दसवें पद द्वारा जिज्ञासा की गई है कि इन केन्द्रों पर शिक्षण हेतु आने वाले प्रौढ़ों को व्यक्तिगत रूप में क्या-क्या लाभ हुये हैं? आंकड़े आगे की तालिका में अंकित है ।

तालिका - 4.63

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में आने से वैयक्तिक लाभ

| पद प्रभाग/ जनपद | आत्मविश्वास में वृद्धि | दूसरों पर, आश्रित न रहना | केवल अपने घर और रोटी की ही न सोचना | क्षेत्रीय विकास, को सोचना | विकास कार्यों में सहभागिता |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 54.30 | 22.04 | 20.29 | 49.59 | 47.58 |
| पुरूष | 56.10 | 43.90 | 40.00 | 58.80 | 56.25 |
| **योग:** | **55.14** | **32.28** | **29.50** | **53.92** | **51.25** |
| जालौन | 69.50 | 20.00 | 13.25 | 55.75 | 50.25 |
| झांसी | 34.00 | 1.00 | 0.50 | 25.00 | 26.00 |
| बांदा | 81.00 | 81.00 | 79.50 | 80.00 | 80.00 |
| ललितपुर | 58.00 | 20.50 | 20.00 | 79.50 | 91.00 |
| हमीरपुर | 37.00 | 41.75 | 40.00 | 40.75 | 32.00 |

उपर्युक्त तालिका से निम्न बिन्दु उभरते हैं : -

अ) सर्वाधिक प्रौढ़ों (महिला-पुरूष) ने प्रतिक्रिया स्वरूप कहा है कि शिक्षण के पश्चात उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। जालौन, झांसी, बांदा के जनपदीय आंकड़े इसी के समरूप है। ललितपुर और हमीरपुर के प्रौढ़ों ने इस उप-पद को सामान्य वरीयता दी है ।

ब) शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात प्रौढ़ों में क्षेत्रीय विकास सम्बन्धी सोच और उसमें सहभागिता के भाव जागृत हुये हैं। यह बिन्दु भी प्रमुखता से उप-पद चार और पांच की प्रतिक्रिया स्वरूप उभरा है। ललितपुर के प्रौढ़ों ने इसे सर्वोच्च लाभ की बात कही है।

स) दूसरों पर आश्रित न रहकर स्ववावलम्बी तथा केवल अपने घर बार की ही न सोचकर अन्य के हित को भी सोचने सम्बन्धी प्रतिक्रिया कम ही प्रौढ़ों ने दी है। उपर्युक्त लाभ की बातों को कम ही प्रौढ़ों ने स्वीकारा है। बांदा और हमीरपुर के प्रौढ़ों के अतिरिक्त अन्य जनपदों के प्रौढ़ों की प्रतिक्रियायें भी इसी के अनुरूप हैं ।

11. सर्वेक्षण प्रपत्र के अन्य भाग के ग्यारवें पद द्वारा प्रौढ़ों की प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के विषय में धारणा का आंकलन किया गया है। दत्तों का विश्लेषण प्रोक्त तालिका में प्रस्तुत है : -

तालिका - 4.64

प्रौढ़ शिक्षा विषयक धारणा

| पद प्रभाग/ जनपद | अच्छी योजना | नागरिकों के लिये लाभ-दायक | दिखावटी योजना | अशिक्षितों के लिये लाभदायक | अध्यापक रूचि लेते हैं |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 53.22 | 47.84 | 16.93 | 49.86 | 51.07 |
| पुरूष | 60.97 | 61.40 | 37.19 | 57.77 | 54.60 |
| **योग:** | **56.85** | **54.21** | **26.42** | **53.57** | **52.78** |
| जालौन | 71.25 | 65.25 | 11.50 | 56.75 | 62.75 |
| झांसी | 45.00 | 42.00 | 0.50 | 17.50 | 32.00 |
| बांदा | 80.00 | 79.50 | 80.00 | 78.00 | 79.00 |
| ललितपुर | 58.00 | 46.00 | 1.00 | 88.00 | 72.00 |
| हमीरपुर | 36.25 | 40.75 | 40.25 | 39.00 | 30.50 |

तालिका से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं कि : -

अ) सर्वाधिक प्रौढ़ों (महिला पुरूष) ने इस योजना को एक उपयोगी, लाभकारी और अच्छी योजना होने का संकेत दिया है। जालौन, झांसी और बांदा जनपदों के प्रौढ़ों का भी ऐसा ही मत है, जबकि ललितपुर और हमीरपुर के प्रौढ़ों ने इसे इतनी प्रमुखता नहीं दी है।

ब) अधिकांश प्रौढ़ों ने इसे नागरिकों और अशिक्षितों के लिये लाभकारी होने की संज्ञा दी है। हमीरपुर और ललितपुर के प्रौढ़ों ने तो इस उपयोगिता को सर्वोच्च स्थान दिया है ।

स) "प्रौढ़ शिक्षा एक दिखावटी योजना है," यह मत न्यूनतम प्रौढ़ों ने तो व्यक्त किया है फिर भी एक चौथाई से कुछ अधिक प्रौढ़ों ने ऐसी प्रतिक्रिया दी है, ऐसी धारणा का निराकरण प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों द्वारा अपने कार्यक्रमों को और अधिक प्रभावी बनाकर किया जाना अपेक्षित है ।

12. सर्वेक्षण का अन्तिम बिन्दु प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त प्रौढ़ों की बीमारियों के टीकों की जानकारी विशेष के आंकलन हेतु सम्मिलित किया गया है। प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण निम्नवत हैं ।

**तालिका 4.65**

**बच्चों की बीमारियों के बचाव के टीकों की जानकारी के साथ**

| पद प्रभाग/ जनपद | कोई ज्ञान नहीं | जानकारी होना | टीकों को देखकर लगवाना | टीकों के लाभ जानना | टीके न लगवाना |
|---|---|---|---|---|---|
| बुन्देलखण्ड | | | | | |
| महिला | 21.50 | 38.30 | 35.61 | 35.61 | 18.81 |
| पुरूष | 37.34 | 47.85 | 44.80 | 44.97 | 34.50 |
| **योग:** | **28.92** | **42.78** | **39.92** | **40.00** | **26.21** |
| जालौन | 18.25 | 25.00 | 24.00 | 26.25 | 13.50 |
| झांसी | 16.00 | 20.00 | 21.50 | 24.00 | 09.50 |
| बांदा | 79.50 | 81.50 | 81.00 | 81.50 | 80.50 |
| ललितपुर | 00.00 | 64.00 | 48.00 | 47.00 | 0.50 |
| हमीरपुर | 35.25 | 42.00 | 40.50 | 37.50 | 33.00 |

तालिका से ज्ञात होता है कि : –

अ) सर्वाधिक प्रौढ़ों (42.78%) महिला और पुरूषों को बीमारियों से बचाव के विभिन्न टीकों की जानकारी है। बांदा, ललितपुर और हमीरपुर के प्रौढ़ों ने भी ऐसी ही प्रतिक्रिया दी है।

ब) टीकों के लाभों की जानकारी होने की बात को प्रौढ़ों ने द्वितीय स्थान दिया है। जालौन और झांसी के प्रौढ़ों ने इसे सर्वाच्च प्राथमिकता प्रदान की है। इन जनपदों के अधिकतम प्रौढ़ टीकों के सम्भावित लाभ को जानते और समझते हैं।

स) बीमारी में बच्चों को टीके न लगवाने में न्यूनतम प्रौढ़ विश्वास करते हैं। अधिकांश प्रौढ़ आवश्यकतानुसार निदान हेतु बच्चों को टीके लगवाना आवश्यक समझते हैं। जनपदीय आंकड़े भी इस कथन की पुष्टि करते हैं ।

द) टीकों की कोई जानकारी न होने सम्बन्धी प्रथम उपपद की बात को भी सीमित संख्या में प्रौढ़ों ने स्वीकारा है। अधिकांश प्रौढ़ बच्चों की बीमारियों के उपचार में लगाये जाने वाले टीकों की जानकारी रखते हैं। ललितपुर, के शतप्रतिशत प्रौढ़ों को यह जानकारी है ।

## सारांश

सर्वेक्षण प्रपत्र के भाग के विभिन्न पदों पर प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विवरण संक्षेप में इस प्रकार है : -

1. अधिकांश प्रौढ़ पुरूषों ने केन्द्रों पर नामांकित कराने की प्रेरणा अनुकरण के माध्यम से ली है। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र पर शिक्षण हेतु आने वाले प्रौढ़ों के देखादेखी, उन्होंने अपने आप को पंजीकृत कराया है । महिलायें इस सम्बन्ध में पुरूषों से अधिक अग्रगामी हैं । उन्होंने शिक्षा के महत्व को समझते हुये स्वयं केन्द्रों पर अपना पंजीकरण कराया है। एक अंश तक इसमें अनुदेशकों का भी योगदान रहा है।

2. अधिक आयु में पढ़ना बहुत लाभकारी नहीं होता । पढ़ने में समय व्यय करने की अपेक्षा अन्य उत्पादक कार्यों में समय लगाना अधिक लाभकारी है। ऐसे मत उन प्रौढ़ों का रहा है जो बीच में अध्ययन छोड़ देते हैं।

3. प्रौढ़ शिक्षा, प्रौढ़ों में सीमित परिवार और बालक बालिका को समान रूप से शिक्षा दिलवाने की चेतना जागृत करने में सक्षम रही है । प्रौढ़ शिक्षा उन्हें शोषण, गरीबी और बेरोजगारी से बचने में, उद्योग धन्धों के महत्व को समझाने में, सफल रही है। उनमें अपने अधिकार और दायित्व के निर्वहन के भाव भी जागृत कर सकी है।

4. शिक्षा प्रौढ़ महिलाओं और पुरूषों के अंध-विश्वासों के परिणामों और नशे की बुराईयों के प्रति सचेष्ट कर पाई है। अधिकांश पुरूष और महिलायें प्रौढ़ शिक्षा के पश्चात दहेज प्रथा, मारपीट

को बुरा मानने लगे हैं। किन्तु मारपीट और लड़ाई आज भी बुन्देलखण्ड अंचल में बुरी बात नहीं मानी जाती ।इसे प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में दूर करने के लिये अधिक प्रयास करना अपेक्षित है।

5. प्रौढ़ शिक्षा के पश्चात अधिक संख्या में प्रौढ़ सार्वजनिक स्थानों कुओं, मोहल्ले, की सफाई की उपादयता को समझने लगे हैं ।

6. प्रौढ़ों ने मत व्यक्त किया है कि शिक्षा के पश्चात वे ग्राम विकास के महत्व को अच्छी तरह से समझने लगे हैं। उन्हें वे अब सम्बन्धित अधिकारियों से निर्भय होकर वार्ता करने में सक्षम है।

7. प्रौढ़ों में अब पूर्व की अपेक्षा अपने घरों को सुव्यवस्थित ढंग से चलाने की कला आई है। वे अपनी आय व्यय में संतुलन लाने में सक्षम हुये हैं । अपने दैनिक कार्यों को कुशलता और सुचारू रूप से चला सकते हैं।

8. अधिकांश प्रौढ़ों का मत है कि प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र का सुचारू संचालन सरकार और स्वयंसेवी संस्थानों के पारस्परिक सहयोग से ही संभव है। वे शैक्षिक उपकरणों की उपलब्धता पर भी काफी बल देते प्रतीत होते हैं ।

9. अधिकांश प्रौढ़ प्रौढ़ शिक्षा को उपयोगी और लाभकारी मानते हैं। जो अशिक्षितों को शिक्षित करने में कार्यरत हैं फिर भी लगभग एक चौथाई प्रौढ़ों ने इसे एक दिखावटी योजना माना हैं। उनकी इस धारणा के कारणों को जानकर इस भ्रमित धारणा में परिवर्तन लाने के प्रयास अपेक्षित हैं ।

## खण्ड - 6

### अनुदेशक अनुसूची

प्रत्येक प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र पर एक प्रशिक्षक होता है जिसे अनुदेशक की संज्ञा दी जाती है। वह इस शिक्षा व्यवस्था का प्रमुख केन्द्र बिन्दु है। अतः उसकी अनुभूत कठिनाईयों का विश्लेषण अपेक्षित लगता है। यह साक्षात्कार पत्री अपने में महत्वपूर्ण है। इस पत्री के प्रथम चार बिन्दु उनके शैक्षिक स्तर, उनकी रूचि के कार्य, व्यवसाय को चुनने के कारण तथा अनुदेशक प्रशिक्षण प्राप्त हैं अथवा नहीं, की जानकारी से सम्बन्धित है।

**बिन्दु - 1**

मण्डल के 140 अनुदेशकों में से 138 द्वारा ही इस बिन्दु पर सूचना प्राप्त हुई दो अनुदेशकों ने आंशिक रूप से भरा है। कक्षा 5 स्तर तक शिक्षित 12.3% अनुदेशक है। 20% कक्षा 8 स्तर तक शिक्षित हैं। इस प्रकार हाई स्कूल की शिक्षा से कम स्तरीय 32.3% अनुदेशक हैं हाई स्कूल इण्टर और बी0 ए0 तक की शिक्षा में हाई स्कूल अधिक हैं। और तीनों पर मिलाकर 63.6% अनुदेशक इस श्रेणी में आते हैं। परास्नातक तथा अध्यापन प्रशिक्षण प्राप्त कुल 4 (2.9%) अनुदेशक हैं प्रौढ़ शिक्षा अनुदेशक सम्बन्धी प्रशिक्षण प्राप्त 66.2% प्रतिशत अनुदेशक हैं। शेष 2 (1.2%) से कोई विवरण प्राप्त नहीं हुआ ललितपुर में 8 अनुदेशक ही हाई स्कूल हैं और उससे निचली शिक्षा स्तर के 12 है। शिक्षा सम्बन्धी विवरण बिन्दु -1 में अंकित किया जा चुका है।

**बिन्दु - 2**

बिन्दु में अनुदेशकों द्वारा अपनी रूचि का उल्लेख किया जाना अपेक्षित था अतः जिन कार्यों का उल्लेख किया जाना उनमें विविधता होते हुये भी अध्ययन में रूचि का उल्लेख ही अधिक है। तालिका 5.66 में अनुदेशकों की रूचि के कार्यों का विवरण दिया जा रहा है।

**तालिका 4.66**

**रुचि के कार्य**

| जनपद /कार्य | जालौन | झांसी | बांदा | ललितपुर | हमीरपुर | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अध्यापन | 20 | 11 | 5 | 11 | 10 | 57 |
| समाज सेवा | 05 | 02 | 13 | – | 08 | 28 |
| गृह कार्य खाना बनाना | 05 | 01 | – | 06 | 05 | 17 |
| सिलाई कढ़ाई | 03 | – | – | – | – | 03 |
| अन्य | 01 | 01 | – | – | 02 खेती | 08 |
| | पुलिस सेवा | खेल | – | – | 01 व्यापार | |
| | | | | | 01 टेक्नीशियन | |
| | | | | | 02 खेल | |

इस प्रकार रुचि के कार्यों में पहले स्थान पर अध्यापन और दूसरे स्थान पर समाजसेवा का कार्य उभरा है। कुछ महिला अनुदेशक भी है, जिन्होंने गृहकार्य और खाना बनाने को रुचि का कार्य बताया है। 2 ने कृषि कार्य और 3 ने सिलाई कढ़ाई के प्रति रुचि व्यक्त की है। लगभग 80% अनुदेशकों (113/140) ने ही इस बिन्दु पर कोई अभिव्यक्ति दी। रुचियों में विविधता हमीरपुर और जालौन में अधिक देखने को मिली। झांसी में चार क्षेत्रों बांदा और ललितपुर में अध्यापन के अतिरिक्त अन्य क्षेत्र में रुचि प्रदर्शित हुई ।

**बिन्दु – 3**

आप अनुदेशक क्यों बनना चाहते हैं . उत्तर में जो अभिव्यक्तियां प्राप्त हुई उनका उल्लेख तालिका में अंकित है : –

तालिका - 4.67

**अनुदेशक बनने के कारण**

| जनपद | जालौन | झांसी | बांदा | ललितपुर | हमीरपुर | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इच्छा या स्वयं प्रेरणा से | 08 | - | 02 | 06 | 21 | 37 |
| शिक्षा प्रसार विकास शिक्षा में लगाना | 17 | 05 | 12 | 02 | 05 | 41 |
| बेराजगारी | 02 | 05 | - | 03 | 02 | 12 |
| धन अर्जन | 05 | - | - | - | 04 | 09 |
| समाज सेवा भाव | - | 01 | - | - | 02 | 03 |

कुल (102/140) 73% अनुदेशाकों ने इस बिन्दु पर अभिव्यक्ति दी। सबसे अधिक (40.2%) अभिव्यक्ति शिक्षा प्रसार/विकास में योगदान देने और शिक्षण में लगाव की रही। दूसरे स्थान पर स्वयं की इच्छा अथवा प्रेरणा को कारक माना गया है। जिसका प्रतिशत 36%3%है। बेरोजगारी और धन कमाने को एक साथ रखा जा सकता है क्योंकि अनुदेशक कार्य में प्रचुर धन लाभ की सम्भावना नहीं है अतः बेरोजगारी को भी धनार्जन कारक स्वीकारा जा सकता है, 20% सदस्य इस श्रेणी के भी हैं। समाज सेवा भाव केवल 3% (3/102) में व्यक्त हुआ। इस स्थल पर एक बात यह है कि जहां रूचि के कार्य में 25% ने समाज सेवा के कार्य में रूचि बतायी वहां केवल समाज सेवा भाव 3% में ही है। अर्थात् शेष की समाज सेवा कार्य में रूचि दृष्टत है उनकी अपनी रूचि नहीं। अथवा कुछ लिखना है इसलिए उसका उल्लेख किया गया है।

**बिन्दु - 4**

इस बिन्दु का मुख्य उद्देश्य प्रशिक्षित/अप्रशिक्षित अनुदेशकों की जानकारी करना है। प्रौढ़ शिक्षा प्रशिक्षण प्राप्त अनुदेशकों का प्रतिशत 66.2% है। हमीरपुर और बांदा में लगभग शत-प्रतिशत प्रशिक्षित हैं। 133 अनुदेशकों से ही उक्त सूचना प्राप्त हुई है। जालौन में प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित का अनुपात (40:60) है। झांसी में यह अनुपात (70:30) है। ललितपुर की स्थिति रुचिकर नहीं है वहां 21% प्रशिक्षित है तो अप्रशिक्षित 79% है। इस प्रकार यदि ललितपुर में यह प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम सुचारू न चल रहा हो तो प्रशिक्षण का अभाव उसका एक वस्तुनिष्ठ कारक हो सकता है।

**बिन्दु - 5 और 6**

पांचवे में कार्यक्रम की मुख्य कमियाँ और छठवें में मुख्य बाधायें पूछी गई हैं। सभी स्थान से 29 कमियों का उल्लेख हुआ है, जिनमें 4 की आवृत्ति हुयी है। इस प्रकार 25 कमियाँ प्रकाश में आयी हे। 34 बाधाओं का उल्लेख किया गया है। जिनमें 7 की आवृत्ति हुयी है। इस प्रकार 25 ही प्रमुख बाधाओं का उल्लेख हुआ है। अतएव पांचवे में जो भी बिन्दु प्रमुख कमी होकर उभरे हैं वहीं अगले प्रश्न में मुख्य बाधा के रूप में स्वीकारे गये। प्रमुख बिन्दु अरूचिकर पाठ्यक्रम, अधिकारी वर्ग के सहयोग का अभाव और मनमानी, रात्रिकालीन प्रकाश के अभाव से युक्त अनुपयुक्त समय तब और कठिन हो जाता है, जब मिट्टी का तेल नहीं मिलता। लोगों में जागरूकता का अभाव, रूढ़िग्रस्तता, कम वेतन और उसका भी नियमित रूप से न मिलना, कुछ प्रतिभागियों को बुलाने जाना पड़ना है, और वह भी सुदूर गावों में जिनके कारण वे कार्यक्रम में बाधा महसूस करते हैं। रात के समय महिलायें कम आ पाती है, और जो बच्चे लेकर आती हैं, उनके बच्चे जब तब अनुदेशन के समय उपयुक्त खाद्य पदार्थ न सुलभ होने से, शोर मचा कर, कार्य में बाधा उत्पन्न कर देते हैं।

बिन्दु - 7

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को व्यावहारिक बनाने के लिये 29 सुझाव प्राप्त हुये । जालौन से सबसे अधिक 14 सुझाव आये हैं। बांदा ललितपुर झांसी और हमीरपुर से क्रमशः 9.7.6 और 3 सुझाव आये जो क्षेत्र, सुझाव सम्बन्धी उल्लेखित हैं, उन्हें क्रम से इस प्रकार रखा जा सकता है। जागरूकता प्रशिक्षण अवधि, व्यावसायिक सुझाव, उपकरणों और कच्चे माल की सरकार द्वारा आपूर्ति मनोरंजन और धन शिक्षा के प्रति सम्बन्धी,हैं। लोगों में जागरूकता लाने के लिये शिविर लगा कर जन सम्पर्क किया जाय, यदि आवश्यकता पड़े तो कमेटी का गठन हो, जिसके सदस्य घर - घर जाकर भी प्रौढ़ों की शिक्षा उपादियता समझायें, ताकि वे पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय क्रियाकलापों में सकारात्मक प्रतिभाग कर सकें। प्रौढ़ शिक्षा का प्रशिक्षण कार्यक्रम रोचक हो, रोचक ढंग से प्रस्तुत हो, लगातार दो वर्ष चले। रोचक बनाने की दिशा में संगीत कार्यक्रम में सहायता के लिये वाद्य यंत्र उपलब्ध कराये जाय; यदा कदा फिल्म पट्टिकायें दिखायी जायें और टी0वी0 द्वारा प्रौढ़ शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रम दिखाये जाने के लिये, सरकार, प्रत्येक केन्द्र पर, एक सेट का होना, सुनिश्चित करे। अन्तःद्वारी खेल सुविधायें भी व्यावसायिक दृष्टि से प्रौढ़ों को समुन्नत बनाने के लिये कृषि कार्य, पशुपालन, मत्स्य पालन, कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण कराया जाये । व्यावसायिक दक्षता के लिये उपकरण और कच्चे माल की व्यवस्था हो। दुग्ध उत्पादन व्यवसाय को विकसित किया जाय और सहकारी समिति के गठन से दूध की निकासी सुनिश्चित की जाये। जो कच्चा माल जहां आसानी से मिल सकें, उस पर आधारित कुटीर उद्योग को अधिक बढ़ावा दिया जाय जैसे टोकरी बनारा, चर्म-शिल्प, रस्सी बनाना, आदि।

महिलाओं को गृहकार्य में दक्षता प्रदान करने के साथ सिलाई कढ़ाई बुनाई का प्रशिक्षण दिया जाये। इसके लिये जो महिलायें व्यवसाय सम्बन्धी उपकरण न पा सकें, उसकी व्यवस्था सरकार या केन्द्र करे, जैसे सिलाई और स्वेटर बुनने की मशीन, ताकि उत्पादन बढ़ाया जा सके। अर्थसम्बन्धी व्यवस्था में अन्य सुझाव भी आये हैं। प्रतिभागियों को प्रलोभन और प्रोत्साहन, छात्रवृत्ति , प्रतिभागियों के साक्षर होने पर ट्राइसेम योजनाओं में ऋण देते

समय उन्हें वरीयता दी जाय। अनुदेशकों ने अपने लिये भी बहुत कुछ कहा है जैसे मानदेय में वृद्धि, पूरे वेतन मे रखा जाना, और सरकारी कार्य से कहीं आने जाने पर यात्रा भत्ता दिया जाये।

**बिन्दु – 8 और 9**

इससे, इस जानकारी की अपेक्षा की गई है कि कितने प्रतिभागी स्वयं आये, मनाकर लाये गये, कितने सरकारी तौर पर भेजे गये और कितने किसी अन्य विधा से आये। प्रश्न 8 अधिक व्यापक है। उसमें स्त्री पुरूषों को सम्मिलित किया गया है। जबकि ऊपर के प्रश्न महिला प्रतिभागियों के सन्दर्भ में सूचना प्रश्न 9 के माध्यम से मांगी गई ।

प्रश्न 8 की 139 सूचनाओं के अनुसार 61.9% को मनाकर लाने अथवा प्रेरित करके लाने की बात उभर कर आयी है। 36.7% सरकारी व्यवस्था से आये 1.7% के आने के कारण स्पष्ट नहीं है। जालौन और हमीरपुर में स्वत: आने वालों की संख्या अधिक ही है। महिलाओं के सम्बन्ध में प्राप्त सूचना व्यक्त करती है कि 45.3% महिलायें प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र पर अध्ययन हेतु स्वयं आईं जबकि 36% मनाकर और समझा बुझाकर लायी गयी । 14.4% महिला प्रतिभागी सरकारी व्यवस्था से आयी और 1.4% प्रतिभागी के आने के बारे में यही उचित लगता है कि इसे 36% के साथ जोड़कर 37.4% मान लिया जाय।

**बिन्दु – 10**

प्राय: प्रौढ़ शिक्षा के प्रशिक्षार्थी बीच में ही कार्यक्रम से अलग हो जाते हैं। उसके क्या-क्या कारण हैं? इस समूह की व्याख्या के अनुसार, उसका उल्लेख ही, इस बिन्दु के अन्तर्गत किया जाना अपेक्षित है। 22 कारण उभर कर आये, पर इनमें से कुछ सार्व कारण रहे जैसे रूचि का अभाव या अरूचिकर शिक्षा प्रणाली अथवा प्रतिभागियों में अध्ययन की अपेक्षा शिल्प कार्य में अधिक रूचि, पारिवारिक आर्थिक विषम स्थिति अथवा कार्यक्रम में अर्थलाभ होने की

सम्भावना का न होना, गृहकार्य अथवा कृषि कार्य में अधिक व्यस्तता। इन प्रकार कुल 17 कारण प्रकाश में आये। समाजशास्त्रीय कारणों से अंधविश्वास पर ध्यान, अधिक उम्र के कारण केन्द्र पर आने में संकोच, विवाह हो जाने पर महिला प्रतिभागियों के आने पर उसके वर पक्ष द्वारा आने-देने में अवरोध उत्पन्न करना है। एक कारण अशिक्षा भी उभरा है। प्रशिक्षण काल को अनुपयुक्त बताया गया और जातिगत असमानता के कारण भी प्रतिभागी बीच में अध्ययन छोड़ जाते हैं। एक कारण कुछ अस्पष्ट रहा, सम्बन्ध ठीक न होना किससे किसके सम्बन्ध अनुपयुक्त हो गये जो छोड़ने का कारण बन गये, में कई द्वय हो सकते हैं। एक सदस्य ने अपने केन्द्र पर बीच में छोड़ने की प्रक्रिया को बिल्कुल नकार दिया ।

**बिन्दु - 11 :**

इस बिन्दु के माध्यम से केन्द्र में प्रशिक्षण के उपलब्ध उपकरणों सम्बन्धी जानकारी अपेक्षित थी सात सामग्रियों के नाम दिये गये हैं और शेष तीन स्थान अनुदेशकों द्वारा, जो सामग्रियाँ हों और इन गिनायी गई सामग्रियों से भिन्न हों, लिखने के लिये रिक्त छोड़ गये। ललितपुर के अनुदेशकों ने केवल पुस्तकें और मानचित्र ही केन्द्रों पर उपलब्ध रहने की सूचना दी । जालौन झांसी और हमीरपुर रेडियो, पत्रिकायें और हारमोनियम को, केन्द्र पर होने को, स्वीकार किया । बांदा जनपद के केन्द्र अनुदेशकों ने पुस्तकें मानचित्र, वीडियो, समाचार पत्र, सिलाई मशीन, और टेप को, केन्द्र पर होने की सूचना दी इससे यह पता चलता है कि सभी जनपद के केन्द्रों पर उपस्थित उपकरणों में समरूपता का अभाव है जबकि उनमें एक रूपता होनी चाहिये थी।

**बिन्दु - 12 :**

उपलब्ध उपकरणों के अतिरिक्त आप किन उपकरणों के होने की सलाह देना चाहते हैं ?" इस बिन्दु के उत्तर में जालौन, झांसी, बांदा, ललितपुर, और हमीरपुर ने वस्तुयें और होनी चाहिये, का उल्लेख किया है। इन 17 वस्तुओं में प्रोजेक्टर की मांग दो जनपदों से प्राप्त हुयी है। बुनाई और सिलाई मशीनों की मांग जालौन और बांदा से आयी है। कहानी

तथा उपयोगी पुस्तकों के होने का सुझाव बांदा और झांसी के अनुदेशकों ने किया है। हमीरपुर के अनुदेशकों का सुझाव विभिन्नीकृत नहीं है। उनके अनुसार व्यवसाय के उपकरण और मनोरंजन के उपकरण की मांगं झलकती है। जालौन ने दीवाल घड़ी, कैरम, बालीबाल, महापुरूषों के आकृति चित्र और समाचार पत्र पाने की अपेक्षा की है तो बांदा ने उनके केन्द्रों पर मामूली सी वस्तुऐं श्याम पट्ट और चाक के न होने का संकेत देते हुये उसे उपलब्ध कराने का सुझाव दिया है। ललितपुर के केन्द्रों से टी0वी0 और टेप उपलब्ध करा दिये जाने के संकेत दिये हैं।

**बिन्दु - 13 :**

यह प्रश्न यह अपेक्षा करता है कि किस ﴾किन-किन﴿ जाति/जातियों के लोग प्रौढ़ शिक्षा के लिये अधिक संख्या में आते हैं ? इससे प्राप्त जनपद बार सूचना नीचे तालिका में अंकित हैं ।

**तालिका 4.68**

**जातियों की संख्या**

| जनपद | जालौन | झांसी | बांदा | ललितपुर | हमीरपुर | योग ﴾बुन्देलखण्ड﴿ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जातियों की संख्या | 02 | 02 | 04 | 03 | 02 | 13 |

जातियां जो मुख्यतः प्रकाश में आई वे पिछड़ी सवर्ण ﴾उच्च वर्ग﴿, सामान्य ﴾सभी जाति﴿ अल्प-संख्यक, अनुसूचित जाति हैं। जनजाति का उल्लेख पूरे मण्डल ने नहीं किया । जातिगत उल्लेख नीचे की सारणी में दिया गया है।

**तालिका 4.69**

**जाति प्रकार**

| | पिछड़ी जाति | अनुसूचित जाति | अल्प संख्यक | सामान्य सभी जाति | सवर्ण उच्च वर्ग | कुल जातियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जनपद संख्या में | 04 | 02 | 02 | 02 | 03 | 05 |

इस प्रकार यह सारणी संकेत करती है कि बुन्देलखण्ड के केन्द्रों पर सभी जातियों के लोग प्रौढ़ शिक्षा का लाभ उठाने आते हैं। जालौन के केन्द्रों में मुख्यत: अल्पसंख्यक ` और यादव व पाल जातियों का उल्लेख किया है। झांसी जनपद के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर सामान्य रूप से सभी जातियां अध्ययन हेतु आती हैं। बांदा की सूचना है कि वहां के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर निम्नजाति ﴾अल्पसंख्यक﴿, उच्च जाति, पिछड़ी जाति ﴾कुर्मी﴿ और अनुसूचित जाति के सदस्य प्रतिभाग हेतु आते हैं। ललितपुर जनपद के केन्द्रों पर पिछड़ी जाति, हरिजन और निर्बल वर्ग ﴾अल्पसंख्यक﴿ के लाभार्थी आते हैं। हमीरपुर ने सभी `जाति और सवर्ण का केन्द्रों पर आना स्वीकारा है।

**बिन्दु - 14**

इस बिन्दु द्वारा अन्य सुझाव मांगे गये हैं। जनपद वार सुझाव की संख्या नीचे सारणी में उल्लिखित है।

**तालिका - 4.70**

**सुझावों की संख्या**

| जनपद | जालौन | झांसी | बांदा | ललितपुर | हमीरपुर | बुन्देलखण्ड |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सुझावों की संख्या | 03 | 02 | 03 | 10 | 13 | 31 |

उक्त सारणी यह स्पष्ट संकेत देती है कि बुन्देलखण्ड से आये 31 सुझावों में अधिकांश सुझाव (70%) हमीरपुर और ललितपुर जनपद से प्राप्त हुये हैं। झांसी से सबसे कम 2 सुझाव और जालौन और बांदा से 3-3 सुझाव मिले हैं। कार्यकारी सुझाव तो, जिन जनपदों ने कम सुझाव दिये हैं, वहीं से प्राप्त हुये हैं जैसे अधिकारी केन्द्र समय से आये, कार्यक्रम स्थायी किया जाय, बैठने की उचित व्यवस्था हो, उम्र का बन्धन न हो, कार्यक्रम और व्यावहारिक बनाया जाय, जन सामान्य की शिक्षा सम्बन्धी जागरूकता लोगों में बढ़ायी जाय, प्रोजेक्टर के माध्यम से, हमीरपुर से प्राप्त हुआ। जनशिक्षण निलयम केन्द्र, केवल न्याय पंचायत स्थल पर न होकर, प्रत्येक गांव सभा में हो, इससे प्रतिभागियों को बहुत दूर शिक्षा हेतु नहीं जाना पड़ेगा। दो सुझाव बड़े अस्पष्ट से आये जैसे आधुनिकीकरण किया जाय। (किसका ? कैसे?) शासन को इस ओर ध्यान देना चाहिये (इसका विशिष्टीकरण होना चाहिये था)। हमीरपुर ने अधिक भौतिक उपकरणों की आवश्यकता पर बल देते हुये नौ बिन्दु दिये हैं (टी०वी०, टेप, वीडियो, समाचार पत्र, बुनाई कताई मशीन, कैमरा, दीवाल घड़ी, कैरम, और प्रोजेक्टर)। दो जनपदों से अनुदेशकों के मानदेय बढ़ाये जाने का उल्लेख मिला है। कुछ ने अनुदेशकों की स्थायी किये जाने का भी सुझाव दिया है। सबके लिये नाश्ते की मांग की गई है, महिलाओं के लिए पौष्टिक आहार उपलब्ध कराया जाय तथा उन्हें आर्थिक सहायता भी दी जाय। महिला जन शिक्षा निलयम का निरीक्षण महिला अधिकारियों द्वारा ही कराया जाय। अन्त में एक सुझाव यह आया है कि इस कार्यक्रम को ब्लाक बार आयोजित किया जाय जहां प्रदर्शनी के माध्यम से जनशिक्षा के प्रति जागरूकता का संवर्द्धन किया जाय।

## सारांश

प्रत्येक प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में प्रौढ़ शिक्षा की व्यवस्था अनुदेशक द्वारा होती है। अनुदेशक साक्षात्कार अनुसूची का सारांश निम्नवत है : -

1. अनुदेशकों के शैक्षिक स्तर का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि कक्षा 5 उत्तीर्ण 12.3% कक्षा 6 से 9 तक 32.3% तथा हाई स्कूल से एम0ए0 63.6% है। जिसमें हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त अनुदेशकों का प्रतिशत अधिक है।

2. जहांतक प्रौढ़ शिक्षा में कार्यरत अनुदेशकों के रूचि लेने का प्रश्न है उसमें विविधिता है अध्यापन कार्य समाज सेवा, गृह कार्य (खाना बनाना) सिलाई कढ़ाई करना स्त्रियों के लिये सम्बन्धित रूचियां ज्ञात हुई हैं। लगभग (1/3 भाग) एक तिहाई अनुदेशकों की शिक्षण कार्य में रूचि है।

3. केवल 37 (36.3%) अनुदेशकों ने इच्छा से एवं स्वयं प्रेरणा से प्रौढ़ शिक्षाण कार्य करने में रूचि दिखाई है। शिक्षा प्रसार/विकास में योगदान की इच्छा 40.2% अनुदेशकों ने प्रदर्शित की है।

4. प्रशिक्षणप्राप्त अनुदेशक 66.2% तथा अप्रशिक्षित 33.8% हैं।

5. प्रौढ़ शिक्षा में आने वाली बाधाओं की जानकारी, अनुदेशकों से लेने पर, ज्ञात हुआ कि प्रमुख बाधायें पाठ्यक्रम का अरूचिकर होना, अधिकारियों के सहयोग का अभाव रात्रि शिक्षण में प्रकाश का अभाव, अनुदेशकों को कम वेतन तथा नियमित रूप से वेतन न मिलना, महिलाओं का बच्चे लेकर आना तथा रात्रि में शिक्षण की ही व्यवस्था हाना है।

6. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को व्यावहारिक बनाने के लिये अनुदेशकों से सुझाव मांगने पर, जागरूकता के लिये प्रचार माध्यम होना, उपकरणों की पर्याप्त मात्रा में केन्द्र पर उपलब्धता, कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिये मनोरंजन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को संचालन, आयोजन किया जाना, प्रत्येक केन्द्र में टी0वी0 सेट का होना, विभिन्न व्यवसायों के विशिष्ट व्यक्तियों को बुलाना, अर्थ का प्रावधान, प्रमुख सुझाव आये हैं।

7. प्रौढ़ शिक्षण के 61.9% प्रतिभागी स्वयं केन्द्र पर आते हैं तथा 36.7% मनाकर लाये जाते हैं। 45.3% प्रतिशत महिलायें स्वयं अपने इच्छा से आती हैं। 36 प्रतिशत बुलाकर आती हैं।

8. प्रतिभागियों के प्रौढ़ शिक्षा को बीच में छोड़ने के प्रमुख कारण- रूचि का अभाव, गृह एवं कृषि कार्यों से समय न मिलना, अधिक उम्र के कारण केन्द्र पर आने में संकोच, महिलाओं को, उनके घर वालों का हस्ताक्षेप आदि हैं। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का अरूचिकर होना भी एक मुख्य कारण है।

9. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में शिक्षण उपकरणों का अभाव और उपकरणों के होते हुए भी उनके विषय में लाभार्थियों को सूचना नहीं दी जाती है। तथा उनके प्रयोग करने की विधि अनुदेशकों को नहीं सिखाई जाती, उनके उपयोग का समुचित ज्ञान नहीं है, आदि विशेष उल्लेखनीय कारण हैं।

10. कुछ केन्द्रों के अनुदेशकों ने श्याम पट्ट और चाक तक के अभाव की ओर संकेत किया है।

11. प्रौढ़ शिक्षा में पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति, अल्प संख्यक, सवर्ण सभी प्रकार के प्रतिभागी शिक्षा ग्रहण करने आते हैं।

12. अनुदेशकों से कार्यक्रम को और सार्थक बनाने के लिये सुझाव मांगने पर कुछ व्यावहारिक सुझाव प्राप्त हुये है। जिनमें, बैठने की उचित व्यवस्था, समय की निश्चितता, कार्यक्रम की निरन्तरता, उपकरणों के रख रखाव, देख भाल की ठीक व्यवस्था उनका प्रयोग, उपयोग, प्रति दिन किया जाये, प्रोजेक्टर, टी0वी0, कैसेट के माध्यम से तथा श्यामपट की सहायता से शिक्षण किया जाये, महिलाओं एवं पुरूषों के केन्द्र अलग अलग होना प्रमुख है ।

## खण्ड - 7

## ग्राम प्रधान

इस अनुसूची के माध्यम से शोध-कर्ता का यह प्रयास रहा है कि ग्राम प्रधान, जन शिक्षा विलयम (प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र जो उनके समीपस्थ है) के कार्यकलाप से किस सीमा तक सन्तुष्ट है, उनकी उस केन्द्र से अपनी क्या अपेक्षायें हैं ? उसमें, उनके दृष्टिकोण से, सुधार किन-किन दिशाओं में सम्भव है और कैसे? उनका उस केन्द्र पर कितना प्रतिभागन होता है? किस वर्ग के लोग उनके क्षेत्र में अशिक्षित हैं? तथा कुछ प्रतिभागियों के कुछ दिन उपस्थित रह कर शिक्षा केन्द्र छोड़ देने के, उनके मतानुसार क्या कतिपय कारण हैं; पूर्व में हुए अनुवर्ती अध्ययन (यदि हुये हों) के क्या परिणाम प्राप्त हुये ? इन्हीं सब बिन्दुओं की जानकारी इस अनुसूची के माध्यम से की गई । प्राप्त दत्तों के विश्लेषण से जो कुछ प्रकाश में आया उसका उल्लेख निम्नवत है ।

**विश्लेषण :**

ग्राम प्रधान के बारे में सामान्य आवश्यक जानकारियों के उपरान्त प्रश्न-श्रृंखला प्रारम्भ होती है। प्रश्न 1 में दो ही प्रकार उत्तर अपेक्षित थे (आप प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के कार्यकलाप से सन्तुष्ट हैं ? पर जालौन के दो सूचनाकारों ने इस बिन्दु में कोई प्रतिक्रिया नहीं दिया है। इस प्रकार तीन प्रकार की प्रतिक्रियायें हो गई। हां, नहीं और प्रतिकूल। जनपद बार प्रश्न से सम्बन्धित सूचना आगे की तालिका 4.71 में अंकित है : -

तालिका - 4.71

जनपद बार प्रश्नोत्तर

| जनपद | सूचना का प्रकार (प्रश्न-1) | | | सन्तुष्ट न होने के कारणों की संख्या (प्रश्न-2) |
|---|---|---|---|---|
| | हां | नहीं | अप्रतिकृत | |
| जालोन | 36 | 02 | 02 | 03 एक अपतिकृत ने कारण दिया था । |
| झांसी | 19 | 01 | - | 02 (एक हां ने भी कुछ कहा) |
| बांदा | 20 | - | - | - |
| ललितपुर | 17 | 03 | - | 02 |
| हमीरपुर | 37 | 03 | - | 01 |
| बुन्देलखण्ड | 129 | 09 | 02 | 08 |

1 एवं 2: उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है अधिकांश (92%) प्रमुख व्यक्ति अपने समीपस्थ प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के कार्यकलापों से सन्तुष्ट है। दो सदस्य कोई निश्चित निर्णय नहीं ले पाये, जबकि 9/140 (6.4%) ने कार्यकलाप से असन्तोष व्यक्त किया है। कुल 9 'नहीं' व्यक्त करने वाले सदस्यों से 8 कारण (उनके असंतोष के) ही व्यक्त हुये। बांदा से प्रश्न दो पर कोई उत्तर नहीं आया। जालौन के सदस्यों द्वारा किये गये तीन कारण, वजनदार हैं (क) अनुदेशक का समय से न आना (ब) प्रतिभागियों का समय से न आना (स) अनुदेशक को मानदेय नियमित रूप से समय से न मिलना । झांसी ने असन्तोष का कारण (1) मनोरंजन के साधनों का अभाव (2) जनशिक्षा निलयम का अशिक्षित समुदाय के मध्य, न होना है। हमीरपुर ने अपने असंतोष का कारण सरकार और अनुदेशकों की लापरवाही बताया, तो ललितपुर ने प्रतिभगियों की रूचि और कक्षा की अनियमितता को दोषी पाया।

3. आपके क्षेत्र के सबसे अधिक किस वर्ग के लोग अशिक्षित हैं ?

सूचना के अनुसार पहले स्थान पर हरिजन वर्ग के अशिक्षित होने का उल्लेख

किया गया है, इसके बाद पिछड़े वर्ग के लोगों का अशिक्षित होना स्वीकारा गया है; अन्त में यह भी उभर कर आया है कि कुछ क्षेत्रों में सवर्ण वर्ग भी अशिक्षित है। ऐसी स्थिति बुन्देलखण्ड के सभी जनपदों की है ।

4. यह प्रश्न उन कारणों की जानकारी चाहता है जिनकी उपस्थिति से बाध्य होकर उत्तरदाता के क्षेत्र में कुछ लोग प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र को कुछ समय के बाद छोड़ देते हैं । पूरे मण्डल से जनपदवार जो कारणों की संख्या उपलब्ध हुई उसका उल्लेख नीचे सारणी में दिया गया है ।

**तालिका - 4.72**

**प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र छोड़ने के कारण**

| जनपद | जालौन | झांसी | बांदा | ललितपुर | हमीरपुर | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कारणों की संख्या | 04 | 01 | 07 | 03 | 01 | 16 |

तालिका के अनुसार सबसे अधिक कारण 7 बांदा ने दिये । जालौन ने 4 और ललितपुर ने 3 कारण दिये यद्यपि झांसी और हमीरपुर ने एक एक ही कारण दिये पर वे विशेष महत्वपूर्ण हैं। हमीरपुर द्वारा प्रस्तुत कारण कार्यक्रम के महत्त्व को, उन प्रतिभागियों का न समझना, जालौन में जागरूकता का भाव और बांदा में काम के प्रति सही जानकारी का अभाव, के रूप में उभरा है। झांसी जनपद के ग्राम प्रमुख ने बताया की साक्षर होने के बाद भी वे कोई रोजगार पा नहीं पाते हैं इसलिये इस कार्यक्रम से, कुछ लाभ न हो सकने के कारण, उन्होंने नाता तोड़ लिया। प्रतिभागियों ने अपनी व्यस्तता के कारण भी कार्यक्रम को छोड़ा है। यह व्यस्तता, बांदा के अनुसार महिलाओं के लिये गृहकार्य अधिक, पुरूषों के लिये कृषि कार्यों में अधिक व्यस्तता के रूप में, उभरी है। ललितपुर ने, इसे, धन्धा करने बाहर चले जाते हैं, कह कर सूचना दी है। इसके अतिरिक्त अन्य कारण जो प्रकाश में आये, उनमें कुछ केन्द्र स्थिति से सम्बन्धित हैं और शेष व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित । व्यक्ति विशेष से

सम्बन्धित कारणों में आर्थिक परेशानी, रूचि का न होना, समय का अभाव, केन्द्र का गांव से दूर होना, महिलाओं का विवाहित होने पर घर वालों द्वारा कार्यक्रम में रोक लगा दिया जाना, उभर कर आये हैं, जो कारण केन्द्र से अवगुंठित हैं वे अरूचिकर पढ़ाई, समय से पाठन सामग्री का न मिलना, केन्द्र पर उपर्युक्त वातावरण न होना और मानदेय कम होने के कारण अनुदेशक का इस कार्यक्रम में वांछित रूचि न लेना, उभार कर आये हैं।

इस प्रकार जो थोड़े से कारण स्पष्टतः उभर कर आये उनमें प्रमुख जागरूकता का अभाव ही है क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य मात्र व्यवसाय पाना नहीं है।

5. प्रमुखों द्वारा दी गई टिप्पणियां किस सीमा तक परि-निरीक्षणों के आधार पर की गई हैं, की जानकारी बिन्दु 5 करता है अधिक आवृत्ति वाले परिनिरीक्षण कम आवृत्ति वाले परिनिरीक्षणों की अपेक्षा वस्तुनिष्ठा के अधिक समीप होंगे। कुल 133 ग्राम प्रमुखों/समाज सेवकों ने इस बिन्दु पर अपनी प्रतिकियायें दी हैं। माह में एक बार परिनिरीक्षण करने वालों का प्रतिशत (39.8) सबसे अधिक रहा। माह में दो से तीन बार तक केन्द्र पर जाने को 30.8% ने स्वीकारा है। एक ही माह में चार से पांच बार केन्द्र के कार्यकलाप को देखने के लिये 21.8% सदस्य जाते रहे हैं। एक माह में 10 बार या इससे अधिक प्रतिदिन (6 सदस्यों द्वारा) ; 5.3% समाज सेवी/ग्राम प्रमुख जाते रहे हैं। साल भर में केवल एक बार केन्द्रों को देखने वाले 3/133 (2.3% ही हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर ग्राम प्रमुख/समाज सेवक प्रायः आते रहते हैं, और उनके द्वारा दी गई टिप्पणियां सार्थक हैं ।

6. इस प्रश्न पर निरीक्षणकर्ता अधिकारी का नाम जानने की सूचना एकत्र की जानी थी। इसमें प्रमुखतः जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी क्षेत्रीय परियोजना अधिकारी सहायक परियोजना अधिकारी, पर्यवेक्षक/पर्यवेक्षिका हैं। कहीं-कहीं से ऐसे उल्लेख भी मिले हैं कि कोई नहीं आता ।

7 और 8 ;- प्रश्न 8 प्रश्न 7 पर आधारित है। प्रश्न 7 पर हां. में उत्तर आने पर ही, बिन्दु 8 पर कुछ उल्लेख किया जना आवश्यक है । क्या आपके क्षेत्र प्रौढ़ शिाक्षा पर अनुवर्ती अध्ययन हुआ है? उत्तर में हां अथवा नहीं और कब सम्बन्धी सूचना प्राप्त होनी थी। बिन्दु 7 अप्रतिकृत भी रह गया है। इस प्रकार बिन्दु 7 पर प्राप्त जानकारी नीचे तालिका वद्ध है।

**तालिका - 4.73**

**प्रौढ़ शिक्षा पर अनुवर्ती अध्ययन**

| प्रतिक्रिया<br>जनपद | हां | नहीं | अप्रतिकृत<br>{कोई प्रतिक्रिया नहीं} | योग |
|---|---|---|---|---|
| जालौन | 06 | 22 | 12 | 40 |
| झांसी | 02 | 15 | 03 | 20 |
| बांदा | 05 | 04 | 11 | 20 |
| ललितपुर | 01 | 19 | - | 20 |
| हमीरपुर | 04 | 08 | 28 | 40 |
| कुल | 18 | 68 | 54 | 140 |
| प्रतिशत | 12.9% | 48.6% | 38.5% | 100.0% |

उपर्युक्त तालिका स्पष्ट करती है कि 38.5% के सदस्यों ने इस बिन्दु पर अपनी कोई प्रतिक्रिया नहीं। 48.6% ने किसी प्रकार के अनुवर्ती अध्ययन के किये जाने को नकार दिया है। केवल 12.9% सदस्योंने यह स्वीकारा है, कि उनके केन्द्र पर अनुवर्ती अध्ययन सम्पादित किया गया है। इस प्रकार इन्हीं 12.9% {18 व्यक्तियों} द्वारा प्रश्न 8 का उत्तर दिया जाना अपेक्षित रहा। परन्तु इन 18 व्यक्तियों में से केवल 3 {एक जालौन, 2 बांदा} द्वारा

तत्सम्बन्धित विवरण प्राप्त हुये । जालौन से प्राप्त उत्तर अनुवर्ती अध्ययन का प्रतिफल नहीं लगता, क्योंकि यह तो उत्पादन है {वृक्षारोपण कार्य हुआ है} और अल्प बचत में केन्द्र की उपलब्धि रही है} बांदा जनपद में हुये अनुवर्ती अध्ययन का प्रतिफल सार्थक है। उसके अनुसार साक्षरता में वृद्ध हुई है। और शिक्षा उचित रूप से चल रही है। ललितपुर हमीरपुर और झांसी के जिन सदस्यों ने केन्द्र पर अनुवर्ती अध्ययन होने की बात स्वीकार की, उन्होंने किसी भी परिणाम का उल्लेख नहीं किया ।

प्रश्न 9 और 10 ;-

**प्रश्न 10**, प्रश्न 9 के उत्तर पर आधारित है। प्रश्न है, क्या आप प्रौढ़ शिक्षा में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आते हैं? प्राप्त सूचना नीचे तालिका बद्ध है : -

**तालिका 4.74**

**सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जाना**

| प्रतिक्रिया प्रकार | जालौन | झांसी | बांदा | ललितपुर | हमीरपुर | योग | % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हां | 31 | 17 | 10 | 6 | 35 | 99 | 70.7% |
| नहीं | 02 | 02 | 10 | 05 | 03 | 22 | 15.7% |
| कोई उत्तर नहीं | 07 | 01 | - | 09 | 02 | 19 | 13.6% |
| योग: | | | | | | 140 | |

उक्त तालिका के आधार पर कहा जा सकता है कि अधिकांश समाज सेवक अथवा ग्राम प्रमुख {70.7%} प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र पर होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों का देखने आते हैं 19 व्यक्तियों ने इस बिन्दु पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। अतः शेष 22 (15.7%) प्रदर्श के सदस्यों द्वारा प्रश्न

10 पर उत्तर की अपेक्षा थी, किन्तु यहां भी 22 में से केवल 3 ने प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र पर होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उपस्थित न होने का करण प्रस्तुत किया है। कारण के प्रारूप निम्नवत हैं। जहां जालौन जनपद के सदस्य ने अपने पास समय के अभाव के कारण सांस्कृतिक कार्यक्रम के अवसर उपस्थित न हो पाने को स्वीकारा है वहीं ललितपुर ने कहा कि जब केन्द्र पर सांस्कृतिक कार्यक्रम होता ही नहीं है तो देखने जाने का प्रश्न ही नहीं उठता । बांदा ने उपकरणों के अभाव में केन्द्र पर सांस्कृतिक कार्यक्रम न होने का उल्लेख किया है।

प्रश्न - 11

इस अन्तिम प्रश्न द्वारा ग्राम प्रधान से प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को अधिक प्रभावी ढंग से चलाने के लिये सुझाव मांगे गये हैं। कुल 20 सुझाव मांगे गये हैं।

**तालिका 4.75**

**प्रभावी ढंग से केन्द्र चलाने के सुझाव**

| जनपद | जालोन | झांसी | बांदा | ललितपुर | हमीरपुर | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सुझाव संख्या | 03 | 02 | 09 | 03 | 03 | 20 |

तालिका के अनुसार 45% सुझाव बांदा से, जालोन, ललितपुर और हमीरपुर से 15-15 प्रतिशत सुझाव आये हैं। झांसी से 10% सुझाव आये।

बांदा से प्राप्त दो सुझावों को एक माना जा सकता है। यथा मनोरंजन के उपकरण होना चाहिये और सचल चलचित्र की व्यवस्था हो। सुझाव 3 और 4 केन्द्र की कमी को पूरा किये जाने पर केन्द्रित है; अर्थात केन्द्र पर टाट-पट्टी और फर्श होना चाहिये तथा केन्द्र पर तेल या बिजली भी।

कार्यक्रम के बारे में सुझाव यह भी दिया गया है कि समय बढ़ाया जाय और प्रौढ़ शिक्षा को व्यवसायोंन्मुखी बनाया जाय तथा प्रौढ़ शिक्षा के प्रति जन सामान्य को जागरूक बनाने के लिये घर-घर सम्पर्क किया जाय। सुझाव 5 और 7 पुनर्वलन से सम्बन्धित हैं । पहले के अनुसार अनुदेशक के मानदेय बढ़ाया जाय और दूसरे के अनुसार प्रतिभागियों को प्रोत्साहन स्वरूप कुछ वस्तुयें, उपलब्ध करायी जायें।

ललितपुर ने प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को अधिक प्रभावी ढंग से कार्य सम्पादन के लिये, एक गांव में दो केन्द्र, खोलने की मांग के साथ कहा है कि अनुदेशक को रखने और मानदेय बंटवाने का कार्य, ग्राम प्रधान के माध्यम से किया जाये।

झांसी ने, प्रभावी उत्पादकता के लिये, केन्द्र की इमारत को विभागीय होना, आवश्यक माना गया है तथा वर्ष में 2 बार महिला प्रशिक्षण शिविर लगायें जायें।

जालौन, कार्यक्रम को अधिक प्रभावी बनाने के लिये पाठ्यक्रम के सरलीकरण को, उपयोगी मानता है। केन्द्र की साज-सज्जा अच्छी होनी चाहिए। पैसे के बंटवारे में सारा काम ग्राम सभा द्वारा ही सम्पन्न कराया जाये, अन्य सुझाव हैं।

हमीरपुर ने अनुसूचित जाति वालों को अधिक सुविधायें दिये जाने पर बल दिया है तथा प्रतिभागियों को व्यावसायिक उपकरण दिये जाये और सरकारी अनुदान को की वृद्धि की जाय को, महत्वपूर्ण माना है।

## सारांश

थोड़े में यह कहा जा सकता है कि यह अनुसूची, जो कुछ, इससे जानकारी प्राप्त करने की अपेक्षा थी, देने में पर्याप्त सीमा तक सफल रही। जहां इसने यह बताया कि ग्राम प्रधान (अधिकांश) जन शिक्षण निलयम के कार्य कलापों से सन्तुष्ट है वहीं जो असन्तुष्ट हैं उन्होंने अपने असन्तोष के महत्वपूर्ण कारणों का उल्लेख किया है जैसे - (1) प्रतिभागियों और अनुदेशकों द्वारा केन्द्र पर आने में अनियमितता (2) मानदेय यथेष्ट न होने की स्थिति में अनुदेशकों का कार्यकलाप में कम रूचि लेना (3) मनोरंजन के यथेष्ट साधनों का अभाव है। (4) कुछ संकेत सरकार की ओर से बरती गई लापरवाही के भी दिये गये हैं। (5) सबसे अधिक अशिक्षित अनुसूचित वर्ग रहा है इसके बाद पिछड़ी जाति समुदाय और (6) कुछ सीमा तक सवर्ण वर्ग के लोगों का भी अशिक्षित होना स्वीकारा गया है।

प्रायः कुछ प्रतिभागी केन्द्र में सम्मिलित होकर कुछ दिनों के बाद अपने को कार्यक्रम से अलग कर लेते हैं। इससे सम्बन्धित कई कारण सुझाये गये हैं इन कारणों के निराकरण का, केन्द्र के कार्यकलापों को, अधिक प्रभावी बनाने के लिये, निम्नलिखित सशक्त मुद्दों की अभिव्यक्ति हुई है।

1. कार्यक्रम के पाठ्यक्रम को सरल और रूचिकर बनाया जाय,
2. इसको व्यवसायोन्मुखी बनाया जाय, ताकि वह भविष्य में अर्जन का साधन बन सके।
3. व्यवसाय सम्बन्धी उपकरणों की प्रतिपूर्ति के लिये सरकार से अपेक्षाएं की गयी हैं।
4. अनुदेशक और प्रतिभागियों को प्रतिबलन के रूप में कुछ प्रोत्साहन स्वरूप सहायता दी जाय।
5. जन साधारण को अभी और, इस कार्यक्रम के प्रति, जागरूक बनाने के लिये चलचित्र व्यवस्था और घर-घर सम्पर्क किया जाना, लाभप्रद हो सकता है।

केन्द्र की प्रभावोत्पादकता बढ़ाने के लिये कुछ सुझाव गांव सभा

द्वारा अनुदेशकों की भर्ती और व्यय विवरण सम्बन्धी भी प्राप्त हुये हैं। यदि इनके पीछे निष्ठा है तो यह बहुत प्रभावी हो सकता है। पर यदि शक्ति संग्रह और प्रभत्व प्रदर्शन से प्रेरित है तो यह हानि पहुंचा सकता है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अधिकांश ग्राम प्रधान उपस्थित रहते हैं पर जहां, मनोरंजन हेतु वाद्य यंत्र सुलभ न होने से, कार्यक्रम होता ही नहीं, वहां जाने का प्रश्न ही नहीं उठता ।

## पंचम अध्याय

## विवेचन

### खण्ड - 1 वैयक्तिक चेतना

यह सर्वमान्य है कि राष्ट्र के उत्थान के लिए सरकारें ऐसे कार्यक्रम निर्मित करती है, उनका कार्यान्वयन करती है, जिससे देश के नागरिकों को लाभ हो। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम भी एक ऐसा ही कार्यक्रम है, जिसके क्रियान्वयन से देश के अशिक्षित नागरिकों को शिक्षित कर, वैयक्तिक लाभ पहुचाया जाता है। संसार के प्रत्येक देश, राष्ट्र स्वीकार करता है कि साक्षरता से राष्ट्र की उन्नति होती है इसी कारण संयुक्त राष्ट्र संघ (यूनेस्को) ने अपनी एक बैठक में 1966 यह निर्णय लिया था कि सम्पूर्ण विश्व से निरक्षरता समाप्त करने के लिये सभी देश कार्यक्रम चलायें। इस कार्यक्रम में सभी देश योगदान कर रहे हैं।

विवेचन करने में, प्रौढ़ शिक्षा से सम्बन्धित प्रतिभागियों, कार्यकर्ताओं, केन्द्र और राज्य सरकारों के द्वारा किये मूल्यांकन, अनुदेशकों से, ग्राम प्रमुखों से साक्षात्कार कार्यालय - प्रपत्रो के रिकार्ड से, प्राप्त सूचनाओं के, आधार, को लिया गया है; और अन्य शोध अध्ययनों के निष्कर्षों द्वारा पुष्टि की गई है ।

सन् 1920 में सोवियत संघ में, निरक्षरता 75 प्रतिशत थी। व्यावहारिक कार्यक्रमों के माध्यम से, वहां, सन् 1941 में निरक्षरता का पूर्ण रूप से उन्मूलन किया जा सका । क्यूबा में 17.09% निरक्षरता को हटाकर 3 प्रतिशत करना सम्भव हो सका। दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका तथा एशियाई देशों, ईरान, ब्राजील, और इण्डोनेशिया ने, निरक्षरता दर में कमी लाने की दिशा में, प्रगति की है। विश्व के विकास शील देश, प्रौढ़ शिक्षा की अनिवार्यता को समझ रहे हैं। सन् 1966-67 तक यू0 एस0 एस0 आर0 में सम्पूर्ण जनसंख्या के एक तिहाई भाग ने विभिन्न प्रकार की शिक्षण संस्थाओं मे प्रवेश ले लिया था। डेनमार्क में मशीनी कुशलता की अपेक्षा, प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से, व्यक्तियों को शिक्षित करने पर बल दिया जाता है। चीन में समूह शिक्षा कार्यक्रम, वाई0 एम0 सी0 ए0 चला रहा है। सन् 1922 में माओत्से-तुंग ने हुनान में ऐसा कार्यक्रम

आन्दोलन के रूप में चलाया था ।

सन् 1950 के पश्चात सभी देश अनुभव करने लगे हैं कि श्रमिक समूह को प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से वैयक्तिक लाभ होने लगा है उनमें जागरूकता आई है। भारत ने भी इस सत्यता को स्वीकार लिया है।

राव जी0 एस0 लाकरा, एस0 रवनैहा, इ0पी0 पान्डा के0सी0 मन्ना बी0बी0, पान्डा डी0 एन0 के मूल्यांकन से यह ज्ञात होता है कि प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से वैयक्तिक लाभ किसी न किसी रूप में होता है। कृषि कार्यों के सुचारू संचालन, परिवार को नियोजित ढंग से चलाने, कार्यों को व्यावहारिक रूप प्रदान करने आदि गुणों का विकास व्यक्तिगतजीवन में आया है।

जान्सटन जे0पी0 ने तमिलनाडु के प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के विश्लेषण से भी लोगों को हुये वैयक्तिक लाभ की पुष्टि की है वे शोषण तथा अपव्यय से बचने का प्रयास करने लगे हैं। पटेल आर0बी0 प्रसाद एच0 के0 गुजरात तथा मिर्जापुर के अध्ययन से ज्ञात होता है कि लोगों के विचारों, सोचने समझने की प्रक्रिया में परिवर्तन आया है। शंकर आर0 का अध्ययन है कि व्यक्ति कार्यात्मक दृष्टिकोण अपनाने में सफल हुये हैं। कुदसिया यू0 सी0 मध्य प्रदेश में अपने अध्ययन से इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि लोगों को अच्छे स्वास्थ्य के नियम की जानकारी हुई उनके स्वास्थ्य में सकारात्मक, गुणात्मक परिवर्तन हुआ।

बेंकटैय्या एन0, सिंह डी0 और नारायन आर0 ने कृषकों के दृष्टिकोण में परिवर्तन का संकेत पाया । उन्होंने नवीन प्रकार के कृषि यन्त्र उर्वरकों को प्रयोग कर वैयक्तिक लाभ उठाया है । उनके व्यवहार में भी सकारात्मक और सार्थक परिवर्तन आया है। श्रीवास्तव एल0आर0एन0 भन्डारी जे0 एस0 के क्रमशः उड़ीसा और राजस्थान के प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों को लाभ हुआ है। मनोहर एल0ने बिहार के पश्चिमी चम्पारन के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के अध्ययन से स्पष्ट संकेत मिला है कि हरिजनों में वैयक्तिक लाभ के रूप में

"शक्ति हीनता" की भावना में कमी आई है। सन् 1982 में मूल्यांकन प्रभाग राज्य नियोजन संस्थान उत्तर प्रदेश लखनऊ के समवर्ती मूल्यांकन अध्ययन से ज्ञात हुआ कि व्यक्ति में सहयोग, व्यावहारिक दक्षता का विकास, हुआ। उनमें समय से कार्य करने की आदत और उत्तरदायित्व की भावना हुई है। नम्बेकर एम0आर0 ने गोआ जनपद के 11 ग्रामों प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के आयुवर्ग 15-35 के प्रतिभागियों के अध्ययन के आधार पर केवल 80 प्रतिशत प्रतिभागियों को तीन आर (3Rs) पर सन्तोषजनक लाभ हुआ, पाया। निरक्षरता उन्मूलन के अभियान के अन्तर्गत केरल, में शत प्रतिशत, बंगाल के वरदवान में शतप्रतिशत कर्नाटक का कनारा जनपद तथा पाण्डेचेरी में, साक्षरता, वैयक्तिक चेतना बढ़ने का संकेत मिला है। बड़ौदा जनपद में प्रौढ़ों में लिखने, पढ़ने एवं मौखिक ज्ञान में क्रमशः 15, 15, 30 प्रतिशत लाभ हुआ ।

प्रकाश ने हरियाणा, दिल्ली, के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के अध्ययन से प्रतिभागियों के व्यवहार में सुधार पाया और महाराष्ट्र में अल्कारा जे0 के अध्ययन के अनुसार साधारण गणित में लगभग 25 प्रतिशत प्रतिभागियों को लाभ हुआ । देसाई राम पाटिल वी0बी0 शास एस0 जी0 के अनुसार अहमदाबाद में 10 प्रतिशत प्रतिभागियों को लाभ प्राप्त हुआ। कान्ता ऋषि, दत्त नारायण के अनुसार हरियाणा के 93 प्रतिशत प्रतिभागी लिखने पढ़ने लगे। खजुरिया के डी0 राही ए0 एल0 के अनुसार कुरूक्षेत्र के प्रतिभागियों को हिन्दी वर्णमाला का ज्ञान हुआ । मद्रास इन्स्टिट्यूट आफ डेवलपमेन्ट स्टडीज तामिलनाडु के अनुसार लगभग 50 प्रतिशत प्रतिभागियों को लिखने का कौशल प्राप्त हुआ। महापात्र पी0 एल0 ने उड़ीसा के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के अध्ययन में पाया कि 25% प्रतिभागी, छोटे परिवार एवं देर से शादी के पक्ष में थे। मुश्ताक, अहमद के अनुसार बिहार, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, में 27 प्रतिशत प्रतिभागी साक्षर हुये और 36% तीन शब्दों के समूह को पढ़ने लगे थे, 73 प्रतिशत लिखित सामग्री की नकल करने में सक्षम हुये । नटराजन आर0 के अध्ययन के अनुसार (पटना) 60 प्रतिशत प्रतिभागी अच्छी तरह लिख पढ़ सकते थे। नीम्बलकर एन0बी0 के अनुसार गोआ के लगभग सभी हस्ताक्षर

कर लेते थे। मुथय्या वी0सी0 तथा हेमलता एल0पी0 के अनुसार महाराष्ट्र में, वे विकास योजनाओं से आंशिक लाभ उठाने लगे । सिंह वी0 कुरूक्षेत्र के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के अध्ययन में, प्रतिभागियों के व्यक्तित्व में बदलाव. पाया। सत्यनारायण राव पी0पी0 के अनुसार आन्ध्र प्रदेश में प्रतिभागी आधुनिक विचारों के होने लगे हैं तथा महिलाओं को पुरूषों की अपेक्षा अधिक लाभ हुआ है।

सेठ मृदुला (दिल्ली) के अध्ययन में व्यक्ति के रूचि स्वभाव, सोचने की प्रक्रिया में बदलाव के संकेत मिले हैं जेवियर रिलेशन्स इन्स्टीटयूट बिहार के अध्ययन के अनुसार 40% प्रतिभागियों को कृषि, खाद, सिंचाई भुमि सुधार, दहेज की बुराइयों का ज्ञान हुआ। बच्चों को स्कूल भेजने डाकधर, पशुचिकित्सा सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त हुआ । 65.9% प्रतिशत प्रतिभागी साधारण जोड़, 50प्रतिशत लिखने लगें ।

शोधकर्ता के शोध अध्ययन के आंकड़ों पर आधारित (परिशिष्ट -2) प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों से प्रशिक्षित लाभार्थियों को वैयक्तिक लाभ निम्नवत हुये।

1. प्रतिभागियों को व्यावहारिक जानकारी हुई है। बुन्देलखण्ड के 65% प्रतिभागियों को कुछ पढ़ने का ज्ञान हुआ है।

2. धन के विनिमय सम्बन्धी ज्ञान में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

3. प्रौढ़ शिक्षा के महत्त्व को समझने लगे हैं।

4. प्रतिभागी गृह के लिये सामान, उपकरणों या पारिवारिक समस्या के निदान में, पारिवारिक सलाह लेने लगे हैं।

5. उनमें स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता आयी है। पुरूषों की अपेक्षा महिलायें अधिक जागरूक हैं। वे स्वास्थ्य केन्द्रों का लाभ उठाने लगे हैं रोगों

के विषय में ज्ञान की वृद्धि हुई है। परिवार नियोजन की जानकारी में वृद्धि हुई है ।

6. कृषि उपकरणों के क्रय उपयोगिता के प्रति विशेषज्ञों की सलाह का लाभ उतना नहीं लिया जा रहा जितना अपेक्षित है। कृषि उपकरणों के खरीदने में दूसरों का अनुकरण करते हैं।

7. सांस्कृतिक तथा धार्मिक आयोजनों के प्रति उनका दृष्टिकोण नकारात्मक है। वे इन्हें अपव्यय की संज्ञा देते हैं।

8. संचार माध्यमों की जानकारी और उपयोग के महत्व को समझने लगे हैं ।

9. डाकघर, तार विभाग के कार्य प्रणाली का कुछ ज्ञान होता प्रतीत होता है। किन्तु फिर भी एक अंश तक दूसरों पर आश्रित रहते हैं।

10. विधवा विवाह के प्रति सकारात्मकता का दृष्टिकोण है किन्तु बाल विवाह प्रथा को नकारते प्रतीत नहीं होते हैं। विवाह नियमों की जानकारी सन्तोष जनक नहीं है। दहेज नियमों का ज्ञान कम है।

11-12. मताधिकार, अस्पृश्यता न्यूनतम मजदूरी के नियमों के प्रति ज्ञान में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

---

**सन्दर्भ - परिशिष्ट - 2**

## खण्ड – 2

## सामाजिक चेतना

शोधकर्ता के सर्वेक्षण प्रपत्र के आंकड़ों (परिशिष्ट –2) के विश्लेषण से निम्नलिखित सामाजिक चेतना सम्बन्धी तत्व उभर कर आये हैं।

1. बुन्देलखण्ड के प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों में विकास कार्यों के प्रति चेतना आने लगी है। वे उसके महत्व को केवल समझते ही नहीं हैं वरन् उनसे लाभ उठाने के प्रति जागरूक भी हो रहे हैं। विकास खण्ड स्तर की गोष्ठियों में भाग लेने विचार और सुझाव देने में रूचि लेने लगे हैं। इस परिवर्तन का आधार सम्भवतः शिक्षित होने के अतिरिक्त एक सीमा तक अनुकरण भी हो सकता है।

2. प्रतिभागियों के सामाजिक सम्बन्धों का उदारीकरण हुआ है उनमें जातिगत कार्यों तक ही सीमित रहना और छुआछूत समाप्त होने का दृष्टिकोण उभर रहा है। फिर भी वे वैवाहिक सम्बन्ध अपने ही जाति, उपजाति में करने को वरीयता देते हैं। उनमें सामाजिक समारोहों में भाग लेने के प्रति उदार दृष्टिकोण विकसित हुआ है। धार्मिक जंजीरे धीरे-धीरे टूट रहीं हैं, और अब अधिक संख्या में धार्मिक क्रिया कलापों और समारोहों को आडम्बर मानने लगे हैं।

3. सीमित परिवार के प्रति उनमें महत्वपूर्ण सकारात्मक दृष्टिकोण देखने को मिला है। समान अधिकार और विकास संगठनों की उपयोगिता सम्बन्धी चेतना जागृत हुई है।

4. सामाजिक कुरीतियों और उनके कुप्रभाव सम्बन्धी चेतना भी प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से प्रौढ़ों की प्रतिक्रियाओं में परिलक्षित हुई।

5. यह प्रौढ़ दूसरी जाति के लोगों को संकट में पाकर उनकी पहिले की अपेक्षा अधिक सहायता करने के प्रति अग्रसर होते हैं।

6. उन्होंने संयुक्त अथवा एकांकी परिवार की व्यावहारिकता पर स्पष्ट विचार नहीं दिये हैं। फिर भी अधिकांश प्रौढ़ शिक्षा के अभ्यर्थी संयुक्त परिवार को सुरक्षा की दृष्टि से उपयोगी मानते प्रतीत होते हैं।

शोधकर्ता के सामाजिक चेतना के विकास बिन्दु की पुष्टि विदेशी अध्ययनों से भी हो जाती है। डेनमार्क में हुये अध्ययन के अनुसार संसदीय लोकतंत्र कृषि सहकारिता आन्दोलन तथा ट्रेड यूनियनों का होना महत्त्वपूर्ण माना गया है। चीन में माओ-त्से-तुंग द्वारा चलाया गया सहकारिता आन्दोलन इस सामाजिक चेतना की पुष्टि करता है।

भारत में इस दिशा में हुये शोध सर्वेक्षण अध्ययनों की प्रतिक्रियायें इस प्रकार हैं । स्वतंत्रता से पूर्व भारत में प्रौढ़ शिक्षा में सामाजिक चेतना, सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं द्वारा आयोजन जैसे कथा, रामलीला, भागवत, कीर्तन, रंगमंच और ग्रामीण बाजार हाट परम्परागत मूल्यों और और ज्ञान का प्रसार करते थे यह परम्परा आज भी है। ब्रिट्रिश काल में रात्रि विद्यालय सामाजिक चेतना को उभारने का कार्य करते थे। यद्यपि इनका उद्देश्य कुछ पढ़ाकर अपने हित साधन ही रहा। डा० वाकर द्वारा जेल विद्यालय सन् 1851 ई० से प्रारम्भ किये गये और इनके माध्यम से प्रौढ़ निरक्षर कैदियों में सामाजिक चेतना जागृत की गयी। 1920 में कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बंगाल में शान्तिनिकेतन में प्रौढ़ों को शिक्षित कर सामाजिक चेतना देने का कार्य प्रारम्भ किया । सन् 1925-26 में पंजाब कृषि उद्योग ने भी इस दिशा मे कार्य किया । प्रोफेसर रंगा द्वारा प्रौढ़ों की शिक्षा के लिये राम नीडू प्रौढ़ शिक्षा संस्थान खोला गया तथा महात्मा गांधी द्वारा 1933

में रंगा पुस्तकालय का उद्घाटन हुआ जिसका उद्देश्य प्रौढ़ों में सामाजिक चेतना जागृत करना था। कालांतर में प्रौढ़ शिक्षा को समाज शिक्षा . कहा जाने लगा और प्रौढ़ शिक्षा का पूर्ण उद्देश्य समाज शिक्षा द्वारा सामाजिक चेतना जागृत करना हो गया स्वतन्त्राता के उपरान्त 1948 में केन्द्रीय सलाहकर परिषद ने समाज शिक्षा के प्रचार प्रसार के कार्यक्रम चलाये, पंचवर्षीय योजनायें भी प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम पर पूरा ध्यान केन्द्रित किये हैं ग्रामीण प्रौढ़ निरक्षरों में प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से सामाजिक चेतना जागृत की जा रही है।

"लाकरा" ने बिहार में, राव ने मैसूर में, प्रसाद ने वाराणसी में, रजनैहा ने आन्ध्र प्रदेश मे, "पान्डा" तथा मन्ना ने उड़ीसा में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के अध्ययन के आधार पर पाया कि प्रौढ़ शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सामाजिक चेतना जागृत करना है। नागप्पा के अध्ययन के अनुसार प्रौढ़ों में नवीन विचार प्रस्फुटित होते पाये गये । उन्हें संक्रामक बीमारियों से बचने की चेतना आने के संकेत मिले सिंह बी0 क्यू0 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्रौढ़ों में सामाजिक समस्याओं के निराकरण कृषि स्वास्थ्य और व्यवसाय के क्षेत्रों में जागरूकता उत्पन्न हुई। अन्सारी एन0एस0 चतुर्वेदी एस0सी0 के अध्ययन अनुसार मथुरा, लखनऊ, झांसी, गोरखपुर, जनपदों में प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त प्रतिभागियों की सामाजिक जागरूकता का विकास हुआ है। प्रसाद एच0 ने मिर्जापुर जनपद में सामाजिक, विकास का अध्ययन किया और पाया कि प्रमुख क्षेत्रों मे प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त प्रतिभागियों को अभूतपूर्व लाभ हुआ।

राजस्थान में राव टी0वी0 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्रौढ़ शिक्षा के प्रतिभागियों में सामाजिक जीवन में सार्थक परिवर्तन हुये। वे सामुदायिक कार्यों में भागेदारी करते पाये गये। पाण्डेचेरी में मरिअप्पन एस0 एवं राम कृष्णन सी0 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि समय से अनुदान न मिलने पर ग्रामीण असहयोग आन्दोलन करते हैं जो सामाजिक चेतना के जागृत होने का उदाहरण हैं। लाल एम0 ने बिहार के चम्पारन जनपद के नौटन विकास खण्ड के अध्ययन से पाया कि सामाजिक चेतना सहभागिता होने से प्रतिभागियों में शक्तिहीनता की भावना कम हुई । वह मिलकर कार्य करने में शक्ति समझने लगे। मरियायन सुशीला मद्रास में अपने अध्ययन के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुची की प्रतिभागी सांस्कृतिक कार्यक्रमों को देखते

हैं। उनमें समूह में बैठकर सामूहिक चेतना का विकास होते पाया। राशिद अब्दुल के शोध अध्ययन में सामाजिक विकास और साक्षरता का घनिष्ठ सम्बन्ध निकला।

मुथय्या वी०सी० एवं हेमलता एल०पी० के महाराष्ट्र के विकास खण्ड के अध्ययन के परिणाम अन्य अध्ययनों की अपेक्षा नकारात्मक हैं । उनके अनुसार प्रतिभागियों को प्रौढ़ शिक्षा से लाभ नहीं हुआ। उनमें सामूहिक चेतना नहीं आयी । प्रगति सिंह ने हरियाणा में अपने अध्ययन में प्रौढ़ों में सामूहिक चेतना का विकास होते पाया। सच्चिदानंद, गंगोली पी० के०, सरकार यम० के अध्ययन भी सामाजिक चेतना के विकसित होने की पुष्टि करते हैं। जेवियर लेबर रिलेशन्स इन्सटीट्यूट बिहार के अध्ययन के अनुसार प्रौढ़ शिक्षा से सभी क्षेत्रों में विकास के संकेत मिलते हैं। जाँत-पाँत के भेदभाव कम हुये हैं। सामूहिक कार्यक्रमों में भाग लेने लगे हैं। लगभग 50% प्रतिभागियों को दहेज प्रथा, कम आयु में विवाह, दहेज की बुराइयों का ज्ञान था, किन्तु सामाजिक, मान्यताओं के सहारे कार्यों को निपटाना उचित समझते पाये गये। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम द्वारा कुछ प्रतिभागियों को परिवार नियोजन, की विधियों का ज्ञान हुआ किन्तु सामाजिक चेतना का ज्ञान पर्याप्त मात्रा में सन्तोषजनक नहीं था ।

इस प्रकार शोधकर्ता के शोध अध्ययन की पुष्टि विभिन्न शोधकर्ताओं के अध्ययनों से हो जाती है कि अधिकांश प्रौढ़ शिक्षा के प्रतिभागियों में सामूहिक चेतना का विकास होता है।

## खण्ड - 3

## आर्थिक चेतना

आर्थिक चेतना आय श्रोत्रों की वृद्धि से सम्बन्धित है। आर्थिक पक्ष के विषय में शोधकर्ता को अपने अध्ययनमेंनिम्नलिखित बिन्दु देखने को मिले।

1. प्रौढ़ प्रतिभागियों में अपनी आर्थिक दशा सुधारने की चेतना उत्पन्न हो रही है। वे परम्परागत तरीकों की अपेक्षा आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों से कृषि आय में वृद्धि के लिये प्रयासरत हैं।

2. उन्हें पहले की अपेक्षा उन राजकीय विकास योजनाओं की अच्छी जानकारी है जो उनकी आय वृद्धि में सहायक हैं।

3. वे कृषि के अतिरिक्त अन्य हस्त कौशल के कार्यों में भी रूचि रखते पाये गये। पशु बीमा, फसल बीमा, की भी उन्हें जानकारी है।

4. वे खाली समय में कुछ लाभकारी सेवा कार्य कर लाभ उठाने का प्रयास करते रहते हैं।

5. वे आय में हुयी क्रमिक वृद्धि और बदलाव को महसूस भी करते हैं।

6. प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे अब अपने उत्पादनों का अधिक लाभप्रद मूल्य लेने के लिये दूर के क्षेत्रों में बिक्री करने जाने लगे हैं।

7. आय वृद्धि के लिये वे अब घरेलू उद्योग धन्धो में रूचि लेते पाये गये।

8. वाणिज्य और व्यापार करने की क्षमता उनमें कम परिलक्षित् हुई है। सम्भवतः उसका कारण सीमित आर्थिक साधन होना है।

9. व्यावसायिक केन्द्रों के सम्भावित लाभों के प्रति भी अब वे अधिक जागरूक हो गये हैं उनमें नये कार्यों के सीखने और निपुणता प्राप्त करने की जागरूकता आयी प्रतीत होती है ।

10. प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात उनकी मानसिकता का उदारीकरण हुआ है। वे अपने हित के साथ साथ क्षेत्रीय विकास की भी बात सोचने लगे हैं।

11. बैंकों समितियों से विकास एवं आर्थिक लाभ के कार्यों के लिये ऋण लेने लगे हैं और प्रयास करते हैं कि उनके क्षेत्र में बैंक समिति शाखायें और खुलें ।

12. विलासिता और अउत्पादक कार्यों के लिये ऋण लेने सम्बन्धी पद पर अधिकांश प्रतिभागियों ने नकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की है जो मानसिक सोच में आये परिवर्तन का सूचक है।

13. शोध कर्ता के अध्ययन से आर्थिक विकास से सम्बन्धित जो चेतना के बिन्दु उभर कर आये हैं उनकी पुष्टि अन्य शोकर्ताओं के शोध अध्ययनों से हुई है। इससे सम्बन्धित प्रमुख शोध अध्ययन निम्नवत हैं ।

पं० के०एल० के अनुसार आर्थिक विकास के लाभ पर प्रौढ़ शिक्षा लाभार्थियों के अध्ययन पर एक विशाल शोधग्रन्थ लिखा जा सकता है। डेनमार्क में प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों ने कृषि सहकारिता का लाभ उठाया है।

भारत में पंचम पंचवर्षीय योजना अवधि में सरकार ने कृषक कार्यात्मक साक्षरता परियोजना 150 जनपदों में सफलतापूर्वक चलाकर प्रौढ़ शिक्षा के कृषकों को लाभ पहुंचाया । यह आर्थिक प्रगति का महत्त्वपूर्ण अस्त्र है। प्रत्येक प्रौढ़ कृषक आर्थिक प्रक्रिया में भागेदार है। इस कार्यक्रम से प्रौढ़ समूह में प्रबन्ध कौशल तथा अपने व्यवसाय में कार्यात्मक क्षमता उत्पन्न हो गई है। सन् 1980 में समाज कल्याण मंत्रालय ने राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम चलाकर प्रौढ़ों को औद्योगिक कार्य के लिये प्रोत्साहित कर उन्हें लघु उद्योग के व्यवसाय में लगाया ।

लाकरा एस0 ने अपने शोध अध्ययन से ज्ञात किया कि प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों ने आर्थिक कार्यों में रूचि लेकर अपने आर्थिक अवस्था में सुधार किया । रतनैहा ई0पी0 के द्वारा आन्ध्र प्रदेश में शोध अध्ययन के आधार पर एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु प्रकाश में यह आया कि प्रौढ़ शिक्षा के प्रतिभागियों के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में कृषि समय पर रहने पर आर्थिक प्रक्रिया प्रभावित होती है। केन्द्र छोड़ने का यह प्रमुख कारण भी है। प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों को आधुनिक प्रकार की विशिष्ट नौकरियां नहीं मिलती हैं ।

राशिद के साक्षरता के लिये अभिप्रेरण पर अध्ययन से ज्ञात हुआ कि साक्षरता एवं आर्थिक विकास में घनिष्ठ सम्बन्ध है। अहमद एम0एन0 के शोध अध्ययन इसकी पुष्टि करता है कि प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी कृषि पुस्तकों के अध्ययन में अभिरूचि रखते है जो उत्पादकता से सम्बन्धित है। मरिअप्पन और रामकृष्णन के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि पान्डिचेरी और तमिलनाडु में प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागियों में आर्थिक जागरूकता उत्पन्न हुई । चतुर्वेदी एन0सी0 ने मथुरा, लखनऊ, झांसी तथा गोरखपुर, जनपदों के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के अध्ययन से संकेत मिलता है कि प्रौढ़ शिक्षा (समाज शिक्षा) व्यक्ति के आर्थिक विकास में सहायता होती है।

प्रसाद एच0 अपने शोध अध्ययन के आधार पर बलपूर्वक कहते हैं कि प्रौढ़ शिक्षा आर्थिक विकास में सहायक है। सिंह डी0 एवं नारायण आर0

के शोध अध्ययन के आधार पर कृषकों में कृषि के आधुनिक उपकरणों के प्रयोग में उपयोगी दृष्टिकोण जागृत हुआ है। बेंकटैय्या एन0 के आन्ध्र प्रदेश तथा ब्रह्म प्रकाश के हरियाणा दिल्ली, में शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि प्रतिभागियों में आर्थिक सुधार कृषि में आधुनिक ज्ञान के प्रयोग के भाव उत्पन्न हुये हैं । हरिहर आर0 तथा राव0 टी0वी0 के शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि प्रतिभागियों में कृषि सम्बन्धी जानकारी की वृद्धि हुई । शंकर राम (लखनऊ) के अध्ययन के अनुसार आर्थिक आधार साक्षरता को बढ़ाते हैं। निम्न कुछ अध्ययनों के निष्कर्ष इतने सकारात्मक नहीं रहे। एल0 आर0 एन0 श्रीवास्तव ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि जन जातियों/अनुसूचित जातियों के क्षेत्रों में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों से अपेक्षित लाभ नहीं हुआ और न हीं सहकारी समितियां उतनी सफल हो पाई। पी0 गंगोत्री का अध्ययन भी संकेत करता है कि प्रतिभागियों की आर्थिक चेतना अपेक्षित मात्रा में जागृत नहीं हो पाई।

फिर भी अधिकांश अध्ययन शोधकर्ता के निष्कर्षों की पुष्टि ही करते हैं। सम्भव है कि क्षेत्र विशेष में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम उतने सफल न रहे हो। उन्हें और गतिशील और प्रभावी बनाने के प्रयास किय जाने चाहिये।

## खण्ड – 4

## राजनैतिक चेतना

व्यक्ति के जीवन में राजनैतिक चेतना एक प्रमुख स्थान रखती है। भारत जैसे स्वतन्त्र राष्ट्र के लिये तो इसका महत्व और भी अधिक है। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से राजनैतिक क्षेत्र में लाभान्वित होने का अध्ययन करना सर्वथा उचित और उपयोगी है। शोधकर्ता के शोध अध्ययन के आधार पर प्रकाश में आये बिन्दु निम्नवत हैं :

1. केवल 50 प्रतिशत प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त किये व्यक्ति ही स्वतन्त्रता को एक अंश तक सही अर्थ में लेते हैं। सम्भवतः इस दिशा में चेतना जागृत करने का, प्रौढ़ शिक्षण तन्त्र के प्रयास, अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर सके हैं।

2. लगभग आधे ही प्रौढ़ प्रतिभागी मुख्य-मुख्य सामान्य जानकारी प्राप्त कर सके हैं ।

3. इन प्रौढ़ों को मतदान का महत्व का ज्ञान तो है, फिर भी वे जाति बिरादरी अथवा ग्राम प्रधान की राय को मतदान में वरीयता देते हैं।

4. प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त प्रतिभागियों का लगभग एक चौथाई भाग मतदान प्रक्रिया को निरर्थक मानता है, जो प्रजातंत्र की परिकल्पना के विपरीत तथा राजनैतिज्ञों को मतदान की सम्भावित अनियमितताओं के प्रति सचेष्ट होने की ओर संकेत करता है।

5. अधिकांश प्रतिभागी विकास की ओर सही दृष्टिकोण रखते हैं उनमें इतनी जागरूकता तो आ ही गयी है। कि वे सरकार एवं पदाधिकारियों

को विकास के कार्यों के प्रति इंगित कर सके वे आवंटित धनराशि के सही और समुचित उपयोग में विश्वास रखते हैं।

6. उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत सरकारी संस्थाओं की जानकारी है।

7. ग्राम पंचायतों के अधिकार तथा दायित्त्व का उन्हें अच्छा ज्ञान है किन्तु लगभग एक चौथाई प्रौढ़ प्रतिभागी ग्राम पंचायत की सही संकल्पना नहीं रखते हैं ।

8. एक बड़ी संख्या में प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त व्यक्ति प्रौढ़ शिक्षा को सही अर्थ में लेते हैं फिर भी लगभग एक तिहाई प्रौढ़ों में इसकी संकल्पना की चेतना जागृत करने के संकेत मिलते हैं ।

डेनमार्क के प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागियों ने शिक्षा उपरान्त डेनिश संसदीय लोकतंन्त्र, ट्रेड यूनियनों को प्रभावित किया है। चीन में श्रमिक समूहों द्वारा राजनैतिक शिक्षा को बढ़ाने में रिक्त समय में पाये शिक्षा लाभार्थियों ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। गांधी जी के आन्दोलन में सैनिकों का एक ऐसा समूह था जो कुछ शिक्षित होने पर, सेवा से लौटा था। यह एक अभूतपूर्व राजनैतिक चेतना का उदाहरण था। कवि टैगोर ने बंगाल में शान्तिनिकेतन में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम द्वारा ग्रामीण पुर्नर्निर्माण में योगदान दिया , जिसे सामुदायिक कार्यक्रमों से जोड़ा गया। पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा प्रौढ़ों में प्रशासनिक, राजनैतिक, कार्यक्रमों के प्रति चेतना लाने का प्रयास हो रहा है।

बिहार में साकरा, एस0 के शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष उभर कर आया कि प्रौढ़ प्रतिभागी राजनैतिक रूप से चेतन हो गये हैं। शंकर आर0 एन0 के शोध अध्ययन से राजनैतिक चेतना जागृत होने की पुष्टि होती है। कुदेसिया यू0 सी0 द्वारा मध्य प्रदेश के अध्ययन से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि प्रौढ़ प्रतिभागी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो गये हैं । हरिहर आर0 तथा राव टी0वी0

{राजस्थान} के शोध अध्ययन के अनुसार प्रतिभागियों में राजनैतिक चेतना सन्तोषजनक मिली । लाल0 एम0 एवं मिश्रा आर0 {पटना बिहार} के शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि प्रतिभागियों में राजनैतिक चेतना सन्तोषजनक रूप से विकसित हुई।

जेवियर लेबर रिलेशन्स संस्थान {बिहार} के सर्वेक्षण के अनुसार प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी महिला और पुरूष को समान मजदूरी मिलने के पक्ष में थे। मतदान पंचायत, ग्राम प्रधान के विषय में थोड़े प्रतिभागी ही जानते थे। नागरिक कर्तव्यों अधिकारों, का ज्ञान प्रचुर मात्रा में अनुदेशकों द्वारा दिया गया था, किन्तु उनसे लाभ उठाने के प्रति उदासीनता प्रतिभागियों में पायी गई ।

## खण्ड - 5

### अन्य चेतना

वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, चेतना के अध्ययन के अतिरिक्त कुछ अन्य पक्ष का भी अध्ययन किया गया है जैसे केन्द्र पर प्रतिभागी के आने की विधा, महिलाओं तथा पुरूषों प्रतिभागियों की तुलना, सामान्य ज्ञान, सफाई स्वास्थ्य प्रौढ़, शिक्षा कार्य को ठीक से चलाने का सुझाव आदि। शोधकर्ता ने भी इनका अध्ययन किया है जिसके आधार पर निम्नलिखित बिन्दु प्रकाश में आये हैं : -

1. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में अधिकांश पुरूष अनुकरण प्रक्रिया को अपनाते हुये पंजीकृत हुये। महिलायें केन्द्रों पर पंजीकरण कराने में अग्रगामी हैं। सम्भवतः शिक्षा के महत्त्व एवं लाभ को वह अधिक समझती हैं।

2. बीच में अध्ययन छोड़ने वाले प्रौढ़ों ने मत व्यक्त किया है कि अधिक आयु में प्रौढ़ शिक्षा अधिक लाभदायक नहीं है। वे अध्ययन से समय को उत्पादन कार्यों में लगाना अधिक उपयुक्त समझते हैं।

3. प्रतिभागियों को अन्ध विश्वास के कुपरिणामों, नशा करने की हानियों और बुराईयों के प्रति जागरूकता है। अधिकांश पुरूष एवं महिलायें प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात दहेज प्रथा को अब बुरा मानने लगे हैं, किन्तु मारपीट, लड़ाई को बुन्देलखण्ड अंचल में इतनी बुरी बात नहीं मानी जाती।

4. अब वे सार्वजनिक स्थानों, कुओं, मुहल्ले की सफाई को अधिक महत्त्व देने लगे हैं। उनकी उपयागिता को समझने लगे हैं।

5. अब वे अपने घरों को अधिक व्यवस्थित ढंग से चलाने लगे हैं आय-व्यय में सन्तुलन लाने में सक्षम हो गये हैं।

6. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को सुचारू रूप से चलाने के लिये सरकार को सुझाव देने लगे हैं शिक्षा सामग्री की और मांग करने लगे हैं।

7. अधिकांश प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त व्यक्ति इसे लाभदायक मानने लगे हैं किन्तु एक चौथाई भाग इसे अभी दिखावा मात्र मानते हैं ।

8. अब वे बच्चों की बीमारियों का ज्ञान रखने लगे हैं टीका लगवाने के महत्व को समझने लगे हैं और स्वास्थ्य सम्बन्धीनियमों की जानकारी के जिज्ञासु हैं।

शोधकर्ता के अध्ययन से प्राप्त उपरोक्त बिन्दुओं की पुष्टि अन्य निम्न शोध अध्ययनों से भी होती है ।

पं० के०एल० के अनुसार प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागियों के सांस्कृतिक लाभों पर विभिन्न देशों का इतिहास लिखा जा सकता है । स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से विकास कार्यों में भागेदारी बढ़ी है। नागप्पा टी० आर० के शोध अध्ययन से इस बात की पुष्टि होती है कि संक्रामक बीमारियों और परिवार के स्वास्थ्य में प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागियों को लाभ हुआ है। बीमारियों के उपचार एवं नियन्त्रण पर अधिक ध्यान देने लगे हैं। इन्हीं के अध्ययन से इस बात की भी पुष्टि होती है कि प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त व्यक्ति धार्मिक और लोक साहित्य के प्रति अधिक रूचि रखने लगे हैं। मरिअप्पन एस० और रामकृष्णन सी० एन० के पान्डेचेरी और तमिलनाडु में शोध अध्ययन से यह बात प्रकाश में आयी है। कि 94 प्रतिशत महिलायें तथा 96% पुरूष अध्ययन में रूचि रखते हैं। सिंह बी०क्यू० के शोध अध्ययन से पुष्टि होती है कि स्वास्थ्य सफाई, सामान्य ज्ञान, प्रसिद्ध कवियों और लेखकों की आत्मकथाओं, लोक साहित्य संचार साधनों पर बनाई गयी फिल्में प्रौढ़ प्रतिभागियों में जागरूकता पैदा करती हैं। वे जादू अंधविश्वासों के विरूद्ध विचार रखने लगे हैं, किन्तु कुदसिया यू०सी० का मध्य प्रदेश के प्रौढ़ प्रतिभागियों पर अध्ययन उपर्युक्त कथन की पुष्टि नहीं करता ।

अग्निहोत्री एस0 द्वारा महाराष्ट्र में प्रौढ़ प्रतिभागियों पर किये गये अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्रौढ़ प्रतिभागियों में जीवन स्तर उठाने, उत्तरदायित्व के कार्य करने, की जागरूकता हुई है जो शोधकर्ता के शोध पक्ष की पुष्टि करता है। शर्मा ए0 तथा अन्य के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि केवल 94 प्रतिशत प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र ही कार्यरत हैं तथा प्रौढ़ शिक्षा को बीच में छोड़ने वालों की संख्या दो प्रतिशत हैं उनके अनुसार अनुसूचित जाति जनजाति तथा पिछड़ जाति तथा पिछड़े वर्गों का नामांकन 75 प्रतिशत था। राजस्थान में एक अध्ययन के अनुसार प्रत्येक केन्द्र के केवल 50 से 60 प्रतिशत प्रौढ़ ही साक्षर हो सकें। बाशिया के0सी0 ने उडीसा के जनजातीय अंचल में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का अध्ययन किया और पाया कि केन्द्रों में भौतिक सुविधाओं का अभाव, अनुदेशकों को समय से वेतन न मिलना सरकार की विभिन्न एजेंसियों में सामंजस्य का अभाव कार्यक्रम के क्रियान्वयन में अवरोध उत्पन्न कर रहा है।

मूल्यांकन और नियोजन संस्थान उ0प्र0 लखनऊ के समवर्ती अध्ययन से ज्ञात होता है। कि कार्यक्रमों से जुड़े अधिकारियों का जल्दी-जल्दी स्थानान्तरण होने से कार्यक्रम पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है कुछ केन्द्रों में प्रतिभागियों के मूल्यांकन परिणाम उपलब्ध नहीं थे। केन्द्रों एवं पठन पाठन सामग्री प्रेषित करने वाले एजेन्सीज में तालमेल नहीं है। जिस से पठन पाठन कार्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। अनुदेशक अनुदेशिकाओं को यह स्पष्ट नहीं है कि उन्हें प्रतिभागियों में चेतना जागृत एवं व्यावहारिक दक्षता वृद्धि किस प्रकार करना है। कुछ अन्य बातें, जैसे अनुदेशकों की भर्ती नियमों की जानकारी न होना तथा अनुदान विलम्ब से प्राप्त होने से कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने में बाधक हैं। अनुदेशकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम 100 प्रतिशत अच्छादित नहीं है। नम्बरकर एम0आर0 द्वारा गोआ जनपद में अध्ययन से ज्ञात हुआ कि केन्द्रों पर औसत उपस्थिति 73 प्रतिशत थी महिलाओं पुरूषों के केन्द्र छोड़ने की संख्या लगभग बराबर थी। उन्हें तीन आर (3 आर) का ज्ञान सन्तोषजनक नहीं था। बड़ौदा में हुये मूल्यांकन से ज्ञात हुआ कि 60 प्रतिशत को कुछ पढ़ने और संख्या का ज्ञान हुआ। 40 प्रतिशत प्रतिभागियों को कोई लाभ नहीं हुआ ।

अहमद मुश्ताक के मूल्यांकन के अनुसार प्रौढ़ शिक्षा की पुस्तकों में संशोधन की आवश्यकता है। कुछ ही लेखकों को प्रौढ़ शिक्षा साहित्य लिखने का प्रशिक्षण मिला था। अल्कारा जे0 तथा हेनरी क्वेस जे0 के अध्ययन के अनुसार उन्हें 296 केन्द्रों में से 15 केन्द्रों की उपस्थिति पंजिका में हेरा-फेरी मिली। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र छोड़ने का कारण यह था कि कृषि का समय और पढ़ने का समय एक था। आर्थिक कठिनाई एवं कार्यक्रम का रोचक न होना अन्य कारण थे, किन्तु प्रतिभागियों का कथन था कि उन्हें प्रौढ़ शिक्षा से लाभ हुआ है।

भौमिक के0एल0 द्वारा त्रिपुरा में शोध अध्ययन के अनुसार महिलाओं की उपस्थिति नितान्त असन्तोषजनक थी तथा निरक्षर अध्ययन में रूचि लेते थे। दत्ता एस0सी0 तथा केम्फायन हेलेन के अध्ययन के अनुसार महिलाओं को क्राफ्ट प्रशिक्षण पसन्द था। किन्तु प्रशिक्षण सामग्री का अभाव था। अनुदेशकों को गहन प्रशिक्षण की आवश्यकता है। केन्द्र के केवल 10 प्रतिशत ही प्रतिभागी लाभ उठा पाते हैं। गंगोत्री पी0के0 पाठक के0एन0 के अनुसार कार्यक्रम के व्यय के अनुपात में लोगों को लाभ नहीं मिल रहा है। मरियायन सुशीला (मद्रास) के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि सांस्कृतिक कार्यक्रम और रोचक बनाते हैं। महापात्र पी0एल0 (उड़ीसा) के शोध अध्ययन के अनुसार प्रतिभागी छोटे परिवार के पक्ष में थे। जेवियर लेबर रिलेशन्स संस्थान (बिहार) द्वारा सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि प्रतिभागियों को 50% से 70% पढ़ने, गणित, लिखने में, कुछ ज्ञान हुआ उनमें जाति वर्ग का भेदभाव नहीं था। विकास कार्यों की थोड़ा ज्ञान प्रतिभागियों में आ गया था। अन्य केन्द्र छोड़ने के कारणों में मुख्यत: कृषि के बाद समय न मिलना, पाठ्यक्रम रूचिकर न होना था। पढ़ने में रूचि न रह जाना, और पारिवारिक व्यवस्था अन्य कारण थे।

उपरोक्त शोध और सर्वेक्षण अध्ययनों से शोधकर्ता के निष्कर्षों की पुष्टि ही होती है।

## खण्ड - 6 और 7

## अनुदेशक अनुसूची तथा ग्राम प्रधान अनुसूची विवेचन

विश्लेषण के आधार पर विवेचन इस प्रकार है -

1. हाई स्कूल पास अनुदेशकों की संख्या अधिक है। शिक्षित अनुदेशक 62.2% प्रतिशत ही है। अन्य अध्ययनों में भी ऐसा पाया गया है। मन्ना बी0बी0 के अनुसार वालासोर जिले के 50% अनुदेशक प्रशिक्षण प्राप्त किये थे। 62% प्रतिशत हाई स्कूल पास थे। रामकृष्णन एवं अन्य के अनुसार पाण्डिचेरी के अनुदेशक मैट्रिक पास नहीं थे। 1/3 भाग मैट्रिक पास थे। हरिहर आर0 तथा राव टी0वी0 के राजस्थान में अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकांश अनुदेशक युवक थे। एवं अधिकांश हाई स्कूल पास थे। शाह के0 आर0 के अनुसार गुजरात के 75% प्रतिशत अनुदेशक मैट्रिकुलेट थे। तथा अनुदेशक (17%) केन्द्र चलाने के अयोग्य थे।

2. इस अध्ययन के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अनुदेशकों को अपर्याप्त वेतन मिलता है, जिसके कारण लगभग 57 अनुदेशक 36.3% ही प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में रूचि लेते हैं। लगभग 2/3 महिला अनुदेशक ही शिक्षण कार्य में रूचि रखती हैं। केवल 21 प्रतिशत अनुदेशक प्रशिक्षित हैं। इस कथन की पुष्टि दूसरे शोध अध्ययनों में भी पायी गयी है।

3. शोधकर्ता को, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के रोचक न होने के, मुख्य कारण, श्रव्य-दृश्य उपकरण की कमी, शिक्षण सामग्री का अपर्याप्त होना. व्यवस्थित ढंग से शिक्षण कार्य न होना है। लेबर रिलेशन्स संस्थान (बिहार) द्वारा अध्ययन से भी इसी प्रकार के संकेत मिलते हैं, जिनके अनुसार शिक्षण केन्द्रों में भौतिक साधनों की कमी के कारण प्रतिभागी असन्तुष्ट पाये गये। अन्य अध्ययनों में केन्द्र छोड़ने

अध्ययन में प्रतिभागियों की रूचि न लेने के ये ही प्रमुख कारण होने के संकेत हैं। कुछ अध्ययनों में मिली जुली प्रतिक्रिया व्यक्त की गयी है। चीन में वाइ0एम0सी0ए0 के कार्यक्रम को रोचक बनाकर साक्षरता कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया है। मरिअप्पन तथा रामकृष्ण के अनुसार तामिलनाडु में 63% महिलायें रूचि लेती हैं।

4. जहां तक प्रतिभागियों के केन्द्र पर पंजीकरण का प्रश्न है शोधकर्ता के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि 61.9% प्रतिभागी स्वयं केन्द्र पर आये शेष को लाने के लिये प्रयत्न किये गये। लगभग आधी महिलायें केन्द्र पर पंजीकृत हाने आयी। ब्लाक प्रमुख/ग्राम प्रधान अनुसूची, से संकेत मिलता है कि प्रतिभागियों को लाने के लिये और प्रयास की आवश्यकता है।

5. शोधकर्ता के शोध अध्ययन के अनुसार कुछ प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी शिक्षण कार्य बीच में छोड़ देते हैं इसके प्रमुख कारण, रूचि का अभाव पारिवारिक आर्थिक कठिनाइयां शिक्षा से आर्थिक लाभ की सम्भावना न होना, गृहकार्य, कृषि कार्य में व्यस्तता, अधिक आयु के कारण संकोच, शिक्षा के महत्त्व को न समझना, शिक्षण कार्य में रोचकता की कमी है। बुन्देलखण्ड के ग्राम प्रधानों/ ग्राम प्रमुखों के अनुसार प्रतिभागियों के बीच में छोड़ने के कारण प्रौढ़ शिक्षा के महत्त्व को न समझने की जागरूकता का अभाव, कार्यक्रम का व्यावसायिक पक्ष से जुड़ा न होना है। यहां तक कि कुछ ग्राम प्रमुखों ने इस कार्यक्रम से नाता तोड़ ही लिया है। कार्यक्रम में भाग न लेने के कारण प्रतिभागियों की व्यस्तता, महिलाओं को गृह कार्य, कृषि कार्य करने से समय न मिलना, उभर कर आया है। नन्दा एस0 के0 के अध्ययन के अनुसार पढ़ाई बीच में छोड़ने वाले पंजाब में 2% ही प्रतिभागी थे। शर्मा ए0 तथा अन्य के अनुसार अहमदाबाद में अनुसूचित जाति के 75% प्रतिभागी बीच में ही अध्ययन छोड़ बैठे, उड़ीसा में श्रीवास्तव एल0आर0एन0 के सर्वेक्षण के अनुसार केन्द्र छोड़ने वालों के मामले अत्यधिक थे,

तथा उपस्थित भी कम थी । गेटोन्ड एम0वी0 ने महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और कर्नाटक राज्यों में अध्ययन के अनुसार निष्कर्ष निकले कि केन्द्र छोड़ने वालों के परिवार निर्धन और निरक्षर थे । कार्यक्रम अरूचिकर, सम्प्रेषण अन्तराल, पर्याप्त पठन पाठन सामग्री न होना रात्रि में केन्द्रों पर जाने में भय आदि अन्य प्रमुख कारण थे । तेम्बरकर एम0आर0 के गोआ में अध्ययन करने से ज्ञात हुआ कि 27% छोड़ने वाले प्रतिभागियों में पुरूष और महिलाओं का प्रतिशत समान था । अलकारा जे0 तथा हेनरी क्विंस जे0 के महाराष्ट्र में अध्ययन से ज्ञात होता है कि केन्द्र छोड़ने वालों का आर्थिक कठिनाई एवं समय न मिलने की कठिनाइयाँ थी । कृषि कार्य से समय नहीं निकाल पाना प्रमुख कारण उभर कर आया । शंकर राम लिट्रेसी हाउस लखनऊ के सर्वेक्षण के अनुसार प्रतिभागियों में अधिकांश गरीबी की रेखा से नीचे के लोग थे । त्रिवेदी एन0एस0 के अनुसार भुज पाण्डेचरी में छोड़ने वाले प्रतिभागी 5.6 से 7.5 प्रतिशत तक थी ।

ग्राम प्रमुखों के प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों से जुड़े होने की मिली जुली प्रतिक्रिया दी है । लगभग 39.8% ग्राम प्रधान माह में एक बार, 30.8% माह में दो या तीन बार तथा 21.8% माह में चार या पाँच बार प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र पर आते हैं । तथा 2.3% साल में एक बार ही केन्द्र पर उपस्थित होते हैं । जिला प्रौढ़ अधिकारी क्षेत्रीय परियोजना अधिकारी, सहायक परियोजना अधिकारी पर्यवेक्षक / पर्यवेक्षिका के केन्द्रो मे आने के विषय में मिली जुली प्रतिक्रिया व्यक्त की है । कुछ प्रमुखों ने स्पष्ट लिखा है कि कोई देखने नहीं आता । केवल 12.9% ग्राम प्रधानों / प्रमुखों को प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के अनुवर्ती अध्ययन की जानकारी है । 48.6% प्रतिक्रिया दी कि कोई अध्ययन नहीं हुआ । अधिकांश ग्राम प्रमुख / प्रधान अनुवर्ती अध्ययन समझने कठिनाई अनुभव करते हैं ।

6. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रो में उपलब्ध उपकरणों सामग्री के विषय में संकेत मिलता है कि अधिकांश केन्द्रों में केवल पुस्तकें एवं मानचित्र उपलब्ध रहते हैं।

जनपद झाँसी, हमीरपुर, जालौन के कुछ केन्द्रो में रेडियो, पत्रिकाएँ और हारमोनियम तथा जनपद बाँदा में पुस्तकें, मानचित्र, वीडिओ, समाचार पत्र, सिलाई मशीन, और टेप सामग्री उपलब्ध होने की सूचना है ; किन्तु सभी जनपदों में इन उपकरणों के प्रति जागरूकता और उपयोग का अभाव है ।

मूल्यांकन प्रभाग राज्य नियोजन संस्थान उत्तर प्रदेश के मूल्यांकन अनुसार पठन पाठन सामग्री और उपकरणों का केन्द्रो में अपर्याप्त होना प्रौढ़ कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलने में बाधक है ।

7. अनुदेशकों ने प्रोजेक्टर, सिलाई मशीनों, कताई, बुनाई की सामग्री, उपकरणों, कहानी की पुस्तकें, व्यवसाय और मनोरंजन के उपकरणों की आवश्यकता की ओर संकेत किया है । इसके अतिरिक्त दीवाल घड़ी, खेल की सामग्री, महापुरूषों के आकृति चित्र आदि की अपेक्षा भी की है । कुछ ने श्याम पट्ट और चाक, डस्टर की कमी की ओर तक संकेत किया है ।

मिश्रा एन0, के कटक में किये गये शोध के अनुसार पठन पाठन, सामग्री, उपकरणों एवं भौतिक सुविधाओं के अभाव में 5 प्रतिशत प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र प्रारम्भिक अवस्था में बन्द हो गये थे ।

8. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में विभिन्न जातियों के xxxxxx सवर्ण (उच्च वर्ग), सामान्य, अल्प संख्यक, अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति के लोग हैं। सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में जनजातियों के इस कार्यक्रम से कम जुड़े होने का संकेत है ग्राम प्रमुखों के अनुसार बुन्देलखण्ड के जनपदों में हरिजनों एवं पिछड़ी जाति के लोग प्रौढ़ शिक्षा से लाभान्वित नहीं हो पा रहे हैं ।

एल0आर0एन0 का शोध अध्ययन इस दिशा में संकेत करता है कि कार्यक्रमों में वित्तीय सहायता सम्बन्धी अनियमिततायें है । सौडियन सेलवराज एम0 के शोध अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्रतिभागियों को (प्रत्येक को) पुरस्कार देने से भी कोई महत्वपूर्ण लाभ नहीं मिलता है ।

9. अनुदेशकों से, प्रौढ़ शिक्षा के स्तर को और ऊँचा उठाने तथा प्रभावी ढंग से लागू करने सम्बन्धी अधिकांश सुझाव, हमीरपुर और ललितपुर जनपद से मिले हैं । इनमें से प्रमुख हैं 1. अधिकारियों का समय से केन्द्र से सम्पर्क, 2. बैठने का उचित प्रबन्ध, 3. आयु बन्धन न होना, 4. कार्यक्रम का व्यावहारिक बनाया जाना, 5. शिक्षण कार्य प्रोजेक्टर के माध्यम से करने की आवश्यकता, 6. शिक्षण केन्द्र के लिये अलग भवन की व्यवस्था, 7. विभिन्न प्रकार की शिक्षा सामग्री और उपकरणों के उपलब्धता, 8. अनुदेशकों के वेतन वृद्धि 9. नियमित करना, 10. शिक्षण कार्य महिलाओं द्वारा ही कराया जाना, 11. समय समय पर प्रदर्शनी, सिनेमा आदि की व्यवस्था किया जाना है ।

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रो को प्रभावी ढंग से चलाने के उपायों में, ग्राम प्रधानों ने, उपकरणों सामग्री की व्यवस्था (टाट पट्टी अनिवार्य रूप से होना) और प्रकाश की व्यवस्था की ओर, संकेत किया है । शिक्षण प्रक्रिया में सुधार के एवं व्यावहारिकता और व्यवसायोन्मुखी शिक्षा पर बल देने की ओर ध्यान देने को कहा है । प्रतिभागियों को प्रोत्साहन के लिये पुरस्कार की व्यवस्था भी की जानी चाहिये । उनके मतानुसार ग्राम प्रधान का अनुदेशकों पर नियंत्रण भी चाहिये । इसके अतिरिक्त महिलाओं पुरूषों के केन्द्र अलग अलग (गाँव में दो) स्थापित किये जाने चाहिये ।

शर्मा एस0के0 ने राजस्थान में, अध्ययन में पाया, कि केन्द्रों में कुछ मूलभूत सुविधाओं जैसे मिट्टी के तेल की कमी के कारण प्रकाश व्यवस्था, नही थी ।

10. शोधकर्ता के अध्ययन से संकेत मिलता है कि 92% ग्राम प्रधान / ग्राम प्रमुख / ब्लाक प्रमुख, बुन्देलखण्ड में चल रहे प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से सन्तुष्ट हैं । जालौन के ग्राम प्रधान, ग्राम प्रमुखों ने इंगित किया है कि अनुदेशक समय से केन्द्र पर नहीं आते । झाँसी के केन्द्रों में मनोरंजन के साधनों का अभाव, हमीरपुर में सम्बन्धित व्यक्तियों की लापरवाही की ओर संकेत किया है, किन्तु जो भी सांस्कृतिक या मनोरंजन के कार्यक्रम होते हैं उसमें 70.7% ग्राम

प्रधान देखने आते हैं । कुछ जनपदों के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रो मे सांस्कृतिक कार्यक्रम बिल्कुल नही होने के संकेत मिले है ।

दत्ता एस0सी0 तथा केम्फायर हेलेन द्वारा दिल्ली में शोध अध्ययन में पाया गया किअनुदेशकों की चयन विधि में संशोधन की आवश्यकता है इससे गुणवत्ता बढ़ेगी , इनके वेतन मान तथा सेवा शर्तो में सुधार की आवश्यकता पर, कान्ता ऋषि एवं दत्त नारायण ने,अपने हरियाणा में किये शोध अध्ययन के आधार पर, इंगित किया ।

## निष्कर्ष

निरक्षरता दैवी विपत्ति नही है वरन् आर्थिक विषमताओं का परिणाम है जिसे साक्षरता कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से लागू करने से दूर किया जा सकता है ।

1. प्रौढ़ शिक्षा निरक्षरता उन्मूलन का एक बड़ा कार्यक्रम है जो केवल प्रशासनिक तन्त्र से पूरा नहीं किया जा सकता । इसमें समाज सेवी संगठन, बेरोजगार शिक्षित व्यक्तियों को लगाकर, जन जागरण करके पूरा किया जा सकता है । शोध कर्ता के अध्ययन के आधार पर बुन्देलखण्ड के प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के मूल्यांकन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं ।

1. बुन्देलखण्ड भारत के मध्य में स्थित होने के कारण भारत का हृदय है । जब से इस भाग को बुन्देलों ने अपनाया इस को बुन्देलखण्ड कहा जाने लगा । यह नाम आज भी गौरव के साथ लिया जाता है । बुन्देल खण्ड का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है । वीरों की गाथाओं से भरा है और आज भी अपने गौरवपूर्ण अतीत की गाथा गाने में गौरव अनुभव करता है । भौगोलिक दृष्टिकोण से भी पहाड़ों, चौरस भूमि से सम्पन्न है । कृषि, पाँचों जनपदों – जालौन, झाँसी, बाँदा, ललितपुर तथा हमीरपुर में होती है । क्षेत्र वन सम्पदा से भरपूर है , किन्तु स्वतंत्रता के उपरान्त यह प्रभाग भारत के अन्य प्रदेशों के समान उन्नति नहीं कर पा रहा है । उत्तर प्रदेश के अन्य जनपदों की अपेक्षा इस क्षेत्र में विकास के कार्यक्रम कम हैं ।

2. शिक्षा के क्षेत्र में बुन्देलखण्ड प्रभाग बहुत पिछड़ा है । साक्षरता के दृष्टि से इस प्रभाग में बहुत कुछ होना शेष है । सन् 1981 की जनगणना के अनुसार बुन्देलखण्ड की साक्षरता की स्थिति इस प्रकार थी ।

### तालिका - 5-1

### बुन्देलखण्ड की जनसंख्या एवं औसत साक्षरता (1981 जनगणना अनुसार)

| जनपद | जनसंख्या | औसत साक्षरता % |
|---|---|---|
| जालौन | 9,87,432 | 35.95 |
| झाँसी | 11,37,714 | 37.06 |
| बाँदा | 15,33,990 | 23.30 |
| ललितपुर | 5,77,648 | 21.34 |
| हमीरपुर | 11,94,168 | 26.31 |
| **बुन्देलखण्ड** | **54,30,952** | **28.75** |

यह औसत प्रतिशत भारत के साक्षरता प्रतिशत (36.23) से कम है ।

### तालिका - 5.2

### बुन्देलखण्ड प्रभाग में साक्षरता प्रतिशत जनगणना 1991 के अनुसार

| जनपद | जनपद % | पुरूष % | महिला % | जनसंख्या |
|---|---|---|---|---|
| जालौन | 41.33 | 54.43 | 25.51 | 12,17,021 |
| झाँसी | 42.75 | 55.49 | 27.92 | 14,26,751 |
| बाँदा | 28.74 | 41.59 | 13.47 | 18,51,014 |
| ललितपुर | 25.36 | 35.82 | 12.97 | 7,48,997 |
| हमीरपुर | 32.14 | 45.40 | 16.71 | 14,65,401 |
| **योग** | **34.06** | **46.54** | **19.31** | **67,09,184** |

सन् 1991 की जनगणना के अनुसार बुन्देलखण्ड के पाँचों जनपदों की जनसंख्या लगभग 13 लाख बढ़ कर 67,09,184 हो गई । भारत की औसत साक्षरता प्रतिशत 52.11 की तुलना में उत्तर प्रदेश का मात्र 45 प्रतिशत है । बुन्देलखण्ड प्रभाग की साक्षरता प्रतिशत तो इससे भी कम है । सन् 1995 तक भारत में शत प्रतिशत साक्षरता का लक्ष्य तो रक्खा गया है, परन्तु जनसंख्या और निरक्षरता दोनों में वृद्धि हो रही है । सभी प्रकार के प्रयत्नों से साक्षरता की प्रतिशत वृद्धि दर 8.55 है जबकि वर्ष 1989-91 में निरक्षरता की प्रतिशत वृद्धिदर 7.31 ही रही थी । ऐसी दशा में सन् 2000 तक शत प्रतिशत साक्षरता लक्ष्य पाने के लिये "साक्षरता "जन आन्दोलन" का रूप धारण कर लेना ही एक विकल्प प्रतीत होता है ।

3. बुन्देलखण्ड प्रभाग पर यह शोध अध्ययन प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन "वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा अन्य प्रकार की चेतना एवं जागरूकता का मूल्याकन कर प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को गतिशील बनाने एवं प्रभावी संचालन में सहायक होगा । शोध अध्ययन उपर्युक्त दिशाओं में, बुन्देल-खण्ड के प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों को लाभ का मूल्यांकन हेतु किया गया है । अध्ययन के आधार पर वैयक्तिक चेतना की स्थिति का विवरण निम्नांकित है :-

प्रतिभागियों को व्यवहारिक जानकारी हुई है । 85 प्रतिशत को कुछ पढ़ने लिखने का ज्ञान हुआ है । वे शिक्षा के महत्त्व को समझने लगे हैं । धन के विनियम सम्बन्धी ज्ञान में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है । प्रतिभागी अब सामान लेने देने में उपकरणों के खरीदने एवं पारिवारिक समस्या के निदान के लिये सलाह देने लगे हैं । स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है । पुरूषों की अपेक्षा

महिलायें स्वास्थ्य के प्रति अधिक जानकारी रखती हैं। वे स्वास्थ्य केन्द्रों का लाभ लेने लगी हैं। विभिन्न प्रकार के रोगों की जानकारी उनमें होने लगी है उनसे परिवार को बचाने के उपाय करने की प्रति जागरूकता उनमें आने लगी है। कृषि उपकरणों, क्रय, उपयोगिता के प्रति विशेषज्ञों की सलाह का लाभ प्रतिभागी उठाने लगे हैं। वे अपव्यय से बचने का प्रयास करने, संचार माध्यमों का उपयोग करने, लगे हैं। डाकतार, कार्यप्रणाली का कुछ ज्ञान हुआ है किन्तु फिर भी दूसरों पर आश्रित रहते हैं ।

**सामाजिक चेतना की स्थिति : -**

बुन्देलखण्ड के प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों में विकास कार्यों के प्रति चेतना आने लगी है वे इसके महत्व को केवल समझने ही नहीं वरन् उससे लाभ उठाने के प्रति जागरूक भी हो रहे हैं। विकास खण्ड गोष्ठियों में भाग लेने, विचार व्यक्त करने और सुझाव देने में रूचि लेने लगे हैं। इस परिवर्तन का आधार शिक्षित होने के अतिरिक्त सम्भवतः एक सीमा तक अनुकरण भी हो सकता है। शिक्षा प्राप्त करने के बाद उनके सामाजिक सम्बन्धों का उदारीकरण हुआ है जातिगत लाभों के कार्यों तक सीमित न रहना और छुआछूत समाप्त करने का दृष्टिकोण उत्पन्न हो रहा है। फिर भी वे वैवाहिक सम्बन्ध अपने ही जाति/उपजाति में करने को वरीयता देते हैं। उनमें सामाजिक समारोहों में भाग लेने के प्रति उदार दृष्टिकोण विकसित हुआ है। धार्मिक जंजीरें धीरे-धीरे टूट रही हैं। और अब वे अधिक संख्या में धार्मिक क्रिया कलापों और समारोहों को आडम्बर मानने लगे हैं वे सीमित परिवार के महत्वपूर्ण को समझने लगे हैं। उनमें समान अधिकार और विकास संगठनों की उपयोगिता सम्बन्धी चेतना जागृत हुई है। सामाजिक कुरीतियों और उनके कुप्रभाव सम्बन्धी चेतना भी प्रौढ़ों की प्रतिक्रियाओं में परिलक्षित हुई है। उन्होंने संयुक्त परिवार अथवा एकांकी परिवार की उपादेयता सम्बन्धी स्पष्ट विचार नहीं दिये हैं फिर भी अधिकांश प्रौढ़ शिक्षा लाभार्थी संयुक्त परिवार को सम्भवतः सुरक्षा एवं सामाजिकता के दृष्टिकोण से महत्व देते प्रतीत होते हैं।

**आर्थिक चेतना की स्थिति : -**

बुन्देलखण्ड प्रभाग के प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के लाभार्थियों से आर्थिक चेतना के संकेत उभर कर आये, वे आय (आमदनी) के श्रोतों, विस्तार के प्रति जागरूक हुये हैं उन्होंने परम्परागत तरीकों की अपेक्षा आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों से कृषि आय में वृद्धि के लिये प्रयत्न करने के प्रति रूचि अभिव्यक्त की है। उन्हें पहले की अपेक्षा, उन राजकीय विकास योजनाओं की अच्छी जानकारी है जो उनकी आय वृद्धि में सहायक हैं। वे अब कृषि के अतिरिक्त अन्य हस्त कौशल के कार्यों में भी रूचि रखने लगे हैं। उन्हें पशु बीमा और फसल बीमा की भी जानकारी है। वे खाली समय में कुछ लाभकारी सेवा कार्य कर लाभ उठाने लगे हैं अब वे आय में क्रमिक वृद्धि और बदलाव को अनुभव करने लगे हैं। प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपने कृषि उत्पादनों का अधिक लाभ उठाने के लिये दूरस्थ स्थानों में जाकर बिक्री करने लगे है। आय वृद्धि के लिये कुटीर उद्योग धन्धों करने लगे हैं।

वाणिज्य और व्यापार की क्षमता उन में कम आयी है। सम्भवतः इसका प्रमुख कारण सीमित साधनों का होना ही है। व्यावसायिक कार्यों के प्रति अब वे अधिक जागरूक हो गये हैं। उनमें नये कार्यों के सीखने और निपुणता प्राप्त करने की मानसिकता आयी है। अब वे अपने हित के साथ-साथ क्षेत्रीय विकास कीभी बात सोचने लगे हैं। बैंकों और समितियों से विकास कार्यों एवं आर्थिक लाभ के लिये ऋण लेने लगे हैं। वे प्रयास करने लगे हैं। कि उनके क्षेत्र में अधिक बैंक और समिति शाखायें खुलें। विलासिता और अउत्पादक कार्यों के लिये ऋण लेने को अनुपयोगी मानने लगे हैं।

**राजनैतिक चेतना की स्थिति : -**

बुन्देलखण्ड प्रभाग के लगभग 50 प्रतिशत प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त प्रतिभागी स्वतंत्राता के अर्थ को समझने लगे हैं प्रौढ़ शिक्षा तन्त्रा को इस दिशा में चेतना जागृति करने का प्रयास करना चाहिये । आधे ही प्रतिभागी मुख्य मुख्य सामान्य जानकारी प्राप्त कर सके हैं। इन प्रौढ़ों को मतदान का महत्व ज्ञात है, किन्तु मतदान में जाति बिरादरी अथवा ग्राम प्रधान की राय को वरीयता देते हैं। प्रौढ़ शिक्षा

प्राप्त प्रतिभागियों का लगभग एक चौथाई भाग मतदान प्रक्रिया को निरर्थक मानते हैं जो प्रजातन्त्र की परिकल्पना के विपरीत तथा राजनीतिज्ञों को मतदान की अनियमितताओं के प्रति सचेष्ट होने की ओर संकेत करता है। अधिकांश प्रतिभागी विकास की ओर सही दृष्टिकोण रखते हैं उनमें इतनी जागरूकता तो आ ही गयी है कि वे सरकार एवं पदाधिकारियों को विकास कार्यों के संचालन पर बल देने को कहें, वे आवन्टित धनराशि के सही और समुचित उपयोग में विश्वास रखते हैं।

ग्राम पंचायतों के अधिकार तथा दायित्व सम्बन्धी चेतना का उन्हें अच्छा ज्ञान है किन्तु लगभग एक चौथाई प्रतिभागी ग्राम पंचायत की सही संकल्पना नहीं रखते हैं। प्रौढ शिक्षा प्राप्त प्रतिभागियों का एक बड़ा भाग प्रौढ़ शिक्षा को सही अर्थ में लेता है। फिर भी लगभग एक चौथाई में, इसकी महत्ता सम्बन्धी चेतना जागृत करने के प्रयास किये जाने चाहिये।

**अन्य ज्ञान की स्थिति : -**

वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, चेतना के अतिरिक्त कुछ और ऐसी बातें हैं जिनके प्रति प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं को शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में समाहित किया है। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के अधिकांश पुरूष प्रतिभागी अनुकरण द्वारा पंजीकृत होते हैं। महिलायें इस सम्बन्ध में अधिक अग्रगामी हैं, वे अपनी पहल पर पंजीकृत होने आयी। सम्भवतः वे शिक्षा के महत्व एवं लाभ को पुरूषों की अपेक्षा अधिक समझती हैं। जो प्रौढ़ प्रतिभागी बीच में अध्ययन छोड़ चुके थे, उनका मत है कि अधिक आयु में प्रौढ़ शिक्षा से लाभ नहीं है। वे उत्पादन के कार्य में समय देना अधिक उचित और उपयोगी मानते हैं वे अन्धविश्वास के परिणामों, नशे की बुराइयों के प्रति सचेत हुये हैं दहेज लेने व देने को बुरा मानने लगे हैं किन्तु मारपीट, लड़ाई को बुन्देलखण्ड अंचल में आज भी बुरा नहीं माना जाता। अब वे सार्वजनिक स्थानों, कुओं, मुहल्ले की सफाई को अधिक महत्त्व देने लगे हैं, इनकी उपयोगिता को समझने लगे हैं।

प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे अपने घरों को अधिक व्यवस्थित ढंग से चलाने लगे हैं । आय-व्यय में सन्तुलन लाने में सक्षम हो रहे हैं। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के सुचार रूप से चलाने के लिये सरकार एवं अधिकारियों को सुझाव देने लगे हैं अधिक शिक्षण सामग्री की मांग करने लगे हैं। अधिकांश प्रतिभागी प्रौढ़ शिक्षा को लाभदायक मानते हैं किन्तु एक चौथाई भाग इसे अभी भी दिखावा मात्र मानते हैं। अब वे बच्चों की, स्वयं की बीमारियों की, समुचित जिज्ञासा करने लगे हैं एवं स्वास्थ्य केन्द्रों का लाभ उठाते हैं।

**अनुदेशक एवं ग्राम प्रधान द्वारा दी गई सूचनाओं के आधार पर निष्कर्ष : -**

शोध कर्ता ने इस अध्ययन को बल प्रदान करने के लिये, अनुदेशक, ग्राम प्रधान, ग्राम के प्रमुख व्यक्तियों की प्रतिक्रियाओं को उचित स्थान दिया है। अधिकांश अनुदेशक हाई स्कूल उत्तीर्ण हैं इन अनुदेशकों में कुछ ही ने प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को ठीक से चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। अनुदेशक अपने वेतन से संन्तुष्ट नहीं है। इस कारण लगभग 63 प्रतिशत अनुदेशकों ने प्रौढ़ शिक्षा में रूचि व्यक्त नहीं की है वे केवल बेराजगारी के कारण ही कम वेतन पर काम करने को तैयार हुये हैं। ग्राम प्रधानों का यही मत है, कि जिन व्यक्तियों को कहीं कार्य नहीं मिला वे ही इस कार्य को कर रहे हैं। 61.9% प्रतिशत प्रतिभागी, केन्द्र पर पंजीकृत होने के लिये स्वयं आये हैं । स्वयं आकर पंजीकृत होने में महिलाओ एवं पुरूषों का प्रतिशत 50 - 50 है। ग्राम प्रधानों का सुझाव है, कि प्रौढ़ शिक्षा में पंजीकृत होने वालों को और सुविधा मिलनी चाहिये, इनके पंजीकृत करने के लिये और प्रयास और प्रोत्साहन दिये जाने की आवश्यकता है।

2. प्रतिभागियों के, बीच में, शिक्षा छोड़ने के प्रमुख कारण, रूचि का अभाव, गृह कार्य को अधिक महत्व देना, कृषि कार्य में व्यस्तता, आर्थिक कठिनाइयां लाभ की कम संभावना, अधिक आयु होने के कारण कम आयु के अनुदेशकों से शिक्षा ग्रहण करने में संकोच, पाठयक्रम में रोचकता की कमी, भौतिक साधनों का अभाव आदि बिन्दु उभर कर आये हैं।

3. ग्राम प्रधानों में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से जुड़ने के बारे में मिलीजुली प्रतिक्रिया व्यक्ति की है। लगभग 40 प्रतिशत ग्राम प्रधान माह में एक बार प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को देखने के लिये केन्द्र पर आते हैं।

4. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों से जुड़े अधिकारियों कर्मचारियों ने अपनी सहभागिता के बारे में मिली जुली प्रतिक्रिया व्यक्त की है। कार्यक्रम से जुड़े अधिकारियों से सक्रियता और सहभागिता की और अधिक अपेक्षा की गयी है।

5. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में उपकरणों और पठन सामग्री की कमी के संकेत मिलते हैं । प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में इन उपकरणों एवं पठन पाठन सामग्री के व्यवस्थित ढंग से चलाने के लिये विशिष्ट प्रशिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता भी सभी स्तर पर अनुभव की गई है। अनुदेशकों और ग्राम प्रधानों ने इन सामग्री की एक सूची तक गिनाई है ।

6. सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड प्रभाग में जनजातियों के प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों की सहभागिता कम होने के संकेत मिले हैं। ग्राम प्रधानों का मत है कि हरिजनों और पिछड़ी जाति के लोगों को प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से अपेक्षित लाभ नहीं हुआ है।

7. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के स्तर को उच्च बनाने के लिये अनुदेशकों ग्राम प्रमुखों के कुछ सुझाव हैं। समय की पाबन्दी, बैठने की उचित व्यवस्था, प्रतिभागियों के आयु बन्धन को समाप्त करना, शिक्षण में प्रोजेक्टर का प्रयोग, प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के अपने भवन, महिला पुरूष के लिये केन्द्रों की अलग अलग व्यवस्था प्रकाश की उचित व्यवस्था, समय समय पर प्रदर्शनी दृश्य-श्रव्य की व्यवस्था होना, उचित ही है। अच्छे कार्यकर्ता को पुरस्कार की व्यवस्था, ग्राम प्रधानों की सहभागिता भी विचारणीय बिन्दु है।

8. 92 प्रतिशत ग्राम प्रधानों के बुन्देलखण्ड में चल रहे प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से सन्तुष्ट होने के संकेत हैं किन्तु वे साथ ही साथ सुधारों की अपेक्षा रखते हैं।

## सारांश

निष्कर्षों को सारांश में कहा जा सकता है कि बुन्देलखण्ड प्रभाग में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के चलाये जाने से जालौन, झांसी, बांदा, ललितपुर, हमीरपुर जनपद के प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों को लाभ हुआ है। इन जनपदों के प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त प्रतिभागियों को वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, एवं अन्य क्षेत्रों की जागरूकता में वृद्धि हुई है। उपर्युक्त क्षेत्रों में चेतना तथा जागरूकता का प्रतिशत भिन्न भिन्न है ।

प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों अनुदेशकों तथा ग्राम प्रधानों ने प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में सुधार लाने के लिये कुछ बिन्दुओं पर प्रकाश डाला है और सुझाव भी दिये हैं। यह उचित एवं सराहनीय कदम होगा यदि उन सुझावों पर शासन तथा कार्यकर्ताओं द्वारा विचार किया जाये ।

**प्राक्कल्पना के प्रति कथन :**

शोधकर्ता ने प्रयुक्त शोध अध्ययन को सामाजिक सर्वेक्षण के अन्तर्गत वर्गीकरण करने का उल्लेख किया है, और वहीं पर यह भी उल्लेख किया है, कि प्रौढ़ शिक्षा के मूल्यांकन की परिकल्पना की जा सकती है। परिकल्पना निर्धारण में शोध कर्ता ने दो बिन्दुओं पर बल दिया है।

1. **प्रौढ़ शिक्षा से वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक चेतना में वृद्धि होती है।**

2. **स्त्री तथा पुरूषों दोनों में शिक्षा के माध्यम से जागरूकता उत्पन्न करना सम्भव है।**

शोधकर्ता के प्रौढ़ शिक्षा के मूल्यांकन से आंकड़ों के विश्लेषण, निर्वचन, विवेचन से जो तथ्य प्रकाश में आये, उनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से बुन्देलखण्ड प्रभाग के प्रतिभागियों की वैयक्तिक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में चेतना जागृत हुई है, प्रतिभागियों को इन क्षेत्रों में लाभ हुआ है।

महिलाओं एवं पुरूषों दोनों में ही प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त करने के बाद विभिन्न क्षेत्रों में जागरूकता आई है। कहीं कहीं पर तो महिलाओं की प्रतिभागिता पुरूषों की अपेक्षा अधिक मिली है।

इस प्रकार इस आधार पर, परिकल्पना को स्वीकारा गया है। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से प्रौढ़ शिक्षा के प्रतिभागियों को लाभ हुआ है। लाभ होने का प्रतिशत विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न है। इससे सम्बन्धित अन्य शोध अध्ययन एवं सर्वेक्षण, शोधकर्ता के अध्ययन की और परिकल्पना की पुष्टि करते हैं।

## षष्टम अध्याय

**सुझाव :**

प्रौढ़ शिक्षा के अन्तर्गत निरक्षरता उन्मूलन कार्यक्रम निम्नलिखित बिन्दुओं में प्रस्तुत हैं।

अ) शासन द्वारा समय समय पर कार्यक्रमों से सम्बन्धित लिये गये निर्णयों का अनुपालन ।

ब) जनहित में निर्णयों में संशोधन सम्बन्धी सुझाव ।

स) प्रस्तुत शोध अध्ययन आधारित सुझाव ।

द) परिणाम परख, व्यावहारिक सुझाव ।

अ) **शासन द्वारा लिये गये निर्णय :**

निर्णयों के अंतर्गत भारत सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा लिये गये वे निर्णय हैं जिनका अनुपालन प्रदेश के प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय द्वारा कराया जाना अपेक्षित हैं।

1. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों का प्रभावी पर्यवेक्षण अत्यन्त आवश्यक है। सार्थक एवं गहन पर्यवेक्षण सुनिश्चित करने की दृष्टिकोण से निर्देश दिये गये हैं; कि यदि किसी प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र पर उपस्थिति 30 से कम रहती है, तो सम्बन्धित अनुदेशक को सेवामुक्त कर दिया जाये और दूसरे अनुदेशक की व्यवस्था कर दी जाय। प्रतिभागियों की उपस्थिति के लिये प्रत्येक परियोजनाके अन्तर्गत समस्त केन्द्रों को श्रेणी "ए" "बी" "सी" में विभक्त किया गया है। ए श्रेणी में 20 से अधिक बी में 10 से 20 तक तथा सी0 श्रेणी में 10 से कम प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी माने गये हैं।

2. जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी, परियोजना अधिकारी, तथा सहायक परियोजना अधिकारी समय समय पर प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों का आकस्मिक निरीक्षण करेंगे ।

3. पर्यवेक्षक को अपने दौरे का विवरण पूर्व देना है, उसके अनुसार यदि वह केन्द्र पर न पाये जाय तो पर्यवेक्षक के विरूद्ध समुचित कार्यवाही की जाय ।

4. सभी सम्बन्धित अधिकारी अपने भ्रमण की पूर्व सूचना, अपने से उच्च अधिकारियों को दें। प्रत्येक अधिकारी का भ्रमण कार्यक्रम पूर्व निश्चित रहे, उसके अनुसार अधिकारी के स्थल पर न मिलने पर समुचित कार्यवाही की जाय।

5. यह निर्देश है कि अधिक से अधिक जन समूह को निरक्षरता निवारण आन्दोलन में सम्मिलित किया जाय। स्थानीय जनता के सहयोग से सम्मेलनों के उपायोजन किये जायें। प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागियों की सूची स्थानीय प्रमुख व्यक्तियों एवं जन प्रतिनिधियों को दी जायें विधायक, सांसद प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को देखने जा सकते हैं। जिलाअधिकारियों को भी सूची उपलब्ध करायी जाये ।

6. शिक्षण संस्थाओं तथा युवा वर्ग की सहभागिता लेने के भी आदेश प्रौढ़ शिक्षा अधिकारियों को शासन की ओर से दिये गये हैं। इस दिशा में युवा शक्ति का उपयोग करने की दृष्टि से विभाग द्वारा महत्वाकांक्षी **"समन्वित प्रौढ़ शिक्षा योजना"** बनायी गयी है, जिसमें विद्यालय, महाविद्यालय, तथा विश्वविद्यालयों के छात्रों को सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक छात्र से 5 निरक्षर प्रौढ़ों को साक्षर करने की अपेक्षा की गई है। छात्रों को इस हेतु उनकी कक्षोन्नति प्रवेश और चयन

में कुछ अंकों का बोनस दिये जाने का प्राविधान है।

7. प्रौढ़ शिक्षा कर्मियों को प्रशिक्षित करने के कार्यक्रम बनाये गये हैं जो समय समय पर चल रहे हैं । इसमें 21 दिन का प्रशिक्षण अनुदेशकों के लिये हैं। जिसमें 10 दिनों का अभिनवी प्रशिक्षण तथा 11 दिनों में से 1, 1 दिन के अपने मुख्यावास में ही प्रत्येक माह के प्रथम सप्ताह में प्रशिक्षण लेगें। प्रत्येक परियोजना पूरे वर्ष का एक **"एक्शन प्लान"** तैयार करना है; जिसमें, प्रत्येक माह, एक दिन का प्रशिक्षण, लेना होगा। इस प्रशिक्षण में कठपुतली, टेपरिकार्डर, रेडियो, पोस्टर तथा अन्य दृश्य-श्रव्य सामग्रियों का प्रयोग सम्बन्धी प्रशिक्षण सम्मिलित हैं।

8. महिला प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की प्रतिभागी सिलाई, कटिंग और बुनाई के प्रशिक्षण आई0टी0आई0 में प्राप्त करेंगी। खादी ग्रामोंद्योग अधिकारी के सहयोग से व्यावसायिक प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की गयी है।

9. ग्राम्य विकास विभाग में कार्यरत प्रौढ़ों को परियोजना में प्राथमिकता दिये जाने के आदेश हैं।

10. बड़े-बड़े व्यापारिक प्रष्ठिानों कारखानों, फर्मों के मालिकों से इस आशय से सम्पर्क किया गया है कि वह अपने यहां के निरक्षर प्रौढ़ को शिक्षा लेने हेतु प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में भेंजें ।

11. उत्तर साक्षरता एवं सतत् शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का अभिन्न अंग है, इसके अन्तर्गत 32 परियोजनायें चल रही हैं, जिसमें साक्षर किये गये प्रौढ़ों को उत्तर साक्षरता एवं सतत् शिक्षा कार्यक्रम में सम्मिलित किये रखने के आदेश हैं। जनपद स्तर एवं प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में पुस्तकालयों में पठन कक्ष, "रीडिंग रूम" की व्यवस्था के भी आदेश है।

12. राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय नई दिल्ली द्वारा तथा राज्य प्रौढ़ शिक्षा निदेशालयों द्वारा प्रशिक्षण आयोजित किये जाते हैं इस प्रशिक्षणों में राज्यों के प्रौढ़ शिक्षा निदेशक, जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी, पर्यवेक्षक, अनुदेशक, परियोजना अधिकारी भाग लेने के लिए आदेशित किये जाते हैं ।

**तालिका 6–1**

**प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम अधिकारियों, अनुदेशकों का प्रशिक्षण विवरण**

| स्तर | अधिकारी | प्रशिक्षण अवधि | प्रशिक्षण |
|---|---|---|---|
| 1. राष्ट्रीय स्तर | प्रौढ़ शिक्षा निदेशक | 6 दिवसीय | कार्य नीति |
| 2. " | जिला प्रौढ़ अधिकारी | 6 दिवसीय | कार्य नीति |
| 3. राज्य स्तर | परियोजना अधिकारी | 10 दिवसीय | अभिनवीकरण |
| 4. राज्य स्तर | सह परियोजना अधिकारी | 10 दिवसीय | पुनर्वाधन |
| 5. क्षेत्रीय | पर्यवेक्षकों का | 15 दिवसीय | अभिनवीकरण |
| 6. क्षेत्रीय | पर्यवेक्षकों का | 7 दिवसीय | पुनर्वोधन |
| 7. क्षेत्रीय | सांख्यकी सहायक | 3 से 10 दिसवीय | प्रशिक्षण |
| 8. जिलास्तर | अनुदेशक | 10 दिन | सतत प्रशिक्षण |
| | | 6 दिन | पुनर्वोधन |
| 9. परियोजना क्षेत्र | अनुदेशक | 10 दिन | पुनर्वोधन |
| 10. पर्यवेक्षकों के सकुल क्षेत्र | अनुदेशक | एक दिवसीय माह के प्रथम सप्ताह में | प्रशिक्षण कार्य के गुणात्मक विकास के लिये तथा गोष्ठी |

13. सभी को, सन् 1995 तक शिक्षित करने के लिये व्यापक कार्यक्रम को निष्ठा से करने के आदेश हैं।

14. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर प्रयोग में आने वाली पठन पाठन सामग्री की संरचना, निर्माण व आपूर्ति साक्षरता निकेतन (प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय) द्वारा की जाती है। इनमें सात प्रकार के विभिन्न प्रपत्र एवं पत्रिकायें "नई राह" प्रवेशिका एवं अभ्यास पुस्तिकायें हैं साथ ही शिक्षण चाट "नई राह प्रवेशिका" का प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम, तथा विभिन्न प्रकार के पोस्टर भी निर्मित होते हैं। केन्द्रों को भेजी जाने वाली सामग्री की लम्बी सूची है। इनके रख रखाव के स्पष्ट आदेश हैं।

15 प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम समय समय पर रेडियों से भी प्रसारित होने लगे हैं ।

16. शत प्रतिशत साक्षर बनाने के लिये प्रत्येक वर्ष कुछ गाँवों का चयन किया जाता है और जन जागरण कार्यक्रम द्वारा सभी स्तर पर साक्षर बनाने का अभियान चलाया जाता है ।

उत्तर प्रदेश में 1-4-1988 को 15 से 35 आयु वर्ग के 205 लाख निरक्षर व्यक्तियों को शत प्रतिशत साक्षर बनाने की रणनीति बनायी गयी है । "एक पढ़ाये एक" के स्थान पर अब "एक पढ़ाये अनेक" की नीति के अनुसार जनजागरण कार्यक्रम चल रहा है । इसके लिये प्रत्येक परियोजना में 37 जन शिक्षा निलयम स्थापित किये गये हैं । जिसमें शासकीय व्यवस्था में राजकीय विश्वविद्यालय स्वेच्छिक संस्थाओं के सहयोग से निरक्षरता उन्मूलन कार्यक्रम चल रहे हैं ।

17. ग्राम न्याय पंचायत विकास खण्ड, जिला और राज्य स्तर पर प्रबन्ध प्रणाली के प्रशासनिक ढाँचें को नियन्त्रण और कार्य करने की शैली में परिवर्तन करने के प्रस्ताव शासन के विचाराधीन है ।

18. विभिन्न पद्धतियों और माध्यमों का उपयोग करते हुये प्रौढ़ शिक्षा का एक व्यापक कार्यक्रम कार्यान्वित किये जाने की संकल्पना है । इसके अन्तर्गत निम्नलिखित कार्यक्रम लाये जाने की योजना है ।

1. ग्रामीण क्षेत्रों में प्रौढ़ व्यक्तियों के लिये सतत् शिक्षा केन्द्रों की स्थापना ।
2. नियोजकों, मजदूर संगठनों द्वारा श्रमिकों की शिक्षा व्यवस्था ।

3. जन शिक्षण में समूह शिक्षण के साधनों जैसे रेडियो, दूरदर्शन और फिल्मों का उपयोग ।

4. दूर शिक्षण के कार्यक्रम ।

5. स्वास्थ्य स्वयं शिक्षण में सहायता की व्यवस्था ।

6. आवश्यकता और रूचि आधारित शिक्षा ।

19. अनुदेशकों के चयन में एक 6 सदस्यीय समीति बनाने के आदेश हैं । जिसमें 1. जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी (अध्यक्ष), 2. जिला अधिकारी द्वारा नामित एक सदस्य, 3. जिला हरिजन एवं समाज कल्याण अधिकारी, 4. सम्बन्धित विकास खण्ड अधिकारी, 5. सम्बन्धित विकास खण्ड प्रमुख, 6. सहायक परियोजना अधिकारी (सदस्य सचिव) होगें ।

20. प्रतिवर्ष समय समय पर राष्ट्रीय प्रवेश तथा जिला स्तर पर प्रौढ़ शिक्षा में अभिप्रेषण कार्यशाला, विचार गोष्ठी एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाने के आदेश हैं जिसके माध्यम से प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को व्यावहारिक बनाने पर विचार किया जाता है और संस्तुतियों पर नवीन आदेश पारित किये जाते हैं ।

21. वर्ष 1991-92 में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत "केन्द्र आधारित योजना" के साथ अभियान पद्धति" को भी लागू किया है । कुछ जनपदों में सम्पूर्ण साक्षरता का अभियान चलाया गया है । इस उद्देश्य के पूर्ति के लिये 12 प्रौढ़ शिक्षा परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान की गयी है ।

22. सभी के लिये शिक्षा" नामक विश्व बैंक घोषित परियोजना की संरचना की कार्यवाही उत्तर प्रदेश के 20 जनपदों में संचालित करने का निर्णय लिया गया है । प्रौढ़ शिक्षा योजना भी इनमें से एक भी है । यूनीसेफ की सहायता से क्रियोन्मुखी कार्यक्रम चलाये जाने का निर्णय भी लिया गया है , जिस में प्रत्येक केन्द्र में 10 दैनिक पत्रों तथा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद आदि की व्यवस्था होगी । प्रत्येक वर्ष शत प्रतिशत साक्षरता सप्ताह" 5 सितम्बर से 12 सितम्बर 1989 से मनाया जाने लगा है । इस अभियान से 15-35 आयु वर्ग के 287 लाख व्यक्ति पाँच वर्षों में लाभान्वित होंगे । नृत्य और नाटक के

500 टोलियाँ प्रशिक्षित की गई है, जो 40,000 से 60,000 गाँव की सड़कों में, नृत्य और नाटकों के माध्यम से निरक्षरता दूर करने के कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे । इस कार्यक्रम का तमिल नाडू, गुजरात और आन्ध्र प्रदेश में सफल प्रयास किये जा चुके हैं । केरल बिहार, मध्य प्रदेश में सफल प्रयास किये जा चुके हैं । केरल बिहार, मध्यप्रदेश और राजस्थान में ये कार्य चल रहे हैं उत्तर प्रदेश में यह कार्यक्रम चलाने की योजना है ।

**(ब) शासकीय निर्णयों में संशोधन सम्बन्धी सुझाव**

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की व्यवस्था उन प्रयासों पर निर्भर करती है जो लोगों के जीवन स्तर की यथेष्ट ऊँचा उठाने के लिये किये जा सकते हैं । ग्रामीण लोगों की आर्थिक दशा को देखते हुये, आर्थिक विकास कार्यक्रम की प्रक्रिया अपनाई जाना उचित ही है । आर्थिक विकास की प्रक्रिया का जीवन के सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं से सीधा एवं गहरा सम्बन्ध है अतः उक्त व्यवहारिक पक्ष को ध्यान में रखना होगा । उन्हे कुटीर उद्योग, कला कौशल में दक्ष बनाना होगा । उत्पादन से सम्बन्धित कृषि क्रिया कलापों को भी देखना उचित होगा । फल, फूल, सब्जी के उत्पादन पर बल देना होगा । सुव्यवस्थित प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों की रेडियो तथा संचार माध्यम से प्रसारण करने की व्यवस्था होनी चाहिये । निरक्षरता उन्मूलन और प्रौढ़ शिक्षा की सफलता के लिये कुछ आधार भूत समस्यायें दृष्टिगोचर होती है जिनके विषय में सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत है ।

पाठ्यक्रम, अनुदेशक चयन एवं प्रशिक्षण, अभिनवन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम, मूल्यांकन एवं अनुसंधान स्वेच्छिक संस्थाओं का योगदान, प्रयोजना मूलक साक्षरता के लिये आर्थिक संसाधनों की व्यवस्था महत्त्वपूर्ण बिन्दु हैं जिनमें सुधार की आवश्यकता है । इनका विवरण बिन्दु अनुसार इस प्रकार है ।

**पाठ्यक्रम :** पाठ्य क्रम विभिन्न व्यवसायों तथा स्थानीय परिवेश के आधार पर तैयार होना चाहिये ।

1. जो भी पाठ्यक्रम संरचित किया जाये उसमें 60% शब्द या विषय वस्तु कृषि व्यवसाय से संबधित हो, 20% शब्द शहरी अथवा नागरिक वातावरण से संबधित हों और 20% शब्द राष्ट्रीय स्तर के उपयुक्त शब्द हो ।

2. पाठ्यक्रम में व्यावसायिक उन्नयन की बात एवं उस व्यवसाय से संबंधित विभिन्न अभिकरणों के बारे में सूचनात्मक पाठ दिया जाये ।

3. प्रत्येक पाठ्यक्रम में इस प्रकार के पाठ रखे जायें जिनमें संविधान में दिये गये मूल भूत अधिकार, नीति निर्देशक तत्व एवं विभिन्न प्रकार के अध्यादेश

जो पीड़ित प्रताड़ित अल्प संख्यक एवं अनुसूचित जाति जनजाति के लिये पारित किये गये हो का वर्णन हो ।

4. राजनैतिक चेतना जागृत करने हेतु विभिन्न राष्ट्रीय स्तर के दलों की नीति और उनका संक्षिप्त परिचय पाठ्यक्रम में समाहित किया जाये ।

5. पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक जीवन यापन के संदर्भ में पाठ निहित हो जो सामाजिक कुरीतियों को भी दूर करें ।

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को चार भागों में विभाजित किये जाये । चार भाग निम्नलिखित हों -

1. भाषा, 2. गणित, 3. पर्यावरण, 4. लोक संस्कृति ।

**अनुदेशक का चयन एवं प्रशिक्षण**

1. **अनुदेशक स्थानीय उत्साही ग्रामीण युवक भूतपूर्व सैनिक अन्य अवकाश** प्राप्त व्यक्ति, स्वयं सेवी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को वरीयता के आधार पर चुना जाये ।

2. अनुदेशक प्रौढ़ शिक्षार्थियों में लोकप्रिय हो ।

3. ग्रामीण क्षेत्र में रूचि लेने वाली ही महिला अनुदेशकों को चयन किया जाये । शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों एवं विद्यालयों को महिलाओं की 3-4 माह तक सघन प्रशिक्षण आयोजित कर अनुदेशिका बनने योग्य शिक्षित किया जाये जिससे वे महिला प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को सुचारू रूप से चला सकें ।

4. जहाँ कहीं महिला संगठन की संभावना दृष्टिगत हो वहाँ महिला विकास अभिकरण द्वारा प्रशिक्षण दिया जाये ।

5. प्रौढ़ शिक्षा अनुदेशिका का प्रशिक्षण कम से कम प्रारंभ में नियुक्ति के पूर्व दो महीने का हो ; इसके पश्चात 15 दिन का प्रशिक्षण प्रत्येक सत्र में सुविधानुसार दिया जाये ।

6. प्रशिक्षण कार्यक्रम सघन और संगठित हो । प्रशिक्षणार्थियों को वहाँ निवास की सुविधा दी जाये और विभिन्न प्रकार के शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक एवं मनोरंजन संबंधी कार्यक्रम का व्यावहारिक ज्ञान करवाया जाय ।

7. संदर्भ केन्द्र वही हों जो प्रौढ़ शिक्षा अथवा अनौपचारिक शिक्षा से जुड़े हुये हों । इसके अतिरिक्त विभिन्न व्यवसायों के निपुण व्यक्तियों को वार्ताकार के रूप में आमंत्रित किया जाये ।

8. प्रशिक्षण काल में एक मास बाद उन्हें विभिन्न प्रौढ़ शालाओं में लगाकर कम से कम 7 दिन शिक्षण करने का कार्यक्रम आयोजित किया जाये

9. प्रशिक्षण काल के बाद उनके प्रशिक्षण कार्यक्रम को मूल्यांकित किया जाये एवं उनका वर्गीकरण किया जाये तथा इस आधार पर उन्हें प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रो पर नियुक्ति दी जाये ।

**अभिनवन एवं निरीक्षण कार्यक्रम**

1. 15 दिवसीय अभिनवन कार्यक्रम के अन्तर्गत उन्हे विभिन्न सामाजिक राजनैतिक नवाचार का संक्षिप्त रूप में ज्ञान दिया जाये ।

2. केन्द्रों पर उनके अनुभवों का समुचित लाभ उठाया जावे । वे एक दूसरे के अनुभव से लाभान्वित हों और समस्याओं के समाधान हेतु विचार विमर्श कर निराकरण खोजें ।

3. अभिनवन कार्यक्रम उस समय आयोजित किया जाये जब प्रौढ़ अपनी खेती के कार्य में अत्यन्त व्यस्त रहते हों ।

4. अभिनवन कार्यक्रम के अन्तर्गत जो प्रशिक्षण दिया जाये उसमें अनुदेशक, पर्यवेक्षक और परियोजना अधिकारी सभी भाग लें ।

5. संदर्भ व्यक्ति विभिन्न व्यवसायों से संबधित एवं विभिन्न स्तरों के निपुण

व्यक्ति हों ; उनसे उपलब्ध ज्ञान को प्राप्त कर पर्यवेक्षक एवं परियोजना अधिकारी उन कार्यक्रमों का मूल्यांकन करें ।

6. पर्यवेक्षक कम से कम महीने में दो बार अपने प्रत्येक केन्द्र का परिवेक्षण करें ।

7. सहायक परियोजना अधिकारी कम से कम तीन माह में अपने सभी केन्द्रों का परिवेक्षण करें एवं परियोजना अधिकारी 6 माह में नियमित रूप से परिवेक्षण करें ।

8. इसके अतिरिक्त शिक्षा विभाग के विकास विभाग के अधिकारी एवं अन्य प्रबुद्ध लोग जो इस कार्यक्रम में अभिरूचि रखते हैं शिक्षा विभाग की अनुमति से या उनके आग्रह से केन्द्रों का परिवेक्षण समय एवं सुविधा के अनुसार करें ।

9. प्रत्येक केन्द्र के साथ कुछ ऐसे स्थानीय प्रबुद्ध लोगों की समिति बना दी जाये जो समय समय पर उसकी देखभाल, निरीक्षण, मार्ग दर्शन एवं मूल्यांकन करते रहें ।

**मूल्यांकन एवं अनुसंधान**

1. आन्तरिक मूल्यांकन को सक्षम आधार माना जाये । नये सुझावों की दृष्टि से वाह्य मूल्यांकन का प्रावधान भी होना चाहिये । आंतरिक मूल्यांकन पहले अनुदेशक प्रत्येक माह के अन्त में करें और अपने पर्यवेक्षक तक उसको संप्रेषित करें ।

2. पर्यवेक्षक और अनुदेशक दोनो मिलकर लक्ष्यों की प्राप्ति में जो कमी हो उसे दूर करने के लिये किये गये प्रयत्नों को अभिलिखित करें ।

3. पर्यवेक्षक साल में एक बार करीब करीब ; सभी केन्द्रों को मूल्यांकन की दृष्टि से देखे और सघन मूल्यांकन करें ।

4. प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन का एक विशिष्ट प्रकोष्ठ होना चाहिये वे एवं इसमें उन प्रौढ़ शिक्षा विदों को सम्मिलित किया जाना चाहिए जो प्रौढ़ शिक्षा की संकल्पना, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम तथा मानव विकास की परिकल्पना से न केवल परिचित हो वरन् उसके प्रति संवेदन शील भी हों ।

5. अनुसंधान द्वारा समय समय पर मूल्यांकन में भी अपेक्षित परिवर्तन किया जाना चाहिये ।

6. जिन स्वयं सेवी संस्थाओं में अनुसंधान कार्य करने की क्षमता है उन्हे भी अनुसंधान कार्य करने का प्रोत्साहन दिया जाये ।

**स्वैच्छिक संस्थाओं का योगदान**

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में स्वयं सेवी संस्थाओं की अहम् भूमिका है । अब तक किये गये उच्च स्तरीय मूल्यांकनों के आधार पर उनका कार्य सराहनीय रहा है । वस्तुतः स्वयंसेवी संस्थायें समाज की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं के अनुकूल शैक्षिक कार्यक्रम चलाने में सफल एवं सक्षम है अतः प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रम प्रमाणिक स्वयं सेवी संस्थाओं को दिया जाये, उनकी वित्तीय सहायता की देख रेख हो । उनकी निरन्तर जाँच होना अनिवार्य किया जाये । लेखा सम्बन्धी प्रवधानों का सही परिप्रेक्ष्य में उपयोग करने में मार्ग दर्शन होता रहे ।

जगन्नाथ दुवाकर दिल्ली में पेट्रोल पम्प और पेट्रोलियम सउत्पाद व्यवसाय में रत हैं, अलीगढ़ एवं खुरजा में ट्रक ड्राइवर को शिक्षित करने के लिये अध्यापकों को प्रशिक्षित कर रहे हैं । प्रत्येक अध्यापक को 10 00 रूपये मासिक वेतन देखकर निरक्षरता उन्मूलन कार्यक्रम चला रहे हैं । वे प्रत्येक प्रतिभागी को 25 रूपये मासिक अनुदान भी देते हैं ।

टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान ने जिला साक्षरता समिति की स्थापना करके शत प्रतिशत साक्षरता कार्यक्रम को सही दिशा प्रदान

की है । इसके माध्यम से केरल, पाण्डेचेरी, महाराष्ट्र के कानकन सिन्धुडर्ग जनपद तथा वर्धा क्षेत्र में शत प्रतिशत साक्षरता हो गयी है । पश्चिमी बंगाल के हुगली जनपद के कुछ गाँवों में 80% साक्षरता डेढ़ वर्ष में हो गई और एक वर्ष में शत प्रतिशत साक्षरता करने के कार्यक्रम चला रहे हैं । जामिया मिलिया तथा वाईएम0सी0ए0 जैसी स्वयंसेवी संस्थाओं ने भी इस कार्यक्रम में सहयोग प्रदान किया है ।

**प्रयोजना मूलक साक्षरता के लिये आर्थिक संसाधनों की व्यवस्था**

1. ग्रामीण विकास अभिकरण द्वारा संचालित ट्राइसेम, स्काइट, एकीकृत ग्रामीण योजना ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम एवं ऋण अनुदान संबंधी योजनाओं का सीधा संबंध प्रौढ़ शिक्षा से जोड़ा जाना चाहिये ।

2. आर्थिक संसाधनों का अभाव विकासशील देशों में प्रायः देखा जाता है । अतः आर्थिक दृष्टि से सम्पन्नता के अभाव में कार्यक्रम बीच में ही समाप्त कर दिया जाता है जिसका मनोवैज्ञानिक असर बहुत बुरा पड़ता है ; अतः जो भी सरकारी एवं स्वयं सेवी संस्थायें है वे अपने आर्थिक संसाधन तैयार करें ।

3. नागरिक स्तर पर विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के भवन खेल के मैदान हाल इत्यादि का उपयोग जनता को सम्पर्क शुल्क पर उपलब्ध कराया जाये एवं उसका कुछ प्रतिशत प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में लगाया जाये ।

## (स) प्रस्तुत शोध अध्ययन आधारित सुझाव

बुन्देलखण्ड प्रभाग में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को "सूत्रबद्ध" कार्यक्रम का रूप दिया जाना चाहिये । शासन एवं बुन्देलखण्ड प्रभाग के निवासियों को इस पिछड़े क्षेत्र के विकास के लिये "जन आन्दोलन" "जन जागरण" कार्यक्रम को तैयार करना होगा । इसको आधार मानकर शोधकर्ता ने अपने शोध आधारित निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये हैं :-

1. इस शोध अध्ययन से संकेत मिलते हैं कि बुन्देलखण्ड में अनुसूचित जाति पिछड़ी जाति, जनजाति को प्रौढ़ शिक्षा से उतना लाभ नहीं हो पा रहा है जितना होना चाहिये । वे इस कार्यक्रम में रूचि नहीं दिखा रहे हैं , प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में इनकी प्रतिभागिता के लिये कार्य करना होगा इसके लिए सुरक्षित प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को खोलने की आवश्यकता है ; इसके लिये बाँदा जनपद में मानिकपुर के पास का पाठा क्षेत्र ललितपुर तथा झाँसी के पास के द्रुकवेल क्षेत्र पर ध्यान केन्द्रित करना होगा । पाँचों जनपदों में शहर की मलिन बस्तियों को भी इस कार्यक्रम में सम्मिलित किया जाना उचित होगा ।

2. बुन्देलखण्ड में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को और सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है । अनेक ग्राम प्रधानों तथा अनुदेशकों के अनुसार पठन पाठन सामग्री, भौतिक सुविधाओं का अभाव है जिसके कारण वे आकर्षक केन्द्र नहीं हैं । प्रशासन को केन्द्रों के इन सुविधाओं को एक निश्चित अवधि में उपलब्ध करा दिया जाना आवश्यक है ।

3. बुन्देलखण्ड प्रभाग के शिक्षा केन्द्रो में प्रशिक्षित अनुदेशकों की कमी है । बिना प्रशिक्षण के शिक्षण प्रक्रिया प्रभावी नहीं होती अतः सभी अनुदेशकों को कम से कम एक मास का प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है यह प्रशिक्षण कार्य किसीविशिष्ट संस्था(डाइट जैसी संस्था) के द्वारा कराना उचित होगा ।

4. प्रशिक्षित अनुदेशक ही नियुक्ति किया जाये । केन्द्र एवं राज्य सरकार की परियोजना में कार्यरत अनुदेशकों के वेतन में विसंगतियाँ हैं इन्हें अविलम्ब दूर किया जाये दोनो प्रकार के अनुदेशकों को वेतन समान करना उचित होगा ।

5. बुन्देलखण्ड प्रभाग के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रो में अधिकारियों की निरीक्षण कार्य में तेजी लाने और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है जिस से समय का पालन होने लगे । प्रत्येक उच्च पदाधिकारी को इस सम्बन्ध में और सतर्क रहना होगा ।

6. अनुदेशकों की कार्यकुशलता एवं लापरवाही में पुरस्कार एवं दण्ड की प्रक्रिया परिणाम बोधक होनी चाहिये । सरकारी तन्त्र को इस पर विशेष ध्यान देना होगा ।

7. बुन्देलखण्ड प्रभाग में मिश्रित प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को समाप्त कर महिला तथा पुरूष प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र अलग अलग रक्खे जायें, क्योंकि मिश्रित केन्द्र सफल नहीं हो पा रहे हैं । केन्द्रों में महिला पुरूष अनुदेशक भी अलग अलग हों ।

8. अनुदेशक ही प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को गति दे सकते हैं अतएव इस पक्ष पर विशेष बल देना होगा । अनुदेशक एवं विशिष्ट स्टाफ की आयु सीमा में परिवर्तन की आवश्यकता है, 35 वर्ष से अधिक आयु का स्टाफ ही रक्खा जाये तथा यह सभी वाह्य व्यक्ति हों । उनकी नियुक्ति में 50 कि0मी0 दूरी का प्रतिबन्ध होना चाहिये ।

9. साथ ही साथ प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम द्वारा शिक्षित व्यक्तियों को उत्तर साक्षरता एवं सतत् शिक्षण कार्यक्रम से जोड़ने के लिये भी उपाय किये जायें, जिससे प्रौढ़ शिक्षा के शिक्षित व्यक्ति शिक्षा प्रक्रिया से जुड़े रहें । प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को एक या दो वर्ष के बाद गाँव विशेष में बन्द नहीं करना चाहिये वरन् प्रौढ़ शिक्षा को उत्तर साक्षरता एवं सतत् कार्यक्रम से जोड़कर शिक्षण संस्था का रूप देना उचित होगा

जिससे गाँव के लोग बहुमुखी विकास के कार्यक्रमों को समझते रहे एवं उनका लाभ उठाते रहें ।

10. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का लक्ष्य वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक क्षेत्र में चेतना एवं जागरूकता उत्पन्न करना हो जो सारगर्भित हो एवं दक्षता आधारित हो, अर्थात जिससे प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों में इन क्षेत्रों में चेतना एवं जागरूकता स्पष्ट देखने को मिले । इसमें कार्यक्रम व्यवहारिक हों प्रौढ़ शिक्षा के अनुदेशक पद पर हाईस्कूल स्तर से कम शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों को, नहीं चुना जाये इनके लिए अभिनवन पाठ्यक्रम और अधिक सारगर्भित हो ।

11. बुन्देलखण्ड में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में पुस्तकालय नहीं है अतः केन्द्रों पर पुस्तकालयों की व्यवस्था भी हो ।

12. केन्द्र अथवा राज्य सरकार समाज शिक्षा के अन्तर्गत जो बजट का प्रावधान करती है उसे निश्चित अवधि के लिये करे जो कम से कम 3 वर्ष या 5 वर्ष के लिये हो एवं उसका आवंटन समय से करें । युद्धकाल के अतिरिक्त कभी भी इस बजट में कटौती न करें।

13. इस कार्यक्रम को क्रियान्वित एवं मूल्यांकित करने के लिये प्रत्येक प्रौढ़ केन्द्र स्तर पर समिति संगठित की जायें एवं उनको समुचित अधिकार प्रदान कर, उत्तरदायित्व निर्धारित किया जाये । समिति की सफलताओं एवं असफलताओं को एक अत्यधिक शक्तिशाली जनपदीय समिति मूलयांकित करे एवं उसकी सफलताओं पर प्रोत्साहन एवं असफलताओं की भर्त्सना की जाय ।

14. परियोजना अधिकारी, सहायक परियोजना अधिकारी, पर्यवेक्षक एवं अनुदेशक के अधिकार एवं उत्तरदायित्व स्पष्ट रूप से निर्धारित किये जाये ।

15. बुन्देलखण्ड प्रभाग की स्वयं सेवी संस्थाओं को प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम देते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा जाये कि जब तक 5 वर्ष तक वे निःस्वार्थ रूप से कार्य न कर लें तथा अपनी सफलता न प्रमाणित करें तब तक अनुदान आवंटित न किया जाये ।

16. बुन्देलखण्ड के बजट में केवल साक्षरता के लिये ही धनराशि का प्रावधान है जबकि दूसरे दो पहलू – कार्यात्मकता एवं सामाजिक चेतना संबंधी कार्यों के लिये भी बजट में प्रावधान होना चाहिये ।

17. निरक्षरता उन्मूलन कार्यक्रम के लिये बुन्देलखण्ड स्तरीय एक प्रौढ़ शिक्षा परियोजना बने जिस में शिक्षित बेरोजगार युवक, नेहरू युवक केन्द्र के कार्यकर्ता स्वयं सेवी संस्थाओं के युवक, मिल मालिक, राज्य सरकार के प्रौढ़ शिक्षा से सम्बद्ध कर्मी एवं अधिकारी, कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करें । इस परियोजना का कार्यकाल 5 वर्ष का हो जो प्रभाग को शत प्रतिशत साक्षरता क्षेत्र बना दे । इससे सम्बन्धित कर्मियों को साक्षरता के लिए पुरस्कृत किया जाय ।

18. बुन्देलखण्ड को पिछड़ा प्रभाग स्वीकार किया गया है अतः यहाँ निरक्षरता उन्मूलन कार्यक्रम में यूनेस्को, यूनिसेफ, राष्ट्रीय साक्षरता संस्थान, विश्व बैंक, यू0एन0डी0पी0 के माध्यम से विशेष अनुदान, विशिष्ट सेवा उपकरण एवं सामग्री की व्यवस्था हो। निरक्षरता उन्मूलन कार्यक्रम को ऐसा पुर्नगठित किया जाये कि वर्ष 1995 तक केरल, पाण्डेचेरी, व महाराष्ट्र के कानकन सिन्धुडर्ग तथा वर्धा क्षेत्र की भाँति, बुन्देलखण्ड प्रभाग, शत प्रतिशत साक्षर प्रदेशों की सूची में हो जाये ।

(द) परिणाम परख व्यावहारिक सुझाव

1. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के नियोजन में समय, सहयोग के सम्भावित श्रोत निर्धारण एवं वांछित लक्ष्य विषय महत्वपूर्ण हैं । इसके साथ ही कार्यक्रम; नियोजन, अपने संसाधनों को ध्यान में रखते हुये, 1. राष्ट्रीय, 2. राज्य, 3. जिला, 4. परियोजना, 5. ग्राम, 6. व्यक्ति, स्तरों में, प्रभावी ढंग से होना चहिये । उद्देश्य यह हो कि व्यक्ति में साक्षरता आये जागरूकता विकसित हो व्यावहारिक हो व्यावसायिक दक्षता प्रतिभागी में विकसित हो । नियोजन, क्षेत्रीय आवश्यकता और स्थानीय सहयोग को ध्यान में रखकर, किया जाये । स्थानीय व्यक्तियों. की सहभागिता के लिए सभी स्तरों पर परिषदें निर्मित करना एक व्यावहारिक कदम होगा । कार्यक्रम. को चलाने में विशेषज्ञों का परामर्श हर स्तर पर आवश्यक है । सेवा निवृत्त व्यक्तियों, समर्पित समाज सेवकों का जन साक्षरता में सहयोग किया जाना उचित होगा ।

राष्ट्रीय नियोजन कमीशन (एन0पी0सी0) को ऐसा नियोजन करना होगा कि धन की कमी प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में बाधक न बने । अभी तक बुन्देलखण्ड में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में धन की कमी बाधा के रूप में देखने को मिली है । धन सम्पन्न कम्पनियाँ एवं प्रतिष्ठान अपने लाभ का एक निश्चित प्रतिशत (5% प्रस्तावित) धनराशि बुन्देलखण्ड की निरक्षरता उन्मूलन कार्यक्रम में व्यय करने का संकल्प लें ।

2. राष्ट्रीय स्तर पर प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय नईदिल्ली तथा राज्य सन्दर्भ केन्द्र में प्रशिक्षण आयोजित होते हैं यदि क्षेत्रीय समस्याओं का निदान करना है तो कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण मण्डल तथा परियोजना क्षेत्र के, मुख्यालय में स्तर पर, किया जाना उचित होगा साथ ही : -

अ- आहरण वितरण अधिकारी को वित्तीय नियमों का 15 दिन तक गहन प्रशिक्षण दिया जाय ।

ब- प्रशिक्षण में व्यावसायिक प्रशिक्षण, पुरूष एवं महिला कर्मियों को आवश्यकतानुसार अलग अलग ट्रेड का प्रशिक्षण दिया

जाये । ग्रामीण कुटीर उद्योगो एवं शिल्प का प्रशिक्षण विशेषज्ञों द्वारा दिया जाये ।

स- अनुदेशकों को व्यावसायिक ट्रेड प्रशिक्षण में छात्रवृत्ति आदि दिये जाने पर भी विचार किया जाना चाहिये ।

द- प्रशिक्षण मे आधुनिक यंत्रों को, श्रव्य - दृश्य साधनों को प्रयोग किया जाय । ज्ञान दीप जैसे कार्यक्रम बनाये जाये।

य- प्रशिक्षण अवधि में अनुदेशकों का भ्रमण कार्यक्रम भी बनाया जाय । यह 5 से 10 दिन तक का हो सकता है ।

3. ग्रामीण क्षेत्रों में सतत् शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की जाये जो प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों से शिक्षित व्यक्तियों को आगे भी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करें ।

4. कामगरों की शिक्षा नियोजकों के माध्यम से की जाये ।

5. डिस्टेन्स अधिगम, लर्निंग को प्रयोग किया जाये । रेडियो, दूरदर्शन द्वारा सामूहिक शिक्षा बोध के आयोजन किये जायें । इस से निरक्षर प्रौढ़ों में स्वत: सीखने की आदत पड़ेगी ।

6. आपरेशन ब्लैक बोर्ड के माध्यम से पर्याप्त शिक्षण सामग्री प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में उपलब्ध कराने की व्यवस्था हो ।

7. केन्द्रों में मानवीय गुणों एवं नैतिक मूल्यों पर धार्मिक प्रवचन हो ; जिसमें अहिंसा आदि पर वार्ता की जाये ।

8. सोचने समझने में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के पुष्टि के लिये वेदों का सहारा लेते हुये वार्तायें और प्रवचन आयोजित हों ।

9. आयु वर्ग 15- 35 का बन्धन समाप्त कर दिया जाना उचित

होगा , निरक्षर कसौटी तो रखना ठीक होगा ।

10. प्रौढ़ शिक्षा में अभिप्रेषण प्रक्रिया अपनाई जाना उचित होगा वर्णमाला, अक्षर ज्ञान- किताब पढ़ना लिखना आदि चरणों में निर्धारित कर सिखाई जानी चाहिये । कुछ छात्रवृत्ति या धन, कृषि यन्त्र कपड़े आदि दिये जाने अथवा रोजगार दिये जाने की व्यवस्था भी होनी चाहिये ।

11. खादी ग्रामोद्योग बोर्ड की सहायता से प्रौढ़ो को व्यावसायिक कार्यों में लगाया जाय और प्रौढ़ शिक्षा से जोड़ा जाय । प्रतिभागियों को मानदेय आदि देने की व्यवस्था, रूचि पैदा करेगी ।

12. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम सीधे आमदनी से जोड़ दिया जाये तो प्रौढ़ों की प्रतिभागिता बढ़ जायेगी ।

13. सहकारिता एवं उद्योग विभाग से भी प्रतिभागियों को सीधे अनिवार्य रूप से जोड़ दिया जाना उचित होगा । इसे उत्पादन एवं आर्थिक लाभ परक बनाया जाय, न्याय संगत होगा। ग्राम्य विकास विभाग से इस दिशा में सहयोग प्राप्त करना चाहिये । आई0 आर0 टी0 कार्यक्रम के अन्तर्गत क्रमशः 30 एवं 50 प्रतिशत महिला तथा पुरूष को लाभान्वित कराया जाय । कृषि उत्पादन आयोग इस दिशा में कृषि यन्त्रों, कृषि उपज को मण्डियों तक सही दाम दिलाने में मार्ग दर्शन करें ।

14. प्रौढ़ शिक्षा आई0सी0डी0एस0 (इन्सेन्टिव चाइल्ड डेवलपमेन्ट" कार्यक्रम) हरिजन एवं समाज कल्याण विभाग ऑगन बाड़ी के माध्यम से भी अनिवार्य रूप से चलाया जाये । इस विभाग का लाभ केवल प्रौढ़ शिक्षा के प्रतिभागियों को दिये जाने का प्राविधान हो ।

15. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को जनसंख्या नियंत्रण शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा, शारीरिक शिक्षा से जोड़ा जाय ।

16. अनौपचारिक शिक्षा तथा प्रौढ़ शिक्षा को एक कर दिया जाय ब्लैक बोर्ड आपरेशन कार्यक्रम में एक्शन प्लान हो, उनका समय निर्धारित किया जाय । यह निरक्षरता उन्मूलन कार्यक्रम पर आधारित हो । आयुवर्ग 4-14, 15-35 के स्थान पर 4-35 हो । यदि 35 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति प्रौढ़ शिक्षा में आना चाहे एवं रुचि रखते हों तो उन्हें भी प्रतिभागी बनाया जाय ।

17. प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रम में, लिंग, आयु, रुचियों, रूझानों, प्रवृत्तियों, मानसिक योग्यताओं के अन्तर को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम की व्यवस्था होनी चाहिये । प्रौढ़ शिक्षा साहित्य की रचना उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर निर्मित की जानी चाहिये ।

18. प्रौढ़ शिक्षण के लिये प्रतिभागियों को 15 से 20 , 21 से 25, 26 से 30, 31 से 35, 36 से 40 तथा 41 से अधिक वर्ग में बाँट कर प्रौढ़ शिक्षण कार्यक्रम चलाया जा सकता है ।

19. अनुसूचित जनजाति जाति तथा कमजोर वर्ग के ग्रामीण जनता से सम्बन्धित प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों में विश्वविद्यालय आयोग और स्वयं सेवी संस्थाओं की सक्रिय सहभागिता हो । "एक पढ़ाये दो या तीन" का लक्ष्य निर्धारित किया जाये । इस कार्य में स्थानीय शिक्षित लोगो का सहयोग मानदेय देकर प्राप्त किया जाय ।

20. प्रौढ़ शिक्षा से सम्बधित साहित्य सरल भाषा में, कृषि उपज, खाद, जमीन, बीज, विभिन्न व्यवसायों से सम्बधित होना चाहिये । यह साहित्य गाँव में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के पुस्तकालयों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होना अत्यन्त आवश्यक है । प्रौढ़ शिक्षा के लेखकों को विशिष्ट प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की जाय ।

21. सामाजिक कुरीतियों, अन्धविश्वास, स्वास्थ्य शिक्षा, संतुलित बजट, सन्तुलित भोजन, पर्यावरण के प्रति सजगता, सीमित परिवार, बाल विवाह की हानियों, महिला शिक्षा के लाभ आदि पर साहित्य भी केन्द्रों को

उपलब्ध कराया जाय ।

22. स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण की व्यवस्था भविष्य की भावी योजना में होनी चाहिये जिसमें छोटे छोटे उद्योग कर्मो को करने का प्रशिक्षण दिया जाये ; एवं प्रतिभागियों के प्रशिक्षण में भेद भाव न किया जाये ।

23. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम निरक्षरता उन्मूलन अभियान के रूप में समय-बद्ध चलाया जा रहा है । आवश्यकता इस बात की है कि यह कार्यक्रम एक जन आन्दोलन के रूप में चलाया जाये जिसमें सभी व्यक्तियों की भागीदारी हो । इस कार्यक्रम में "शिक्षण की अपेक्षा सिखाने" पर बल दिया जाए ।

24. केन्द्र तथा प्रत्येक राज्य अपने वार्षिक वजट में से 10 प्रतिशत शिक्षा तथा निरक्षरता उन्मूलन में व्यय करने पर विचार करे तथा व्यावसायिक शिक्षण के लिये व्यावहारिक पक्ष अपनाये । अपव्यय पर अंकुश लगाये ।

25. अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति, अनुसूचित जनजाति के साक्षर करने में आकर्षक तरीके जैसे कठपुतली, आदि परम्परागत कौशल का प्रयोग करने से वे शिक्षा ग्रहण करने के प्रति रूचि बढ़ेगी । इस कार्यक्रम को ऐच्छिक सामुदायिक प्रायोगिक विज्ञान संस्थान तथा सामाजिक विज्ञान संस्थान, और नेहरू युवक केन्द्र द्वारा व्यापक मात्रा में किये जाने की आवश्यकता है ।

26. शत प्रतिशत साक्षरता लक्ष्य प्राप्त करने के लिये यूनेस्को को और उदार नीति अपनाने की आवश्यकता है जिसकी आर्थिक सहायता, अनुदान से राष्ट्रीय साक्षरता संस्थान को भारत में शत प्रतिशत साक्षरता सन् 2000 तक प्राप्त करने में सहायता मिल सके । 31. वाई॰एम॰सी॰ए॰ तथा जामिया मिलिया की स्वयं सेवी संस्थाओं को पुनः शत प्रतिशत साक्षरता को पूरा करने में जन आन्दोलन विधि अपनाने की आवश्यकता है । जनपद तथा विकास खण्ड स्तर पर साक्षरता समितियाँ और सक्रिय होकर कार्य करें ।

उपरोक्त सुझावों के अन्त में यह कहना उचित ही प्रतीत होता

है, कि प्रौढ़ शिक्षा का मुख्य कार्य ग्रामीण निरक्षर प्रौढ़ जनता को साक्षर बनाना है, पर मात्र साक्षरता अशिक्षा जनित समस्याओं का समाधान नहीं है प्रौढ़ शिक्षा के अन्तर्गत साक्षरता के साथ व्यावसायिक शिक्षा को सम्मिलित किया जाना आवश्यक है । देश के जिस भाग में जो व्यवसाय प्रचलित हो उसका विशिष्ट ज्ञान उपलब्ध कराने का प्रबन्ध होना चहिये । इस दिशा में प्रयोगात्मक प्रशिक्षण की व्यवस्था अधिक लाभकारी होगी । अमेरिका के समाजशास्त्री डेविड मैक्लेलैण्ड ने आन्ध्र प्रदेश के काकीनाडा स्थान पर एक ऐसा प्रयोग किया है, काकी नाडा के निवासी अधिकतर मछली के शिकार और व्यापार पर निर्भर करते हैं । उनको कम समय में अधिक मछलियाँ पकड़ने, सुरक्षित रखने, बाजार में बेचने के ढंग की शिक्षा एवं विधियां बताई गयी, उन्हें हिसाब किताब लिखना भी सिखाया गया, उन्हें आत्म निर्भर बनने के लिये प्रेरित किया गया । इसके आशातीत परिणाम प्राप्त हुये है । प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को इस प्रकार की शिक्षा में परिवर्तित करना उचित होगा । प्रौढ़ावस्था नियोजित शिक्षा की अवस्था नहीं है । इस अवस्था में देख, सुनकर सीखने भर का समय और शक्ति रह जाती है । रात्रि कक्षाओं में उपस्थिति से लगता है कि वह अपने व्यावसायिक दक्षता, आर्थिक प्रक्रिया को अधिक महत्त्व देते हैं, वर्ण माला सीखने के प्रति कम उत्सुक रहते हैं । वह अपनी समस्याओं के आस पास ही रहते हैं उन्हीं को लेकर उन्हे व्यावहारिक ज्ञान देना होगा सामाजिक कुरीतियों के बारे में भी ज्ञान वर्धन की आवश्यकता है रूढ़ि वादिता को खत्म करने के प्रयत्न करने होगे । उन्हे केवल इतना साक्षर करना है कि वह कुछ पढ़ लिख सकें एवं उद्योग धन्धों में लग सकें ।

प्रौढ़ शिक्षा के आयामों में सुधार लाने के लिये एवं और उपयोगी बनाने को, 3-4-92 को, राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा समिति गठित की गई है । उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री उस समिति के सदस्य है । पूर्ण आशा है कि प्रौढ़ शिक्षा को और व्यावहारिक बनाने का लक्ष्य पूरा होगा । प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रम बने या शासनादेश निर्गत हो वह व्यावहारिक पक्ष को ध्यान में रखकर ही बने । इस समस्या को हल करने के लिये सरकारी प्रयासों को निष्ठा एवं लगन से सम्पन्न करना आवश्यक हो गया है ।

## शोध अध्ययन – सारांश

I. यह सर्वमान्य है कि राष्ट्र के विकास के लिये जन समुदाय का शिक्षित होना आवश्यक है शिक्षित व्यक्ति ही राष्ट्र के विकास में भागेदारी कर सकता है । भारत में 80 प्रतिशत लोग गाँवों में रहते हैं और उनमें 47.89 प्रतिशत लोग अनपढ़ हैं । इन ग्रामीण व्यक्तियों को बिना शिक्षित किये राष्ट्र के विकास में भागिदारी संभव नहीं है और जब तक ग्रामीण जनता की भागीदारी नहीं होगी भारत का सभी क्षेत्रों में विकास सम्भव नहीं है।

सन् 1987 के प्राप्त आंकड़ों के अनुसार विश्व की जनसंख्या पाँच अरब थी । इसका 1/5 भाग अनपढ़ था और 8 अनपढ़ों में तीन भारतीय थे । सन् 1985 में विश्व में 90 करोड़ (27%) लोग अनपढ़ थे जिसमें 98% लोग एशिया महाद्वीप के थे ।

भारत में सन् 1951 की जनगणना के अनुसार निरक्षार व्यक्तियों की संख्या 20 करोड़ थी जिसमें 254.1 लाख (16.67%) आयु वर्ग 15-35 के थे जो उत्तरोत्तर बढ़कर सन 1961 में 36 करोड़ (24.02%) सन् 1971 में 38 करोड़ (29.75) सन् 1981 में 42 करोड़, (36.17%) असम को छोड़कर । इन 36.17% निरक्षर व्यक्तियों में 24 करोड़ महिलायें 15 वर्ष की आयु से अधिक की थी । सन् 1991 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 84, 39, 30, 861 थी जिसमें 50 करोड़ (47.89%) व्यक्ति निरक्षार थे ।

उत्तर प्रदेश की जनसंख्या सन् 1981 में 11.08 करोड़ तथा 1991 में बढ़कर 13.87 करोड़ हो गई है। xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

सन् 1995 तक 14.79 करोड़ एवं सन 2001 में 16.27 करोड़ हो जाने का अनुमान है । जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश में सन 1991 में 44.65% व्यक्ति अनपढ़ थे । यह संख्या 2001 में बढ़कर 250 लाख हो जाने की संभावना है ।

तालिका : 6-2

भारत की जनसंख्या, साक्षरता निरक्षरता स्थिति

| वर्ष | जनसंख्या | साक्षर संख्या एवं प्रतिशत | निरक्षर संख्या एवं प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1951 | 361088090 | 16.67% | 20 करोड<br>254.1 लाख |
| 1961 | 439234771 | 24.02% | 36 करोड़<br>24.62 करोड़ |
| 1971 | 548159652 | 29.45% | 38 करोड़ 15-35<br>29.75%, 12.95 करोड़ |
| 1981 | 683810051 | 36.23%<br>पुरूष महिला<br>38.76% 14.04% | 42 करोड़<br>36.17 असम<br>को छोड़कर 11.08<br>करोड़ 15-35. |
| 1991 | 843930861 | 52.11%<br>पुरूष महिला<br>63.86% 39.42% | 50 करोड़<br>47.89%<br>13.88 करोड़ 15-35 |

संन्दर्भ वार्षिक पुस्तिका

सन् 1991 के जनगणना अनुसार भारत में अनपढ़े व्यक्तियों में से 2/3 महिलायें है । भारत में पिछले दशक 1981 से 1991 में जनसंख्या वृद्धिदर 23.50% हुई ।

तालिका : 6-3

उत्तर प्रदेश की जनसंख्या, साक्षरता, निरक्षरता स्थिति

| वर्ष | जनसंख्या | साक्षरता प्रतिशत | निरक्षर संख्या % |
|---|---|---|---|
| 1981 | 11.08 | 27.38 | 7 करोड़ (पूर्णांक में) |
| 1991 | 13.87 | 41.71 | 44.65% (205 लाख) 1-4-88 को 15-35 वर्षतक |

बुन्देलखण्ड प्रभाग, जो कि उत्तर प्रदेश का दक्षिणी भाग है, में पाँच जनपद जालौन, झाँसी, बाँदा, ललितपुर और हमीरपुर आते हैं । यह प्रभाग भौगोलिक संसाधनों से युक्त हैऔर इसकाप्राचीन इतिहास संघर्षपूर्ण रहा है। महारानी लक्ष्मी बाई, आल्हा उदल गुरू द्रोणाचार्य ने इसी प्रयाग में जन्म लिया था । राष्ट्र कवि मैथलीशरण गुप्त , आचार्य केशव दास जैसे इस भूभाग की देन हैं । यह सब होते हुये भी बुन्देलखण्ड प्रभाग आर्थिक और राजनैतिक दृष्टि से उत्तर प्रदेश के अन्य जनपदों से पिछड़ा है । शिक्षा की दशा भी शोचनीय है । प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम भी सन्तोषजनक ढंग से नहीं चल रहे हैं ।

बुन्देलखण्ड को पिछड़े क्षेत्र अनुदान ( वर्ग "ए" तथा "बी") का लाभ तो प्राप्त है किन्तु वह इस क्षेत्र के विकास के लिये पर्याप्त नहीं है और समय से मिलने में अड़चने आती रहती हैं जिसके कारण विकास गति और भी धीमी पड़ जाती है । यहाँ पर अब, दूर संचार, बुनियादी सुविधायें जल विद्युत श्रमिक उद्योग, बिक्री कर मुक्ति स्थगन योजना, उत्पादित वस्तुओं की बिक्री में, प्राथमिकता दी जाने लगी है, किन्तु अभी भी इस प्रभाग के संवार्गीण विकास के लिये बहुत कुछ दिया जाना है ।

बुन्देलखण्ड प्रभाग के विकास के लिये साक्षरता का व्यापक अभियान "जन जागरण" कार्यक्रम के अन्तर्गत आन्दोलन के रूप में चलाने की आवश्यकता है। जब तक बुन्देलखण्ड प्रभाग की ग्रामीण जनता साक्षर नहीं जो जाती इस प्रभाग में उन्नति का लाभ सभी व्यक्तियों को मिलना सम्भव नहीं है।

**तालिका - 6.4**

**बुन्देलखण्ड प्रभाग की जनसंख्या, साक्षरता, निरक्षरता स्थिति**

| वर्ष | जनसंख्या | साक्षरता % | निरक्षरता % |
|---|---|---|---|
| 1981 | 52,30,952 | 28.7 औसत | 61.00% |
| | | 41.37 पुरूष | |
| | | 14.09 महिला | |
| 1991 | 67,09,184 | 41.71 औसत | 44.65% |
| | | 55.35 पुरूष | |
| | | 26.02 महिला | |

पिछले दशक 1981- 91 में बुन्देलखण्ड की जनसंख्या वृद्धि दर 23.58 प्रतिशत रही। जनसंख्या की वृद्धि के साथ-साथ साक्षरता एवं निरक्षरता के प्रतिशत में भी वृद्धि हुयी ।

इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बुन्देलखण्ड में 5 जनपदों की प्रौढ़ शिक्षा की दशा का मूल्यांकन कर, प्रौढ़ शिक्षा में अपव्यय की ओर संकेत करके कार्यक्रम को और सफलतापूर्वक चलाने के लिये सुझाव प्रस्तुत करना है, जिससे बुन्देलखण्ड के जनपद लाभान्वित हो सके, प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से सुदूर अन्चल के ग्रामीण साक्षर हो सके, उनमें वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं अन्य क्षेत्रों में चेतना का विकास हो सके।

शोध अध्ययन सामाजिक सर्वेक्षण और वर्णनात्मक एवं निदानात्मक अभिकल्प पर आधारित है। इसमें प्रयुक्त अनुसूचियों की विश्वसनीयता एवं वैधाता की पुष्टि की गयी है। प्रयुक्त शोध को सीमा में बांधकर दो परिकल्पनाओं की जाँच की गयी है।

1. प्रौढ़ शिक्षा से वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, चेतना का विकास होता है।

2. महिलाओं तथा पुरूषों दोनों में ही जागरूकता शिक्षा के माध्यम से ही होती है।

II. बुन्देलखण्ड के 5 जनपदों में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत तीन तीन सौ केन्द्रों की परियोजना चल रही है। प्रत्येक जनपद के दो दो विकास खण्ड में परियोजनाओं चल रही हैं। प्रत्येक विकास खण्ड में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोले गये हैं। परियोजना का संचालन परियोजना अधिकारी द्वारा होता है। एक केन्द्र में 30 प्रतिभागी पंजीकृत होने का प्राविधान है ।

प्रत्येक केन्द्र की कार्यावधि 10 माह है। यह आशा की जाती है कि प्रत्येक केन्द्र से उस ग्राम की अनपढ़ जनता इस अवधि में शिक्षित हो जायेगी। प्रतिभागियों की संख्या को ध्यान में रखकर केन्द्रों का कार्यकाल एक सत्र बढ़ाया जा सकता है। प्रत्येक वर्ष बजट में परियोजना के लिये रु0 14,00,000/- बजट में आवंटित होता है। जनपद मुख्यालय का बजट इसके अतिरिक्त होता है। इस प्रकार बुन्देलखण्ड प्रभाग के पाचों जनपदों में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम चल रहा है बड़े जनपदों में दो-दो (जालौन और हमीरपुर) परियोजनायें तथा अन्य जनपदों में एक एक परियोजना कार्य कर रही है। बांदा जनपद में वर्ष 1990-91 में दूसरी परियोजना प्रस्तावित थी किन्तु परियोजना देर से 1991-92 में प्रारम्भ हुई। बुन्देलखण्ड में वर्ष 1980-81 से विभिन्न चरणों में कार्यक्रम चल रहा है प्रत्येक जनपद में प्रौढ़ शिक्षा का कार्य परियोजना के अन्तर्गत हो रहा है विवरण आगे तालिकाओं मे प्रस्तुत है:-

तालिका 6.5

वर्ष 1981 एवं 1991 की जनगणना अनुसार बुन्देलखण्ड प्रभाग के जनपदों की जनसंख्या, साक्षरता प्रतिशत क्रमशः क एवं ख में

| क्रमशः | जनपद | जनसंख्या | जनपद % | पुरूष % | महिला % |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | जालौन क | 9,87,432 | 35.95 | 50.16 | 18.96 |
| | ख | 12,17,021 | | | |
| 2. | झांसी क | 11,37,714 | 37.06 | 50.67 | 21,38 |
| | ख | 14.26.751 | | | |
| 3. | बांदा क | 15.33.990 | 23.30 | 35.99 | 8.61 |
| | ख | 18,51,014 | | | |
| 4. | ललितपुर क | 5,77,648 | 21.34 | 31.11 | 9.96 |
| | ख | 7,48,997 | | | |
| 5. | हमीरपुर क | 11,94,168 | 26.31 | 38.94 | 11.57 |
| | ख | 14,65,401 | | | |

तालिका 6.6

विगत दो वर्षों में प्रौढ़ शिक्षा से लाभान्वित व्यक्तियों का विवरण

| जनपद | वर्ष | योग | महिला | पुरूष |
|---|---|---|---|---|
| जालौन | 1988-89 | 18024 | 9144 | 8880 |
| | 1989-90 | 88570 | 41395 | 46175 |
| झांसी | 1988-89 | 9070 | 4528 | 4542 |
| | 1989-90 | 75646 | 34663 | 40983 |
| बांदा | 1988-89 | 9000 | 4320 | 4680 |
| | 1989-90 | 76575 | 32428 | 44147 |
| ललितपुर | 1988-89 | 9491 | 4750 | 4741 |
| | 1989-90 | 45891 | 23077 | 12814 |
| हमीरपुर | 1988-89 | 18000 | 8850 | 9150 |
| | 1989-90 | 87000 | 41370 | 45630 |

## तालिका - 6.7

### बुन्देलखण्ड प्रभाग प्रौढ़ शिक्षा व्यय विवरण (प्रत्येक जनपद को परियोजना में 14,14 लाख रूपये तक का बजट प्राविधान)

| जनपद | वर्ष | व्यय |
|---|---|---|
| जालौन | 1988-89 | 8,99,200.00 |
| | 1989-90 | 12,59,600.00 |
| झांसी | 1988-89 | 6,59,445.30 |
| | 1989-90 | 1,15,559.75 |
| बांदा | 1988-89 | 7,45,697.00 |
| | 1989-90 | 12,77,990.00 |
| ललितपुर | 1988-89 | 13,972.00 |
| | 1989-90 | 13,982.00 |
| हमीरपुर | 1988-89 | 8,16,750.00 |
| | 1989-90 | 10,88,220.00 |

**टिप्पणी :** पठन पाठन सामग्री, पुस्तकें, पत्रिकायें आदि-व्यय प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय स्तर से आवंटित धनराशि से देय है।

## तालिका 6.8

### प्रौढ़ शिक्षा परियोजना विकास खण्ड, केन्द्र

| जनपद | परियोजना स्थाल | विकास खण्ड |
|---|---|---|
| जालौन | डाकोर<br>(कोच) | महेवा कदौरा, डाकौर<br>कोंच, नदीगांव माधौगढ़ |
| झांसी | गुरसराय | रा०कन्या०उ०मा०वि०बबीना<br>गुर सराय, बामौर, मउरानीपुर |
| बांदा | कर्वी मानिकपुर | कर्वी, चित्रकूट, मानिकपुर, पहाड़ी, |
| ललितपुर | ताल बेहट | जाखौरा, बार, विरधा |
| हमीरपुर | कुरौरा<br>(सुमेरपुर) | मौदहा, कबरई, जौनपुर,<br>चरखारी, राठ, मुस्करा |

III. शोध अध्ययन के न्या दर्श के चयन में बुन्देलखण्ड प्रभाग के पांच जनपद जालौन, झांसी, बांदा, ललितपुर, हमीरपुर, की प्रौढ़ शिक्षा परियोजना के विकास खण्ड के अन्तर्गत, उन प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को दिया गया है, जहां पर प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम हुआ था। प्रत्येक जनपद के प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी से प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की सूची प्राप्त की गई केन्द्रों की सूची में हर पन्द्रहवें केन्द्र को शोध अध्ययन को लिया गया। इस प्रकार से न्यादर्श निम्नलिखित तालिका अनुसार है:-

**तालिका - 6.9**

**न्यादर्श बुन्देलखण्ड प्रभाग**

| जनपद | केन्द्र की संख्या | लाभान्वित प्रतिभागियों की संख्या | विशेष विवरण |
|---|---|---|---|
| जालौन | 20+20 | 400 | केन्द्र में प्राप्त |
| झांसी | 20 | 200 | सूची के |
| बांदा | 20 | 200 | अनुसार |
| ललितपुर | 20 | 200 | प्रत्येक 15 पर |
| हमीरपुर | 20 + 20 | 400 | |
| **योग:** | **140 केन्द्र** | **1400** | |

शोध अध्ययन में प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन प्रश्नावली एवं उत्तर पत्र, अनुदेशक अनुसूची, ग्राम प्रधान अनुसूची को स्वयं विशेषज्ञों की सहायता से निर्मित कर, वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं अन्य क्षेत्रों में चेतना, जागरूकता के जानने के लिये, प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त प्रतिभागियों से व्यक्तिगत सम्पर्क कर, आंकड़े एकत्र किये गये। अनुदेशकों, ग्रामप्रधानों से भी पत्री भराई गयी। ऐसा करने में प्रत्येक जनपद में कुछ प्रतिभागियों से शोधकर्ता ने स्वयं भराया तथा प्रत्येक जनपद में एक एक प्रशिक्षित व्यक्ति के माध्यम से, प्रतिभागियों से पूंछ-पूंछ कर कार्य पूरा कराया

गया । अनुदेशकों तथा ग्राम प्रधानों ने स्वयं स्वतन्त्र रूप से अनुसूची भरने का कार्य किया ।

**IV.** पाँचों जनपदों से आँकड़े प्राप्त होने पर आकड़ो का विश्लेषण कर, निर्वचन, विवेचन कार्य पूरा किया गया है । विश्लेषण कार्य में जनपद अनुसार, पुरूष, महिलाओं को प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त करने के बाद हुये लाभ के प्रतिशत को देखा गया ।

(अ) लिंग भेद अनुसार प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों की संख्या प्रतिदर्श में अपनाई गई विधि से (सूची क्रम से) इस प्रकार है -

महिलायें 744, पुरूष 656 योग 1400

**तालिका - 6.10**

**(ब) आयु वर्ग के अनुसार प्राप्त आँकड़े (पाँच जनपदों का योग)**

| आयु वर्ग | महिला | पुरूष | योग |
|---|---|---|---|
| 15-20 | 228 | 93 | 321 |
| 21-25 | 218 | 206 | 424 |
| 26-30 | 171 | 185 | 356 |
| 31-35 | 97 | 88 | 185 |
| 36-40 | 23 | 70 | 93 |
| 41-45 | 05 | 14 | 19 |
| 46-50 | 01 | 00 | 01 |
| 51-55 | 00 | 00 | 00 |
| 56-60 | 00 | 00 | 00 |
| 61-65 | 01 | 00 | 01 |
| **योग** | **744** | **656** | **1400** |

तालिका - 6.11

{स} शिक्षा स्तर के अनुसार पाँच जनपदों का योग

| शिक्षा का स्तर | महिला | पुरूष | कुल योग |
|---|---|---|---|
| अशिक्षित {निरक्षर} | 448 | 439 | 887 |
| कक्षा 1-2 {कक्षा 2 पास नहीं} | 279 | 200 | 479 |
| कक्षा 2-3 {कक्षा 2 उत्तीर्ण} | 17 | 17 | 34 |
| योग | 744 | 656 | 1400 |

तालिका - 6.12

{द}

जाति / वर्ग अनुसार संख्या (पाँचों जनपद)

| | बहुसंख्यक | अनु0जाति | अनु0ज0जा0 | पिछड़ी जाति | अल्प सं0 | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 133 | 271 | 01 | 322 | 17 | 744 |
| पुरूष | 151 | 230 | 01 | 246 | 28 | 656 |
| योग | 284 | 501 | 02 | 568 | 45 | 1400 |

तालिका - 6.13

{य} व्यवसाय अनुसार विवरण {पाँचों जनपद}

| लिंग भेद | कृषि | मजदूरी | नौकरी | गृहकार्य | व्यापार | कुछ नहीं | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| म0 | 255 | 188 | 04 | 278 | 00 | 19 | 744 |
| पु0 | 453 | 184 | 04 | 04 | 09 | 02 | 656 |
| योग | 708 | 372 | 08 | 282 | 09 | 21 | 1400 |

तालिका - 6.14

(र) आय के अनुसार वर्गीकरण

| रूपये 3600 तक | 3601 से 6000 | 6001 से 7200तक | 7201उपर | कुछनहीं बताने से इनकार | योग |
|---|---|---|---|---|---|
| 895 | 394 | 34 | 07 | 70 | 1400 |

**वैयक्तिक चेतना**

1. **बुन्देलखण्ड से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों** की वैयक्तिक चेतना विभिन्न प्रतिशत में जागृत हुई है । 14.36% प्रौढ़ शिक्षा के प्रतिभागी लाभान्वित नहीं हुये हैं । 42.27% को वर्णमाला, 41.64% को हस्ताक्षर कर लेना, 43.85% को कुछ लिखना पढ़ना, 33.07% को किताब पढ़ लेना आ गया है । इस प्रकार से 85.64% प्रतिभागियों को प्रौढ़ शिक्षा से वैयक्तिक लाभ हुआ है । लगभग एक चौथाई व्यक्ति 26.71% बिना गिने रूपये पैसे ले लेते हैं , हो सकता है कि यह बुन्देलखण्ड के व्यक्तियों के स्वभाव का प्रतीक हो अन्यथा बाँदा जनपद में यह प्रतिशत 65.5 इतना अधिक न होता । यह भी सम्भव है कि इनमें से अधिकांश भाग गिनने की प्रक्रिया से परिचित हों । इस प्रक्रिया में पुरूषों की अपेक्षा महिलायें गणना करने में अधिक सतर्क हैं ।पुरूष प्रतिभागी गणना, गणित, और पहिचानने में अधिक लाभान्वित हुये हैं । झाँसी जनपद को इस प्रक्रिया का ज्ञान अपेक्षाकृत कम हुआ है । अधिकांश प्रतिभागी अपने बालकों को शिक्षित कराना लाभकारी तो मानते हैं किन्तु एक चौथाई प्रौढ़, उन्हे, आर्थिक कारणों से शिक्षित होने की अपेक्षा कृषि में लगाना अधिक उपयोगी मानते हैं । पुरूषों की अपेक्षा महिलायें बच्चों की शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक हैं । 15% प्रौढ़ो को भय है कि शिक्षा प्राप्त करने के बाद बालक जन्म स्थान छोड़कर चले जाते है । ललितपुर जनपद के प्रौढ़ बालकों की शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक हैं । अधिकांश प्रतिभागी 75% घर के लिये सामान खरीदने में घर के किसी न किसी सदस्य से सलाह लेते हैं । लगभग एक चौथाई प्रतिभागी स्वयं विवेक से क्रय करते हैं । ललितपुर के प्रतिभागी इसके अपवाद हैं , वे सलाह बड़ो से ही लेते हैं अन्यथा किसी से नहीं ।

2. बुन्देलखण्ड प्रभाग की प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी महिलायें पुरूषों की अपेक्षा स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक हैं । बीमारी की अवस्था में डाक्टरों की सलाह लेती हैं एवं कम संख्या में दूसरे पर आश्रित रहती हैं । बाँदा जनपद के प्रतिभागी तो बीमारी के निदान के लिये विवेचना भी करते हैं । ललितपुर में यह प्रक्रिया लगभग शून्य है वहाँ एक तिहाई व्यक्ति स्वास्थ्य के प्रति जागरूक नहीं हैं ।

3. कृषि - सम्बन्धित उपकरणों के क्रय के प्रति विशेषज्ञों से सलाह करने वालों की संख्या अपेक्षाकृत कम है बाँदा जनपद इसका अपवाद है । अन्य जनपदों में सम्भवत: कृषि विशेषज्ञों की कमी होने के कारण सलाह सुलभ भी नहीं है । झाँसी जनपद के प्रौढ़ प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया अत्यधिक सीमित है । अधिकांश प्रतिभागी उपकरणों के प्रयोगिक लाभ का अनुकरण करते हैं ।

4. प्रतिभागी सांस्कृतिक और धार्मिक आयोजनों को व्यक्तिगत रूप से लाभ दायक तो मानते हैं परन्तु इन आयोजनों में अपव्यय होता है ऐसा दृष्टिकोण उभर कर आया है । झाँसी जनपद के प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया इस बिन्दु पर भी सीमित है । ऐसा प्रतीत होता है कि इस प्रकार के आयोजनों के प्रति अधिकांश प्रौढ़ नकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं । वह एक सीमा तक इन आयोजनों को समय का दुरूपयोग मानते हैं जो सम्भवत: जागरूकता का प्रतीक है ।

5. प्रतिभागियों में प्रौद्योगिक संचार माध्यमों के उपयोग के सम्बन्ध में भी चेतना आई प्रतीत होती है परिवार नियोजन की रचना और उससे लाभ उठाना मुख्य बिन्दु उभर कर आया है । महिलाओं ने इसमें अधिक रूचि दिखाई है । हमीरपुर के प्रतिभागी इसकी उपयोगिता पर कम रूचि दिखाते प्रतीत हुये । पुरूष मौसम सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने में रूचि रखते हैं । कृषि व्यवसाय के कारण ऐसा होना स्वाभाविक भी है । टेलीविजन जैसे उपकरणों का प्रयोग ग्रामों में कम ही लोग करते हैं, पर देश विदेश के समाचार प्राप्त करने में रूचि सम्पूर्ण प्रतिभागी लेते प्रतीत होते हैं

6. उनमें डाक तार विभाग सम्बन्धी जागरूकता भी आई है महिलायें पंजीकृत पत्रों को पुरूषों की अपेक्षा, अधिकांश रूप में वापस कर देती हैं । कुछ महिलायें पत्रों को प्राप्त करने के लिये अंगूठा लगाती हैं, जो उनकी कम जागरूकता का सूचक है।

7. घरेलू समस्याओं के निदान के लिये लगभग दो तिहाई प्रतिभागी स्वयं निर्णय लेने में कतराते हैं । अधिकांश महिलायें परिवार के सदस्यों से सलाह लेती हैं पुरूष अन्य लोगों से भी परामर्श लेते हैं जो उनमें आई जागरूकता का द्योतक है । महिलायें पुरूषों की अपेक्षा अधिक साहसी प्रतीत होतीं हैं ।

8. वैवाहिक क्षेत्र में विधवाओं के प्रति पुरूष प्रतिभागी अधिक उदार हुये हैं वे पुर्न विवाह के पक्ष में हैं यह चेतना स्वागत योग्य है । विवाह सम्बधी जानकारी पुरूषों में 30.4% तक ही है किन्तु बाँदा जनपद के प्रतिभागी अधिक जागरूक प्रतीत होते हैं । 1/3 भागआज भीबालविवाह के पक्ष में है ।

9. नियमों की जानकारी कम ही प्रतिभागियों को है । दहेज सम्बन्धी नियम की जानकारी शून्य के बराबर है । न्यूनतम मजदूरी का ज्ञान भी सीमित लोगों को ही है । महिलाओं की अपेक्षा पुरूष इस सम्बध में अधिक जागरूक है । भूमि सम्बधी नियमों की जानकारी 32 % लोगों को ही है ।

### सामाजिक चेतना

सामाजिक दृष्टिकोण में आये परिवर्तन का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :-

1. ग्रामीण अंचलों के प्रौढ़ प्रतिभागियों में विकास कार्यो के प्रति चेतना जागृत हो रही है । वे इस में सामूहिक रूप से प्रतिभागी भी बनने का दृष्टिकोण रखते हैं । वे विकास खण्ड स्तरीय गोष्ठियों में विचार विमर्श कर सुझाव भी प्रस्तुत करते हैं।

2. सामाजिक सम्बन्धों का उदारीकरण हुआ प्रतीत होता है । जातिगत कार्यो में रूचि समाप्त होती दिखती है । वे छुआछूत, पाखण्ड को छोड़ने लगे हैं और सेवा कार्य में रूचि लेते दिखाई दे रहे हैं, किन्तु विवाह आदि प्रकरणों में अपने जाति समूह को ही वरीयता देते हैं । सामाजिक समारोहों में प्रतिभागिता के प्रति उदार दृष्टिकोण हुआ है, किन्तु इन समारोहों को वे आडम्बर ही मानते हैं । सम्भवतः सामाजिक समारोहों का आयोजन करना तो चाहते हैं किन्तु उन पर विश्वास

की मात्रा में कमी आ गई है ।

3. वे, सीमित परिवार के प्रति, परिवार की सामूहिक जिम्मेदारी समझने लगे है । उनमें महिला पुरूष के समान अधिकारों एवं विकास संगठनों की उपयोगिता के प्रति चेतना जागृत हुई प्रतीत होती है ।

4. सामाजिक कुरीतियों और उनके प्रभाव सम्बन्धी चेतना भी प्रौढ़ प्रतिभागियों में परिलक्षित होती है ।

5. ये प्रौढ़ प्रतिभागी दूसरी जाति के लोगों को संकट में पाकर पहले की अपेक्षा अब अधिक सहायता प्रदान करने लगे हैं ।

6. संयुक्त अथवा एकाकी परिवार की धारणा के प्रति स्पष्ट विचार नहीं है फिर भी अधिकांश प्रतिभागी संयुक्त परिवार के पक्ष में है, ऐसा सम्भवतः सुरक्षा एवं खेती के ही मुख्य व्यवसाय होने के कारण है ।

## आर्थिक विकास के प्रति चेतना

ये, आर्थिक विकास के बिन्दु, उभर कर आये हैं :-

1. प्रौढ़ो में अपनी आर्थिक दशा सुधारने की चेतना उत्पन्न हो रही है वे परम्परागत तरीको की अपेक्षा आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों से कृषि आय में वृद्धि के लिये जागरूक है ।

2. उन्हें, पूर्व की अपेक्षा, उन राजकीय विकास योजनाओं की अच्छी जानकारी है जो उनकी आय वृद्धि में सहायक हैं ।

3. वे कृषि के अतिरिक्त अन्य हस्त कौशल के कार्यों में भी रूचि रखते हैं एवं पशु बीमा, फसल बीमा की भी जानकारी रखते हैं ।

4. कृषि और हस्त कौशल कार्यो के साथ साथ खाली समय में सेवा आदि भी आय वृद्धि का साधन है ।

5. आय में आई क्रमिक वृद्धि और बदलाव को प्रौढ़ महसूस भी करते हैं प्रौढ़ शिक्षा प्राप्ति के साथ आर्थिक दृष्टिकोण में आये बदलाव और जागरूकता प्रौढ़ शिक्षा की उपादेयता के द्योतक है ।

6. वे स्थानीय बाजार की अपेक्षा दूर जाकर शहरों में उत्पादनों को बेचने को वरीयता देते हैं जहाँ उन्हे अधिक मूल्य मिल सके ।

7. वे आय वृद्धि के लिये कृषि के साथ अन्य स्रोतों घरेलू कुटीर उद्योग धंधे, मजदूरी हस्त कौशल आदि में संलग्न होते हैं ।

8. व्यापार को अपनाने की क्षमता उसमें कम है । सम्भवतः इसका कारण आर्थिक रूकावटें सीमित साधन और व्यापार कला का ज्ञान कम होना है ।

9. व्यवसायिक केन्द्रों के सम्भावित लाभों के प्रति, और प्रौढ़, अब, अधिक जागरूक हैं, उनमें केन्द्रों से नये नये कार्यों को सीखने की जागरूकता उत्पन्न हुई

10. वे स्वयं हित के साथ साथ केवल क्षेत्र के हित की बात ही सोचने लगे हैं, ऐसी चेतना का विकास एक सुखद पहलू है ।

11. वे अब विकास में, बैंको और सहकारी और ऋण समितियों की उपयोगिता को समझने लगे हैं और प्रयास करते हैकिऔर अधिक शाखायें खुलें ।

12. विलासिता और अनुत्पादक कार्यों के लिये ऋण लेने को वे अच्छा नहीं समझते ।

## राजनैतिक चेतना

राजनैतिक चेतना के निम्नलिखित प्रमुख बिन्दु उभरते हैं :-

1. अभी भी 1/2 भाग स्वतंत्रता को सही अर्थ में नहीं लेते हैं । शासकीय नियमों के पालन को ही स्वतंत्राता समझते हैं ।

2. राजनैतिक क्षेत्र की मुख्य मुख्य सामान्य जानकारी भी प्रौढ़ों को लगभग इसी संख्या में है ।

3. यद्यपि प्रौढ़ो को मतदान का महत्व ज्ञात है फिर भी मतदान करने में जाति और बिरादरी अथवा ग्राम प्रधान की राय को वरीयता दी जाती है ।

4. एक चौथाई प्रौढ़ मतदान प्रक्रिया को निरर्थक मानते हैं ।

5. एक बड़ी संख्या में प्रौढ़ ग्रामीण विकास के प्रति रूचि, और सही दृष्टिकोण रखते हैं, उनमें इतनी जागरूकता है कि वे ग्राम्य विकास से जुड़े पदाधिकारियों को विकास के उपायों को इंगित करते हैं । वे ग्राम विकास के लिये आवंटित धनराशि के सही और समुचित उपयोग में विश्वास रखते हैं ।

6. उन्हे ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत सरकारी संस्थानों जैसे कृषि और पशु चिकित्सा की जानकारी है ।

7. उनमें ग्राम पंचायतों के अधिकार क्षेत्र और दायित्व सम्बधी चेतना का भी विकास हुआ है ।

8. वे प्रौढ़ शिक्षा को सही अर्थों में लेते हैं फिर भी लगभग एक तिहाई प्रौढ़ो में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रो की सही परिकल्पना का अभाव है ।

## अन्य

1. अधिकांश प्रौढ़ पुरूषों ने केन्द्रो पर नामांकित कराने की प्रेरणा अनुकरण के माध्यम से ली है ।

महिलायें इस सम्बन्ध में पुरूषों से अधिक अग्रगामी हैं, उन्होने स्वयं केन्द्रों पर अपना पंजीकरण कराया है ।

2. अधिक आयु में पढ़ना बहुत लाभकारी नहीं होता । पढ़ने में समय व्यय करने की अपेक्षा अन्य उत्पादक कार्यो में समय लगाना अधिक लाभकारी है । ऐसा मत कुल प्रौढ़ो का रहा है ।

3. प्रौढ़ शिक्षा, प्रौढ़ों में सीमित परिवार और बालक बालिका को समान रूप से शिक्षा दिलवाने की चेतना जागृत करने में सक्षम रही है ।

4. प्रौढ़ शिक्षा, उन्हें शोषण, गरीबी और बेरोजगारी से बचने में उद्योग धंधों के महत्त्व को समझाने, अधिकार और दायित्त्व के समझाने में सफल रही है।

5. अधिकांश पुरूष एवं महिलायें प्रौढ़ शिक्षा के पश्चात दहेज प्रथा को बुरा मानने लगे हैं किन्तु लड़ाई झगड़ा बुरी बात नहीं समझते।

6. अब प्रौढ़ सार्वजनिक स्थानों, कुओं, मुहल्लें की सफाई की उपादेयता को समझने लगे हैं।

7. वे ग्राम विकास के महत्त्व को अच्छी तरह से समझने लगे हैं।

8. प्रौढ़ों में अब पूर्व की अपेक्षा अपने घरों को सुव्यवस्थित ढंग से चलाने की कला आई है। अब वे अपने दैनिक कार्यों को कुशलता और सुचारू रूप से करते हैं।

9. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र का सुचारू संचालन के लिये सरकार से शैक्षिक उपकरणों की उपलब्धता के लिये भी मांग करते प्रतीत होते हैं।

10. वे प्रौढ़ शिक्षा को उपयोगी और लाभकारी मानते हैं फिर भी लगभग एक चौथाई प्रौढ़ों ने इसे एक दिखावटी योजना कहा है।

11. सभी प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त प्रतिभागी अब बच्चों की बीमारियों के टीकों की जानकारी और महत्त्व को समझने लगे हैं।

**अनुदेशक अनुसूची :**

1. अनुदेशकों के शैक्षिक स्तर का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि कक्षा 5 पास 12.3% कक्षा 6 से 9 तक 32.3% तथा हाई स्कूल से एम0ए0 तक 63.6% अनुदेशक कार्यरत हैं। जिनमें हाई स्कूल उत्तीर्ण

अनुदेशकों का प्रतिशत अधिक है। अनुदेशक 66.2% प्रशिक्षित हैं।

2. अनुदेशकों की रूचि लेने में विविधता है पुरूष अनुदेशकों को अध्यापक कार्य समाज सेवा और महिला अनुदेशकों ने गृहकार्य, सिलाई कढ़ाई, में रूचि प्रदर्शित की है। लगभग एक तिहाई अनुदेशकों की, शिक्षा कार्य में, रूचि है ।

3. केवल 37 (36.3%) अनुदेशकों ने इच्छा से एवं स्वतः प्रेरणा से प्रौढ़ शिक्षण कार्य करने में रूचि दिखायी है। 40.2% अनुदेशकों में, शिक्षा प्रसार और विकास में योगदान की इच्छा, विद्यमान है।

4. अनुदेशकों से प्रौढ़ शिक्षा में आने वाली बाधाओं के विषय में जानकारी लेने पर, ज्ञात हुआ कि कुछ प्रमुख बाधायें, जो कारण के रूप में उभर कर आयी है, वे मुख्यतः पाठ्यक्रम का अरूचिकर होना, अधिकारियों के सहयोग का अभाव, रात्रि शिक्षण में प्रकाश का अभाव, अनुदेशकों का कम वेतन तथा नियमित रूप से न मिलना, महिलाओं का बच्चे लेकर आना तथा रात्रि में शिक्षण में न आना है।

5. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को व्यावहारिक बनाने के लिये, अनुदेशकों ने, प्रतिभागी में प्रभावी जागरूकता के लिये, सुझाव दिये हैं कि केन्द्रों पर प्रचार कार्यक्रम, पर्याप्त मात्रा में उपकरणों का उपलब्ध होना, पाठ्यसामग्री को रोचक बनाने के लिये विभिन्न उपाय करना मनोरंजन, उपकरणों की व्यवस्था, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन की व्यवस्था होनी चाहिये।एक समिति के देखरेख में यह कार्य होना चाहिये। प्रत्येक केन्द्र में टी0वी0 सेट का होना, विभिन्न व्यवसायों के विशिष्ट व्यक्तियों की वार्तायें, अर्थ सम्बन्धी व्यवस्था, भी होनी चाहिये।

6. प्रौढ़ शिक्षा के लिये 61.9% प्रतिभागी स्वयं जाते हैं तथा 36.7% ,. प्रेरित कर लाये जाते हैं 45.3% महिलायें स्वयं अपनी इच्छा से आती हैं। 36 प्रतिशत प्रेरित किये जाने पर आती हैं।

7. प्रतिभागी प्रौढ़ शिक्षा को बीच में छोड़ देते हैं। इसके मुख्य कारण रुचि का अभाव, गृह एवं कृषि कार्य से समय न मिलना, अधिक उम्र के कारण केन्द्र पर आने पर संकोच, महिलाओं और उनके घरवाले आने में हस्ताक्षेप करते हैं। इसका एक और कारण प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का अरूचिकर होना भी है।

8. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में शिक्षण उपकरणों का अभाव, उपकरणों के होते हुये भी उनके विषय में लाभार्थियों को सूचना न देना तथा उनके प्रयोग करने का विधि का ज्ञान अनुदेशकों को न होना, प्रौढ़ शिक्षा की अन्य आधायें हैं।

9. कुछ केन्द्रों के अनुदेशकों ने श्यामपट और चाक तक के अभाव की ओर संकेत किया है।

10. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में, पिछड़ी जाति अनुसूचित जाति, अल्प संख्यक, तथा सवर्ण सभी प्रकार के प्रतिभागी शिक्षा ग्रहण करने आते हैं।

11. अनुदेशकों से कार्यक्रम को और सार्थक बनाने के लिये सुझाव मांगने पर व्यावहारिक सुझाव प्राप्त हुये हैं। उनमें से, बैठने की उचित व्यवस्थाएवं निश्चित समय सारणी का होना, उपकरणों का रख रखाव व देख भाल करना तथा नित्य प्रति प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं का होना है। प्रोजेक्टर टी0वी0 सेट के माध्यम से तथा श्यामपट की सहायता से शिक्षण किया जाना चाहिये । महिलाओं एवं पुरूषों के केन्द्र अलग अलग होने चाहिये ।

ग्राम प्रधान अनुसूची:

1. ग्राम प्रधान जन शिक्षण निलयम के कार्यकलापों से सन्तुष्ट हैं। जो क्रियाकलापों से असन्तुष्ट हैं, उन्होंने अपने, असन्तोष के महत्वपूर्ण कारणों, जैसे प्रतिभागियों और अनुदेशकों द्वारा केन्द्र पर आने में अनियमितता, मानदेय यथेष्ट न होने की स्थिति में अनुदेशकों का कार्यकलाप में कम रूचि लेना तथा मनोरंजन के यथेष्ट साधनों का अभाव, का उल्लेख किया है। सरकार की ओर से बरती गई लापरवाही के भी कुछ संकेत दिये गये हैं। सबसे अधिक अशिक्षित अनुसूचित वर्ग रहा है, इसके बाद पिछड़ी जाति का समुदाय और अन्त में कुछ सीमा तक, सवर्ण वर्ग के लोगों का भी अशिक्षित होना स्वीकारा गया है।

2. कुछ प्रतिभागी केन्द्र में सम्मिलित होकर, कुछ दिनों बाद कार्यक्रम से अलग हो जाते हैं। इससे सम्बन्धित, कई कारणों की ओर संकेत करते हुये, सुझाव दिये गये हैं, जैसे - कार्यक्रम को, पाठ्यक्रम को, सरल और रूचिकर बनाया जाय, इसकों व्यवसायोन्मुखी बनाया जाये। व्यवसाय सम्बन्धी उपकरणों की प्रतिपूर्ति के लिये भी सरकार से अपेक्षायें की गयी हैं।

3. जन साधारण को, अभी और, इस कार्यक्रम के प्रति जागरूक करने के लिये, चलचित्र दिखाना और घर घर सम्पर्क किया जाना, लाभप्रद हो सकता है।

4. केन्द्र की प्रभावोत्पादकता बढ़ाने के लिये कुछ सुझाव, गांव सभा द्वारा, अनुदेशकों की भर्ती और व्यय नियंत्रण सम्बन्धी, भी प्राप्त हुये हैं।

5. सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अधिकांश ग्राम प्रधान उपस्थित रहते हैं, पर जहां मनोरंजन हेतु, वाद्य यंत्र सुलभ न होने से, कार्यक्रम होता ही नहीं, वहां जाने का प्रश्न ही नहीं उठता।

**V.** निरक्षरता दैवी विपत्ति नहीं है वरन् आर्थिक विषमताओं का परिणाम हैं जिसे साक्षरता कार्यक्रम के प्रभावी ढंग से लागू करने से दूर किया जा सकता है साक्षरता कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम भी निहित है। निरक्षरता उन्मूलन एक बड़ा कार्य है जिसे केवल प्रशासनिक तंत्रा नहीं कर सकता है इसे समाज सेवी संगठन, बेरोजगार शिक्षित समुदाय की सहायता से, "जनजागरण" के रूप में, निरक्षरता उन्मूलन "आन्दोलन" के रूप में, निस्वार्थ भाव से, करने की आवश्यकता है। बुन्देलखण्ड प्रभाग में इस कार्यक्रम की अनिवार्यता को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वयन से जालौन, झांसी, बांदा, ललितपुर, और हमीरपुर जनपद में प्रतिभागियों को वैयक्तिक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, एवं अन्य क्षेत्रों में चेतना एवं जागरूकता आयी है। इन दिशाओं में जागरूकता एवं चेतना का प्रतिशत, बुन्देलखण्ड के पाचों जनपदों में भिन्न भिन्न है।

प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों, अनुदेशकों तथा ग्राम प्रधानों ने, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में सुधार लाने के लिये, कुछ बिन्दुओं पर, प्रकाश डाला है और सुझाव भी प्रस्तुत किये गये हैं इन पर विचार करना, प्रौढ़ शिक्षा से जुड़े, अधिकारियों और कार्यकताओं को करना उचित है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्षों के बिन्दु इस प्रकार हैं -

1. बुन्देलखण्ड को पिछड़ा क्षेत्र घोषित किया जा चुका है और इसके पिछड़े पन को दूर करने के लिये विभिन्न कार्यक्रम अनुदान भी है भी मिल रही है। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम भी चल रहा है।

2. शिक्षा के क्षेत्र में बुन्देलखण्ड प्रभाग बहुत पिछड़ा है, जनपद जालौन में 35.95% झांसी में 37.06% बांदा में 23.30%, ललितपुर 21.34%, तथा हमीरपुर मे 26.31%, ही साक्षरता है। बुन्देलखण्ड की साक्षरता 24.75% ही है। इसमें महिलाओं की साक्षरता तो केवल 14.09%

प्रतिशत ही है जो शोचनीय है जबकि भारत की साक्षरता का प्रतिशत 52.11 है और उत्तर प्रदेश का 41.71% है।

3. बुन्देलखण्ड प्रभाग के पाचों जनपदों में प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन पर प्रस्तुत शोध अध्ययन ने, वहां के ग्रामीण व्यक्तियों के वैयक्तिक आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं अन्य क्षेत्रों में आयी जागरूकता एवं चेतना पर प्रकाश डाला है, इसके आधार पर निरक्षरता उन्मूलन कार्यक्रम चलाये जा सकते हैं।

4. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये अनुदेशकों, ग्राम प्रधानों, प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त लाभार्थियों ने, अपनी अपनी अनुसूची में, कुछ बिन्दुओं पर प्रकाश डाला है। जिन्हें, कार्यक्रम को प्रभावी गति प्रदान करने के लिये, ध्यान में रखना उचित होगा।

VI. प्रौढ़ शिक्षा के अन्तर्गत कार्यक्रमों को, शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध अध्ययन में सुझावों के रूप में चार भागों में प्रस्तुत किया है -

§अ§ शासन द्वारा किये जा रहे कार्यक्रम एवं निर्णयों का अनुपालन §ब§ निर्णयों में सुधार हेतु सुझाव §स§ शोध आधारित सुझाव §द§ परिणाम परख सुझाव।

अ§ भाग में उन कार्यक्रमों का उल्लेख है जो शासन द्वारा किये जा रहे हैं और जिनका लाभ बुन्देलखण्ड प्रभाग के चारों जनपद ले रहे हैं। किन्तु इन कार्यक्रमों एवं निर्णयों के अनुपालन को सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

ब) शासन द्वारा आदेश एवं निर्णयों में, बुन्देलखण्ड क्षेत्र की आवश्यकताओं को देखते हुये, सुझाव की आवश्यकता प्रतीत होती है। शोधकर्ता ने उनके प्रति सुझाव प्रस्तुत किये हैं ।

स) शोध कर्ता ने अपने शोध अध्ययन से बुन्देलखण्ड की आवश्यकताओं एवं प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का आंकलन किया है। जिसको दृष्टि में रखकर सूत्रीय सुझाव प्रस्तुत किये हैं। जिनके द्वारा बुन्देलखण्ड के पाचों जनपदों में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को "जन आंदोलन" का रूप दिया जाना है, जो वहां के पिछड़ेपन दूर करने के लिये अनिवार्य हैं। इन सुझावों को (स) में ही अंकित किया गया है।

द) परिणाम परख सुझावों को भी शोध अध्ययन द्वारा प्रस्तुत किया गया है। परिस्थिति के अनुसार, आवश्यकताओं और परिवर्तनों को महसूस किया जाता है। इसके अनुसार मार्ग में आने वाली सम्भावित बाधाओं को दूर करने की आवश्यकता है, इसी को अनुभव करते हुये सुझांव, (परिणाम परख सुझाव) और जोड़ दिये गये हैं; जो बुद्धिजीविकों के अनुभव एवं दूरदर्शिता पर आधारित है।

**भावी शोध अध्ययनों हेतु सुझाव :**

शोध अध्ययन एक विधा है जिसके माध्यम से कार्यक्रमों के सुधार और भविष्य के कार्यक्रमों के विस्तार में सहायता मिलती है । कुछ अध्ययन हेतु बिन्दु निम्न प्रकार के हैं :-

1. कहा जाता है कि शिक्षित परिवार में जन्म दर कम होती है । यूनाईटेड नेशन्स पापुलेशन फण्ड, इस दिशा में, केरल एवं हरियाणा में परियोजना चला रहा है इस परियोजना में यह अध्ययन भी किया जा सकता है कि निरक्षर ग्रामीण जनता को साक्षर बनने पर, शिशु जन्म दर की स्थिति क्या हुई ।

2. **प्रौढ़ अधिगम** - इसके अन्तर्गत अधिगम व्यूह रचना उत्प्रेरणा प्रौढ़ कथाओं का संगठन एवं संचालन आदि पक्षों पर कार्य किया जा सकता है ।

3. **प्रौढ़ महिला शिक्षा केन्द्रो की समस्यायें** हमें महिला साक्षरता के प्रतिशत को बढाना है तो महिला प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की समस्याओं का स्थानीय स्तर पर अध्ययन करना तथा उन समस्याओं को हल के लिये आवश्यक उपाय ढूढना होगा ।

4. **अभिवृत्तियों का अध्ययन :-** प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में जो व्यक्ति लाभान्वित हुये हैं तथा जो लाभान्वित नही हुये हैं उनकी अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन संभवतः हमें उस तत्त्व की ओर इंगित कर सके जिसका समावेश प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रो को अधिक बनाने में हमारी सहायता करें ।

5. **प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अवरोधक तत्त्व :-** प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के मार्ग में कई अवरोधक तत्व है सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, स्थानीय राजनीति प्रेरित निहित स्वार्थो की टकराहट आदि । इन अवरोधों का निराकरण कठिन है अतः इस दृष्टि से भी अध्ययन किया जाना चाहिये ।

## सन्दर्भ - ग्रन्थ अनुक्रमणिका

1. पुस्तकें

1. अग्रवाल, जे.सी., एजूकेशनल रिसर्च - एन इन्ट्रोडक्शन, आर्या बुक डिपो, 30 नाइवाला, करोल बाग, नईदिल्ली, 1975.

2. अम्बष्ठ, एन0के0, "एक्रिटिकल स्टडी आफ ट्राइबल एजूकेशन, (विथ स्पेशल रिफेन्स टूरांची डिस्ट्रिक्ट) एस0चन्द एण्ड कं0 नईदिल्ली, 1970.

3. कबीर हुमायूँ "एजूकेशन इन इण्डिया" पृ0-82.

4. कर्लिजर, एफ.एन. फाउन्डेशन्स आफ बिहेविओरल रिसर्च, सुरजीत पब्लिकेशन्स, दिल्ली 7, 1972.

5. कुदेसिया, यू सी, "द रोल ऑफ सोशल एजूकेशन इन रूरल डेवलपमेन्ट आफ मध्य प्रदेश, पी एच डी थीसिस, एजूकेशन सागर यूनि0 1973.

6. कुन्डू, सी.एल. एडल्ट एजूकेशन, प्रिंसिपल्स, प्रैक्टिस एण्ड प्रोस्पेक्ट्स, स्टर्लिंग पब्लि0प्राई0 लिमि0नईदिल्ली, 1986.

7. खान, एम.जेड., "द प्रोब्लम ऑफ सोशल एजूकेशन इन फोर डिस्ट्रिक्ट्स ऑफ बाम्बे - कर्नाटक, पी0एच0डी0 थीसिस, एयू0 कर्नाटक यूनि0 1958.

8. गुड कार्टर, वी, इन्ट्रोडक्शन टू एजूकेशनल रिसर्च, न्यूयार्क एप्पलीटन सेच्युरी क्राफ्ट्स, 1959.

9. गुडे एण्ड हाट, मेथड्स इन सोशल रिसर्च

10. गेटोन्ड, एन.बी., द प्रोब्लम्स ऑफ सोशल एजूकेशन इण्डिया विथ स्पेशल रिफ्रेन्स टु महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान मध्य प्रदेश, एण्ड माइसोर (कर्नाटक) पी एच डी थीसिस, एजूके0 पूना यूनि0 1970.

11. चतुर्वेदी, एस सी, इम्पैक्ट ऑफ सोशल एजूकेशन आन द लाइफ एण्ड लिविंग आफ द पीपुल इन ब्लाक एरियाज इन द डिस्ट्रिक्ट आफ गोरखपुर, झाँसी, लखनऊ एण्ड मथुरा, पी एच डी थीसिस, सोशल वर्क, लखनऊ यूनि0 1969.

12. जान्सटन, जे.पी., "ए प्रपोसल फार द इस्टैब्लिशमेन्ट आफ ऐ स्टेट वाइड एडल्ट एजूकेशन प्रोग्राम फार मद्रास ﴾तमिलनाडु﴿ पी.एच.डी. थीसिस, एजूकेशन, मद्रास यूनिवर्सिटी, 1970.

13. पति, एस.पी., एडल्ट एजूकेशन, आशीश पब्लिशिंग हाऊस नईदिल्ली, 1988, पृ0 53-54.

14. पटेल, आर.बी., ए क्रिटिकल स्टडी आफ सोशल एजूकेशन इन द स्टेट आफ गुजरात, पी.एच.डी. थीसिस एजूकेशन सरदार पटेल यूनि0 1970.

15. पान्डा, के.सी., एडल्ट एजूकेशन प्लान एण्ड एक्शन स्टेटजीज एडी. भुवनेश्वर, रीजनल कालेज आफ एजूकेशन 1979.

16. पान्डा, डी, एन इन्वेस्टीगेशन इन्टू द कैरेक्टरसिटक्स आफ एडल्ट इलीट्रेटस एण्ड देयर पर्सेप्शन आफ लर्निंग इनवाइरोमेन्ट, पी एच डी. थीसिस, एजूकेशन उत्कल यूनि0 1983.

17. पंडित के एल, स्इल्ट एजूकेशन प्रोग्राम - एकम्पेरेटिव स्टडी आफ डिफरेन्स एप्रोचेज कुरूक्षेत्र यूनि0 लेक्चर सीरीज, 1980.

18. पाठक, पी.डी. भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, प्रकाशन पुस्तक मन्दिर आगरा, मुद्रक रवि मुद्रणालय आगरा वर्ष 1987.

19. फ्रैंक, सी. लाबक, "इण्डिया शैल बीलिट्रेट 1940.

20. फेयर चाइल्ड, डिक्शनरी ऑफ सोशियोलोजी

21. बशिया, के.सी., "ए स्टडी आफ एन ए. ई. पी. इन द ट्राइबल रीजन आफ उड़ीसा स्टेट" पी एच डी थीसिस, एजू एम, एस. यूनि. आफ बड़ोदा 1982.

22. वेस्ट, डब्लू जे. रिसर्च इन एजूकेशन, प्रेन्टिस हाल आफ इण्डिया प्राइवेट नयीदिल्ली,

23. बोर्गाइस ई.एस., सोशियोलोजी 1954.

24. बोर्डिया, ए तथा अन्य "एडल्ट एजूकेशन इन इण्डिया" नचिकेता पब्लिकेशन्स लिमिटेड, जे. टाटा रोड, बाम्बे, कापी राइट इन्डियन एडल्ट एजूकेशन एसोसियेशन, 1973, पृ0-13.

25. बाग, वाल्टर आर, एजूकेशनल रिसर्च एन इन्ट्रोडक्शन, न्यूयार्क, डेविड मैंके कम्पनी इनक 1965.

26. ब्रह्म प्रकाश, द इम्पैक्ट आफ फन्कशनल लिट्रेसी इन द रूरल एरियाज आफ हरियाणा एण्ड द यूनियन टैरिटरी आफ दिल्ली, पी0एचडी0 थीसिस एजूके0 कुरूक्षेत्र यूनि0 1978.

27. ब्राइसन, एल0एल0 एडल्ट एजूकेशन, न्यूयार्क, अमेरिकन बुक, 1939, पृ0- 18.

28. ब्रैकफोर्ड, एल पी, एडल्ट एजूकेशन, न्यूयार्क, रसेल सेज फाउन्डेशन, 1949, पृ0- 4.

29. भन्डारी जे एस, फैक्टर्स अफेक्टिंग पर्सिसटेन्सी एण्ड ड्राप आउट आफ एडल्ट लिटेसी क्लासेज इन उदयपुर डिस्ट्रक्ट, पी एच डी थीसिस एग्रीकल्चर यूनि0 1974.

30. मन्ना, बी0बी0, एन एप्रेजल द बैक ग्राउन्ड आफ द एडल्ट एजुकेशन इन्स्ट्रक्टर्स एम0एड0 डिजर्टेशन, उत्कल यूनि0 1982

31. मार्क, ब्लाऊ, एकोनोमिक्स आफ एजूकेशन, जेनेवा: इन्टर नेशनल लेबर आरगेनाइजेशन, 1973 पृ0 32,

32. माथुर एन0एस0, "ए सोशल एप्रोच टु इन्डियन एजूकेशन" चौथा संस्करण, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर, 1976, पृ0 281.

33. मुरमु, आर0 पी0, "ए स्टडी आफ द ड्राप आउट्स फ्राम द एडल्ट एजूकेशन सेन्टर्स, काजेज एण्ड रिमेडिकल मेजर्स, एम0एड0 डिजर्टेशन, उत्कल यूनिवर्सिटी 1982.

34. मुखर्जी, बी0 कम्युनिटी डेवलपमेटन्ट इन इण्डिया, ओरिएन्टल आग्गमैन्स, 1962, पृ0 153-157.

35. मोजर, सी0ए0, सर्वेमेथड्स इन सोशल इन्वेस्टीगेशन्स

36. मोहन्ती, जे0ए0 "ए स्टडी आफ द इम्पैक्ट आफ डेमोक्रेसी आन प्राइमरी एजूकेशन इन इण्डिया विथ स्पेशल रिफ्रेन्स टु ओरिसा" पी0एच0डी0 थीसिस, 1979, पृ0 267.

37. मोहसिनी, एस0आर0, एडल्ट एण्ड कम्युनिटी एजूकेशन, (नयी दिल्ली, इन्डियन एडल्ट एजूकेशन एसोसियेशन, 1973)

38. मौली, जी0जे0, साइंस आफ एजूकेशनल रिसर्च, वान नास्ट्रेन्ड रेनहोल्ड कम्पनी, न्यूयार्क, 1970

39. ताल्लुकदार, बी0के0, "एडल्ट एजूकेशन इन आसाम डयूरिंग पोस्ट इन्डिपेन्डेन्स पीरियड पीएचडी0थीसिस, एजू0गोहाटी यूनि0 195.

40. दीक्षित, ए0 "ए स्टडी आफ एजूकेशनल नीड पैटर्नस आफ एडल्टस इन अरबन रूरल एण्ड ट्राइबल कम्यूनिटी आफ राजस्थान, पी0एच0डी0 थीसिस, एजूकेशन, राजस्थान यूनि0 1975

41. निंबालकर, एम0आर0 "एडल्ट एजूकेशन एण्ड इट्स इवैल्यूएशन सिस्टम," (ए स्टडी आफ गोवा), मित्तल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1987.

42. नूरूला, एस0 और नायक, जे0पी0; "ए हिस्ट्री आफ एजूकेशन इन इन्डिया", मैकमिलन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, पृ0 814

43. टायनबी, ए0जे0, "ए स्टडी आफ हिस्ट्री" आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1947

44. रतनैहा, ई0पी0 स्ट्रक्चरल कान्सटेन्ट्स इन ट्राइबल एजूकेशन: स्टडी, स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमि0 ए-बी/9 सफदरगंज इन्कलेव, नई दिल्ली 1977.

45. रामब्रहम, आई, "एडल्ट एजूकेशन पालिसी एण्ड परफार्मेन्स", ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।

46. राव, टी0वी0 अन्य, "एडल्ट एजूकेशन फार सोशल चेन्ज" मनोहर पब्लिशन्स, 2, अन्सारी रोड, नयी दिल्ली 1980

47. राव, वी0के0आर0वी0, "एजूकेशन एण्ड ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेन्ट, एलाइड पब्लिशर्स, नयी दिल्ली, 1966

48. लाकरा, एस0 इम्पैक्ट ऑफ एजूकेशन आन द ट्राइबल्स आफ रान्ची डिस्ट्रिक्ट, पी0एच0डी0 थीसिस, एजूकेशन, पटना यूनि0 1976.

49. लोवी, लुई, एडल्ट एजूकेशन एण्ड ग्रुप वर्क, न्यूयार्क, विलियम मारर एण्ड कम्पनी, 1955, पृ0 22

50. व्हिटनी, एफ0 एल0, द एलीमेन्ट्स आफ रिसर्च, एशिया पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 1961.

51. शर्मा, ए0 व अन्य, "एडल्ट एजूकेशन प्रोग्राम इन गुजरात एन एप्रेसल" एलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमि0 नयी दिल्ली, 1979

52. शुक्ला, पी0डी0, "लाइफ लांग एजूकेशन"

53. सिंह, आर0जी0 द डिप्रेस्ड क्लासेज आफ इण्डिया, (सम्पादित) बी0आर0 पब्लिशिंग कारपोरेशन, दिल्ली 1986.

54. सिंह, एस0डी0, वैज्ञानिक सामाजिक अनुसंधान सर्वेक्षण, कमल प्रकाशन इन्दौर।

55. सिंह बी0क्यू0, "द कम्यूनिकेशन आफ आई डियाज, थ्रु एडल्ट एजूकेशन इन इण्डिया", पी0एच0डी0, सोशियोलोजी, बाम्बे यूनि0 1957.

56. त्रिपाठी, मोतीलाल, बुन्देलखण्ड दर्शन, शारदा साहित्य कुटीर, 86 पुरानी नझाई झांसी ।

57. पाठक, पी0डी0 "भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें ।

## 2 शोध एवं जरनल्स


1. अब्दुर, राशिद, "एन इन्क्वाइरी इन टू द प्रोबलम आफ मोटीवेशन फार एडल्ट लिट्रेसी" जामिया मिलिया इस्लामिया, नयी दिल्ली, 1966.

2. अहमद, एम, "एन इवैल्यूएशन आफ रीडिंग मैटीरियल्स फार न्यू लिट्रेट्स एण्ड स्टडी आफ देयर रीडिंग नीड्स एण्ड इन्ट्रेरेस्ट्स" रिसर्च ट्रेनिंग एण्ड प्रडक्शन सेन्टर, जामिया मिलिया, नयी दिल्ली 1958.

3. अन्सारी, एन0ए0 "एन एप्रेजल आफ द ट्रेनिंग प्रोग्राम" फार द सोशल एजूकेशन वर्कर्स", पी0एच0डी0 थीसिस, एजूकेशन दिल्ली, यूनि0 1969.

4. अग्निहोत्री, एस0 "इवैल्युएशन आॅफ द प्रोग्राम आफ एडल्ट एजूकेशन इन आप्रेशन अन्डर इ पाइलट प्लान इन वर्धा डिस्ट्रिक्ट", पी0एच0डी0 एजू0 नागपुर, यूनि0 1974.

5. इण्डियन जर्नल आफ एडल्ट एजूकेशन 1985 वालूम 46 अंक 4,5, 6, 7,9, प्रकाशित द्वारा 17–बी इन्द्रप्रस्थ स्टेट नई दिल्ली 110002 मुद्रक एवरेस्ट प्रेस, 4,ण चेमिलियन रोड दिल्ली – 110006.

6. इण्डियन जर्नल आफ एडल्ट एजूकेशन 1986 वालूम 47 अंक 1,2, 3,5,6, 8,9,10,11,12, प्रकाशित द्वारा 17–बी इन्द्रप्रस्थ स्टेट नई दिल्ली– 110002, मुद्रक एवरेस्ट प्रेस, 4, चेमिलियन रोड, दिल्ली 110006.

7. रोजगार समाचार वालूम 12, अगस्त 15, 1987 प्रकाशित द्वारा डा0 एस0 एस0 शशी, मुद्रक राज प्रेस, नई दिल्ली ।

8. इण्डियन जर्नल आफ एडल्ट एजूकेशन 1987 वालूम 48 अंक 1,3, प्रकाशित द्वारा 17-बी इन्द्रप्रस्थ स्टेट नई दिल्लीर- 110002 मुद्रक एवरेस्ट प्रेस, 4, चेमिलियन रोड दिल्ली - 110006

9. गाडगिल, डी0आर,"इन्वेस्टीगेशन इन्टू द प्रोबलम इन्टू द प्रोबलम आफ लैप्स इन्टू इलिट्रेसी इन द सतारा डिस्ट्रिक्ट, गोखले इन्स्टीट्यूट आफ पालिटिक्स एण्ड इकोनोमिक्स, पूना 1945

10. गिरि, वी0वी0, रूरल फन्कशनल लिट्रेसी प्रोग्राम सेन्ट्रल सेक्टर मयूरभंज डिस्ट्रिक्ट एडल्ट एजूकेशन आरगेनाइजेशन, 1980 पृ0 42

11. फाडनीस, यू0एन0, "एडल्ट एजूकेशन मूवमेन्ट इन इन्डिया", इन्डियन जरनल आफ एडल्ट एजूकेशन वालूम 20, नं0 4 दिसम्बर 1959 पृ0 22.

12. बुश, एम0बी0एडी0: "ए सर्वे आफ रिसर्च इन एजूकेशन" सेन्टर आफ एडवान्स्ड स्टडी इन एजूकेशन, फैकल्टी आफ एजूकेशन एण्ड साइकोलोजी एम0एस0, यूनिवर्सिटी आफ बड़ौदा, 1974.

13. बर्गेस, ई0डब्लू, अमेरिकन जर्नल आफ सोशियोलोजी वालूम 21 (1961)

14. बोर्डिया ए0, "ए रिव्यू आफ फार्मर्स फन्कशनल लिट्रेसी प्रोग्राम", 1969-74, इन्डियन एडल्ट एजूकेशन एसोसियेशन नई दिल्ली ।

15. मल्लिकार्जुन, स्वामी एन0; सर्वे आफ रीडिंग नीड्स एण्ड इन्स्ट्रेस्ट्स आफ एडल्ट न्यू लिट्रेट्स इन माइसोर स्टेट, एडल्ट एजूकेशन काउन्सिल, माइसोर 1969.

16. मरिअप्पन, एस0 और रामकृष्णन, सी0 "एन इवैल्यूएटिव स्टडी आफ द नेशनल एडल्ट एजूकेशन प्रोग्राम इन द यूनियन टेरिटरी आफ पांडिचेरी" स्टेट रिसोर्स सेन्टर फार नान फारमल एजूकेशन 19, एडम्स रोड, चेपाडक मद्रास, 1980.

17. "लर्नर्स एटटीट्यूड्स टूवर्डस लिट्रेसी इन एडल्ट एजूकेशन सेन्टर्स आफ तमिलनाडु एण्ड पान्डिचेरी – एन अप्रेजल, स्टेट रिसोर्स सेन्टर, 18 एडम्स रोड मद्रास 1980

18. चेतसिंह, आर0एम0 "अरली हिस्ट्री आफ एडल्ट एजूकेशन इन इन्डिया" इन्डियन जरनल आफ एडल्ट एजूकेशन वालूम 31 नं0 10, अक्टूबर 1970 पृ0 4.

19. देवदास, आर0, "विथर द एन.ए.ई.पी." इन्डियन जरनल आफ एडल्ट एजूकेशन," नयी दिल्ली, वालूम 40, नवम्बर 10–11 अक्टूबर नवम्बर 1979 .

20. देसाई, ए0आर0, एण्ड जे0एम0पेरोलकर "द रिलेशनशिप बिटवीन लिट्रेसी एण्ड इकोनोमिक प्रोडक्टिविटी आफ इन्डस्ट्रियल वर्कर्स आफ बाम्बे : ए सोशियोलोनिकल एनालिसिस", लिट्रेसी वर्क, वालूम 1 नं0 3 समर, 1970 पृ0 27–30

21. देवी,एस0, "एडल्ट एजूकेशन प्लान्स एण्ड एक्शन स्ट्रेटजीस डेवलपमेन्ट आफ एजूकेशन, रीजनल कालेज आफ एजूकेशन, भुवनेश्वर 1979 पृ0 26.

22. नन्दा, एस0के0 "ए क्रिटिकल स्टडी आफ द डेवलपमेन्ट आफ एडल्ट एजूकेशन इन द पंजाब ड्यूरिंग द पीरियड फ्राम 1947 टू 1972". पी0एच0डी0 थीसिस, एजूकेशन पंजाब यूनिवर्सिटी ।

23. नागप्पा, टी0आर0, सर्वे आफ रीडिंग नीड्स एण्ड इन्टरेस्ट्स आफ एडल्ट न्यू लिट्रेट्स इन माइसोर स्टेट, माइसोर स्टेट एडल्ट एजूकेशन काउन्सिल माइसोर 1966.

24. राव,जी0एस0, लिट्रेसी सर्वे आफ द क्लास फोर इम्पलाइज आफ द यूनिवर्सिटी आफ माइसोर, सी0 आई0 आई0एल0 मैसूर 1974.

25. राव डा0 वी0 के0 आर0 वी0 "एजूकेशन एण्ड ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेन्ट एलाइड पब्लिशर्स नयी दिल्ली, 1966.

26. वेंकटैय्या, एन0 "लिट्रेसी प्रोग्राम आन द पार्टीसिपेन्टस इन आन्ध्र प्रदेश", पी0एच0डी0 थीसिस, एजूकेशन, श्री वेंकटेश्वर यूनि0 1977.

27. वेस्टन जी, डी0एम0अन्य, "एन0ए0ई0पी0, इन राजस्थान सेकन्ड अप्रेसल, पब्लिक सिस्टम ग्रुप एजूकेशन सिस्टम यूनिट, इन्डियन इन्स्टीट्यूट आफ मैनेजमेन्ट अहमदाबाद 1980.

28. वर्मा तथा अन्य, वाल्युएन्टरी एफर्टस इन एडल्ट एजूकेशन, पटना: ए0एन0एस0इन्स्टीट्यूट आफ सोशल स्टडीज, 1981.

29. शंकर, आर0 "एन इक्सपेरीमेन्ट इन एजूकेशनल लिट्रेसी टीचिंग थ्रू नव सपेरा मेथड", लिट्रेसी हाउस, लखनऊ 1972.

30. सैय्यदन, के0जी0 "एड्रेस टु फिफ्थ आल इण्डिया एडल्ट एजूकेशन कान्फ्रेन्स", द इन्डियन जर्नल आफ एडल्ट एजूकेशन, नयी दिल्ली, वालूम 9, नं0 1 1948

31. हीली, ए0एस0एम0, "यूनेस्को एण्ड द कान्सेप्ट आफ एजूकेशन परमानेन्ट", इन्डियन जर्नल आफ एडल्ट एजूकेशन वालूम 28 नं0 12 दिसंम्बर 1967 पृ0 7

32. श्रीवास्तव, एल0आर0एन0, डेवलपमेन्ट, नीड्स आफ द ट्राइबल पीपुल ट्राइबल पीपुल ट्राइबल एजूकेशन यूनिट, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली 1970.

33. आइडेन्टिफिकेशन आफ एजूकेशनल प्रोबलम्स आफ द सओरा आफ उड़ीसा ट्राइबल एजूकेशन यूनिट, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 1971.

34. "एन इन्ट्रीग्रेटेड एण्ड कम्पेरेटिव स्टडी आफ सेलेक्टेड ट्राइबल कम्युनिटी लिविंग इन कन्टीन्यूअस एरियाज, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 1971.

35. त्रिवेदी, आर0 एस0 "ए क्रिटिकल सर्वे आफ सोशल एजूकेशन प्रोग्रामस एण्ड प्रोसीजर्स इनकैरा डिस्ट्रिक्ट, एम0बी0 पटेल कालेज आफ एजूकेशन बल्लभ विद्यानगर 1966.

36. प्रसाद, एच0, "लिट्रेसी एण्ड डेवलपमेन्ट," गान्धियन इन्टस्टीयूट आफ स्टडीज, वाराणसी 1967

37. प्रसाद, एच., एडल्ट एजूकेशन एण्ड सोशियो इकोनोमिक डेवलपमेन्ट एजूकेशन आफ द लिट्रेसी स्कीम इन विलेजेस आफ मिरजापुर, यू0पी0 गन्धियन इन्स्टिट्यूट आफ स्टडीज वाराणसी, 1971.

## 3 - मासिक पत्रिकायें


1. प्रौढ़ शिक्षा विशेषांक 1978 {अनौपचारिक शिक्षा सहित} अक्टूबर-दिसम्बर 1978, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, द्वारा प्रकाशित ।

2. प्रौढ़ शिक्षा तथा सतत शिक्षा विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी अंक 1,2 जनवरी - जून 1986 मुद्रक डिवाइन प्रिन्टर्स, सोनारपुरा वाराणसी ।

3. प्रौढ़ शिक्षा वर्ष 31 अंक 10 जनवरी 1988 भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ नई दिल्ली ।

4. प्रौढ़ शिक्षा वर्ष 31, अंक 11-12, फरवरी - मार्च 1988.
5. प्रौढ़ शिक्षा वर्ष 32 अंक 2 मई 1988
6. प्रौढ़ शिक्षा वर्ष 32 अंक 5 अगस्त 1988.
7. प्रौढ़ शिक्षा वर्ष 32 अंक 8, नवम्बर 1988
8. प्रौढ़ शिक्षा वर्ष 32, अंक 10 जनवरी 1989.
9. प्रौढ़ शिक्षा वर्ष 32 अंक 11, फरवरी 1989.
10. प्रौढ़ शिक्षा वर्ष 33 अंक 3, जून 1989.
11. प्रौढ़ शिक्षा वर्ष 33, अंक 5, अगस्त 1989.
12. प्रौढ़ शिक्षा वर्ष 33, अंक 11-12 फरवरी - मार्च 1990.
13. प्रौढ़ शिक्षा वर्ष 34 अंक 7-8 अक्टूबर - नवम्बर 1990.
14. प्रौढ़ शिक्षा, वर्ष 34 अंक 10, जनवरी 1991.
15. प्रौढ़ शिक्षा वर्ष 35 अंक 6-7, सितम्बर 1991
16. प्रौढ़ शिक्षा, अक्टूबर 1991.
17. प्रौढ़ शिक्षा वर्ष 35 अंक 12 मार्च 1992.
18. नवशैक्षिक प्रयास वर्ष 8 अंक 2-3, अप्रैल सितम्बर 1988 प्रौढ़ तथा शिक्षा विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ।

19. प्रौढ़ शिक्षा के कार्यकर्ताओं के आधारिक प्रशिक्षण के लिये पृष्ठभूमि पत्राक, राज्य संदर्भ केन्द्र साक्षरता निकेतन, लखनऊ.

20. कुरूक्षेत्र, वा 39 नं0 4, जनवरी 1991, ग्राम विकास विभाग की पत्रिका.

21. योजना, वा 32, नं0 7, अप्रैल 16-30, 1978.

22. द हिन्दू, शाह माधुरी आर, दैनिक पत्रिका, जून 16, 1981.

## 4. रिपोर्ट

1. रिपोर्ट आन सोशल एजूकेशन कमेटी आन प्लान प्रोजेक्ट्स, भारत सरकार 1963, पृ0-19.

2. एन.ए.ई.पी., - एन आउट लाइन, 1978, मिनिस्ट्री आफ एजूकेशन एण्ड सोशल वेलफेयर गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया नईदिल्ली, पृ0-8.

3. अनुदेश नवम्बर 1981.

4. प्लानिंग कमीशन, गवर्नमेन्ट आफ इन्डिया, नईदिल्ली ।

5. प्रौढ़ शिक्षा में अभिप्रेषण कार्यशाला, फरवरी 27 से मार्च 2, 1984. प्रतिवेदन

6. मण्डलीय प्रौढ़ शिक्षा संगोष्ठी, स्मारिका, झाँसी एवं इलाहाबाद मण्डल.

7. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम उत्तर प्रदेश अभिनव प्रयोग कार्यशाला, जनवरी 3 से 7 1983 प्रतिवेदन प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय उत्तर प्रदेश, लखनऊ

8. राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम आठवीं पंचवर्षीय योजना 1990-95 कार्यकारी उपदल का प्रतिवेदन प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय उत्तर प्रदेश

9. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम पर कार्यशाला, 3-4 जुलाई 1986 पाठ्य सामग्री प्रशिक्षण प्रभाग राज्य नियोजन संस्थान, कलाकांकर भवन, लखनऊ

10. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम जनपद झाँसी, जन सहयोग सम्मेलन 1988.

11. यूनेस्को, ड्राफ्ट रिकमेन्डेशन आन द डेवलपमेन्ट आफ एडल्ट एजूकेशन, यूनेस्को पेरिस 1976.

12. काम्पट्रोलर एवं आडीटर जनरल (सी०ए०जी०) की रिपोर्ट (द टाइम्स आफ इण्डिया दिनांक 16–5–92.)

**5. अन्य**

1. इयर बुक 1991.

2. जर्नल नालेज डाइजेस्ट द्वारा के० मोहन

# प  रि  शि  ष्ट

## भारत में प्रौढ़ शिक्षा का संगठनात्मक ढांचा एवं कार्यक्रम

भारत सरकार द्वारा शिक्षा मंत्रालय का पुनगर्ठन करके उसे "मानव संसाधान विकास मंत्रालय" का नाम देकर कई अन्य विभागों को उसके अन्तर्गत सम्मिलित कर दिया है। जिन में शिक्षा के अतिरिक्त महिला कल्याण, युवा कल्याण, समाज कल्याण, आदि विभाग भी हैं। राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा परिषद द्वारा राष्ट्रीय संचालन समिति है इस समिति द्वारा राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा संचालित होती है। राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा का शुभआरंभ 1978-79, साक्षरता लाना, सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक चेतना लोगों में लाने के उद्देश्य से हुआ। आयु वर्ग 15-35 के निरक्षर ग्रामीण जनता को साक्षर बनाना लक्ष्य है। इस उद्देश्यों को ध्यान में रखकर लक्ष्य की प्राप्त के लिये एक राष्ट्रीय संगठनात्मक ढांचा कार्यरता है। प्रबन्ध के लिये राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा परिषद तथा सहयोग के लिये राष्ट्रीय समिति गठित की गयी है। भारत में राष्ट्रीय स्तर पर प्रौढ़ शिक्षा निदशालय, नई दिल्ली में है। इसके अन्तर्गत कुछ उपविभाग हैं जिनका कार्य निर्धारित है। भारत के सम्पूर्ण प्रदेशों एवं केन्द्र शासित राज्य/प्रदेश प्रौढ़ शिक्षा कार्यालय कार्य कर रहे हैं जिनका मार्गदर्शन प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय नयी दिल्ली कर रहा है। भारती प्रौढ़ शिक्षा संघ भी 1939 से इस क्षेत्र में गुणात्मक सुझाव देता रहता है।

**साक्षरता स्थिति :**

भारत में यह कार्यक्रम 10 वर्ष तक चलने के बाद 1981 के सर्वेक्षण में साक्षरता का प्रतिशत 36.23% था। 10 वर्ष बाद यह बढ़कर 52.11% हो गया।

भारत में वर्ष 1951 में आयुवर्ग 15-35 में 254.1 लाख (16.67%) वर्ष 1961 में 24.0% प्रतिशत, सन् 1971 में बढ़कर 29.05% और वर्ष 1981 में बढ़कर 36.23%, 1101 लाख असम को छोड़कर तथा वर्ष 1991 में यह 52.11 प्रतिशत हो गयी। (63.86% पुरूष 39.42% स्त्री) थे।

सन् 1991 भारत में 116 लाख प्रोढ़ आयु वर्ग 15–35 के थे इनको साक्षर करने के लिये 300 स्वयं सेवी संस्थायें एवं संगठन कार्य कर रहे हैं। और इनके द्वारा 23,000 प्रोढ़ शिक्षा केन्द्र कार्य कर रहे हैं । 513 परियोजनाओं में 30,000 जन शिक्षण निलयम को सरकार सहायता प्रदान्न कर रही है। जिनमें 50 प्रतिशत प्रोढ़ शिक्षा केन्द्र महिलाओं के हैं।

सन् 1995 तक शत प्रतिशत साक्षरता का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। किन्तु 1995 तक शत प्रतिशत साक्षरता का लक्ष्य प्राप्त होना सम्भव नहीं है। अतः राष्ट्रीय सरकार ने कुछ गावों में शत प्रतिशत साक्षरता प्रदान करने का लक्ष्य निर्धारित किया है उन गावों में विभिन्न कार्यक्रम तीव्रता से चलाये जा रहे हैं।

**तालिका – 1.1**

**भारत में पंचवर्षीय योजनाओं में निर्धारित परिव्यय ।**

| योजना का नाम | अवधि | प्रोढ़ शिक्षा करोड़ रू0 में | करोड़ रू0 में |
|---|---|---|---|
| प्रथम योजना | 1951–56 | 7.5 | 153 |
| द्वितीय योजना | 1956–61 | 10.0 | 233 |
| तृतीय योजना | 1961–66 | 12.0 | 561 |
| तीन वर्षीय योजना | 1966–69 | — | 455 |
| चतुर्थ योजना | 1969–74 | 64.0 | 1,166 |
| पांचवी योजना | 1974–79 | 35.0 | 2,909 |
| वार्षिक योजना | 1979–80 | – – | 884 |
| छठवीं योजना | 1980–85 | 128.0 | 6.594 |
| सातवी योजना | 1985–90 | 360.0 | 11,000 |
| शिक्षा में वार्षिक योजना | 1991–92 | 977.0 | 11,402.68 |
| आठवीं योजना | 192–97 | – – – | * 89 अरब 20 खरब से बढ़कर 89 अरब21 खरब हो गयी है। |

* टी0वी0 समाचार दिनांक 8.5.92

## उत्तर प्रदेश में प्रौढ़ शिक्षा की प्रशासनिक व्यवस्था

राज्य प्रौढ़ शिक्षा परिषद् राज्य संचालन समिति

निदेशक

उप निदेशक
(सामान्य प्रशासन)

उप निदेशक
(प्रवर्तन-मूल्यांकन)

सहायक निदेशक (सा० प्र०)

लेखाधिकारी

लेखाधिकारी (सम्प्रेषण)

सहायक निदेशक (प्रशिक्षण)

सहायक निदेशक (सांख्यकी)

शोध अधिकारी

सहायक शोध अधिकारी

जनपद स्तर

जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी

वर्तमान स्टाफ

परियोजना अधिकारी

सह परियोजना अधिकारी

पर्यवेक्षक

सांख्यिकीय सहायक

अनुदेशक (ग्रामस्तर)

कनिष्ठ लिपिक

जिला प्रौढ़ शिक्षा समिति

ग्राम प्रौढ़ शिक्षा समिति

चपरासी

## उत्तर प्रदेश में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम

उत्तर प्रदेश में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम वर्ष 1978 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्य जन्म तिथि 2 अक्टूबर को प्रारम्भ हुआ था जिसके अन्तर्गत प्रदेश के 15-35 वयवर्ग के निरक्षर प्रौढ़ों को साक्षर बनाने के साथ - साथ उनमें व्यावहारिक दक्षता एवं सामाजिक जागरूकता लाने का प्रयास किया गया । कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य समाज के निरक्षर निर्बल वर्ग के वयस्कों की रूचि व्यवहार एवं अभिवृत्तियों में ऐसे स्वस्थ परिवर्तन लाना है जिससे वे अपने कर्तव्यों व अधिकारों को समझते हुए विज्ञान एवं तकनीकी प्रधान प्रगतिशील समाज में नागरिक के रूप में समझदारी के साथ अपनी भूमिका अदा कर सके एवं सामाजिका आर्थिक एवं राष्ट्रीय क्षेत्रों में अपनी भूमिका रचनात्मक रूप में निभा सकें ।

**तालिका - 1.2**

**वर्ष 1979-80 से अब तक कार्यक्रम का प्रसार**

| वर्ष | जनपद | विकास खण्ड | संचालित केन्द्र | पंजीकृत प्रतिभागी |
|---|---|---|---|---|
| 1979-80<br>1980-81 | 32 | 64 | 10,316 | 2.75,286 |
| 1981-82 | 44 | 81 | 12,777 | 3,61,908 |
| 1982-83 | 44 | 107 | 12,782 | 3,73,041 |
| 1983-84 | 56 | 117 | 15,397 | 4,50,060 |

तालिका- 1.3

उत्तर प्रदेश में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की संख्या

| वर्ष | केन्द्रीय कार्यक्रम | राज्य कार्यक्रम | नेहरू युवक केन्द्र द्वारा संचालित | महाविद्यालय/ विश्वविद्यालय द्वारा संचालित | स्वैच्छिक संगठन |
|---|---|---|---|---|---|
| 1984-85 | 58441 | 11946 | 3189 | 3797 | 2712 |
| 1985-86 | 18900 | 4000 | 28 | 1960 | 1096 |
| 1986-87 | 18900 | 7900 | - | 1864 | 1990 |
| 1987-88 | 18900 | 9000 | - | 1153 | 3440 |
| 1988-89 | 18900 | 9000 | 919 | 1209 | 5820 |
| 1989-90 | 18900 | 9000 | 1499 | 1002 | 4641 |
| 1990-91 | 18900 | 17100 | 1000 | 1000 | 5000 |

तालिका - 1.4

पंजीकृत प्रतिभागियों की संख्या

| क्रम सं0 | पंजीकृत प्रतिभागी | 1987-88 | 1988-89 | 1989-90 | 1990-91 |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | पुरूष | 4.37 | 4.37 | 2.06 | 3.37 |
| 2. | महिला | 5.46 | 8.67 | 7.17 | 7.74 |
| योग | | 9.83 | 10.73 | 10.54 | 12.90 |

**टिप्पणी:-** प्रकाशन उत्तर प्रदेश की शिक्षा सांख्यिकी द्वारा रा0शै0अनु0 और प्रशि0 परिषद उ0प्र0 इलाहाबाद वर्ष 1990,69 वें पृष्ठ में ।

**तालिका – 1.5**

उत्तर प्रदेश में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र नामांकन की प्रगति (संख्या लाख में)

| क्रम सं0 | वर्ष | लक्ष्य एवं उपलब्धि | | प्रतिभागी | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | लक्ष्य | उपलब्धि | महिला | पुरूष | अनु0जाति | अनु0ज0जा0 |
| 1. | 1980-81 | 2.88 | 3.22 | 1.06 | – | .83 | 0.07 |
| 2. | 1984-85 | 6.90 | 7.04 | 10.32 | 13.04 | 2.54 | 0.08 |
| 3. | 1987-87 | 10.73 | 9.83 | 5.46 | 4.37 | 3.86 | 0.13 |
| 4. | 1988-89 | 10.96 | 10.73 | 8.67 | 2.06 | 3.92 | 0.07 |
| 5. | 1989-90 | 11.52 | 10.54 | 7.17 | 3.37 | 3.59 | 0.06 |
| 6. | 1990-91 | 12.90 | – | 7.74 | 5.16 | – | – |

**तालिका – 1.6**

उत्तर प्रदेश में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर नामांकन की प्रगति (संख्या लाख में)

| क्र0 | वर्ष | महिला | प्रतिभागी अनुसूचित जाति | अनु0 ज0 जाति |
|---|---|---|---|---|
| 1. | 1980-81 | 1.06 | 0.83 | 0.07 |
| 2. | 1981-82 | 1.34 | 1.19 | 0.06 |
| 3. | 1982-83 | 1.44 | 1.26 | 0.06 |
| 4. | 1983-84 | 2.23 | 2.00 | 0.07 |
| 5. | 1984-85 | 4.25 | 2.54 | 0.08 |
| 6. | 1985-86 | 5.19 | 2.75 | 0.09 |
| 7. | 1986-87 | 6.15 | 3.36 | 0.11 |
| 8. | 1987-88 | 5.46 | 3.86 | 0.13 |
| 9. | 1988-89 | 8.68 | 3.92 | 0.07 |
| 10. | 1989-90 | 7.17 | 3.59 | 0.06 |
| 11. | 1990-91 | 7.14 | – | – |

साक्षरता निकेतन द्वारा जो सामग्री मुद्रित कराई जाती हैं वह अधिकांश में सरकार द्वारा संचालित केन्द्रों पर जाती है। जैसे जैसे कार्यक्रम का प्रसार हो रहा है। परियोजनाओं और उनके अन्तर्गत स्थापित किये जाने वाले केन्द्रों की संख्या में वृद्धि हो रही है। अभी कुछ महीनों पहले सातवीं पंचवर्षीय योजना की अवधि में शासकीय परियोजनाओं के लिये अपेक्षित सामग्री की आपूर्ति हेतु आवश्यक धनराशि का अनुमान लगाते समय जो तथ्य प्रकाश में आये हैं वो निम्नलिखित हैं : -

**तालिका 1.7**

**सामग्री आपूर्ति**

| वर्ष | वर्ष 1987-88 | वर्ष 1988-89 | वर्ष 1989-90 |
|---|---|---|---|
| परियोजना संख्या | 142 | 162 | 182 |
| 1 वर्षीय कार्यक्रम के प्रथम चरण हेतु आवश्यक सामग्री की आपूर्ति धनराशि | 94,69,239 | 1,08,02,934 | 1,21,36,629 |
| द्वितीय चरण में आवश्यक सामग्री की आपूर्ति धनराशि | 52.29.000 परियोजनायें 83 | 64,09,000 परियोजनायें 103 | 77,49,000 परियोजनायें 123 |
| अनुगमन साहित्य की आपूर्ति धनराशि | 15,93,000 परियोजनायें 59 | 17,82,000 परियोजनायें 66 | 20,79,000 परियोजनायें 77 |
| कुल वित्तीय आवश्यकता प्रति वर्ष मात्र शासकीय प्रौढ़ शिक्षा परि0 की आवश्यकताओं की आपूर्ति | 1,62,91,239 | 1,89,93,934 | 2,19,64,629 |
| लगभग रू0 करोड़ में | 1.63 | 1.90 | 2.20 |

निरक्षरता के निवारण के लिये वर्ष 1990 तक निरक्षरता उन्मूलन के लिये एक विस्तृत योजना तैयार कर ली गई थी। यह अनुभव किया गया कि मात्र शासकीय परियोजनाओं द्वारा निरक्षरता का उन्मूलन नहीं किया जा सकता । अतएव निरक्षरता उन्मूलन के इस कार्यक्रम में डिग्री कालेजों के छात्रों का सहयोग लिये जाने के अतिरिक्त अधिक से अधिक स्वैच्छिक संस्थाओं तथा अन्य संगठनों की सहयोग प्राप्त किया गया।

190-95 के प्रथम वर्ष के लिये उत्तर प्रदेश में प्रौढ़ शिक्षा में आवंटित धनराशि 1.92 करोड़ रूपये राज्य कार्यक्रम में है प्रस्तावित बजट इस प्रकार हैं -

**तालिका - 1.8**

**आठवीं पंचवर्षीय योजना प्रस्तावित बजट वर्ष 1990-95** रू0करोड़ में

| विवरण खण्ड अनुसार | राज्य सेक्टर | केन्द्र सेक्टर |
|---|---|---|
| प्रथम योजना खण्ड (क) | 114.86 | 100.29 |
| द्वितीय योजना खण्ड (ब) | 63.99 | 41.47 |
| तृतीय योजना खण्ड (स) | 39.83 | 56.16 |
| पर्वतीय क्षेत्र(आठ जनपदों में) | | |
| प्रथम योजना खण्ड (क) | 354.60 | 709.20 |
| (5 जनपद) बुन्देलखण्ड खण्ड | | |
| (प्रथम योजना) खण्ड (क) | 473.60 | 482.00 |

प्रतिवर्ष अभी स्वकीकृत धनराशि निम्न प्रकार व्यय होती है -

30% पुस्तकों पर

30% स्वयं सेवकों प्रशिक्षकों के वेतन में

40% अन्य व्यय

योग 100%

**टिप्पणी :** उत्तर प्रदेशक प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय से प्रकाशित आख्या ।

## आठवीं पंचवर्षीय योजना (1990-95)

आठवीं पंचवर्षीय योजना काल में 227.75 लाख निरक्षर प्रौढ़ों को शिक्षित करने के लिये 7.60,364 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र संचालित होंगे। एक केन्द्र में 30 निरक्षर पंजीकृत होंगे। इस बड़े कार्य को करने के लिये विभिन्न समाजसेवी, संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा छात्र वालेन्टियरों के रूप में चलाना होगा। विवरण तालिका 1-11 एवं 1-12

### तालिका 1.9

योजनावधि 1990-95 में शतप्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करने हेतु खण्ड (अ) के आधार पर राज्य सरकार, भारत सरकार तथा अन्य संस्थाओं द्वारा निम्नसंख्या में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र संचालन -

| क्रमसं0 | नाम संस्था | संचालित किये शिक्षा जाने वाली परियो-जना | प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की संख्या | आठवीं पंचवर्षीय योजना में लाभान्वित प्रतिभागियों की संख्या |
|---|---|---|---|---|
| (क) | **राज्य कार्यक्रम** | | | |
| 1. | एस0ए0आई0पी0द्वारा | 85x5 | 1,25,834 | 37.75 लाख |
| 2. | साक्षरता किटों द्वारा | - | 50,000 | 15.00 लाख |
| 3. | अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के माध्यम से साक्षरता किटों द्वारा | - | 3.00,000 | 90.00 लाख |
| | **योग (राज्य कार्यक्रम)** | **85x5** | **4.75,834** | **142.75 लाख** |
| (ख) | **केन्द्रीय कार्यक्रम** | | | |
| 1. | आर0एफ0एल0पी0 द्वारा | 105x5 | 1,57,500 | 47.25 लाख |
| 2. | साक्षरता किटों द्वारा | - | 92,500 | 27.75 लाख |
| | **योग(केन्द्रीय कार्यक्रम)** | **105x5** | **2,50,000** | **75.00 लाख** |
| (ग) | **अन्य श्रोतों से** | | | |
| 1. | स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा | - | 16,660 | 5.00 लाख |
| 2. | यू0जी0सी0 के अधीन विद्यालयों द्वारा | - | 17,870 | 5.00 लाख |
| | **योग(अन्य श्रोतों से)** | **-** | **34,530** | **10.00 लाख** |
| | अन्य योग | 190x5 | 7,60,364 | 227.75 लाख |

टिप्पणी: प्रकाशित आख्या रा0प्रौ0शि0निदेशालय लखनऊ पृ0 15

तालिका - 1.10

योजनान्तर्गत वर्ष 1990-95 तक आयोजनेत्तर एवं आयोजनागत पक्ष में शतप्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करने हेतु खण्ड (ब) के आधार पर राज्य सरकार, भारत सरकार तथा अन्य संस्थाओं द्वारा निम्न संख्या में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र संचालन-

| क्रम | स्तर | प्रस्तावित प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र | | | लाभान्वित व्यक्ति | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | आयोजन त्तर | आयोजन त्तर | योग | आयोजन नेत्तर | आयोजना गत | योग |
| (क) | **राज्य कार्यक्रम** | | | | | | |
| 1. | एस0ए0ई0पी0 द्वारा | 62834 | 63000 | 125834 | 18.85 | 18.90 | 37.75 |
| 2. | साक्षरता किटों द्वारा | 25000 | 25000 | 50000 | 7.50 | 7.50 | 15.00 |
| 3. | अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रो के माध्यम से साक्षरता किटों द्वारा | 150000 | 150000 | 300000 | 45.00 | 45.00 | 90.00 |
| (ख) | **केन्द्रीय कार्यक्रम** | | | | | | |
| 1. | आर0एफ0एल0 पी0 द्वारा, | 94500 | 63000 | 157500 | 28.35 | 18.90 | 47.25 |
| 2. | साक्षरता किटों द्वारा | 46166 | 46334 | 92500 | 13.85 | 13.90 | 27.75 |
| (ग) | **अन्य श्रोतों से** | | | | | | |
| 1. | स्वेच्छिक संस्थाओं द्वारा | - | 16,660 | 16,660 | - | 5.00 | 5.00 |
| 2. | यू0जी0सी0 के अधीन विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालयों द्वारा | - | 17870 | 17870 | - | 5.00 | 5.00 |
| | **कुल योग** | 378500 | 381864 | 760364 | 113.55 | 114.20 | 227.75 |

**टिप्पणी:** प्रकाशित आख्या राज्य प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय उ0प्र0, लखनऊ पृष्ठ - 16.

तालिका – 1.11

उत्तर प्रदेश आठवीं पंचवर्षीय योजना प्रस्तावित व्यय विवरण

रूपये करोड़ /

| | | राज्य सरकार | केन्द्र सरकार |
|---|---|---|---|
| 1. | ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता योजना | 60.44 | 73.62 |
| 2. | जन शिक्षण निलयमों | 14.25 | 13.21 |
| 3. | साक्षरता किटों की व्यवस्था | 3.33 | 5.67 |
| 4. | अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में किट व्यवस्था | 18.00 | – |
| 5. | प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम | 440.00 | 632.00 |
| 6. | प्रचार प्रसार तथा प्रकाशन | 30.00 | – |
| 7. | प्रौढ़ शिक्षा प्रशिक्षण कोष्ठ का सुदृड़ीकरण | 25.00 | – |
| 8. | शत प्रतिशत साक्षरता ग्राम गौरव पुरस्कार | 16.25 | – |
| 9. | राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण स्थापना | 2.50 | – |
| 10. | राज्य सन्दर्भ केन्द्र का सुदृढ़ीकरण | 25.00 | – |
| 11. | साक्षरता निकेतन लखनऊ को अनुदान केन्द्र से | 25.00 | – |
| 12. | पर्वतीय क्षेत्र में (8जनपद) | 354.60 | 709.20 |
| 13. | बुन्देलखण्ड (जनपद) | 473.60 | 482.00 |

**टिप्पणी:** राज्य प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय उ0प्र0 लखनऊ द्वारा प्रकाशित आख्या पृष्ठ–

वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश में प्रत्येक जनपद में कम से कम एक प्रौढ़ शिक्षा परियोजना चलाई जा रही है । केन्द्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत परियोजनाओं में प्रति परियोजना 37 जन शिक्षण नियमों की स्थापना की जाती है जिसमें शत प्रतिशत साक्षरता का अभियान छेड़ा जाता है । इस प्रकार उत्तर प्रदेश में 63 केन्द्रीय परियोजनाओं में 233 जन शिक्षण निलयम और राज्य सरकार से चलने वाली 37 परियोजनाओं के लिये 1369 निलयमों की स्थापना का प्रस्ताव शासन के विचाराधीन है ।
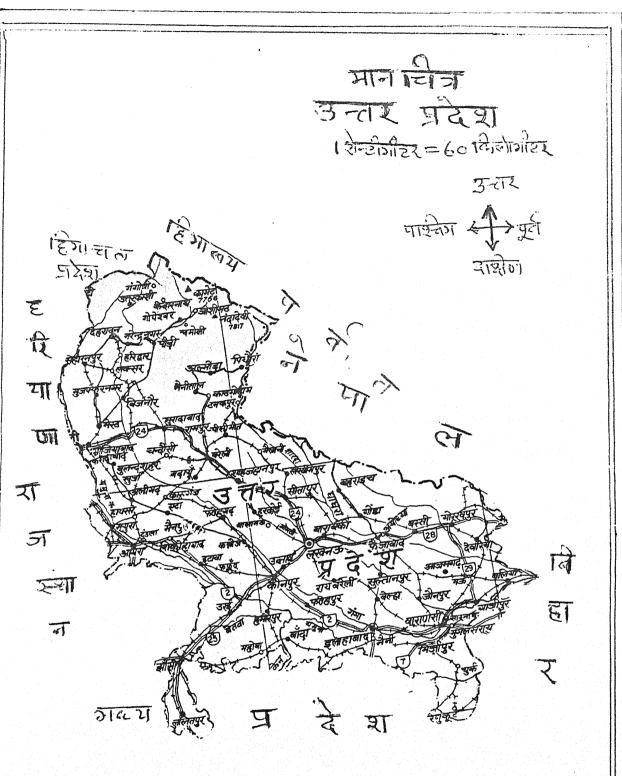
बुन्देलखण्ड प्रभाग

बुन्देलखण्ड भारत का हृदय है । बुन्देलखण्ड का प्राचीन नाम प्रथम दशार्ण तथा फिर जुझौति प्रदेश रहा है । जब से बुन्देला क्षत्रियों ने इसे अपनाया उस समय से यह बुन्देलखण्ड कहलाने लगा । बुन्देलखण्ड के पूर्व इस भू-भाग को जैजाक मुक्ति विन्ध्य जुझौति युद्धभूमि कहा जाता था । यहाँ शिशुपाल चेदि के युग में साहित्य का विकास हुआ इसके उपरान्त भगवान कृष्ण का युग इस भू-भाग में शासक के रूप में आया जिन्होने गीता महाकाव्य की रचना की । इस भू-भाग में कृष्ण द्वैपायन ने पुराणों की रचना की । वेदव्यास वाल्मीकि, प्रहलाद, आल्हा उदल आदि ने इसी भू-भाग में उत्पन्न होकर इस भू खंड को गौरवान्वित किया है । यह वह भू-भाग है जिसे अकबर ने सर्वश्रेष्ठ कहकर पुकारा है । यहाँ के वीरों की वीरता से प्रभावित होकर ही अकबर ने बुन्देलावीरों को अपनी सेना में महत्वपूर्ण स्थान दिया और उससे इतिहास लिखा गया ।

बुन्देलखण्ड का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है और प्राचीनकाल में महाभारत के गुरू द्रोणाचार्य का जन्म बुन्देलखण्ड के क्षेत्र झाँसी के पूर्व में बाघाट ﴾वाकाट﴿ नामक ग्राम में हुआ था । इसके अतिरिक्त बुन्देलखण्ड में तुलसी, सूर की तपोभूमि, राम का निवास, कृष्ण की नारायणी सेना, केशव की कवि भूमि तथा त्रिवेणी कवियों की कलाभूमि रही है । बुन्देलखण्ड शौर्य और पराक्रम की गाथाओं का देश रहा है और इस भू भाग का सहयोग भारतीय संस्कृति और सभ्यता की रक्षा के लिये अमूल्य रहा है । लक्ष्मी बाई तथा झलकारी अंग्रेजों से अपने देश की रक्षा के लिए बलिदान हो गई । आल्हा-उदल, विराटा की पद्मिनी, वीरसिंह जूदेव, छत्रसाल, हरदौल, दुर्गावती महारानी लक्ष्मी मर्दन सिंह आदि ने अपने शौर्य और पराक्रम से शत्रुओं का मान मर्दित कर बुन्देलखंड को गौरवशाली बनाने में सक्रिय सहयोग दिया है ।

बुन्देलखण्ड स्वातन्त्र्य युद्ध का प्रथम केन्द्र बना जहाँ महारानी लक्ष्मीबाई बानपुर के राजा मर्दन सिंह, बाँदा के नवाब दीवान नाहर सिंह राजा खलक सिंह, दीवान जवाहर सिंह, दीवान शत्रुघ्न सिंह, बाबा पृथ्वी सिंह, पं0 परमानन्द,

चन्द्रशेखर आजाद, घासीराम व्यास, भगवान दास माहौर, विश्वनाथ गंगाधर वैशम्पायन, मास्टर रूद्र नरायण तथा सदाशिव राव मलकापुर आदि ने अपनी अलौकिक भूमिका निभाई है । आजादी के युद्ध में बुन्देलखंड ने हजरों वीरो का बलिदान देकर अपने त्याग और बलिदान का परिचय दिया है । साहित्यिक सामाजिक, राजनैतिक शैक्षणिक सांस्कृतिक, कलात्मक, प्राकृतिक, धार्मिक तथा भौगोलिक दृष्टियों से भी बुन्देलखण्ड बड़ा सौभाग्यशाली रहा है । पुराणों से लेकर बुन्देली और खड़ी बोली के अनेक ग्रन्थों का निर्माण यहाँ पर हुआ । विभिन्न युगों में संस्कृत हिन्दी के अनेक महान कवियों और लेखकों ने अपनी साधना द्वारा इस वसुन्धरा का गौरव बढ़ाया है । बुन्देलखण्ड की संस्कृति और सभ्यता उन्नति के शिखर पर रही है । प्राचीनता में पांचाल देशीय इतिहास को छोड़कर भारत के किसी अन्य प्रदेश का इतिहास बुन्देलखण्ड के साथ हौड़ नही लगा सकता । इसमें बाल्मीकी, वेद व्यास, भवभूति, जगनिक, तुलसी, केशव, बिहारी, मतिराम, पद्माकर, राय प्रवीण, ईसुरी, मुंशी अजमेरी सुभद्रा कुमारी चौहान, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, सियाराम शरण गुप्त, डॉ0 राम कुमार वर्मा, सेठ गोविन्ददास, घासीराम व्यास, कवीन्द्र नाथूराम माहौर, घनश्याम दास पाण्डेय, नरोत्तम पाण्डेय आदि साहित्यकारों ने साहित्य सुमन की वर्षा कर सुवासित तथा गौरवान्वित बनाया ।

बुन्देलखंड का अतीत समुज्जवल तथा गौरवशाली था । इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में अतीत अंकित है । समय समय पर वीरों, कवियों चित्रकारों, कलाकारों तथा उच्चतम गायको ने अपनी विशालता का परिचय दिया है । संगीत सम्राट तानसेन, बैजू, मृदंगाचार्य कुदऊ, रागिनी विशेषज्ञ आदिलखॉ, पंडित गोपाल राव मास्टर पुरन्दूरे कलाकारो ने अपनी रागनियों द्वारा इसके वैभव को बढ़ाया है । विश्व विजयी गाया इमाम बख्श, हाकी मेजर ध्यान चन्द, खिलाड़ी रूप सिंह और चित्रकार कालीचरण तथा मूर्तिकार मास्टर रूद्र नारायण जैसे रस सिद्ध कलावन्त बुन्देलखण्ड की देन है । बुन्देलखण्ड कला केन्द्र रहा है जहॉ के मदिरों की मूर्तिकला विश्व को गौरवान्वित कर देती है ।

भारत वर्ष का हृदय होते हुये भी भारत की स्वातन्त्र्य प्रगति के साथ साथ बुन्देलखण्ड के भू- भाग की प्रगति न हो सकी । आज बुन्देलखण्ड सभी प्रदेशों

में एक पिछड़ा हुआ प्रदेश है यहाँ ग्रामीण जनता में निर्धनता अशिक्षा और अन्धविश्वास के पैर जमें हुये है । यहाँ उद्योगों का अभाव है । जन जागरण चेतना और उद्योगों के विकास के लिये सरकार को कदम उठाने की आवश्यकता है । बुन्देलखण्ड चैम्बर ऑफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्री (वी.सी.सी.आई.) के अनुसार बुन्देलखण्ड क्षेत्र के उद्योगों की दशा एवं उपाय निम्नलिखित है ।

**पिछड़ा क्षेत्र अनुदान :**

बुन्देलखण्ड क्षेत्र को वर्ग "ए" तथा "बी" के पिछड़े क्षेत्र संबंधी अनुलाभ प्राप्त है । केन्द्र सरकार की एक योजना के अन्तर्गत के मामलानुसार 15 लाख रूपया अथवा 25 लाख रूपया की अधिकतम सीमा तथा 15 प्रतिशत अथवा 75 प्रतिशत नकद भुगतान मिलता था किन्तु 30-9-88 के बाद इस सुविधा को अचानक समाप्त कर दिया गया । इसके स्थान पर केन्द्र सरकार ने विकास केन्द्र योजना का प्रस्ताव रखा जिसमें झाँसी को एक विकास केन्द्र बनाये जाने की व्यवसथा प्रस्तावित है । 1-4-90 के बाद प्रतिस्थापित होने वाले उद्योगों के लिये राज्य सरकार ने राज्य अनुदान योजना आरंभ की थी । परन्तु 1-10-88 से 31-3-90 तक प्रतिस्थापित उद्योगों को पिछड़े क्षेत्र संबधी कोई भी लाभ प्राप्त नहीं हुआ है । अच्छा होगा यदि 1-10-88 से 31-3-90 तक प्रतिस्थापित उद्योगों को सी.आई.एस. अथवा राज्य अनुदान के अंतर्गत पिछड़े क्षेत्र अनुदान संबधी अनुलाभ उपलब्ध कराये जाये । राज्य सरकार की मौजूदा योजना के अंतर्गत केवल राज्य सरकार औधोगिक परिक्षेत्र में प्रतिस्थापित उद्योगों तक ही अनुदान अनुलाभों को सीमित कर दिया गया है किन्तु इसमें संशोधन की आवश्यकता प्रतीत होती है । अनुदान योजना कुछ चुनिंदा उद्योगों तक ही सीमित है तथा योजना के साथ प्रदान सूची विस्तृत नही है । इसके अनुलाभों को बढ़ा देना चाहिए ।

झाँसी को एक विकास केन्द्र के रूप में चुन लिया गया है । ऐसा होने पर सुविधायें विकास केन्द्र परिक्षेत्र में उपलब्ध हो सकेगी । केन्द्रीय अनुदान अथवा राज्य अनुदान समय से उपलब्ध कराया जाये । अनुदान के सेतु ऋण पर तीन से पाँच वर्ष के अधिक ब्याज का भुगतान करना पड़ता है । इसको ब्याज मुक्त

रखा जाना चाहिए । और विलम्ब तथा लागत वृद्धि से बचने के लिये परियोजना की प्रगति पर सरकार को तत्काल धन उपलब्ध कराना उचित होगा ।

**सर्वेक्षण क्षेत्र :**

बुन्देलखण्ड में प्रौढ़ शिक्षा दीर्घ काल से चल रही है जिसके द्वारा प्रौढ़ो के आवश्यकतानुसार शिक्षा दी जाती है । बुन्देलखण्ड उत्तर प्रदेश का भौगोलिक दृष्टिकोण से ऐसा भाग है जो अन्य मंण्डलों की अपेक्षा अविकसित एवं पिछड़ा है । इस भाग से चयनित संसद सदस्य, विधायक और सामाजिक कार्यकताओं का ध्यान विगत वर्षो में इसके पिछड़ेपन पर उतना नही गया है जितना प्रदेश के अन्य मण्डलों के व्यक्तियों को गया है । यही कारण है कि बुन्देलखण्ड की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और जन संचार आवागमन वैज्ञानिक प्रगति अपेक्षाकृत बहुत कम हुई है । यद्यपि भौतिक प्राकृतिक सम्पदा संस्कृति और नैतिक मूल्यों से यह पूर्ण है । यह सत्य है कि प्रौढ़ शिक्षा पर सरकार प्राथमिकता के आधार पर धन व्यय कर रही है किन्तु वास्तविक, वांछित, लाभ निरक्षर जन समुदाय को नहीं हो रहा है ।

बुन्देलखण्ड एक ऐसा मण्डल है जिसमें पाँच जनपद ललितपुर, झाँसी, जालौन, हमीरपुर, बांदा सम्मिलित है । इन जनपदों में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम चल रहा है । प्रत्येक जनपद के कुछ विकास खण्ड प्रौढ़ शिक्षा के अन्तर्गत लिये गये है और प्रत्येक ब्लाक में कुछ गाँव प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को चलाने के लिये चयन किये गये थे । इन गाँवों में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम उत्तर प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग के माध्यम से चल रहे हैं ।

**तालिका – 1.12**

**बुन्देलखण्ड प्रभाग में प्रौढ़ शिक्षा से लाभान्वित व्यक्ति संख्या वर्ष 88–89.**

| क्र0सं0 | जनपद | कुल | महिला | पुरूष |
|---|---|---|---|---|
| 1. | झाँसी | 9070 | 4528 | 4542 |
| 2. | ललितपुर | 9491 | 4750 | 4741 |
| 3. | हमीरपुर (कुरारा) | 18000 | 8850 | 9150 |
| 4. | बाँदा | 9000 | 4320 | 4680 |
| 5. | जालौन | 18024 | 9144 | 8880 |

तालिका – 1.13

बुन्देलखण्ड प्रभाग में प्रौढ़ शिक्षा के लाभार्थियों का विवरण वर्ष 1989–90.

| क्रम | जनपद | पुरूष | महिला | योग | परियोजना | विकास खण्ड केन्द्र/राज्य |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | जालौन | 47175 | 41395 | 88570 | डाकोर<br>कालपी कोंच | महरवां, कदौरा,<br>(राज्य सरकार द्वारा)<br>कोंच, नदीगाँव, माधवग |
| 2. | झाँसी | 40983 | 34663 | 75646 | बाड़ागाँव<br>बगरा | रा०उ०मा०वि०बबीना<br>मऊरानीपुर ।गुरसराय,<br>बामोर |
| 3. | बाँदा | 44147 | 32428 | 76575 | मऊरामनगर<br>नरैनी(देर से<br>प्रारम्भ | कर्वी, मानिकपुर, पहाड़ी,<br>चित्रकूट, विसंडा, नरैनी, |
| 5. | ललितपुर | 12814 | 23077 | 45891 | तालवेहट | जखौरा, बार, विरधा,<br>तालवेहट |
| 5. | हमीरपुर | 45630 | 41370 | 87000 | कुदौरा<br>सुमेरपुर | मौदहा, कवरई, जैतपुर,<br>चरखारी, राठ, मुस्करा |

तालिका – 1.14

सातवीं पंचवर्षीय योजना में भारत सरकार द्वारा बजट

| परियोजना | केन्द्रों की संख्या | धनराशि रूपये में |
|---|---|---|
| एक परियोजना पर 300 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र | 300 केन्द्र | 13.89 लाख |
| तथा 37 जन शिक्षण निलयम स्थापित | 100 केन्द्र | 4.39 लाख |
| | 30 केन्द्र | 1.27 लाख |
| | 70 केन्द्र | 2.48 लाख |
| जन शिक्षण निलयम एक ज.शि.नि./निर्धारित 14000 का | | |

तालिका – 1.15

वर्ष 1987–88 से 1989–90 (तीन वर्षो का बजट व्यय विवरण) केवल परियोजनाओं में व्यय जनपदों (हेड क्वार्टर व्यय सम्मिलित नहीं)

| क्रम0सं0 | वर्ष जनपद | स्वीकृत बजट | व्यय | शेष |
|---|---|---|---|---|
| 1. जालौन | 1987–88 | 10,73,000.00 | 8,85,000.00 | 1,88,000.00 |
| | 1988–89 | 12,56,000.00 | 8.99,200 | 3,56,800.00 |
| | 1989–90 | 13,89,000.00 | 12,59,600.00 | 1,29,400.00 |
| 2. झाँसी | 1987–88 | 7,52,331.00 | 7,33,059.00 | 19,271.00 |
| | 1988–89 | 7,19,950.00 | 6,95,445.00 | 24,504.00 |
| | 1989–90 | 13.61,483.00 | 11,55,59.75 | 2,45,923.00 |
| 3. बाँदा | 1987–88 | 20,77,967.00 | अप्राप्त | अप्राप्त |
| | 1988–89 | 7,43,674.00 | 7,43,697.00 | 2023.00 |
| | 1989–90 | 13,58,399.50 | 12,77,990.45 | 80,409.05 |
| 4. ललितपुर | 1987–88 | 13,550.00 | 13,229.00 | 258.00 |
| | 1988–89 | 1,40,00.00 | 13,972.00 | 28.00 |
| | 1989–90 | 13,990.00 | 13,982.00 | 8.00 |
| 5. हमीरपुर | 1987–88 | 8,071,70.00 | 80,7170.60 | 1.40 |
| | 1988–89 | 8,16,750.00 | 8,16,750.00 | 0.00 |
| | 1989–90 | 10,88,221.00 | 10,88,220.00 | 0.65 |

टिप्पणी– जनपदों से प्राप्त धनराशि (रुपयों में)

वर्ष 1991-92 में बुन्देलखण्ड के सन्तुलित विकास के लिये रूपये 33 करोड़ व्यय करने का प्राविधान है । इसमें प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम भी सम्मिलित किया गया है । पर्वतीय क्षेत्र की भांति बुन्देलखण्ड सप्रमाण के 5 जनपदों हेतु आठवी पंचवर्षीय योजना वर्ष 1990-91में 15-35 आय वर्ग के निरक्षर व्यक्तियों के लिये जिनकी अनुमानित संख्या 7.38 लाख है । योजनान्तर्गत शत प्रतिशत साक्षरता प्राप्त करने हेतु राज्य से साधनों से 4.08 लाख 3.25 लाख केन्द्र संसाधनों से तथा 0.50 लाख व्यक्ति अन्य संस्थाओं द्वारा साक्षर करने का प्रस्ताव है इस समय एस0ए0ई0पी0 की 3, आर0एफ0एल0 पी0 की 5 परियोजनाएँ संचालित हो रही है इनके माध्यम से आठवी योजनावधि में 3.60 लाख व्यक्तियों को ही साक्षर किया जा सकेगा । अतः शत प्रतिशत साक्षरता के लिये निम्न व्यवस्था की गयी है ।

(1) एस0ए0ई0पी0 को 2 अतिरिक्त परियोजना के साथ साक्षरता किटो द्वारा 2.00 लाख

(2) अनौपचारिक किटों द्वारा 0.83 लाख

(3) स्वेच्छिक संस्थाओं द्वारा 0.50 लाख

योजना खण्ड अ तथा स में साक्षर किये जायेगे ।

**तालिका - 1.16**

**आठवी पंच वर्षीय योजना (अनुमानित बजट)**

| योजना | राज्य सेक्टर रू0 लाख | केन्द्रीय सेक्टर रू0 लाख |
|---|---|---|
| खण्ड (अ) | 507.14 | 434.53 |
| खण्ड (स) | 167.80 | 300.83 |

**टिप्पणी :-** 1. आठवी पंच वर्षीय योजना 1अप्रैल 1992 से शुरू हो सकी है योजनावधि 1992-97 तक है ।

2. योजना खण्ड अ तथा स में क्रमशः 1.35 तथा 2.25 लाख व्यक्तियों को साक्षर किया जायेगा ।

## तालिका - 1.17

**बुन्देलखण्ड प्रभाग में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के लिये वर्ष 1990-91 से वर्ष 1994-95 तक शत प्रतिशत साक्षरता प्राप्त करने का विभिन्न श्रोतों द्वारा वर्षवार**

**भौतिक लक्ष्यों की फाॅट**

**आठवीं पंच वर्षीय योजना 1990-95**

कुल निरक्षर 15535 आठवीं पंचवर्षीय योजना हेतु 783.00 — ॥संख्या हजारों में॥

| क्रम | श्रोत | 1990-91 | 1991-92 | 1992-93 | 1993-94 | 1994-95 | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ॥क॥ | **राज्य कार्यक्रम** | | | | | | |
| 1. | राज्य संसाधनों से संचालित परियोजनाऍ एस0ए0ई0पी0 | 45.00 | 45.00 | 45.00 | 45.00 | 45.00 | 225.00 |
| 2. | राज्य संसाधनों से साक्षरता किटों द्वारा | 20.00 | 20.00 | 20.00 | 20.00 | 20.00 | 100.00 |
| 3. | अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रो के माध्यम से साक्षरता किटो द्वारा | 16.60 | 16.60 | 16.60 | 16.60 | 16.60 | 83.00 |
| ॥ख॥ | **केन्द्रीय कार्यक्रम** | | | | | | |
| 1. | केन्द्र संसाधनों से संचालित परियोजनाऍ ॥आर0एफ0एल0पी0॥ | 45.00 | 45.00 | 45.00 | 45.00 | 45.00 | 225.00 |
| 2. | केन्द्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत साक्षरता किटों द्वारा | 20.00 | 20.00 | 20.00 | 20.00 | 20.00 | 100.00 |
| ॥ग॥ | **अन्य कार्यक्रम** | | | | | | |
| 1. | **स्वेच्छिक संस्थाओं द्वारा** | 5.00 | 5.00 | 5.00 | 5.00 | 5.00 | 25.00 |
| 2. | यू0जी0सी0 द्वारा | 5.00 | 5.00 | 5.00 | 5.00 | 5.00 | 25.00 |
| | **महायोग** | 156.60 | 156.60 | 156.60 | 156.60 | 156.60 | 783.00 |

### तालिका – 1.18

## बुन्देलखण्ड प्रभाग में प्रौढ़ शिक्षा आठवीं पंच वर्षीय योजना 1990–95 तक वर्तमान में संचालित परियोजनाओं द्वारा अच्छादन वर्षवार

संख्या हजार में}

| क्रम | संस्थाऐं / स्रोत | 1990–91 | 1991–92 | 1992–93 | 1993–94 | 1994–95 | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 1. | राज्य संसाधनों से संचालित परियोजनाओं द्वारा | 27.00 | 27.00 | 27.00 | 27.00 | 27.00 | 185.00 |
| 2. | केन्द्रीय संसाधनों से संचालित परियोजनाओं द्वारा | 45.00 | 45.00 | 45.00 | 45.00 | 45.00 | 225.00 |
| | योग | 72.00 | 72.00 | 72.00 | 72.00 | 72.00 | 360.00 |

**टिप्पणी :–** प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय उ0प्र0 लखनऊ से प्राप्त आंकड़े ।

मानचित्र
बुन्देलखण्ड प्रभाग

1 सें० = 17 कि०मी०

## जनपद – जालौन

जालौन जनपद प्रदेश के बुन्देलखण्ड में स्थित है तथा झाँसी कमिश्नरी का एक अंग है । सम्पूर्ण जनपद का क्षेत्रफल 4,459 वर्ग किमी है । वर्ष 1981 की जनगणना के अनुसार सम्पूर्ण जनपद की जनसंख्या 9,87,432 जिनमें 5,37,089 पुरूष एवं 4,30,431 महिलाएँ है । जनसंख्या का घनत्त्व 216 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी था ।। वर्ष 1981 में जालौन जनपद में आँकड़ो के अनुसार साक्षरता प्रतिशत 35.95 था । यहाँ 64.13 प्रतिशत व्यक्ति निरक्षरों जिनमें पुरूषों का प्रतिशत 49.00 तथा महिलाओं का प्रतिशत 81.11 थे । वर्ष 1981 के जनगणना पर आधारित 15–35 वर्ष वर्ग के 50.16% पुरूष, 18.96% महिलाये साक्षर 1991 की जनगणना अनुसार जनपद जनसंख्या 12,17,021 हो गई है । साक्षरता के दृष्टि से 54.43 पुरूष तथा 25.51 महिलायें है । साक्षर पुरूष 3 लाख 62 हजार तथा साक्षर महिलाएँ की संख्या 1 लाख 41 हजार हो गयी है । साक्षरता प्रसार की दृष्टि से जालौन जनपद में आँकड़ो के आधार पर दिनांक 30–12–80 को विद्यालयों की संख्या में कुल 4 महाविद्यालयों 66 इण्टर कालेज और 190 जूनियर हाईस्कूल है । जनपद में प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा स्तर के कुल 906 विद्यालय है । अब इनकी संख्या में वृद्धि हुई है ।

राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत 300 केन्द्रो की एक परियोजना जनपद जालौन के विकास खण्ड जालौन एवं डकोर में संचालित की गई । परियोजना मुख्यालय विकास खण्ड जालौन में स्थित है । प्रत्येक विकास खण्ड में 150 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोले गये थे जिनकी कार्यावधि 10 माह की थी । प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रो के प्रारम्भ होने तथा प्रतिभागियों का विवरण निम्न प्रकार रहा है :–

तालिका – 1.19

**केन्द्रो के प्रारम्भ होने की स्थिति**

| माह | केन्द्रो की संख्या |
|---|---|
| मार्च 80 | 99 |
| अप्रैल 80 | 122 |
| जून 80 | 79 |
| **कुल** | **300** |

**पंजीकृत प्रतिभागियों की स्थिति**

| | |
|---|---|
| पुरूष | 5285 |
| महिला | 2220 |
| योग | 7505 |
| अनु0जाति, जनजाति | 30435 |

तालिका – 1.20

जालौन जनपद में 31 ।ाचा 1981 तक प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के पंजीकृत

लाभान्वित प्रतिभागियों का विवरण

| क्रम सं0 | कार्यक्रम | पंजीकृत प्रतिभागियों की पुरूष | महिला | लाभांन्वित प्रतिभागियों की संख्या पुरूष | महिला |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | ग्रामीण कार्यात्मक साँक्षरता | 5051 | 1498 | 349 | 1258 |
| 2. | महाविद्यालयों द्वारा संचालित | 261 | 30 | 135 | 22 |

उपर्युक्त विवरण से यह ज्ञात होता है कि शासन द्वारा संचालित ग्रामीण कार्यात्मक योजनान्तर्गत 31-3-81 तक बन्द हुए केन्द्र से लाभान्वित होने वाले प्रतिभागियों का प्रतिशत 95.39 रहा, जिन्हे कक्षा 3 स्तर तक का शैक्षिक ज्ञान जिसमें पढ़ना लिखना साधारण जोड़ घटाना गुणा एवं भाग आदि है । कराया गया । इसके अतिरिक्त चेतना जागृति एवं व्यावसायिक दक्षाता बढ़ाने के लिए संदर्भ व्यक्तियों और विभिन्न कार्यक्रमों से संलग्न कार्यकर्ताओं के माध्यम से ज्ञान के स्तर की अभिवृद्धि की गयी ।

जालौन जनपद में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर प्रथम चक्र में प्रति केन्द्र पंजीयन लगभग 25 एवं उपस्थिति का औसत 17 था । जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला प्रौढ़ शिक्षा समिति का गठन हो चुका है । जिसकी बैठक कार्यक्रम को गति प्रदान करने के लिए की गयी है । द्वितीय चक्र वर्ष 1981-82 में भी यहाँ दिनांक 31-7-81 तक कुल 219 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोले गये है । अनुदेशक/अनुदेशिकाओं का प्रथम पाली का प्रशिक्षण समाप्त कर दिया गया है । अब 600 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र कार्यरत हैं । दो परियोजनाएँ चल रही है । प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों से निम्नलिखित वर्षों में तालिका अनुसार पुरूष महिला लाभान्वित हुये ।

तालिका – 1.21

जालौन जनपद में वर्ष 1988–89 एवं 1989–90 तक केन्द्रो में पंजीकृत लाभान्वित प्रतिभागियों की संख्या

| वर्ष | योग | पुरूष | महिला |
|---|---|---|---|
| 1988–89 | 18024 | 8880 | 9144 |
| 1989–90 | 88570 | 46175 | 41375 |

इस समय जनपद जालौन में प्रौढ़ शिक्षा की दो परियोजनायें डाकोर (कालपी) तथा कोंच में चलाई जा रही है ।

1. डाकोर (कालपी) परियोजना में महरवा, कदौरा, कुठौंद, गॉव केन्द्र है यह राज्य सरकार के संसाधनों से चल रही है ।

2. कोंच परियोजना में कोंच, नंदी गॉव तथा माधवगढ़ गॉव केन्द्र सम्मिलित है ।

तालिका – 1.22

**जालौन जनपद की परियोजना कोच वर्ष 1987 से वर्ष 1990 तक बजट व्यय**

| वर्ष | बजट | व्यय |
|---|---|---|
| 1987–88 | 10,73,000.00 | 8,85,000.00 |
| 1988–89 | 12,56,000.00 | 9,99,210.00 |
| 1889–90 | 13,89,000.00 | 12.59,600.00 |
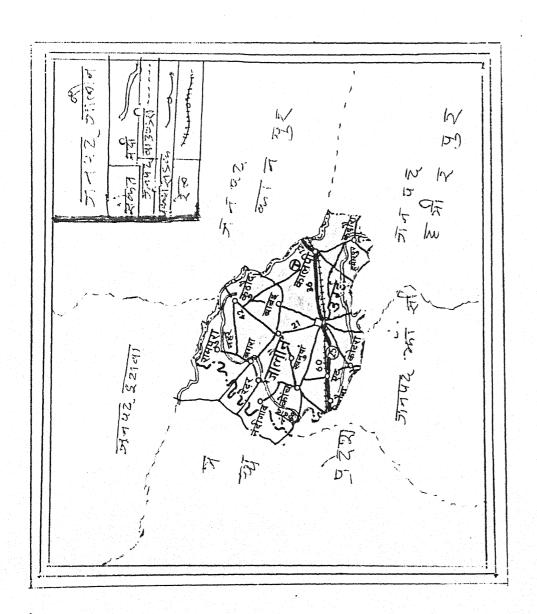
## जनपद झाँसी

बुन्देलखण्ड प्रभाग के जनपद झाँसी उत्तर प्रदेश के दक्षिण पश्चिम भाग में स्थित है । उत्तर में जिला जालौन पूर्व में जिला हमीरपुर दक्षिण में पतली गर्दन के रूप में जिला ललितपुर से जुड़ा हुआ है । जनपद की ग्रीष्म ऋतु अत्यन्त गर्म और शुष्क होती है तथा सर्दियों में अधिक ठंड पड़ती है । वर्षा की सामान्य औसत 1917.6 मि0मि0 है । परन्तु किसी वर्ष अधिक पानी बरसता है व किसी वर्ष कम । भू संरचना के अनुसार जनपद दो भागों में बटा हुआ है । प्रथम भाग उत्तरी पूर्वी मैदान है जिसमे विकास क्षेत्र चिरगाँव, मोठ, बमौर, गुरसराय तथा मऊरानीपुर आते हैं यह कृषि की दृष्टि से अच्छा है । इसके लगभग 50 प्रतिशत भागों में मार 30प्र0सं0 भाग में कातर एवं शेष भाग में पहुआ मिट्टी पाई जाती है । दूसरा भाग दक्षिण पश्चिमी भाग है जिसमें विकास क्षेत्र बंगरा बड़ागाव तथा बबीना आते है । इस भाग का काफी भू भाग पठारी एवं राकड़ भूमि का है । बेतवा एवं पहुँज इस क्षेत्र की मुख्य नदियाँ है । इसमें बन अधिक है ।

सम्पूर्ण जनपद का क्षेत्रफल 5,027 वर्ग किमी है तथा वर्ष 1981 की जनगणना के अनुसार सम्पूर्ण जनपद की जनसंख्या 11,37,714 है जिनमे 6,08,246 पुरूष और 5,29,468 महिलाएँ थी । जनसंख्या का घनत्व 226 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी थी । वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार जनपद की जनसंख्या 1426,75 हो गयी है । झाँसी जनपद में आँकड़ो के अनुसार साक्षरता का प्रतिशत 37.06 है यहाँ 63.17 प्रतिशत व्यक्ति निरक्षर है । इसमे पुरूषों का प्रतिशत 49.60 प्रतिशत तथा महिलाओं का प्रतिशत 78.76 है । वर्ष 1981 की जनगणना पर आधारित 15-35 वय वर्ग के 50.67 प्रतिशत पुरूष 21.38 महिला 1991 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या बढ़कर 14,26,751 हो गी । साक्षरता के अनुसार पुरूष 55.49% तथा महिला 29.92% हो गयी । पुरूष 4 लाख 24 हजार तथा एक लाख 85 हजार तथा महिलाये साक्षर हो गयी है ।

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के अतिरिक्त 4 डिग्री कालेज 59 हाई स्कूल एवं इण्टरमीडिएट कालेज और 192 जूनियर हाईस्कूल है । प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षा स्तर के कुल 839 विद्यालय इस जिले में स्थापित थे अब इनकी संख्या में वृद्धि हो गई है ।

राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत झांसी जनपद के विकास खण्ड बड़ागावं और बंगरा में 300 प्रोढ़ शिक्षा केन्द्रों की एक परियोजना का संचालन किया गया । परियोजना मुख्यालय विकास खण्ड बड़ागाँव में स्थापित है। प्रत्येक विकास खण्ड में 150 प्रोढ़ शिक्षा केन्द्र खोले गये थे जिनकी कार्यावधि 10 माह की थी प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के प्रारम्भ होने तथा प्रतिभागियों का विवरण निम्न प्रकार रहा था । दूसरी परियोजना का कार्यक्रम का कार्य अभी प्रस्तावित है उसमें 300 केन्द्र कार्य करेगें -

**तालिका 1.23**

**झांसी जनपद में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के प्रारम्भ होने तथा प्रतिभागियों का विवरण**

| माह अनुसार केन्द्रों के प्राम्भ होने की स्थिति | केन्द्रों की संख्या | पंजीकृत प्रतिभागियों का विवरण | |
|---|---|---|---|
| मार्च 80 | 228 | पुरूष | 6408 |
| अप्रैल, 80 | 72 | महिला | 2340 |
| मई, 80 | ... | योग | 8748 |
| जून, 80 | ... | अनुसूचित जाति | 3041 |
| जुलाई, 80 | ... | जनजाति | 318 |
| कुल | 300 | | |

इस जनपद में ग्रामीण और नगर क्षेत्रों में नेहरू युवक केन्द्र तथा डिग्री कालेजों के द्वारा भी प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के प्रसार के लिये केन्द्र चलाये जा रहे हैं विभिन्न अभिकरणों द्वारा प्रथम चक्र में संचालित प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों का विवरण निम्न प्रकार है -

तालिका – 1.24

**झांसी जनपद में कार्यक्रम प्रकार एवं केन्द्रों की संख्या**

| क्रम संख्या | कार्यक्रम का प्रकार | संचालित केन्द्रों की संख्या |
|---|---|---|
| 1. | ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता योजना | 300 |
| 2. | नेहरू युवक केन्द्र | 40 |
| 3. | डिग्री कालेज | 30 |

31.3.81 तक बन्द हुये केन्द्रों के पंजीकृत तथा लाभान्वित प्रतिभागियों का विवरण इस प्रकार है –

तालिका 1.25

**झांसी जनपद में पंजीकृत प्रतिभागि एवं लाभान्वित विवरण वर्ष 1981**

| क्रम | पंजीकृत प्रतिभागियों का विवरण | | | | | लाभान्वित प्रतिभागियों का विवरण | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| संख्या | पुरूष | महिला | योग | अनु0जाति | जनजा0 | पुरूष | महिला | योग | अनु0जा0 | जनजा0 |
| 1. | 6408 | 2340 | 8748 | 3041 | 318 | 5205 | 1855 | 7060 | 1560 | 114 |
| 2. | 720 | 390 | 1110 | 310 | 44 | 518 | 330 | 848 | 269 | 32 |
| 3. | 600 | 300 | 900 | 394 | 131 | – | – | – | – | – |

उपर्युक्त विवरण से यह ज्ञात होता है कि शासन द्वारा संचालित ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता योजनान्तर्गत केन्द्रों से लाभान्वित होने वाले प्रतिभागियों का प्रतिशत 80.75% रहा जिन्हें कक्षा 3 स्तर तक का शैक्षिक ज्ञान, एवं जिसमें पढ़ना लिखना, साधारण जोड़, घटाना, गुणा, भाग आदि हैं, कराया गया । इसके अतिरिक्त चेतना जागृति, व्यावसायिक दक्षता बढ़ाने के लिये संदर्भ व्यक्तियों और विभिन्न विकास कार्यक्रमों से संलग्न कार्यकत्ताओं के माध्यम से ज्ञान के स्तर की अभिवृद्धि की गयी ।

झांसी जनपद में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर प्रथम चक्र में पंजीकृत प्रति केन्द्र लगभग 25 तथा उपस्थिति का औसत 23 था। जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला प्रौढ़ शिक्षा समिति का गठन किया गया था जिसकी 4 बैठकें कार्यक्रम को गति प्रदान करने के प्रयास से की गयी थी। द्वितीय चक्र में भी यहां दिनांक 31.7.88 तक 211 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोले गये थे। अनुदेशक अनुदेशिकाओं का प्रथम पाली का प्रशिक्षण समाप्त भी हुआ था ।

जनपद झांसी में वर्ष 1980-81 में प्रौढ़ शिक्षा विकास खण्ड बड़ागांव एवं बंगरा से प्रारम्भ किया गया था। वर्तमान समय में यह कार्यक्रम, विकास खण्ड गुरसरांय बामौर और मऊरानीपुर में संचालित हैं। अब तक 48806 निरक्षर व्यक्तियों को लाभान्वित किया गया है। सभी प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में कार्यक्रम की अवधि 10 माह (8 माह मूल साक्षरता तथा 4 माह उत्तर साक्षरता है) इन केन्द्रों में प्रतिदिन सुविधानुसार 2 घन्टे कार्यक्रम के अनुसार साक्षरता कार्य होता है कार्यक्रम के तीन मुख्य उद्देश्य (1) जागरूकता (2) व्यावसायिक दक्षता (3) साक्षरता है । जनपद में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों से लाभान्वितों की संख्या निम्नवत है -

**तालिका - 1.26**

**झांसी जनपद में वर्ष 1988-89 89-90 में लाभान्वित प्रतिभागियों कि संख्या**

| वर्ष | योग | पुरूष | महिला |
|---|---|---|---|
| 1988-89 | 9070 | 4542 | 4528 |
| 1989-90 | 75646 | 40983 | 34663 |

तालिका – 1.27

झांसी जनपद में वर्ष 1987 से वर्ष 1990 तक बजट व्यय ।

| वर्ष | स्वीकृत | व्यय |
|---|---|---|
| 1989-90 | 361483.00 | 1155590.75 |
| 1988-89 | 719950.00 | 695445.30 |
| 1987-88 | 752335.00 | 733059.85 |

इस समय झांसी जनपद में प्रौढ़ शिक्षा से सम्बन्धित दो परियोजनाओं बड़ा गांव तथा बंगरा में, चल रही हैं ।

1. बड़ा गांव परियोजना में बड़ा गांव केन्द्र है ।
2. बंगरा परियोजना में बंगरा गांव केन्द्र हैं ।

**टिप्पणी** जनपद से सम्बन्धित तालिकाओं में अंकित आंकड़ों की प्राप्ति परियोजना तथा राज्य प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, लखनऊ से प्रकाशित तालिका से प्राप्त किये गये ।

दीप प्रज्ज्वलित कर प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए डा० इन्दु प्रकाश ऐरन, आयुक्त, झांसी मण्डल, झांसी।
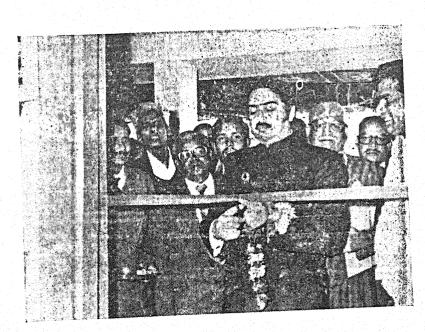
प्रौढ़ शिक्षा प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए डा० इन्दु प्रकाश ऐरन आयुक्त झाँसी मण्डल झांसी
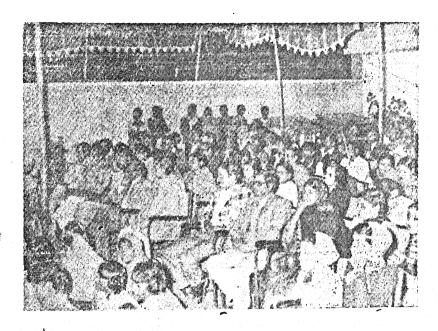
[illegible]संगोष्ठी में भाग लेने वाले प्रतिभागियों एवं अतिथियों का एक दृश्य

सांस्कृतिक प्रतियोगिता–बड़ागांव परियोजना झांसी के प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत।
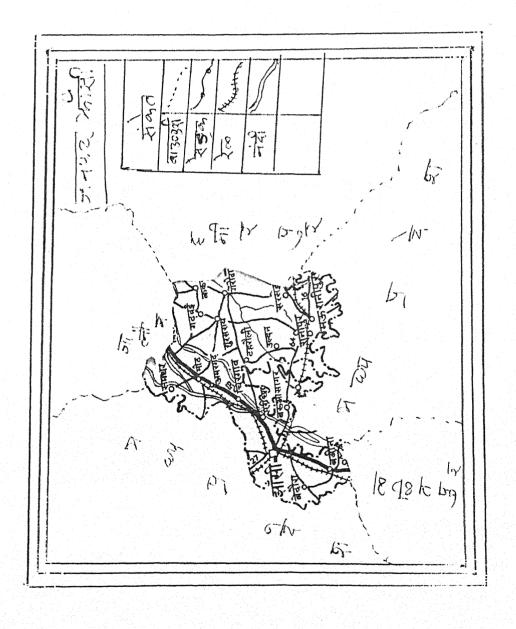
## बांदा जनपद

जनपद बांदा उत्तर प्रदेश के दक्षिणी पश्चिमी भाग में स्थित बुन्देलखण्ड का सबसे पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। इसके उत्तर में यमुना नदी बहती है जो जिले को इलाहाबाद व फतेहपुर से अलग करती है। दक्षिण की ओर विन्ध्याचल पर्वत श्रेणियां इसकी सीमायें निर्धारित करती हैं। जिले के उत्तर दक्षिण की चौड़ाई 5,060 किमी0 है जनपद में दक्षिण से उत्तर में बहने वाली नदियां यमुना नदी की सहायक बागेन नदी जनपद को बराबर भागों में बांटती है। जिसे बांदा सम्भाग दूसरा कर्वी सम्भाग के नाम से जाना जाता है। कर्वी सम्भाग पाठा क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। कर्वी सम्भाग को शासन के उपजिला कर्वी का दर्जा भी प्राप्त है। पूर्व में 150-160 किमी0 लम्बाई पर पाठा क्षेत्र फैला हुआ है। जहां पर जल उपलब्ध दुर्लभ होने के कारण विरल आबादी है। पश्चिम में जनपद हमीरपुर की सीमायें हैं ।

जनपद बांदा बुन्देलखण्ड की वीर भूमि का अध्यात्मिक उत्कर्ष गौरवपूर्ण अतीत के वैभव गरिमा, संस्कृति के स्वर्णिम स्मरणों में भरा हुआ है। जनपद की चित्रकूट जैसी रमणीक पावन भूमि को भगवान श्री रामचन्द्र जी ने अपना बनवास स्थल बनाया । आज भी लाखों दर्शनार्थी प्रत्येक अमावश्या को विपदाओं को हरने वाली श्री रामचन्द्र जी की स्थली कामदगिरि पर्वत की परिक्रमा करने आते हैं। तत्कालीन भगवान राम के प्रथम दर्शन पाने वाले रामायण रचयिता महाकवि तुलसीदास जी बाल्मीकि, पद्माकर, की जन्मभूमि, महर्षि बामदेव ऋषि की तपस्थली कालींजर का किला जहां समुद्र मन्थन से निकले विष का पान भगवान शंकर जी द्वारा किया गया काल+आलिंगन करने के बाद हुई जलन की शान्ति स्थल बांदा के नवाब अली बहादुर जिन्होंने प्रथम स्वतन्त्राता संग्राम से ही अंग्रेजों की प्रसिद्ध हुई थी।

वर्ष 1981 के अनुसार जिले की जनसंख्या 15,33,990 जिसमें पुरूष, 8,22,816 तथा महिलायें 71,11,074 थीं कुल 357374 व्यक्ति साक्षर थे। जिसमें 297148 पुरूष तथा 61226महिलायें थीं जिनमें नगरीय 79282 कुल व्यक्ति साक्षर

थे जिसमें 54957 पुरूष तथा 24,325 महिलायें थीं ग्रामीण क्षेत्र में 211191 साक्षर पुरूष हैं तथा 36901 महिलायें हैं । कुल 27892 व्यक्ति साक्षर थे। जनपद में कुल अनुसूचित जाति की जनसंख्या 362511 जिसमें पुरूष 194800 तथा महिलायें 157711 हैं नगर क्षेत्र में 30139 अनुसूचिज जाति के हैं । पुरूष 16422 तथा महिलायें 13717 हैं। ग्रामीण अनुसूचित जाति की जनसंख्या 332372 है पुरूष 178370 तथा महिलायें 153994 हैं सन 1991 की जनगणना के अनुसार जनपद की जनसंख्या 18,51,014 हो गई है ।

जनपद का साक्षरता प्रतिशत 23.30% है तथा इसका प्रदेश में 42वां स्थान है। यहां पुरूषों की साक्षरता प्रतिशत 35.99% तथा महिलाओं का 8.61% है। ग्रामीण क्षेत्र का साक्षरता प्रतिशत 20.56% है इनमें पुरूषा का 33.33 तथा महिलाओं 5.86 है शहर क्षेत्र का साक्षरता प्रतिशत 43.78% है। इसमें पुरूषा का 55.44 तथा महिलाओं का 29.68 प्रतिशत है। जनपद में कुल 357374 लोग साक्षर हैं । इसमें पुरूष 296148 तथा महिलाओं 61226 हैं । वर्ष 1991 की जनगणना अनुसार पुरूष 41.59 तथा महिलायें 13.49 प्रतिशत साक्षर हैं। पुरूष चार लाख अट्ठारह हजार तथा महिलायें एक लाख चौदह हजार हैं। जनपद में शैक्षिक सुविधाओं की बालिकाओं के लिये बिल्कुल नगण्य हैं। ग्रामीण क्षेत्र में कोई भी उत्कृष्ट माध्यमिक या इण्टर कालेज महिलाओं के लिये नहीं है।

जनपद में जूनियर बेसिक स्कूल की संख्या 1272 है। इसमें 7165 ग्रामीण क्षेत्र में तथा 107 नगर क्षेत्र में हैं सीनियर बेसिक स्कूल की संख्या 284 हैं इनमें 231 ग्रामीण क्षेत्र में तथा 53 नगर क्षेत्र में हैं। हाई स्कूल इन्टर कालेज जनपद में कुल 39 हैं इनमें 35 ग्रामीण क्षेत्र में 24 नगर क्षेत्र में हैं बालिकाओं के 6 स्कूल हैं जो सभी नगरीय क्षेत्र में हैं । जनपद में 4 डिग्री कालेज हैं जिसमें 1 ग्रामीण क्षेत्र में 3 नगरीय क्षेत्र में हैं । जनपद में एक आयुर्वेदिक कालेज भी है तथा जनपद में पालीटेक्निक एवं आई0टी0आई0 के दो कालेज हैं जिनमें 1 पुरूष तथा 1 महिलाओं के लिये हैं । जनपद में 2 बी0एड0 कालेज हैं जो बांदा तथा अतर्रा डिग्री कालेज में हैं। साथ दो बेसिक ट्रेनिंग कालेज भी हैं। एक महिला तथा

एक पुरूष के लिये हैं ।

राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम बांदा जनपद के विकास खण्ड मऊ एवं रामनगर में प्रस्तावित किया गया । परियोजना मुख्यालय विकास खण्ड मऊ में स्थित हैं। प्रत्येक विकास खण्ड में 150 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोले गये थे जिनकी कार्यावधि 10 माह की थी। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के प्रारम्भ होने तथा प्रतिभागियों का विवरण निम्न प्रकार था -

तालिका 1.28

**बांदा जनपद में प्रौढ़ शिक्षा प्रारम्भ होने की स्थिति में केन्द्रों की संख्या एवं प्रतिभागियों की संख्या।**

| केन्द्रों के प्रारम्भ होने की स्थिति | केन्द्रों की संख्या | पंजीकृत प्रतिभागियों का विवरण | |
|---|---|---|---|
| मार्च , .1980 | 193 | पुरूष | 7410 |
| अप्रैल, 1980 | 94 | महिला | 1440 |
| मई, 1990 | 12 | योग | 8850 |
| जून, 1980 | 4 | अनुसूचित जाति | 2667 |
| जुलाई, 1980 | 1 | जनजाति | 369 |
| **कुल** | 300 | | |

इस जनपद में ग्रामीण और नगर क्षेत्रों में नेहरू युवक केन्द्र तथा महाविद्यालयों के माध्यम से भी प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र चलायें जा रहे हैं ।

तालिका - 1.29

बांदा जनपद में विभिन्न अभिकरणों द्वारा प्रथम चक्र में संचालित

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों का विवरण ।

| क्रम संख्या | कार्यक्रम का प्रकार | संचालित केन्द्रों की संख्या |
|---|---|---|
| 1. | ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता योजना | 300 |
| 2. | नेहरू युवक केन्द्र | 25 |

तालिका - 1.30

31 मई 1980 तक बन्द हुये केन्द्रों के पंजीकृत एवं लाभान्वित प्रतिभागियों का विवरण

| क्रम | कार्यक्रम का | पंजीकृत प्रतिभागियों की संख्या | | | | | लाभान्वित प्रतिभागियों की संख्या | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| संख्या | प्रकार | पुरूष | महिला | योग | अ0जा0 | जनजा0 | पुरूष | महिला | योग | अ0जा0 | जनजा0 |
| 1. | ग्रामीण कार्यालय | 7410 | 1440 | 8850 | 2667 | 369 | 7410 | 1320 | 8730 | 2649 | 361 |
| 2. | नेहरू युवक केन्द्र | 90 | 660 | 750 | 360 | ... | 75 | 600 | 675 | 307 | ... |

उपर्युक्त विवरण से यह ज्ञात होता है कि शासन द्वारा संचालित ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता योजनान्तर्गत केन्द्रों से लाभान्वित होने वाले प्रतिभागियों का प्रतिशत 98.64 रहा, जिन्हें कक्षा 3 स्तर तक का शैक्षिक स्तर तक का शैक्षिक ज्ञान, जिसमें पढ़ना लिखना, साधारण जोड़, घटाना, गुणा, एवं भाग आदि कराया गया इसके अतिरिक्त चेतना जागृति एवं व्यावसायिक दक्षता बढ़ाने के लिये संदर्भ व्यक्तियों और विभिन्न विकास कार्यक्रमों में संलग्न कार्यकर्ताओं के माध्यम से ज्ञान के स्तर में अभिवृद्धि की गयी । बांदा जनपद में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर प्रथम चक्र में पंजीकृत

लगभग 29 एवं उपस्थिति का औसत 20 था । द्वितीय चक्र में भी यहां दिनांक 31.7.81 तक कुल 300 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोले गये अनुदेशक/अनुदेशिकाओं का प्रशिक्षण भी कराया गया ।

**तालिका - 1.31**

**बांदा में पं0 जवाहर लाल नेहरू डिग्री कालेज बांदा तथा स्वैच्छिक संगठन**

**नेहरू युवक केन्द्र द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम प्रगति विवरण**

**(परियोजना टी0एम0एम0टी0ए0)**

| क्रम संख्या | | वर्ष | केन्द्र संचालित | पंजीकृत | | सफल |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | संख्या | पु0 | महिला | योग |
| 1. | पं0 जवाहर लाल नेहरू डिग्री कालेज बांदा | 1982-83 | 10 | 280 | 50 | 330 |
| 2. | नेहरू युवक केन्द्र बांदा | 1981-82 | 45 | 660 | 500 | 750 |
| | | 1982-83 | 12 | 360 | 150 | 450 |
| | | 1983-84 | 05 | 300 | 150 | 300 |

**टिप्पणी :** स्वैच्छिक, संगठन संस्थाओं द्वारा केवल उपरोक्त वर्षों में ही कार्य हुआ है ।

तालिका 1.32

एन0ए0ई0पी0 द्वारा बांदा जनपद में लाभान्वित प्रतिभागियों की संख्या

(1080-81 से 1987-88 तक) विकास खण्ड के अनुसार

| क्रम संख्या | विकास खण्ड | कुल संख्या | पुरूष | महिला |
|---|---|---|---|---|
| 1. | मऊ एवं रामनगर | 53850 | 31705 | 22145 |
| 2. | चित्रकूट (कर्वी) | 8100 | 4380 | 2720 |
| 3. | मानिकपुर | 8100 | 4080 | 4020 |
| 4. | पहाड़ी | 1800 | 1080 | 720 |

तालिका 1.33

वर्ष 1980-81 से 1987-88 तक एन0ए0 आइ0पी0 द्वारा लाभान्वित

प्रतिभागियों की संख्या ।

| क्रम संख्या | | ग्रामीण | शहरी | कुलयोग |
|---|---|---|---|---|
| 1. | निरक्षार व्यक्ति | 25680 | 30540 | 287120 |
| 2. | निरक्षार को साक्षार बनाने का लक्ष्य | 784813 | 101803 | 1176616 |
| 3. | लाभान्वित | 71850 | ------ | 71850 |
| 4. | अवशेष निरक्षार | 184730 | 30540 | 215270 |

तालिका – 1.34

15–35 आयुवर्ग के बांदा जनपद के निरक्षर व्यक्तियों का विवरण ।

विकास खण्ड मऊ, रामनगर, चित्रकूट, मानिकपुर, पहाड़ी ।

| | कुल | पुरूष | महिला |
|---|---|---|---|
| जनसंख्या ॥1981॥ | 153399 | 822816 | 711174 |
| साक्षर व्यक्ति | 357374 | 296148 | 61226 |
| 15–35 के निरक्षार व्यक्ति | 287120 | 113049 | 174071 |
| वर्ष 1981 से 1988 के मध्य साक्षर | 71850 | 41245 | 30606 |
| अवशेष निरक्षार व्यक्ति | 215270 | 71804 | 143466 |
| वर्ष 1988–89 में लाभान्वित | 18000 | 8000 | 10000 |
| वर्ष 1989–90 में लाभान्वित | 21000 | 9750 | 11250 |
| आठवीं योजना के अवशेष निरक्षार | 176270 | 54054 | 122216 |

वर्तमान समय में जनपद बांदा में 2 प्रौढ़ शिक्षा से सम्बन्धित परियोजनायें चल रही हैं। यह मऊ, रामनगर, तथा नरैनी में है। इससे सम्बन्धित क्षेत्र विवरण इस प्रकार हैं –

1. मऊ, रामनगर परियोजना में कर्वी, मानिकपुर, का पहाड़ी गांव के केन्द्र सम्मिलित किये गये हैं ।

2. नरैनी परियोजना में विसड़ा, नरैनी, कमासिन, के गांव केन्द्र सम्मिलित हैं, यह देर से चलाई गई है ।

तालिका 1.35

बांदा जनपद में साक्षरता अभियान की कार्यकारी योजना 1988-89

| क्रम संख्या | नाम योजना | ग्रामीण | शहरी | योग |
|---|---|---|---|---|
| 1. | आर0एफ0एल0पी0 योजना | 9000 | × | |
| 2. | आर0एफ0एल0पी0 के अन्तर्गत एक पढ़ाये एक | 4500 | × | |
| 3. | युवक मण्डल | 1000 | × | 1000 |
| 4. | एन0एस0एस | 300 | × | .... |
| 5. | नेहरू युवक केन्द्र बांदा | 500 | × | |
| 6. | पी0डब्ल्यू0सी0आर0ए0 | 500 | × | |
| 7. | बाल विकास परियोजना | 200 | × | |
| 8. | माध्यमिक स्कूल | -- | × | 1000 |
| | | 16000 | × | 2000 |

| लक्ष्य | | ग्रामीण | शहरी | |
|---|---|---|---|---|
| पुरूष | - | 7000 | 1000 | 8000 |
| महिला | - | 9000 | 1000 | 10000 |
| योग | - | 16000 | 2000 | 18000 |

तालिका – 1.36

बांदा जनपद में साक्षरता अभियान की कार्यकारी योजना वर्ष 1989–90

| लक्ष्य | ग्रामीण | शहरी | योग |
|---|---|---|---|
| पुरूष | 8250 | 1500 | 9750 |
| महिला | 9750 | 1500 | 11250 |
| **योग** | **18000** | **3000** | **21000** |

| विवरण | लाभान्वित प्रतिभागी | |
|---|---|---|
| | ग्रामीण | शहरी |
| आर0एफ0एल0पी0 परियोजना | 9000 | – |
| आर0एफ0एल0पी0 के अन्तर्गत एक पढ़ाये एक | 4500 | – |
| स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा संचालित केन्द्र | 3000 | – |
| विश्वविद्यालय द्वारा संचालित केन्द्र | – | – |
| नेहरू युवक केन्द्र द्वारा संचालित केन्द्र | – | – |
| विश्ववि0/महावि0 द्वारा एम0पी0 एफ0एल0 | – | – |
| युवक मंगल दल | 500 | – |
| एन0एस0एस0 | – | 1500 |
| आई0सी0डी0एस0 – | – | – |
| नेहरू युवक केन्द्र बांदा | 500 | 400 |
| डा0डब्ल्यू0 सी0आर0ए0 | 500 | – |
| माध्यमिक स्कूल | – | 1000 |
| बाल विकास परियोजना | – | – |
| कताई मिल | – | 100 |
| **योग** | **18000** | **3000** |

तालिका 1.37

15-35 आयुवर्ग के बांदा जनपद के निरक्षर व्यक्तियों को साक्षर बनाने का लक्ष्य ।

| वर्ष | ग्रामीण | शहरी | योग |
|---|---|---|---|
| 1988-89 | 16000 | 2000 | 18000 |
| 1989-90 | 18000 | 3000 | 21000 |
| 1990-91 | 24086 | 3040 | 27126 |
| 1991-92 | 25000 | 4000 | 29000 |
| 1992-93 | 27500 | 5000 | 32500 |
| 1993-94 | 35360 | 6500 | 41860 |
| 1994-95 | 38784 | 7000 | 45784 |
| कुल योग | 184730 | 30540 | 215270 |

तालिका - 1.38

बांदा जनपद में वर्ष 1987-90 तक बजट, व्यय ।

परियोजना कर्वी, मानिकपुर

| वर्ष | बजट (रू० लाख में) | व्यय (रू० लाख में) |
|---|---|---|
| 1987-88 | 14.00 | 13,99,873 |
| 1988-89 | 14.00 | 7,45,697 |
| 1989-90 | 14.00 | 10,70,837 |

टिप्पणी : जनपद से सम्बन्धित तालिकाओं में अंकित आंकड़ों की प्राप्ति जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी बांदा तथा राज्य प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय लखनऊ से प्रकाशित तालिकाओं से प्राप्त किया गया ।
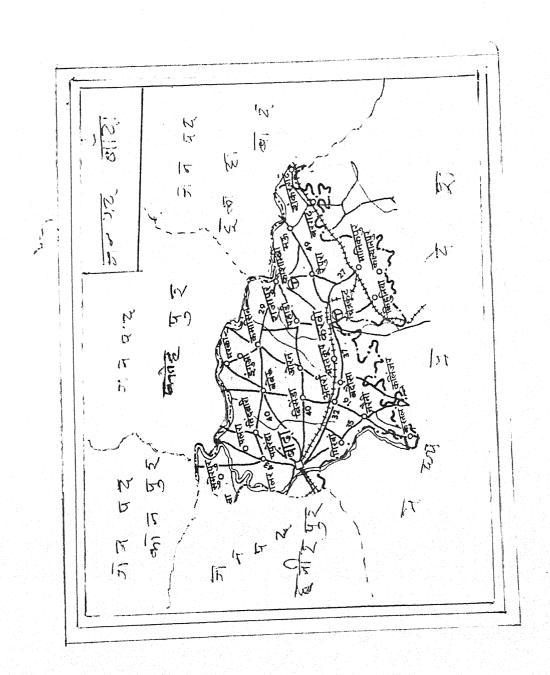
## जनपद ललितपुर

। मार्च 1974 में ललितपुर जनपद झांसी मण्डल के पांचवे जिले के रूप में अस्तित्व में आया। ऐतिहासिक सांस्कृतिक पर्यटन तथा पुरातत्व की दृष्टि से इसका विशेष महत्व है। बीते हुये समय में ललितपुर चंदेरी का अंग था जो 1861 से 1891 तक स्वतंत्र जिला के रूप में भी जाना जाता रहा है। इस जिले के अन्तर्गत बानपुर तथा मडावरा दो तहसीलें थी जिनकों समाप्त करके 1866 में नई तहसील महरौली की स्थापना की गयी जो आज भी अस्तित्व में है। मार्च 1974 को ललितपुर जनपद को वर्तमान स्वरूप प्राप्त हुआ जिसमें इस समय ललितपुर महरौनी, तथा तालबेहट 3 तहसीलें थीं। जनपद ललितपुर स्थित बानपुर के नरेश राजा मर्दनसिंह ने 1857 के स्वतन्त्राता संग्राम में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के दाहिने हाथ के रूप में संघर्ष करके अंग्रेजों को भारी शिकस्त दी थी। ललितपुर नगर के नामकरण के सम्बन्ध में जनश्रुति है कि इसे गोंड राजा सुम्मेरसिंह जिन्होंने सिद्ध पोखर में स्नान करके स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया था और सपत्नीक वहीं निवास करने लगे। समय बीतने पर ललिताकुंवर नाम की उनके एक कन्या पैदा हुई जिस नाम पर इस स्थल का नाम ललितपुर इसी सिद्ध पोखर का विकसित रूप आज नगर के बीचोबीच सुमेरा तालाब है ।

ऐतिहासिक दृष्टि से देवगढ़ बानपुर के जैन मन्दिर पाली के नीलकंठेश्वर (शिव मन्दिर) तालबेहट का किला जैसे ऐतिहासिक स्थलों के साथ ही जनपद में बाराह, राम, विष्णु, कृष्ण, हनुमान, शिव तथा अन्य देवी देवताओं की प्राचीन मूर्तियां हैं। छोटे-छोटे किले यहां की भाषा गढ़ी कहते हैं। बिखरे हुये हैं। जो यहां कि छोटे-छोटे स्वावलम्बी राजाओं की वीरता का आज भी उजागर करती है। माताटीला बांध, राजघाट बांध, सजनाम बांध, गोविन्द सागर बांध, शहजाद बांध, जामनी बांध, सुकवा ढुकवा बांध, रोहिणी बांध है जो जिले को विकास पथ पर अग्रसर है जिसके प्रकाश से बुन्देलखण्ड प्रभाग का समृद्धशाली जनपद बनने की दिशा में है ।

जनपद की सीमायें उत्तर छोड़कर 3 ओर मध्य प्रदेश के पूर्व में **टीक**म गढ़ पश्चिम में गुना, दक्षिण में सागर जिलों से जुड़ी हुई बेतवा व धसान नदियां यत्र तत्र जनपद की सीमा में बहकर सीमा निर्माण का कार्य करती हैं जबकि जमनी नदी जनपद में बहने के बाद बानपुर के पास से जनपद सीमा निर्माण करती हुई बेतवा नदी में मिल जाती है। शहजाद, सजनम, तथा रोहिणी, नदियां जनपद का जल समेटकर बेतवा में विलीन हो जाती हैं। प्राकृतिक बनावट की अनुसार सभी नदियां दक्षिण से उत्तर की ओर बहती हैं जिनपर बांध बनाकर सिंचाई सुविधाओं में वृद्धि की जा रही है। जिले का मुख्यालय मध्य रेलवे के झांसी-भोपाल सेक्शन पर स्थित होने के कारण देश के सभी महत्त्वपूर्ण नगरों से जुड़ी हुआ है इसी प्रकार वह नगर राष्ट्रीय मार्ग संख्या 26 (झांसी-लखनादौन) के 91 किमी0 पर स्थित है। इसलिये यह नगर सड़क मार्ग से देश के प्रमुख स्थानों से जुड़ा हुआ है।

यह जनपद 24.11 से 25.57 उत्तरी अधिकाश तथा 79.25 पूर्व देशान्तर के मध्य स्थित हैं जिसका कुल क्षे0 5039 वर्ग किमी0 है। जनपद के विकास खण्ड तालबेहट, जखौरा, व विकास खण्डों की भूमि रौकण एवं पडुआ किस्म की है। जो कम उपजाऊ है जबकि बार विकास खण्ड की भूमि अपेक्षाकृत उपजाऊ है। द्वितीय भाग में विरधा महरौनी तथा मडावरा विकास खण्डीय क्षेत्र है। जो अपेक्षाकृत अधिक उपजाऊ है। जिले में इमारती पत्थर की खदानों हैं जिनसे पत्थर निकालकर जिले से बाहर भी भेजा जाता है। राक फास्फेट की उपलब्धता भी यहां पर है। यूरेनियम मिलने की संभावनायें हैं। ललितपुर-महरौनी मार्ग पर समोगर के पास जस्ता धातु मिलने की संभावनायें हैं जिससे भविष्य में भारी उद्योग की संभावनायें इस जनपद में हैं । रॉक फास्फेट तथा यूरेनियम जस्ता आदि धातुओं के मिलने की संभावनाओं से इस जनपद का औद्योगिक भविष्य उज्जवल है ।

वर्ष 1981 के जनगणना के अनुसार ललितपुर जनपद की जनसंख्या 5,77,648 की। साक्षरता 15.35% आयुवर्ग की 21.34% की इसमें 31.11% पुरूष तथा 9.96% महिलायें थीं। सम्पूर्ण जनपद में निरक्षरों का प्रतिशत

पुरूष तथा महिलाओं का अन्य जनपदों से अधिक था। 1991 के जनगणना अनुसार पुरूष एक लाख 44 हजार तथा महिलायें 45 हजार साक्षर है। एवं जनपद की जनसंख्या बढ़कर 7,48,997 हो गई है। साक्षरता प्रतिशत पुरूष एवं महिला 1.44. एवं 0.45 = 1.91 लाख है। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों से पुरूष महिलायें लाभान्वित हुयी हैं विवरण निम्नवत हैं –

**तालिका – 1.39**

**ललितपुर जनपद में वर्ष 1988–1989 तथा 1989–90 तक लाभान्वित प्रतिभागियों की संख्या ।**

| वर्ष | योग | महिलायें | पुरूष |
|---|---|---|---|
| वर्ष 1988–89 | 9491 | 4750 | 4741 |
| 1989–90 | 45891 | 12814. | |

इस समय जनपद में प्रौढ़ शिक्षा के अन्तर्गत एक परियोजना तालबेहट में चल रही है । इसमें निम्नलिखित गांव केन्द्र सम्मिलित किये गये हैं। (1) जखौरा (2) बार (3) बिरधा

**तालिका – 1.40**

**ललितपुर जनपद में योजना वर्ष 1989–90 के लिये शासन से अनुमोदित परिव्यय ।**

| क्रमसंख्या | विभाग का नाम | शासन से अनुमोदित परिव्यय |
|---|---|---|
| 1. | सामान्य शिक्षा | 4814.50 रूपये |
| 2. | समाज कल्याण विभाग | 956.60 |
| 3. | प्रौढ़ शिक्षा | 139.82 |

**टिप्पणी:** अनुक्रमणिका – 20 सूत्रीय कार्यक्रम की संदेशवाहिका जनपद ललितपुर वर्ष 1988 पन्ना, 21,22 तथा प्रौढ़ शिक्षा कार्यालय ललितपुर द्वारा प्रेषित सूचना अनुसार ।

तालिका – 1.41

ललितपुर जनपद में वर्ष 1987 से वर्ष 1990 तक बजट, व्यय ।

| वर्ष | बजट | व्यय | बचत |
|---|---|---|---|
| 1. 1987-88 | 13,550.00 | 13.292.00 | 258.00 |
| 2. 1988-89 | 14,000.00 | 13,972.00 | 28.00 |
| 3. 1989-90 | 13,990.00 | 13,982.00 | 8.00 |

जनपद ललितपुर से संबोधित वस्तुपूरक जानकारी

| | | |
|---|---|---|
| 1. | जनसंख्या | 577648 (1981) |
| 2. | क्षेत्रफल | 5039 वर्ग किमी0 |
| | (क) कुल कृषि योग्य क्षेत्रफल | 195018 हेक्टेयर |
| 3. | ग्रामों की संख्या | 683 |
| 4. | विकास खण्डों की संख्या | 6 |
| 5. | प्रमुख उद्योग | कोई भारी उद्योग नहीं |
| 6. | प्राइमरी स्कूल | 604 |
| 7. | जूनियर हाई स्कूल | 103 |
| 8. | माध्यमिक विद्यालय | 18 |
| 9. | महाविद्यालय | 2 |
| 10. | आई0टी0आई | 1 |
| 11. | पालीटेक्निक | 1 |
| 12. | प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र | 300 |

**टिप्पणी :** जनपद से सम्बन्धित तालिकाओं में अंकित आंकड़ों की प्राप्ति जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी तथा राज्य प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय लखनऊ से प्रकाशित तालिका से प्राप्त की गयी ।
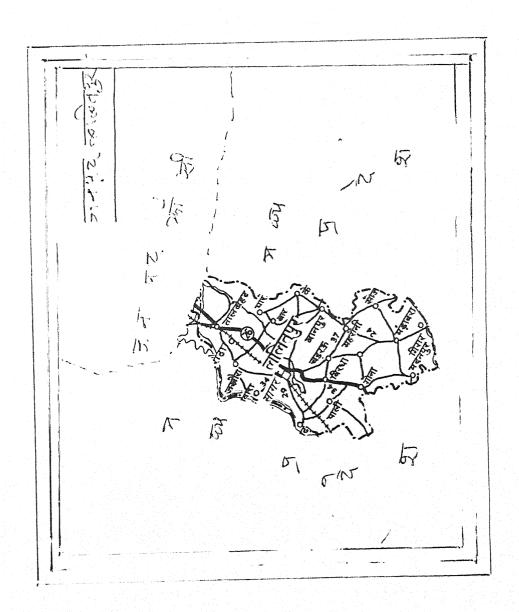
## जनपद हमीरपुर

हमीरपुर स्थिति उत्तर प्रदेश का दक्षिणी भाग का एक जनपद है इसके पूर्व में बांदा जनपद उत्तर में जालौन पश्चिम में झांसी जनपद हैं बीच में मध्यप्रदेश का कुछ भाग आ जाता है और दक्षिण में मध्य प्रदेश स्थित है। यह कहना उचित होगा कि अधिकांश भाग में मध्य प्रदेश अपना प्रभत्व बनाये है। जनपद का क्षेत्रफल 7,166 वर्ग किमी० है। बेतवा यमुना नदियां अपने सिंचन शक्ति से , जनपद को कृषि प्रधान जनपद बनाये हुये हैं। जनपद, भौगोलिक दृष्टिकोण से उत्तम स्थिति रखाता है। भूभाग उपजाऊ है। गेहूं तिलहन दालें मुख्य फसलें हैं ज्वार बाजरा चना भी होता है कृषि के दृष्टिकोण से समृद्धिशाली जनपद है ।

जनपद में **6** तहसीलें हैं इस जनपद में 11 विकास खण्ड कार्यरत हैं। सन् 1981 की जनगणना अनुसार इस जनपद की जनसंख्या 1,194 हजार थी। जिसमें 643 हजार पुरूष एवं 551 हजार स्त्रियां थी। जनसंख्या का घनत्व 167 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी० था। 1991 की जनगणना के अनुसार जनपद की जनसंख्या 14,65,401 हो गई है। जिसमें 7,88,500 पुरूष हैं तथा महिलायें 6,75,928 है। साक्षर पुरूष 3 लाख 58 हजार तथा महिलाओं की संख्या 1 लाख 13 हजार है। जो क्रमशः 45.40 एवं 16.71% है।

सन् 1981 की जनगणना के अनुसार हमीरपुर जनपद की साक्षरता 27.3 प्रतिशत थी जिसमें 38.9 पुरूष एवं 11.5% स्त्रियां थी सन् 1991 की जनगणना अनुसार साक्षरता में वृद्धि हुई है।

**तालिका - 1.42**

**हमीरपुर जनपद में 1991 की जनगणना के अनुसार साक्षरता**

| वर्ष | साक्षरता | | औसत |
|---|---|---|---|
| | पुरूष | स्त्री | |
| 1981 | 38.94% | 11.57 | 27.31 |
| 1991 | 45.40 | 16.71 | 32.14 |

तालिका – 1.43

हमीरपुर जनपद में 30 सितम्बर 1989 को जनपद में कार्यरत
शिक्षण संस्थाओं की संख्या

| वर्ष | महाविद्यालय | उच्चतर माध्यमिक विद्यालय | सीनियर बेसिक स्कूल | जूनियर बेसिक स्कूल |
|---|---|---|---|---|
| 1989-90 | 04 | 47 | 199 | 892 |
| 1990-91 | तदैव | तदैव | तदैव | तदैव |

इस समय दो परियोजनायें कुरारा और सुमेरपुर में चल रही है ।

1. कुरारा परियोजना मौदहा, कवरई, जौतपुर में राज्य सरकार के संसाधनों द्वारा चलाई जा रही है ।

2. सुमेरपुर, वरवारी, राठ, मुस्करा में केन्द्र सरकार के संसाधनों द्वारा चलाई जा रही है ।

तालिका – 1.44

हमीरपुर जनपद में वर्ष 1988-89 एवं 1989-90 में लाभान्वित
प्रतिभागियों की संख्या

| वर्ष | योग | पुरूष | महिला |
|---|---|---|---|
| 1988-89 | 18,000 | 9150 | 8850 |
| 1989-90 | 87,000 | 45630 | 41370 |

तालिका – 1.45

हमीरपुर जनपद की परियोजना राठ में वर्ष 1984–85 से वर्ष 1989–90 तक

बजट एवं व्यय विवरण

| वर्ष | आवंटन | व्यय |
|---|---|---|
| 84–85 | 193165.00 | 193164.19 |
| 85–86 | 702280.00 | 707279.30 |
| 86–87 | 1015144.00 | 1015142.00 |
| 87–88 | 807172.00 | 807170.60 |
| 88–89 | 816750.00 | 1988220.35 |
| 89–90 | 1088221.00 | 1088220.35 |

**टिप्पणी :–** जनपद हमीरपुर से सम्बन्धित तालिकाओं में अंकित जिला प्रौढ़ कार्यालय हमीरपुर तथा राज्य प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय लखनऊ से प्रकाशित आख्या से प्राप्त ।

तालिका - 2.1

बुन्देलखण्ड प्रभाग प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी लिंग भेद अनुसार न्यादर्श

1. लिंग (महिला, पुरूष)

| महिला (सरकार) | पुरूष (संख्या) | योग |
|---|---|---|
| 744 | 656 | 1400 |

तालिका - 2.2

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आयुवर्ग अनुसार न्यादर्श

2. आयु वर्ग, वर्ष

| | 15-20 | 21-25 | 26-30 | 31-35 | 36-40 | 41-46 | 46-50 | 60-65 | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 288 | 218 | 171 | 97 | 23 | 05 | 01 | 01 | 744 |
| पुरूष | 93 | 206 | 88 | 70 | 14 | 00 | 00 | 00 | 656 |

तालिका - 2.3

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी शिक्षा स्तर के अनुसार न्यादर्श

3. शिक्षा स्तर

| | अशिक्षित | कक्षा 1-2 संख्या | 3-4 संख्या | 5-6 संख्या | योग |
|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 448 | 279 | 17 | 00 | 744 |
| | 439 | 200 | 17 | 00 | 656 |

तालिका - 2.4

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी जाति वर्ग के अनुसार न्यादर्श

4. जाति / वर्ग

| सामान्य वर्ग बहुसंख्यक | | अनुसूचित जाति | अनु0जन जाति | पिछड़ी जाति | अल्प संख्यक | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 133 | 271 | 01 | 322 | 17 | 744 |
| पुरूष | 151 | 230 | 01 | 246 | 28 | 656 |

तालिका - 2.5

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी व्यवसाय के अनुसार न्यादर्श

5. व्यवसाय

| | कृषि | मजदूरी | नौकरी | गृहकार्य | व्यापार | कुछ नहीं | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 255 | 188 | 04 | 278 | 00 | 19 | 744 |
| पुरूष | 453 | 184 | 04 | 04 | 09 | 02 | 656 |

तालिका - 2.6

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वार्षिक आय अनुसार न्यादर्श

6. वार्षिक आय

| रुपये 3600 तक | 3601 से 6000 | 6001-7200 | 7201 से अधिक | कुछ नहीं बताया आमदनीनहीं बताई | योग |
|---|---|---|---|---|---|
| 895 | 394 | 34 | 07 | 70 | 1400 |

तालिका - 2.7

प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन बुन्देलखण्ड प्रभाग

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वैयक्तिक चेतना से लाभान्वित

कुल योग महिला - 744
कुल योग पुरूष - 656
महायोग- 1400

वैयक्तिक भाग - 1

| प्रश्न संख्या | म0 पु0 | अ संख्या | % | ब संख्या | % | स संख्या | % | द संख्या | % | य संख्या | % | योग संख्या | % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | म0 | 85 | 11.42 | 241 | 32.39 | 282 | 37.90 | 333 | 44.75 | 233 | 31.31 | 1174 | |
| | पु0 | 116 | 17.68 | 357 | 54.42 | 301 | 45.73 | 281 | 42.83 | 230 | 35.06 | 1285 | |
| योग | | 201 | 14.36 | 598 | 42.27 | 583 | 41.64 | 614 | 43.85 | 463 | 33.07 | | |
| 2. | म0 | 134 | 18.01 | 236 | 31.72 | 229 | 30.77 | 187 | 25.13 | 153 | 20.56 | 939 | |
| | पु0 | 240 | 36.58 | 338 | 51.52 | 308 | 46.95 | 285 | 43.44 | 250 | 38.10 | 1421 | |
| योग | | 374 | 26.71 | 574 | 41.00 | 537 | 38.35 | 472 | 33.71 | 403 | 28.78 | | |
| 3. | म0 | 186 | 25.00 | 114 | 15.32 | 198 | 26.61 | 106 | 14.25 | 103 | 13.84 | 707 | |
| | पु0 | 149 | 22.71 | 172 | 26.21 | 216 | 32.92 | 176 | 26.76 | 102 | 15.54 | 815 | |
| योग | | 335 | 23.92 | 286 | 20.42 | 414 | 29.57 | 282 | 20.14 | 205 | 14.64 | | |
| 4. | म0 | 158 | 21.23 | 200 | 26.88 | 210 | 28.36 | 174 | 23.38 | 136 | 18.27 | 878 | |
| | म0 | 265 | 40.39 | 275 | 41.92 | 277 | 42.22 | 292 | 44.51 | 221 | 33.68 | 1330 | |
| योग | | 423 | 30.21 | 475 | 33.92 | 487 | 34.78 | 466 | 33.28 | 357 | 25.50 | | |
| 5. | म0 | 177 | 23.65 | 171 | 22.98 | 180 | 24.19 | 132 | 17.74 | 180 | 24.19 | 840 | |
| | पु0 | 265 | 40.39 | 299 | 45.57 | 301 | 45.73 | 297 | 45.27 | 251 | 38.76 | 1413 | |
| योग | | 442 | 31.57 | 470 | 33.57 | 481 | 34.35 | 429 | 30.64 | 431 | 30.78 | | |
| 6. | म0 | 165 | 22.17 | 182 | 24.46 | 188 | 25.26 | 239 | 32.12 | 134 | 18.01 | 908 | |
| | पु0 | 264 | 40.24 | 295 | 44.97 | 321 | 48.93 | 290 | 44.20 | 200 | 30.48 | 1370 | |
| योग | | 429 | 30.64 | 477 | 34.07 | 509 | 36.35 | 529 | 37.78 | 334 | 23.85 | | |

cont-

| 1. | 2. | 3. | 4. | 5. | 6. | 7. | 8. | 9. | 10 | 11. | 12. | 13. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | मO | 214 | 28.76 | 185 | 24.86 | 183 | 24.59 | 142 | 19.08 | 125 | 16.80 | 849 |
| | पुO | 215 | 32.77 | 199 | 30.33 | 233 | 35.51 | 195 | 29.74 | 112 | 17.07 | 954 |
| योग | | 429 | 30.64 | 384 | 27.42 | 416 | 29.71 | 337 | 24.07 | 237 | 16.92 | |
| 8. | मO | 232 | 31.18 | 187 | 25.13 | 229 | 30.77 | 258 | 34.67 | 320 | 43.00 | 1226 |
| | पुO | 309 | 47.10 | 299 | 45.57 | 313 | 47.71 | 333 | 50.76 | 282 | 42.98 | 1536 |
| योग | | 541 | 38.64 | 486 | 34.85 | 542 | 38.71 | 591 | 42.21 | 602 | 43.00 | |
| 9. | मO | 183 | 24.59 | 169 | 22.71 | 211 | 28.36 | 119 | 15.99 | 227 | 30.51 | 909 |
| | पुO | 296 | 45.12 | 276 | 42.07 | 301 | 45.88 | 263 | 40.09 | 266 | 40.54 | 1402 |
| योग | | 479 | 34.21 | 445 | 31.78 | 512 | 36.57 | 382 | 27.28 | 493 | 35.21 | |
| 10. | मO | 183 | 24.59 | 214 | 28.76 | 214 | 28.76 | 266 | 35.75 | 206 | 27.68 | 1083 |
| | पुO | 304 | 46.34 | 354 | 53.96 | 353 | 53.81 | 335 | 51.06 | 256 | 39.03 | 1602 |
| योग | | 487 | 34.78 | 568 | 40.57 | 567 | 40.50 | 601 | 42.92 | 462 | 33.00 | |
| 11. | मO | 153 | 20.56 | 156 | 20.98 | 199 | 26.74 | 154 | 20.69 | 181 | 24.32 | 843 |
| | पुO | 244 | 37.19 | 275 | 41.92 | 296 | 45.12 | 276 | 42.07 | 245 | 37.34 | 1336 |
| योग | | 397 | 28.35 | 431 | 30.78 | 495 | 35.35 | 430 | 30.71 | 426 | 30.42 | |
| 12. | मO | 128 | 17.20 | 255 | 34.27 | 186 | 25.00 | 200 | 26.88 | 192 | 25.80 | 961 |
| | पुO | 231 | 35.21 | 296 | 45.12 | 318 | 48.47 | 308 | 46.95 | 256 | 39.03 | 1409 |
| योग | | 359 | 25.64 | 551 | 39.35 | 504 | 36.00 | 508 | 36.28 | 448 | 32.00 | |

तालिका - 2.8

प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन बुन्देलखण्ड प्रभाग

सामाजिक

भाग - 2
कुल योग महिला - 744
कुल योग पुरूष - 656
महा योग- 1400

| प्रश्न संख्या | म0 पु0 | अ संख्या | % | ब संख्या | % | स संख्या | % | द संख्या | % | य संख्या | % | योग संख्या | % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | म0 | 147 | 19.75 | 258 | 34.67 | 171 | 22.98 | 182 | 24.46 | 120 | 16.12 | 878 | |
| | पु0 | 146 | 22.25 | 224 | 34.14 | 215 | 32.77 | 228 | 34.75 | 161 | 24.54 | 974 | |
| योग | | **293** | **20.92** | **482** | **34.42** | **386** | **27.57** | **410** | **29.28** | **231** | **20.71** | | |
| 2. | म0 | 304 | 40.86 | 242 | 32.52 | 199 | 26.74 | 197 | 26.47 | 149 | 20.02 | 1091 | |
| | पु0 | 310 | 47.25 | 302 | 46.03 | 303 | 46.18 | 280 | 42.68 | 211 | 32.16 | 1406 | |
| योग | | **614** | **43.85** | **544** | **38.85** | **502** | **35.85** | **477** | **34.07** | **360** | **25.71** | | |
| 3. | म0 | 189 | 25.40 | 221 | 29.70 | 167 | 22.44 | 188 | 25.26 | 153 | 20.56 | 918 | |
| | पु0 | 186 | 28.35 | 239 | 36.43 | 195 | 29.74 | 203 | 30.64 | 132 | 20.12 | 955 | |
| योग | | **375** | **26.78** | **460** | **32.85** | **362** | **25.85** | **391** | **27.92** | **285** | **20.35** | | |
| 4. | म0 | 198 | 26.61 | 262 | 35.21 | 213 | 28.62 | 179 | 24.05 | 157 | 21.10 | 1009 | |
| | पु0 | 283 | 43.14 | 313 | 47.71 | 291 | 44.35 | 240 | 36.58 | 238 | 36.18 | 1365 | |
| योग | | **481** | **34.35** | **575** | **41.07** | **504** | **36.00** | **419** | **29.92** | **395** | **28.21** | | |
| 5. | म0 | 418 | 56.18 | 337 | 45.29 | 351 | 47.17 | 341 | 45.83 | 403 | 54.16 | 1850 | |
| | पु0 | 333 | 50.76 | 357 | 54.42 | 361 | 55.03 | 365 | 55.06 | 332 | 50.60 | 1748 | |
| योग | | **751** | **53.64** | **694** | **49.57** | **712** | **50.85** | **706** | **50.42** | **735** | **52.50** | | |
| 6. | म0 | 175 | 23.52 | 280 | 37.63 | 293 | 39.38 | 188 | 25.26 | 174 | 23.38 | 1110 | |
| | पु0 | 275 | 41.92 | 302 | 46.03 | 299 | 45.57 | 297 | 45.27 | 240 | 36.58 | 1413 | |
| योग | | **450** | **32.14** | **582** | **41.57** | **592** | **42.28** | **485** | **34.64** | **414** | **29.57** | | |

cont-

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7. | म० | 200 | 26.88 | 196 | 26.34 | 160 | 21.50 | 141 | 18.95 | 136 | 18.27 | 833 |
| | पु० | 232 | 35.36 | 231 | 35.21 | 211 | 32.16 | 196 | 29.88 | 180 | 27.42 | 1050 |
| योग | | 432 | 30.85 | 427 | 30.50 | 371 | 26.50 | 337 | 24.07 | 316 | 22.57 | |
| 8. | म० | 317 | 42.60 | 246 | 33.06 | 226 | 30.37 | 225 | 30.24 | 262 | 35.21 | 1276 |
| | पु० | 274 | 41.76 | 289 | 44.05 | 288 | 43.90 | 296 | 45.12 | 280 | 42.68 | 1427 |
| योग | | 591 | 42.21 | 535 | 38.21 | 514 | 36.71 | 521 | 37.21 | 542 | 38.71 | |
| 9. | म० | 135 | 18.14 | 142 | 19.08 | 140 | 18.81 | 264 | 35.48 | 119 | 15.99 | 800 |
| | पु० | 256 | 39.03 | 263 | 40.09 | 271 | 41.31 | 320 | 48.78 | 219 | 33.38 | 1329 |
| योग | | 391 | 27.92 | 405 | 28.92 | 411 | 29.35 | 584 | 41.71 | 338 | 24.14 | |
| 10. | म० | 236 | 31.72 | 160 | 21.50 | 148 | 19.89 | 143 | 19.22 | 133 | 17.87 | 820 |
| | पु० | 267 | 40.71 | 266 | 40.54 | 264 | 40.24 | 264 | 40.24 | 214 | 32.62 | 1275 |
| योग | | 503 | 35.92 | 426 | 30.42 | 412 | 29.42 | 407 | 29.07 | 347 | 24.78 | |
| 11. | म० | 193 | 25.94 | 166 | 22.31 | 183 | 24.59 | 194 | 26.07 | 228 | 30.64 | 964 |
| | पु० | 259 | 39.49 | 295 | 44.97 | 290 | 44.20 | 310 | 47.25 | 277 | 42.22 | 1431 |
| योग | | 452 | 32.28 | 461 | 32.92 | 473 | 33.78 | 504 | 36.00 | 505 | 36.07 | |
| 12. | म० | 169 | 22.71 | 293 | 39.38 | 282 | 37.90 | 214 | 28.76 | 324 | 43.54 | 1282 |
| | पु० | 242 | 36.89 | 313 | 47.71 | 325 | 49.55 | 292 | 44.51 | 290 | 44.20 | 1462 |
| योग | | 411 | 29.35 | 606 | 43.28 | 607 | 43.35 | 506 | 36.14 | 614 | 43.85 | |

## तालिका - 2.9

### प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आर्थिक चेतना से लाभान्वित

आर्थिक　　　　　भाग - 3　　　　　कुल योग महिला - 744

कुल योग पुरूष - 656

महायोग - 1400

| प्रश्न | म0 पु0 | संख्या | अ % | संख्या | ब % | संख्या | स % | संख्या | द % | संख्या | य % | योग संख्या | % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | म0 | 309 | 41.53 | 305 | 40.99 | 341 | 45.83 | 323 | 43.41 | 377 | 50.67 | 1655 | |
| | पु0 | 288 | 43.90 | 346 | 52.74 | 360 | 54.87 | 394 | 60.06 | 414 | 63.11 | 1802 | |
| योग | | 597 | 42.64 | 651 | 46.53 | 701 | 50.07 | 717 | 51.21 | 791 | 56.50 | | |
| 2. | म0 | 269 | 36.15 | 289 | 38.84 | 251 | 33.73 | 278 | 37.36 | 213 | 28.62 | 1300 | |
| | पु0 | 284 | 43.29 | 347 | 52.89 | 324 | 49.40 | 339 | 51.67 | 276 | 42.07 | 1570 | |
| योग | | 553 | 39.50 | 636 | 45.42 | 575 | 41.07 | 617 | 44.07 | 489 | 34.92 | | |
| 3. | म0 | 147 | 19.75 | 269 | 36.15 | 242 | 32.52 | 175 | 23.52 | 207 | 27.82 | 1040 | |
| | पु0 | 230 | 35.06 | 324 | 49.40 | 308 | 46.95 | 283 | 43.14 | 245 | 37.34 | 1390 | |
| योग | | 377 | 26.92 | 593 | 42.35 | 550 | 39.71 | 458 | 32.71 | 452 | 32.28 | | |
| 4. | म0 | 184 | 24.73 | 198 | 26.61 | 248 | 33.33 | 146 | 19.62 | 163 | 20.90 | 939 | |
| | पु0 | 299 | 45.57 | 313 | 47.71 | 310 | 47.25 | 274 | 41.76 | 275 | 41.92 | 1471 | |
| योग | | 483 | 34.54 | 511 | 36.50 | 558 | 39.85 | 420 | 30.00 | 438 | 31.28 | | |
| 5. | म0 | 308 | 41.38 | 294 | 39.51 | 150 | 20.16 | 305 | 40.99 | 115 | 15.45 | 1172 | |
| | पु0 | 316 | 48.21 | 375 | 57.16 | 283 | 43.14 | 370 | 56.40 | 210 | 32.01 | 1554 | |
| योग | | 624 | 44.57 | 669 | 47.78 | 433 | 30.92 | 675 | 48.21 | 325 | 23.21 | | |
| 6. | म0 | 137 | 18.41 | 197 | 26.47 | 305 | 40.99 | 261 | 35.08 | 137 | 18.41 | 1037 | |
| | पु0 | 265 | 40.39 | 300 | 45.73 | 308 | 46.95 | 309 | 47.10 | 250 | 38.10 | 1432 | |
| योग | | 402 | 28.71 | 497 | 35.50 | 613 | 43.78 | 570 | 40.71 | 387 | 27.64 | | |

Cont-

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7. | म0 | 181 | 24.32 | 133 | 17.87 | 124 | 16.66 | 211 | 28.36 | 140 | 18.81 | 789 |
| | पु0 | 277 | 42.22 | 278 | 42.37 | 269 | 41.00 | 291 | 44.35 | 219 | 33.38 | 1334 |
| योग | | 458 | 32.71 | 411 | 29.35 | 393 | 28.07 | 502 | 35.85 | 359 | 25.64 | |
| 8. | म0 | 187 | 25.13 | 264 | 35.48 | 281 | 37.76 | 181 | 24.32 | 124 | 16.66 | 1037 |
| | पु0 | 251 | 38.26 | 314 | 47.85 | 307 | 46.79 | 299 | 45.57 | 215 | 32.62 | 1386 |
| योग | | 438 | 31.28 | 578 | 41.28 | 588 | 42.00 | 480 | 34.28 | 339 | 24.21 | |
| 9. | म0 | 241 | 32.39 | 257 | 34.54 | 245 | 32.93 | 182 | 24.46 | 165 | 22.17 | 1090 |
| | पु0 | 292 | 44.51 | 342 | 52.11 | 324 | 49.40 | 319 | 48.62 | 253 | 38.56 | 1530 |
| योग | | 533 | 38.07 | 599 | 42.78 | 569 | 40.64 | 501 | 35.78 | 418 | 29.85 | |
| 10. | म0 | 175 | 23.52 | 224 | 30.10 | 250 | 33.60 | 284 | 38.17 | 209 | 18.09 | 1142 |
| | पु0 | 265 | 40.39 | 299 | 45.57 | 310 | 47.25 | 332 | 50.60 | 264 | 40.24 | 1470 |
| योग | | 440 | 31.42 | 523 | 37.35 | 560 | 40.00 | 616 | 44.00 | 473 | 33.78 | |
| 11. | म0 | 236 | 31.72 | 301 | 40.45 | 185 | 24.86 | 227 | 30.51 | 192 | 25.80 | 1141 |
| | पु0 | 316 | 48.21 | 361 | 55.03 | 336 | 51.23 | 349 | 53.20 | 284 | 43.29 | 1646 |
| योग | | 552 | 39.42 | 662 | 47.28 | 521 | 37.21 | 5 76 | 41.14 | 476 | 34.00 | |
| 12. | म0 | 170 | 22.84 | 288 | 38.70 | 281 | 37.76 | 120 | 16.12 | 113 | 13.84 | 972 |
| | पु0 | 234 | 35.67 | 328 | 50.00 | 316 | 48.21 | 253 | 38.56 | 210 | 32.01 | 1241 |
| योग | | 404 | 28.85 | 616 | 44.00 | 597 | 42.64 | 373 | 26.64 | 323 | 23.07 | |

तालिका - 2.10

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी राजनैतिक चेतना से लाभान्वित

कुल योग महिला - 744
कुल योग पुरूष - 656

महायोग - 1400

राजनैतिक भाग - 4

| प्रश्न | स्त्री· पु0 | अ संख्या | % | ब संख्या | % | स सांख्या | % | द संख्या | % | य संख्या | % | योग संख्या | % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | म0 | 122 | 16.39 | 248 | 33.33 | 194 | 26.07 | 217 | 29.16 | 255 | 34.27 | 1036 | |
| | पु0 | 178 | 27.16 | 332 | 50.60 | 311 | 47.40 | 310 | 47.25 | 321 | 48.93 | 1452 | |
| योग | | 300 | 21.42 | 580 | 41.42 | 505 | 36.07 | 527 | 37.64 | 576 | 41.14 | | |
| 2. | म0 | 283 | 38.01 | 303 | 40.72 | 248 | 33.33 | 203 | 27.28 | 184 | 24.73 | 1221 | |
| | पु0 | 302 | 46.03 | 362 | 55.18 | 328 | 50.00 | 296 | 45.12 | 256 | 39.03 | 1544 | |
| योग | | 585 | 41.78 | 665 | 47.50 | 576 | 41.14 | 499 | 35.64 | 440 | 31.42 | | |
| 3. | म0 | 164 | 22.04 | 249 | 33.46 | 180 | 24.19 | 163 | 20.90 | 141 | 18.95 | 897 | |
| | पु0 | 259 | 39.49 | 308 | 46.95 | 291 | 44.35 | 274 | 41.76 | 219 | 33.38 | 1351 | |
| योग | | 423 | 30.21 | 557 | 39.78 | 471 | 33.64 | 437 | 31.21 | 360 | 25.71 | | |
| 4. | म0 | 282 | 37.90 | 142 | 19.08 | 183 | 24.59 | 133 | 17.87 | 125 | 16.80 | 865 | |
| | पु0 | 303 | 46.18 | 281 | 42.83 | 293 | 44.66 | 273 | 46.61 | 223 | 33.99 | 1373 | |
| योग | | 585 | 41.78 | 423 | 30.21 | 476 | 34.00 | 406 | 29.00 | 348 | 24.85 | | |
| 5. | म0 | 258 | 34.67 | 271 | 37.06 | 216 | 29.02 | 176 | 23.64 | 298 | 40.05 | 1219 | |
| | पु0 | 306 | 46.52 | 341 | 51.98 | 326 | 49.71 | 303 | 46.18 | 281 | 42.83 | 1557 | |
| योग | | 564 | 40.28 | 612 | 43.71 | 542 | 38.71 | 479 | 34.21 | 579 | 41.35 | | |
| 6. | म0 | 286 | 38.44 | 197 | 26.47 | 218 | 29.30 | 233 | 31.31 | 155 | 20.83 | 1089 | |
| | पु0 | 309 | 47.10 | 310 | 47.25 | 310 | 47.25 | 291 | 44.35 | 246 | 37.52 | 1466 | |
| योग | | 595 | 42.50 | 507 | 36.21 | 528 | 37.71 | 524 | 37.42 | 401 | 28.64 | | |

contd -

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7. | म0 | 299 | 40.18 | 243 | 32.66 | 287 | 38.57 | 238 | 31.98 | 128 | 17.20 | 1195 |
| | पु0 | 289 | 44.05 | 328 | 50.00 | 324 | 49.40 | 320 | 48.78 | 224 | 34.14 | 1485 |
| योग | | 588 | 42.00 | 571 | 40.78 | 611 | 43.64 | 558 | 39.85 | 352 | 25.14 | |
| 8. | म0 | 285 | 38.30 | 295 | 39.65 | 259 | 34.81 | 218 | 29.30 | 293 | 39.38 | 1350 |
| | पु0 | 286 | 43.67 | 336 | 51.23 | 335 | 51.06 | 308 | 46.85 | 285 | 43.44 | 1550 |
| योग | | 571 | 40.78 | 631 | 45.07 | 594 | 42.42 | 526 | 37.57 | 578 | 41.28 | |
| 9. | म0 | 154 | 20.69 | 248 | 33.33 | 146 | 19.62 | 163 | 20.90 | 252 | 33.87 | 963 |
| | पु0 | 251 | 38.26 | 291 | 44.35 | 267 | 40.71 | 278 | 42.37 | 275 | 41.92 | 1362 |
| योग | | 405 | 38.92 | 539 | 38.50 | 413 | 29.50 | 441 | 31.50 | 527 | 37.64 | |
| 10. | म0 | 256 | 34.40 | 148 | 19.89 | 146 | 19.62 | 145 | 19.48 | 157 | 21.10 | 852 |
| | पु0 | 277 | 42.22 | 276 | 42.07 | 264 | 40.24 | 253 | 38.56 | 221 | 33.68 | 1291 |
| योग | | 533 | 38.07 | 424 | 30.28 | 410 | 29.28 | 398 | 28.42 | 378 | 27.00 | |
| 11. | म0 | 232 | 31.18 | 203 | 27.28 | 218 | 29.30 | 276 | 37.09 | 262 | 35.21 | 1191 |
| | पु0 | 320 | 48.78 | 315 | 48.01 | 322 | 49.09 | 304 | 46.34 | 248 | 37.80 | 1509 |
| योग | | 552 | 39.42 | 518 | 37.00 | 540 | 38.57 | 580 | 41.42 | 510 | 36.42 | |
| 12. | म0 | 230 | 30.91 | 264 | 35.48 | 197 | 26.47 | 207 | 27.82 | 252 | 33.87 | 1150 |
| | पु0 | 314 | 47.85 | 331 | 50.45 | 320 | 48.78 | 295 | 44.97 | 292 | 44.51 | 1552 |
| योग | | 544 | 38.85 | 595 | 42.50 | 517 | 36.92 | 502 | 35.85 | 544 | 38.85 | |

तालिका - 2.11

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी अन्य ज्ञान से लाभान्वित

बुन्देलखण्ड प्रभाग

कुल योग महिला - 744

कुल योग पुरूष - 656

महायोग - 1400

अन्य भाग - 5

| प्रश्न | म0/पु0 | संख्या | अ % | संख्या | ब % | संख्या | स % | संख्या | द % | संख्या | य % | योग संख्या | % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | म0 | 270 | 36.29 | 246 | 33.06 | 258 | 34.67 | 234 | 31.45 | 157 | 21.10 | 1165 | |
| | पु0 | 213 | 32.39 | 320 | 48.78 | 326 | 49.71 | 352 | 53.72 | 288 | 43.90 | 1499 | |
| **योग** | | **483** | **34.50** | **566** | **40.42** | **584** | **41.71** | **586** | **41.85** | **445** | **31.71** | | |
| 2. | म0 | 179 | 24.05 | 198 | 26.61 | 197 | 26.47 | 216 | 29.02 | 195 | 26.21 | 985 | |
| | पु0 | 300 | 45.73 | 315 | 48.01 | 305 | 46.46 | 331 | 50.45 | 285 | 43.44 | 1536 | |
| **योग** | | **479** | **34.21** | **513** | **36.64** | **502** | **35.85** | **547** | **39.07** | **480** | **34.28** | | |
| 3. | म0 | 324 | 43.24 | 203 | 27.28 | 366 | 49.19 | 161 | 21.63 | 153 | 20.56 | 1207 | |
| | पु0 | 315 | 48.01 | 331 | 50.45 | 369 | 56.25 | 270 | 41.21 | 240 | 36.58 | 1561 | |
| **योग** | | **639** | **45.64** | **534** | **38.14** | **735** | **52.50** | **431** | **30.78** | **393** | **28.07** | | |
| 4. | म0 | 259 | 34.81 | 225 | 30.24 | 305 | 40.99 | 252 | 33.60 | 200 | 26.88 | 1241 | |
| | पु0 | 331 | 50.45 | 329 | 50.30 | 346 | 52.74 | 337 | 51.40 | 276 | 42.07 | 1619 | |
| **योग** | | **590** | **42.14** | **554** | **39.57** | **651** | **46.50** | **589** | **42.07** | **476** | **34.00** | | |
| 5. | म0 | 199 | 26.74 | 192 | 25.80 | 261 | 35.08 | 244 | 32.79 | 168 | 22.58 | 1064 | |
| | पु0 | 266 | 40.54 | 302 | 46.03 | 319 | 48.62 | 321 | 48.93 | 242 | 36.89 | 1450 | |
| **योग** | | **465** | **33.21** | **494** | **35.28** | **580** | **41.42** | **565** | **40.35** | **410** | **29.28** | | |
| 6. | म0 | 241 | 32.39 | 286 | 38.44 | 330 | 44.35 | 305 | 40.99 | 289 | 38.84 | 1451 | |
| | पु0 | 316 | 48.21 | 355 | 54.20 | 366 | 55.79 | 351 | 53.50 | 302 | 46.03 | 1690 | |
| **योग** | | **557** | **39.78** | **641** | **45.78** | **696** | **49.71** | **656** | **46.85** | **591** | **42.21** | | |

Cont-

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7. | म0 | 261 | 35.08 | 311 | 41.80 | 318 | 42.74 | 295 | 39.65 | 224 | 30.10 | 1409 |
| | पु0 | 333 | 50.76 | 385 | 58.68 | 369 | 56.25 | 374 | 57.00 | 322 | 49.01 | 1783 |
| योग | | 594 | 42.42 | 696 | 49.71 | 687 | 49.07 | 669 | 47.78 | 546 | 39.00 | |
| 8. | म0 | 349 | 46.90 | 441 | 59.27 | 344 | 46.23 | 416 | 55.91 | 358 | 48.11 | 1908 |
| | पु0 | 337 | 51.40 | 404 | 61.58 | 381 | 58.07 | 402 | 61.28 | 349 | 53.20 | 1873 |
| योग | | 686 | 49.00 | 445 | 31.71 | 725 | 51.78 | 818 | 58.42 | 707 | 50.50 | |
| 9. | म0 | 175 | 23.52 | 164 | 22.04 | 304 | 40.86 | 266 | 35.75 | 319 | 42.87 | 1228 |
| | पु0 | 286 | 43.67 | 259 | 39.49 | 329 | 50.30 | 345 | 52.50 | 313 | 47.71 | 1532 |
| योग | | 461 | 32.92 | 423 | 30.21 | 633 | 45.21 | 611 | 43.64 | 632 | 45.14 | |
| 10. | म0 | 404 | 54.30 | 164 | 22.04 | 151 | 20.29 | 369 | 49.59 | 354 | 47.58 | 1442 |
| | पु0 | 368 | 56.10 | 288 | 43.90 | 262 | 40.00 | 386 | 58.80 | 369 | 56.25 | 1673 |
| योग | | 772 | 55.14 | 452 | 32.28 | 413 | 29.50 | 755 | 53.92 | 723 | 5164 | |
| 11. | म0 | 396 | 53.22 | 356 | 47.84 | 126 | 16.93 | 371 | 49.86 | 380 | 51.07 | 1629 |
| | पु0 | 400 | 60.97 | 403 | 61.40 | 244 | 37.19 | 379 | 57.77 | 359 | 54.60 | 1785 |
| योग | | 796 | 56.85 | 759 | 54.21 | 370 | 26.42 | 750 | 53.57 | 739 | 52.78 | |
| 12. | म0 | 160 | 21.50 | 285 | 38.30 | 265 | 35.61 | 265 | 35.40 | 140 | 18.81 | 1115 |
| | पु0 | 245 | 37.34 | 314 | 47.85 | 294 | 44.80 | 295 | 44.97 | 227 | 34.50 | 1375 |
| योग | | 405 | 28.92 | 599 | 42.78 | 559 | 39.92 | 560 | 40.00 | 367 | 26.21 | |

तालिका - 2.12

जनपद जालौन प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी लिंग भेद अनुसार न्यादर्श

1. लिंग (महिला पुरूष)

| महिला संख्या | पुयष संख्या | योग |
|---|---|---|
| 277 | 123 | 400 |

तालिका - 2.13

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आयु वर्ग के अनुसार न्यादर्श

2. आयुवर्ग वर्ष

| | 15-20 | 21-25 | 26-30 | 31-35 | 36-40 | विशेष | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 80 | 81 | 64 | 49 | 02 | 70 वर्ष की महिला आशादेवी बिरिया | 277 |
| पुयष | 37 | 41 | 27 | 18 | - | केन्द्र ब्लाक माधव गढ़ | 123 |

तालिका - 2.14

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी शिक्षा स्तर के अनुसार न्यादर्श

3. शिक्षा स्तर

| | अशिक्षित संख्या | कक्षा 1-2 संख्या | 2-3 संख्या | 5-6 संख्या | योग |
|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 142 | 135 | - | - | 277 |
| पुरूष | 63 | - | - | - | 123 |

तालिका – 2.15

जनपद जालौन प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी जाति वर्ग के अनुसार न्यादर्श

4. जाति वर्ग

| | सामान्य वर्ग बहुसंख्यक | अनुसूचित जाति | अनुसूचित जन जाति | पिछड़ी जाति | अल्प संख्यक | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 45 | 115 | – | 113 | 04 | 277 |
| पुरूष | 11 | 53 | – | 52 | 07 | 123 |

तालिका – 2.16

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी जाति वर्ग के अनुसार न्यादर्श

5. व्यवसाय

| | कृषि | मजूदूरी | नौकरी | गृहकार्य | व्यापार | कुछ लाभ नहीं | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 90 | 73 | 02 | 97 | – | 15 | 277 |
| पुयष | 91 | 27 | 01 | 04 | – | – | 123 |

तालिका – 2.17

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वार्षिक आय के अनुसार

6. वार्षिक आय (आमदनी) परिवार की

| रूपये 3600 तक | रूपये 3601 से 6000 | रूपये 60001–7200 | 7201 से अधिक | योग |
|---|---|---|---|---|
| 255 | 129 | 14 | 2 | 400 |

तालिका - 2.18

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वैयक्तिक चेतना से लाभान्वित

जनपद - जालौन महिला + पुरूष कुल योग 400

वैयक्तिक भाग I

| प्रश्न | अ | | ब | | स | | द | | य | | योग | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| संख्या | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % |
| 1 | 39 | 9.75 | 169 | 42.25 | 194 | 48.50 | 167 | 41.75 | 135 | 33.75 | 704 | |
| 2 | 53 | 13.25 | 107 | 26.25 | 94 | 23.50 | 94 | 23.50 | 89 | 22.25 | 437 | |
| 3 | 93 | 23.25 | 32 | 8.00 | 66 | 16.50 | 36 | 9.00 | 26 | 6.50 | 253 | |
| 4 | 66 | 16.50 | 97 | 24.25 | 103 | 25.75 | 87 | 21.75 | 40 | 10.00 | 393 | |
| 5 | 51 | 12.75 | 80 | 20.00 | 49 | 12.25 | 36 | 9.00 | 67 | 16.75 | 283 | |
| 6 | 77 | 19.25 | 51 | 12.75 | 58 | 14.50 | 60 | 15.00 | 51 | 12.75 | 297 | |
| 7 | 116 | 29.00 | 47 | 11.75 | 39 | 9.75 | 55 | 13.75 | 63 | 15.75 | 320 | |
| 8 | 117 | 29.25 | 89 | 22.25 | 85 | 21.25 | 96 | 24.00 | 142 | 35.50 | 529 | |
| 9 | 66 | 16.50 | 43 | 10.75 | 106 | 26.50 | 34 | 8.50 | 76 | 19.00 | 325 | |
| 10 | 68 | 17.00 | 66 | 16.50 | 63 | 15.75 | 69 | 17.25 | 106 | 26.50 | 372 | |
| 11 | 74 | 18.50 | 47 | 11.75 | 64 | 16.00 | 56 | 14.00 | 61 | 15.25 | 302 | |
| 12 | 44 | 11.00 | 91 | 22.75 | 82 | 20.50 | 83 | 20.75 | 81 | 20.25 | 381 | |

तालिका – 2.19

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी सामाजिक चेतना से लाभान्वित

जनपद – जालौन महिला + पुरूष कुल योग – 400

सामाजिक भाग – 2

| प्रश्न संख्या | अ संख्या | अ % | ब संख्या | ब % | स संख्या | स % | द संख्या | द % | य संख्या | य % | योग संख्या | योग % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 44 | 11.00 | 102 | 25.50 | 63 | 15.75 | 57 | 14.25 | 30 | 7.50 | 296 | |
| 2 | 136 | 34.00 | 135 | 33.75 | 100 | 25.00 | 77 | 19.25 | 42 | 10.50 | 490 | |
| 3 | 81 | 20.25 | 70 | 17.50 | 40 | 10.00 | 60 | 15.00 | 37 | 9.25 | 288 | |
| 4 | 94 | 23.50 | 91 | 22.75 | 95 | 23.75 | 78 | 19.50 | 46 | 11.50 | 404 | |
| 5 | 309 | 77.25 | 219 | 54.75 | 241 | 60.25 | 207 | 51.75 | 235 | 58.75 | 1211 | |
| 6 | 73 | 18.25 | 106 | 26.50 | 101 | 25.25 | 83 | 20.75 | 93 | 23.25 | 456 | |
| 7 | 94 | 23.50 | 61 | 15.25 | 59 | 14.75 | 55 | 13.75 | 51 | 12.75 | 320 | |
| 8 | 140 | 35.00 | 106 | 26.50 | 80 | 20.00 | 89 | 22.25 | 92 | 23.00 | 507 | |
| 9 | 59 | 14.75 | 50 | 12.50 | 49 | 12.25 | 94 | 23.50 | 48 | 12.00 | 300 | |
| 10 | 105 | 26.25 | 54 | 13.50 | 48 | 12.00 | 46 | 11.50 | 71 | 17.75 | 324 | |
| 11 | 85 | 21.25 | 77 | 19.25 | 57 | 14.25 | 66 | 16.50 | 94 | 23.50 | 379 | |
| 12 | 65 | 16.25 | 103 | 25.75 | 82 | 20.50 | 75 | 18.75 | 115 | 28.75 | 440 | |

तालिका - 2.20

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आर्थिक चेतना से लाभान्वित

जनपद - जालौन | महिला + पुरूष कुल योग - 400

आर्थिक | भाग - 3

| प्रश्न संख्या | अ संख्या | अ % | ब संख्या | ब % | स संख्या | स % | द संख्या | द % | य संख्या | य % | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 138 | 34.50 | 148 | 37.00 | 156 | 39.00 | 159 | 39.75 | 178 | 44.50 | 779 |
| 2 | 118 | 29.50 | 105 | 26.25 | 106 | 26.50 | 95 | 23.75 | 77 | 19.25 | 501 |
| 3 | 64 | 16.00 | 103 | 25.75 | 88 | 22.00 | 67 | 16.75 | 100 | 25.00 | 422 |
| 4 | 84 | 21.00 | 73 | 18.25 | 83 | 20.75 | 46 | 11.50 | 56 | 14.00 | 342 |
| 5 | 156 | 39.00 | 136 | 34.00 | 60 | 15.00 | 99 | 24.75 | 42 | 10.50 | 493 |
| 6 | 50 | 12.50 | 96 | 24.00 | 130 | 32.50 | 116 | 29.00 | 45 | 11.25 | 437 |
| 7 | 66 | 16.50 | 40 | 10.00 | 34 | 8.50 | 61 | 15.25 | 43 | 10.75 | 244 |
| 8 | 72 | 18.00 | 64 | 16.00 | 105 | 26.25 | 68 | 17.00 | 39 | 9.75 | 348 |
| 9 | 146 | 36.50 | 72 | 18.00 | 142 | 35.50 | 36 | 9.00 | 33 | 8.25 | 429 |
| 10 | 93 | 23.25 | 98 | 24.50 | 80 | 20.00 | 123 | 30.75 | 107 | 26.75 | 501 |
| 11 | 157 | 39.25 | 154 | 38.50 | 115 | 28.75 | 101 | 25.25 | 101 | 25.25 | 628 |
| 12 | 48 | 12.00 | 100 | 25.00 | 106 | 26.50 | 33 | 8.25 | 29 | 7.25 | 316 |

तालिका – 2.21

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी राजनैतिक चेतना से लाभान्वित

जनपद – जालौन | महिला + पुरूष कुल योग – 400

राजनैतिक | भाग – 4

| प्रश्न संख्या | अ संख्या | % | ब संख्या | % | स संख्या | % | द संख्या | % | य संख्या | % | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 46 | 11.50 | 119 | 29.75 | 74 | 18.50 | 74 | 18.50 | 96 | 24.00 | 409 |
| 2 | 98 | 24.50 | 101 | 25.25 | 113 | 28.25 | 85 | 21.25 | 63 | 15.75 | 460 |
| 3 | 75 | 18.75 | 101 | 25.25 | 66 | 16.50 | 55 | 13.75 | 45 | 11.25 | 342 |
| 4 | 141 | 35.25 | 70 | 17.50 | 81 | 20.25 | 44 | 11.00 | 51 | 12.75 | 387 |
| 5 | 123 | 30.75 | 108 | 27.00 | 99 | 24.75 | 94 | 23.50 | 143 | 35.75 | 567 |
| 6 | 160 | 40.00 | 89 | 22.25 | 74 | 18.50 | 105 | 26.25 | 41 | 10.25 | 469 |
| 7 | 155 | 38.75 | 126 | 31.50 | 110 | 27.50 | 92 | 23.00 | 63 | 15.75 | 546 |
| 8 | 139 | 34.75 | 127 | 31.75 | 124 | 31.00 | 80 | 20.00 | 123 | 30.75 | 593 |
| 9 | 70 | 17.50 | 89 | 22.25 | 40 | 20.00 | 60 | 15.00 | 91 | 22.75 | 350 |
| 10 | 118 | 29.50 | 38 | 9.50 | 36 | 9.00 | 40 | 10.00 | 58 | 14.50 | 290 |
| 11 | 140 | 35.00 | 111 | 27.75 | 112 | 28.00 | 115 | 28.75 | 110 | 27.50 | 588 |
| 12 | 123 | 30.75 | 100 | 25.00 | 117 | 29.25 | 121 | 30.25 | 114 | 28.50 | 575 |

तालिका – 2.22

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी अन्य ज्ञान से लाभान्वित

जनपद – जालौन | महिला + पुरूष कुल योग – 400

अन्य | भाग – 5

| प्रश्न संख्या | अ संख्या | % | ब संख्या | % | स संख्या | % | द संख्या | % | य संख्या | % | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 129 | 32.25 | 111 | 27.75 | 145 | 36.25 | 102 | 25.50 | 51 | 12.75 | 538 |
| 2 | 78 | 19.50 | 70 | 17.50 | 93 | 23.25 | 93 | 23.25 | 84 | 21.00 | 418 |
| 3 | 168 | 42.00 | 88 | 2.00 | 129 | 32.25 | 53 | 13.25 | 49 | 12.25 | 487 |
| 4 | 122 | 30.50 | 109 | 27.25 | 138 | 34.50 | 134 | 33.50 | 116 | 29.00 | 619 |
| 5 | 141 | 35.25 | 96 | 24.00 | 89 | 22.25 | 88 | 22.00 | 83 | 20.75 | 497 |
| 6 | 89 | 22.25 | 90 | 22.50 | 112 | 28.00 | 105 | 26.25 | 97 | 24.25 | 493 |
| 7 | 147 | 36.25 | 119 | 29.75 | 125 | 31.25 | 124 | 31.00 | 133 | 33.25 | 648 |
| 8 | 270 | 67.50 | 274 | 68.50 | 260 | 65.00 | 250 | 62.50 | 246 | 61.50 | 1300 |
| 9 | 85 | 21.25 | 72 | 18.00 | 113 | 28.25 | 101 | 25.25 | 110 | 27.50 | 481 |
| 10 | 278 | 69.50 | 80 | 20.00 | 53 | 13.25 | 223 | 55.75 | 201 | 50.25 | 835 |
| 11 | 285 | 71.25 | 261 | 65.25 | 46 | 11.50 | 227 | 56.75 | 251 | 62.75 | 1070 |
| 12 | 73 | 18.25 | 100 | 25.00 | 96 | 24.00 | 105 | 26.25 | 54 | 13.50 | 428 |

तालिका - 2.23

जनपद झाँसी प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी लिंग भेद के अनुसार न्यादर्श

1. लिंग (महिला पुरूष)

| महिला संख्या | पुरूष संख्या | योग |
|---|---|---|
| 124 | 76 | 200 |

तालिका - 2.24

तालिका - 2.24

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आयुवर्ग के अनुसार न्यादर्श

2. आयु वर्ग वर्ष

| | 15-20 | 21-25 | 26-30 | 31-35 | 36-40 | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 40 | 31 | 31 | 14 | 01 | 124 |
| पुरूर्ष | 17 | 34 | 19 | 06 | - | 76 |

तालिका - 2.25

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी शिक्षा स्तर के अनुसार न्यादर्श

3. शिक्षा स्तर

| | अशिक्षा संख्या | कक्षा 1-2 | 3-4संख्या | 5-6 संख्या | योग |
|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 52 | 69 | 03 | 00 | 124 |
| पुरूष | 31 | 36 | 09 | - | 76 |

तालिका – 2.26

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी जाति वर्ग के अनुसार

4. जाति वर्ग

| | सामान्य वर्ग बहु संख्यक | अनुसूचित जाति | अनुसूचित जनजाति | पिछड़ी जाति | अल्पसंख्यक | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 24 | 40 | – | 55 | 05 | 124 |
| पुरूष | 05 | 38 | – | 29 | 04 | 76 |

तालिका – 2.27

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी व्यवसाय के अनुसार न्यादर्श

5. व्यवसाय

| | कृषि | मजदूरी | नौकरी | गृहकार्य | व्यापार | कुछ लाभ नहीं | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 17 | 21 | 02 | 80 | – | 04 | 124 |
| पुरूष | 55 | 18 | 01 | – | – | 02 | 76 |

तालिका – 2.28

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वार्षिक आय के अनुसार न्यादर्श

6. वार्षिक आय (आमदनी) परिवार की

| रूपये 3600 तक | रूपये 3601 से 6000 | रूपये 6001–7200 | 7201 से अधिक | याग |
|---|---|---|---|---|
| 136 | 50 | 09 | 05 | 200 |

तालिका - 2.29

प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन

महिला + पुरूष कुल योग 200

जनपद - झाँसी वैयक्तिक भाग -I

| प्रश्न | अ | | ब | | स | | द | | य | | योग | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| संख्या | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % |
| 1 | 10 | 5.00 | 71 | 35.5 | 89 | 44.5 | 52 | 27.00 | 64 | 32.0 | 286 | |
| 2 | 12 | 6.00 | 24 | 12.00 | 20 | 10.00 | 21 | 10.50 | 25 | 12.50 | 102 | |
| 3 | 34 | 17.00 | 05 | 2.50 | 24 | 12.00 | 13 | 12.50 | 08 | 4.00 | 84 | |
| 4 | 22 | 11.00 | 20 | 10.00 | 18 | 9.00 | 22 | 11.00 | 10 | 5.00 | 92 | |
| 5 | 12 | 6.00 | 37 | 18.50 | 39 | 18.50 | 26 | 13.50 | 27 | 13.50 | 141 | |
| 6 | 14 | 7.00 | 07 | 3.50 | 15 | 7.50 | 08 | 4.00 | 07 | 3.50 | 51 | |
| 7 | 29 | 14.50 | 15 | 7.50 | 09 | 4.50 | 18 | 9.00 | 13 | 6.50 | 84 | |
| 8 | 27 | 13.50 | 44 | 22.00 | 27 | 13.50 | 55 | 27.50 | 62 | 31.00 | 215 | |
| 9 | 24 | 12.50 | 04 | 2.00 | 13 | 6.50 | 00 | 00.00 | 21 | 10.50 | 63 | |
| 10 | 24 | 12.00 | 25 | 12.50 | 24 | 12.60 | 26 | 13.00 | 20 | 10.00 | 119 | |
| 11 | 00 | 00.00 | 09 | 4.50 | 42 | 21.00 | 14 | 07.00 | 31 | 15.50 | 96 | |
| 12 | 10 | 5.00 | 33 | 16.50 | 23 | 11.50 | 22 | 11.00 | 06 | 3.00 | 94 | |

तालिका – 2.30

महिला+पुरूष कुल योग – 200

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी सामाजिक चेतना से लाभान्वित।

जनपद : झांसी — सामाजिक — भाग–2

| प्रश्न संख्या | अ संख्या | अ % | ब संख्या | ब % | स संख्या | स % | द संख्या | द % | य संख्या | य % | योग संख्या | योग % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 24 | 12.00 | 47 | 23.50 | 35 | 17.50 | 25 | 12.50 | 02 | 1.00 | 133 | |
| 2 | 35 | 17.50 | 34 | 14.00 | 34 | 14.00 | 16 | 8,00 | 22 | 11.00 | 141 | |
| 3 | 34 | 17.00 | 32 | 16.00 | 15 | 7.50 | 24 | 12.00 | 23 | 11.50 | 128 | |
| 4 | 26 | 13.00 | 34 | 17.00 | 34 | 17.00 | 23 | 11.50 | 21 | 10.50 | 138 | |
| 5 | 73 | 36.50 | 55 | 27.50 | 84 | 42.00 | 73 | 36.50 | 88 | 44.00 | 373 | |
| 6 | 14 | 07.00 | 38 | 19.00 | 45 | 22.50 | 25 | 12.50 | 32 | 16.00 | 154 | |
| 7 | 29 | 14.50 | 30 | 15.00 | 30 | 15.00 | 20 | 10.00 | 22 | 11.00 | 131 | |
| 8 | 53 | 26.50 | 45 | 22.50 | 49 | 24.50 | 52 | 26.00 | 56 | 28.00 | 255 | |
| 9 | 14 | 7.00 | 07 | 3.50 | 07 | 3.50 | 35 | 17.50 | 07 | 3.50 | 70 | |
| 10 | 24 | 10.50 | 00 | 00.00 | 02 | 1.00 | 03 | 1.50 | 01 | 1.50 | 27 | |
| 11 | 17 | 8.50 | 32 | 16.00 | 18 | 9.00 | 37 | 18.50 | 27 | 13.50 | 131 | |
| 12 | 32 | 16.00 | 42 | 21.00 | 64 | 32.00 | 62 | 31.00 | 60 | 30.00 | 260 | |

तालिका - 2.31

महिला+पुरूष कुल योग-200

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आर्थिक चेतना से लाभान्वित

जनपद-झांसी | आर्थिक | भाग - 3

| प्रश्न | अ | | ब | | स | | द | | य | | योग | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| संख्या | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % |
| 1 | 78 | 39.00 | 71 | 35.50 | 84 | 42.00 | 71 | 35.50 | 86 | 43.00 | 390 | |
| 2 | 44 | 22.00 | 42 | 21.00 | 22 | 11.00 | 50 | 25.00 | 41 | 20.50 | 199 | |
| 3 | 08 | 4.00 | 29 | 14.50 | 22 | 11.00 | 00 | 00.00 | 22 | 11.00 | 81 | |
| 4 | 39 | 29.50 | 23 | 11.50 | 24 | 12.00 | 00 | 00.00 | 15 | 7.50 | 101 | |
| 5 | 33 | 16.50 | 54 | 27.00 | 00 | 00.00 | 49 | 24.50 | 00 | 00.00 | 136 | |
| 6 | 00 | 00.00 | 35 | 17.50 | 42 | 21.00 | 44 | 22.00 | 04 | 2.00 | 125 | |
| 7 | 17 | 8.50 | 10 | 5.00 | 03 | 1.50 | 28 | 14.00 | 21 | 10.50 | 79 | |
| 8 | 17 | 8.50 | 17 | 8.50 | 19 | 9.50 | 08 | 4.00 | 09 | 4.50 | 70 | |
| 9 | 37 | 18.50 | 46 | 23.00 | 59 | 29.50 | 14 | 7.00 | 15 | 7.50 | 171 | |
| 10 | 22 | 11.00 | 36 | 18.00 | 20 | 10.00 | 47 | 23.50 | 36 | 18.00 | 161 | |
| 11 | 51 | 25.50 | 59 | 29.50 | 22 | 11.00 | 38 | 19.00 | 19 | 9.50 | 189 | |
| 12 | 17 | 8.50 | 12 | 6.00 | 24 | 12.00 | 03 | 2.50 | 10 | 5.00 | 66 | |

## तालिका - 2.32

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी राजनैतिक चेतना से लाभान्वित

महिला+पुरूष कुल योग - 200

जनपद - झांसी राजनैतिक भाग - 4

| प्रश्न संख्या | अ संख्या | % | ब संख्या | % | स संख्या | % | द संख्या | % | य संख्या | % | योग संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 06 | 3.00 | 44 | 22.00 | 32 | 16.00 | 34 | 17.00 | 40 | 20.00 | 156 |
| 2 | 42 | 21.00 | 39 | 19.50 | 23 | 11.50 | 21 | 10.50 | 17 | 8.50 | 142 |
| 3 | 15 | .7.50 | 22 | 11.00 | 14 | 07.00 | 04 | 2.00 | 07 | 3.50 | 62 |
| 4 | 37 | 18.50 | 08 | 4.00 | 21 | 10.50 | 08 | 4.00 | 27 | 13.50 | 101 |
| 5 | 37 | 18.50 | 08 | 4.00 | 21 | 10.50 | 08 | 4.00 | 27 | 13.50 | 101 |
| 6 | 44 | 22.00 | 27 | 13.50 | 16 | 8.00 | 12 | 6.00 | 04 | 2.00 | 103 |
| 7 | 51 | 25.50 | 51 | 25.50 | 35 | 17.50 | 21 | 10.50 | 08 | 4.00 | 166 |
| 8 | 49 | 24.50 | 48 | 24.00 | 24.50 | | 25 | 12.50 | 62 | 31.00 | 233 |
| 9 | 07 | 3.50 | 21 | 10.50 | 10 | 5.00 | 12 | 6.00 | 26 | 13.00 | 76 |
| 10 | 40 | 20.00 | 02 | 1.00 | 02 | 1.00 | 00 | 00.00 | 02 | 1.00 | 46 |
| 11 | 53 | 26.50 | 30 | 15.00 | 32 | 16.00 | 43 | 21.50 | 32 | 16.00 | 190 |
| 12 | 44 | 22.00 | 30 | 15.00 | 23 | 11.50 | 20 | 10.00 | 36 | 18.00 | 153 |

## तालिका – 2.33

### प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी अन्य ज्ञान से लाभान्वित

महिला+पुरूष कुल योग–200

जनपद – झांसी अन्य भाग – 5

| प्रश्न | अ | | ब | | स | | द | | य | | योग | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| संख्या | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % |
| 1 | 57 | 28.50 | 44 | 22.00 | 58 | 29.00 | 30 | 15.00 | 12 | 6.00 | 201 | |
| 2 | 13 | 6.50 | 08 | 4.00 | 08 | 4.00 | 08 | 4.00 | 16 | 8.00 | 53 | |
| 3 | 60 | 30.00 | 25 | 12.50 | 46 | 23.00 | 01 | 0.50 | 01 | 0.50 | 133 | |
| 4 | 32 | 16.00 | 23 | 11.50 | 29 | 14.50 | 32 | 16.00 | 17 | 8.50 | 133 | |
| 5 | 32 | 16.00 | 19 | 20 | | 10.00 | 22 | 11.00 | 20 | 10.00 | 113 | |
| 6 | 41 | 20.50 | 37 | 18.50 | 33 | 16.50 | 35 | 17.50 | 35 | 17.50 | 181 | |
| 7 | 56 | 28.00 | 56 | 28.00 | 45 | 22.50 | 60 | 30.00 | 67 | 33.50 | 284 | |
| 8 | 58 | 29.00 | 80 | 40.00 | 69 | 34.50 | 54 | 27.00 | 49 | 24.50 | 310 | |
| 9 | 24 | 12.00 | 24 | 12.00 | 62 | 31.00 | 65 | 32.50 | 64 | 32.00 | 239 | |
| 10 | 68 | 34.00 | 02 | 1.00 | 01 | .50 | 50 | 25.00 | 52 | 26.00 | 173 | |
| 11 | 90 | 45.00 | 84 | 42.00 | 01 | 0.50 | 35 | 17.50 | 64 | 32.00 | 274 | |
| 12 | 32 | 16.00 | 40 | 20.00 | 43 | 21.50 | 48 | 24.00 | 19 | 9.50 | 182 | |

तालिका – 2.34

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी लिंग भेद के अनुसार न्यादर्श

1. लिंग (महिला पुरूष)

| महिला (सं) | पुरूष (सं0) | योग |
|---|---|---|
| 54 | 154 | 200 |

तालिका – 2.35

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आयुवर्ग के अनुसार न्यादर्श ।

2. आयु वर्ग (वर्ष)

| | 15-20 | 21-25 | 26-30 | 31-35 | 36-40 | 41-45 | 46-50 | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 08 | 22 | 20 | 04 | – | – | – | 54 |
| पुरूष | 08 | 80 | 58 | – | – | – | – | 146 |

तालिका – 2.36

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी शिक्षा स्तर के अनुसार न्यादर्श

3. शिक्षा स्तर :

| | अशिक्षित संख्या | कक्षा 1-2 संख्या | 3-4 संख्या | 5-6 संख्या | योग |
|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 19 | 24 | 11 | – | 54 |
| पुरूष | 98 | 40 | 08 | – | 146 |

तालिका - 2.37

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी जाति वर्ग के अनुसार न्यादर्श

4. जाति वर्ग

| | सामान्य वर्ग बहुसंख्यक | अनु0जाति | अनु0जनजा0 | पिछड़ी जाति | अल्प संख्या | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 08 | 16 | 01 | 29 | - | 54 |
| पुरूष | 62 | 36 | - | 48 | - | 146 |

तालिका - 2.38

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी व्यवसाय अनुसार न्यादर्श ।

5. व्यवसाय

| | कृषि | मजदूरी | नौकरी | गृहकार्य | व्यापार | कुछ कार्य नहीं | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 26 | 15 | - | 15 | - | - | 54 |
| पुरूष | 132 | 12 | 02 | - | - | - | 146 |

तालिका - 2.39

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वार्षिक आय अनुसार न्यादर्श

6. वार्षिक आय

| रूपये 3600 तक | रूपये 3601 से 6000 तक | 6001 से 7200 तक | 7201 से अधिक | योग |
|---|---|---|---|---|
| 148 | 52 | - | - | 200 |

तालिका - 2.40

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वैयक्तिक चेतना से लाभान्वित

महिला + पुरूष कुल योग- 200

जनपद - बांदा

भाग - I

| प्रश्न संख्या | अ संख्या | % | ब संख्या | % | स संख्या | % | द संख्या | % | य संख्या | % | योग संख्या | % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 105 | 52.50 | 95 | 47.50 | 82 | 41.00 | 82 | 41.00 | 79 | 39.50 | 446 | |
| 2 | 131 | 65.50 | 137 | 68.50 | 138 | 69.00 | 142 | 71.00 | 141 | 70.50 | 689 | |
| 3 | 69 | 34.50 | 65 | 32.50 | 75 | 37.50 | 63 | 31.50 | 50 | 25.00 | 322 | |
| 4 | 140 | 70.00 | 147 | 73.50 | 146 | 73.00 | 146 | 73.00 | 143 | 71.50 | 722 | |
| 5 | 136 | 68.00 | 145 | 72.50 | 149 | 74.50 | 145 | 72.50 | 148 | 74.00 | 723 | |
| 6 | 147 | 73.50 | 137 | 68.50 | 137 | 68.50 | 150 | 75.00 | 147 | 73.50 | 718 | |
| 7 | 77 | 38.50 | 56 | 28.00 | 55 | 27.50 | 58 | 28.00 | 44 | 22.00 | 290 | |
| 8 | 163 | 81.50 | 161 | 80.50 | 158 | 79.00 | 162 | 81.00 | 162 | 81.00 | 806 | |
| 9 | 156 | 78.00 | 157 | 78.50 | 156 | 78.00 | 151 | 75.50 | 157 | 78.50 | 777 | |
| 10 | 153 | 76.50 | 153 | 76.50 | 155 | 77.50 | 156 | 78.00 | 158 | 78.00 | 775 | |
| 11 | 153 | 76.50 | 157 | 78.50 | 161 | 80.50 | 152 | 76.00 | 164 | 82.00 | 787 | |
| 12 | 160 | 80.00 | 162 | 81.00 | 166 | 83.00 | 165 | 82.50 | 164 | 82.00 | 817 | |

तालिका – 2.41

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी सामाजिक चेतना से लाभान्वित

जनपद– बांदा

महिला + पुरूष कुल योग – 200
भाग – 2

| प्रश्न | | अ | | ब | | स | | द | | य | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| संख्या | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या % |
| 1 | 74 | 37.00 | 79 | 39.50 | 64 | 32.00 | 71 | 35.50 | 52 | 26.00 | 340 |
| 2 | 151 | 75.50 | 153 | 76.50 | 156 | 78.00 | 156 | 78.00 | 115 | 57.50 | 731 |
| 3 | 80 | 40.00 | 78 | 39.00 | 79 | 39.50 | 76 | 38.00 | 41 | 20.50 | 354 |
| 4 | 163 | 81.50 | 160 | 80.00 | 158 | 79.00 | 105 | 52.50 | 141 | 70.50 | 727 |
| 5 | 156 | 78.00 | 158 | 79.00 | 160 | 80.00 | 156 | 78.00 | 152 | 76.00 | 782 |
| 6 | 148 | 74.00 | 158 | 79.00 | 161 | 80.50 | 155 | 77.50 | 152 | 76.00 | 774 |
| 7 | 81 | 40.50 | 78 | 39.00 | 82 | 41.00 | 86 | 43.00 | 88 | 44.00 | 415 |
| 8 | 152 | 76.00 | 144 | 72.00 | 150 | 75.00 | 152 | 76.00 | 145 | 77.50 | 743 |
| 9 | 151 | 75.50 | 152 | 76.00 | 151 | 75.50 | 150 | 75.00 | 155 | 77.50 | 759 |
| 10 | 155 | 77.50 | 156 | 78.00 | 153 | 76.50 | 155 | 77.50 | 154 | 77.00 | 773 |
| 11 | 148 | 74.00 | 151 | 75.50 | 159 | 79.50 | 155 | 77.50 | 156 | 78.00 | 769 |
| 12 | 155 | 77.50 | 158 | 79.00 | 161 | 80.50 | 163 | 81.50 | 156 | 78.00 | 793 |

तालिका – 2.42

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आर्थिक चेतना से लाभान्वित

महिला + पुरूष कुल योग – 200

जनपद – बांदा आर्थिक भाग – 3

| प्रश्न संख्या | अ संख्या | % | ब संख्या | % | स संख्या | % | द संख्या | % | य संख्या | % | योग संख्या | % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 153 | 76.50 | 160 | 80.00 | 162 | 81.00 | 161 | 80.50 | 160 | 80.00 | 796 | |
| 2 | 161 | 80.50 | 158 | 79.00 | 160 | 80.00 | 162 | 81.00 | 160 | 80.00 | 801 | |
| 3 | 164 | 82.00 | 169 | 84.50 | 166 | 83.00 | 163 | 81.50 | 162 | 81.00 | 824 | |
| 4 | 159 | 79.50 | 161 | 80.50 | 160 | 80.00 | 158 | 79.00 | 155 | 77.50 | 793 | |
| 5 | 159 | 79.50 | 161 | 80.50 | 156 | 78.00 | 160 | 80.00 | 155 | 77.50 | 791 | |
| 6 | 160 | 80.00 | 163 | 81.50 | 160 | 80.00 | 161 | 80.50 | 155 | 77.50 | 799 | |
| 7 | 161 | 80.50 | 161 | 80.50 | 159 | 79.50 | 159 | 79.50 | 155 | 77.50 | 795 | |
| 8 | 160 | 80.00 | 159 | 79.50 | 162 | 81.00 | 160 | 80.00 | 160 | 80.00 | 801 | |
| 9 | 160 | 80.00 | 161 | 80.50 | 155 | 77.50 | 159 | 79.50 | 156 | 78.00 | 791 | |
| 10 | 167 | 83.50 | 163 | 81.50 | 165 | 82.50 | 162 | 81.00 | 161 | 80.50 | 818 | |
| 11 | 161 | 80.50 | 161 | 80.50 | 161 | 80.50 | 159 | 79.50 | 157 | 78.50 | 799 | |
| 12 | 161 | 80.50 | 160 | 80.00 | 167 | 83.50 | 161 | 80.50 | 158 | 79.00 | 807 | |

5555555555555555555555555555555555555555555555555555555555555555555555555

तालिका – 2.43

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी राजनैतिक चेतना से लाभान्वित

महिला + पुरूष कुल योग – 200

जनपद – बांदा | राजनैतिक | भाग – 4

| प्रश्न संख्या | अ संख्या | % | ब संख्या | % | स संख्या | % | द संख्या | % | स संख्या | % | योग संख्या | % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 165 | 82.50 | 165 | 82.50 | 162 | 82.50 | 160 | 80.00 | 160 | 80.00 | 812 | |
| 2 | 155 | 77.50 | 165 | 82.50 | 155 | 77.50 | 158 | 79.00 | 159 | 79.50 | 792 | |
| 3 | 159 | 79.50 | 160 | 80.00 | 163 | 81.50 | 164 | 82.00 | 163 | 81.50 | 809 | |
| 4 | 164 | 82.00 | 163 | 81.50 | 162 | 81.00 | 163 | 81.50 | 163 | 81.50 | 815 | |
| 5 | 164 | 82.00 | 165 | 82.50 | 163 | 81.50 | 163 | 81.50 | 164 | 82.00 | 819 | |
| 6 | 163 | 81.50 | 163 | 81.50 | 162 | 81.00 | 160 | 80.00 | 157 | 78.50 | 805 | |
| 7 | 162 | 81.00 | 159 | 79.50 | 161 | 80.50 | 158 | 79.00 | 157 | 78.50 | 797 | |
| 8 | 167 | 83.50 | 166 | 83.00 | 166 | 83.00 | 166 | 83.00 | 162 | 81.00 | 827 | |
| 9 | 157 | 78.50 | 160 | 80.00 | 161 | 80.50 | 158 | 79.00 | 161 | 80.50 | 797 | |
| 10 | 158 | 79.00 | 156 | 78.00 | 158 | 79.00 | 160 | 80.00 | 159 | 79.50 | 791 | |
| 11 | 165 | 82.50 | 165 | 82.50 | 165 | 82.50 | 164 | 82.00 | 156 | 78.00 | 815 | |
| 12 | 162 | 81.00 | 161 | 80.50 | 163 | 81.50 | 163 | 81.50 | 164 | 82.00 | 813 | |

तालिका – 2.44
प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी अन्य ज्ञान से लाभान्वित

महिला +पुरूष कुल योग – 200
भाग – 5

जनपद – बांदा

अन्य

| प्रश्न | अ | | ब | | स | | द | | य | | योग | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| संख्या | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % |
| 1 | 160 | 80.00 | 161 | 80.50 | 164 | 82.00 | 166 | 83.00 | 160 | 80.00 | 811 | |
| 2 | 162 | 81.00 | 162 | 81.00 | 160 | 80.00 | 163 | 81.50 | 163 | 81.50 | 810 | |
| 3 | 160 | 80.00 | 159 | 79.50 | 160 | 80.00 | 159 | 79.50 | 161 | 80.50 | 799 | |
| 4 | 171 | 85.50 | 165 | 82.50 | 164 | 82.00 | 166 | 83.00 | 166 | 83.00 | 832 | |
| 5 | 156 | 78.00 | 162 | 81.00 | 161 | 80.50 | 162 | 81.00 | 162 | 81.00 | 803 | |
| 6 | 168 | 84.00 | 164 | 82.00 | 164 | 82.00 | 163 | 81.50 | 162 | 81.00 | 821 | |
| 7 | 168 | 84.00 | 167 | 83.50 | 165 | 82.50 | 163 | 81.50 | 164 | 82.00 | 827 | |
| 8 | 162 | 81.00 | 158 | 79.00 | 160 | 80.00 | 160 | 80.00 | 160 | 80.00 | 800 | |
| 9 | 164 | 82.00 | 162 | 81.00 | 163 | 81.50 | 159 | 79.50 | 157 | 78.50 | 805 | |
| 10 | 162 | 81.00 | 162 | 81.00 | 159 | 79.50 | 160 | 80.00 | 160 | 80.00 | 803 | |
| 11 | 160 | 80.00 | 159 | 79.50 | 160 | 80.00 | 156 | 78.00 | 158 | 79.00 | 793 | |
| 12 | 159 | 79.50 | 163 | 81.50 | 162 | 81.00 | 163 | 81.50 | 161 | 80.50 | 808 | |

तालिका – 2.45

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी लिंग भेद के अनुसार न्यादर्श

1. लिंग

| महिला (संख्या) | पुरूष (संख्या) | योग |
|---|---|---|
| 122 | 78 | 200 |

तालिका 2.46

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आयुवर्ग के अनुसार न्यादर्श

2. आयु वर्ग

| | 15– 20 | 21–25 | 26–30 | 31–35 | योग |
|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 60 | 35 | 20 | 07 | 122 |
| पुरूष | 28 | 19 | 22 | 09 | 78 |

तालिका – 2.47

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी शिक्षा स्तर अनुसार न्यादर्श

3. शिक्षा स्तर

| | अशिक्षित | कक्षा 1–2 संख्या | योग |
|---|---|---|---|
| महिला | 87 | 35 | 122 |
| पुरूष | 47 | 31 | 78 |

तालिका – 2.48

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी जातिवर्ग के अनुसार न्यादर्श

4. जाति/वर्ग

| | सामान्य वर्ग बहुसंख्यक | अनुसूचित जाति | अनु0 जनजा0 | पिछड़ी जाति | अल्प संख्यक | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 16 | 30 | – | 76 | – | 122 |
| पुरूष | 07 | 23 | – | 44 | 04 | 78 |

तालिका – 2.49

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी व्यवसाय के अनुसार न्यादर्श

5. व्यवसाय

| | कृषि | मजदूरी | नौकरी | गृहकार्य | व्यापार | कुछ नहीं | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 59 | 17 | – | 46 | – | – | 122 |
| पुरूष | 61 | 17 | – | – | – | – | 78 |

तालिका – 2.50

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वार्षिक आय अनुसार न्यादर्श

6. वार्षिक आय

| रू0 3600 तक | 3601 से 6000 | 6001 – 72000 | 7201 से अधिक | योग |
|---|---|---|---|---|
| 125 | 65 | 10 | – | 200 |

तालिका - 2.51

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वैयक्तिक चेतना से लाभान्वित महिला +पुरूष कुल योग -200

जनपद-ललितपुर | वैयक्तिक | भाग - I

| प्रश्न संख्या | अ संख्या | % | ब संख्या | % | स संख्या | % | द संख्या | % | य संख्या | % | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 09 | 4.50 | 156 | 78.00 | 30 | 15.00 | 102 | 51.00 | 00 | 00.00 | 297 |
| 2 | 02 | 1.00 | 80 | 40.00 | 71 | 35.50 | 20 | 10.00 | 00 | 00.00 | 173 |
| 3 | 28 | 14.00 | 05 | 2.50 | 80 | 40.00 | 01 | 0.50 | 01 | 0.50 | 115 |
| 4 | 27 | 13.50 | 00 | 00.00 | 00 | 00.00 | 00 | 00.00 | 40 | 20.00 | 67 |
| 5 | 69 | 34.50 | 01 | 0.50 | 41 | 20.50 | 00 | 00.00 | 44 | 22.00 | 155 |
| 6 | 37 | 18.50 | 102 | 51.00 | 101 | 50.50 | 118 | 59.0 | 24 | 12.00 | 382 |
| 7 | 30 | 15.00 | 63 | 31.50 | 93 | 46.50 | 00 | 00.00 | 00 | 00.00 | 186 |
| 8 | 89 | 44.50 | 00 | 00.00 | 69 | 34.50 | 70 | 35.00 | 93 | 46.50 | 321 |
| 9 | 68 | 34.00 | 37 | 18.50 | 06 | 3.00 | 01 | 0.50 | 91 | 45.50 | 203 |
| 10 | 100 | 50.00 | 100 | 50.00 | 101 | 50.50 | 135 | 67.50 | 54 | 27.00 | 490 |
| 11 | 0C | 00.00 | 00 | 00.00 | 24 | 12.00 | 07 | 3.50 | 23 | 11.50 | 54 |
| 12 | 06 | 3.00 | 75 | 37.50 | 25 | 12.50 | 24 | 12.00 | 23 | 11.50 | 153 |

तालिका – 2.52

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी सामाजिक चेतना से लाभान्वित

महिला + पुरूष कुल योग 200

जनपद – ललितपुर

सामाजिक भाग – 2

| प्रश्न संख्या | संख्या | अ % | संख्या | ब % | संख्या | स % | संख्या | द % | संख्या | य % | संख्या | योग % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 65 | 32.50 | 73 | 36.50 | 71 | 35.50 | 71 | 35.50 | 01 | 0.50 | 281 | |
| 2 | 72 | 36.00 | 00 | 00.00 | 00 | 00.00 | 71 | 35.50 | 69 | 34.50 | 21.2 | |
| 3 | 31 | 15.50 | 63 | 31.50 | 09 | 4.50 | 27 | 13.50 | 39 | 19.50 | 169 | |
| 4. | 01 | 0.50 | 72 | 36.00 | 01 | 0.50 | 00 | 00.00 | 65 | 32.50 | 139 | |
| 5 | 60 | 30.00 | 33 | 16.50 | 02 | 1.00 | 57 | 28.50 | 124 | 62.00 | 276 | |
| 6 | 38 | 19.00 | 93 | 46.50 | 94 | 47.00 | 23 | 11.50 | 23 | 11.50 | 271 | |
| 7 | 33 | 16.50 | 36 | 18.00 | 09 | 4.50 | 10 | 5.00 | 10 | 5.00 | 98 | |
| 8 | 104 | 52.00 | 36 | 18.00 | 34 | 17.00 | 35 | 17.50 | 102 | 51.00 | 311 | |
| 9 | 01 | 0.50 | 01 | 0.50 | 01 | 0.50 | 120 | 60.00 | 02 | 1.00 | 125 | |
| 10 | 57 | 28.50 | 05 | 2.50 | 02 | 1.00 | 08 | 4.00 | 01 | 0.50 | 73 | |
| 11 | 39 | 19.50 | 03 | 1.50 | 38 | 19.00 | 39 | 19.50 | 90 | 45.00 | 209 | |
| 12 | 03 | 1.50 | 98 | 49.00 | 80 | 40.00 | 13 | 6.50 | 157 | 78.50 | 351 | |

तालिका – 2.53

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आर्थिक चेतना से लाभान्वित

महिला + पुरूष योग 200

जनपद ललितपुर

आर्थिक भाग – 3

| प्रश्न | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 165 | 82.50 | 75 | 37.50 | 130 | 65.00 | 133 | 66.50 | 161 | 80.50 | 664 | |
| 2 | 75 | 37.50 | 105 | 52.50 | 91 | 45.50 | 96 | 48.00 | 87 | 43.50 | 454 | |
| 3 | 30 | 15.00 | 97 | 48.50 | 72 | 36.00 | 31 | 15.50 | 63 | 31.50 | 293 | |
| 4 | 41 | 20.50 | 34 | 17.00 | 70 | 35.00 | 01 | 0.50 | 70 | 35.00 | 216 | |
| 5 | 138 | 69.00 | 94 | 47.00 | 02 | 1.00 | 159 | 79.50 | 03 | 1.50 | 396 | |
| 6 | 36 | 18 | 07 | 3.50 | 87 | 43.50 | 67 | 33.50 | 42 | 21.00 | 239 | |
| 7 | 59 | 29.50 | 02 | 1.00 | 03 | 1.50 | 66 | 33.00 | 25 | 12.50 | 155 | |
| 8 | 36 | 18.00 | 127 | 63.50 | 92 | 46.00 | 35 | 17.50 | 06 | 3.00 | 296 | |
| 9 | 22 | 11.00 | 101 | 50.50 | 10 | 5.00 | 71 | 35.50 | 67 | 33.50 | 271 | |
| 10 | 09 | 4.50 | 28 | 14.00 | 91 | 45.50 | 93 | 46.50 | 33 | 16.50 | 254 | |
| 11 | 27 | 13.50 | 86 | 43.00 | 26 | 13.00 | 92 | 46.00 | 61 | 30.50 | 292 | |
| 12 | 04 | 2.00 | 126 | 63.00 | 100 | 50.00 | 06 | 3.00 | 01 | 0.50 | 237 | |

तालिका – 2.54

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी राजनैतिक चेतना से लाभान्वित

जनपद – ललितपुर

राजनैतिक

महिला + पुरूष कुल योग – 200
भाग – 4

| प्रश्न संख्या | अ संख्या | अ % | ब संख्या | ब % | स संख्या | स % | द संख्या | द % | य संख्या | य % | योग संख्या | योग % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 10 | 5.00 | 33 | 16.50 | 39 | 1950 | 73 | 36.50 | 77 | 38.50 | 232 | |
| 2 | 77 | 38.50 | 105 | 52.50 | 56 | 28.00 | 15 | 7.50 | 41 | 20.50 | 294 | |
| 3 | 31 | 15.50 | 71 | 35.50 | 38 | 19.00 | 00 | 00.00 | 30 | 15.00 | 170 | |
| 4 | 79 | 39.50 | 00 | 00.00 | 14 | 7.00 | 01 | 0.50 | 01 | 0.50 | 95 | |
| 5 | 67 | 33.50 | 117 | 58.50 | 69 | 34.50 | 38 | 19.00 | 93 | 46.50 | 384 | |
| 6 | 56 | 28.00 | 06 | 3.00 | 65 | 32.50 | 68 | 34.00 | 79 | 39.50 | 274 | |
| 7 | 65 | 32.50 | 52 | 26.00 | 124 | 62.00 | 102 | 51.00 | 03 | 1.50 | 346 | |
| 8 | 64 | 32.00 | 103 | 51.50 | 34 | 17.00 | 40 | 20.00 | 82 | 41.00 | 323 | |
| 9 | 00 | 00.00 | 65 | 32.50 | 13 | 6.50 | 08 | 4.00 | 104 | 52.00 | 190 | |
| 10 | 72 | 36.00 | 01 | .50 | 05 | 2.50 | 13 | 6.50 | 11 | 5.50 | 102 | |
| 11 | 31 | 15.50 | 27 | 13.50 | 56 | 28.00 | 88 | 44.00 | 95 | 47.50 | 297 | |
| 12 | 27 | 13.50 | 92 | 46.00 | 30 | 15.00 | 30 | 15.00 | 91 | 45.50 | 270 | |

## तालिका - 2.55

### प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी अन्य ज्ञान से लाभान्वित

जनपद - ललितपुर

महिला + पुरूष कुल योग - 200

अन्य

भाग - 5

| प्रश्न संख्या | अ संख्या | अ % | ब संख्या | ब % | स संख्या | स % | द संख्या | द % | य संख्या | य % | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 96 | 48.00 | 78 | 39.00 | 63 | 31.50 | 65 | 32.50 | 14 | 7.00 | 316 |
| 2 | 32 | 16.00 | 55 | 27.50 | 41 | 20.50 | 59 | 29.50 | 37 | 18.50 | 224 |
| 3 | 97 | 48.50 | 32 | 16.00 | 160 | 80.00 | 12 | 6.00 | 31 | 15.50 | 332 |
| 4 | 109 | 54.50 | 57 | 28.50 | 131 | 65.50 | 59 | 29.50 | 59 | 29.50 | 415 |
| 5 | 11 | 5.50 | 11 | 5.50 | 81 | 40.50 | 80 | 40.00 | 12 | 6.00 | 195 |
| 6 | 69 | 34.50 | 146 | 73.00 | 165 | 62.50 | 159 | 79.50 | 161 | 80.50 | 700 |
| 7 | 59 | 29.50 | 155 | 77.50 | 160 | 80.00 | 130 | 65.00 | 53 | 26.50 | 557 |
| 8 | 66 | 33.00 | 164 | 82.00 | 61 | 30.50 | 189 | 94.50 | 119 | 59.50 | 599 |
| 9 | 61 | 30.50 | 03 | 1.50 | 132 | 66.00 | 124 | 62.00 | 187 | 93.50 | 507 |
| 10 | 116 | 58.00 | 41 | 20.50 | 40 | 20.00 | 159 | 79.50 | 182 | 91.00 | 538 |
| 11 | 116 | 58.00 | 92 | 46.00 | 02 | 1.00 | 176 | 88.00 | 144 | 72.00 | 530 |
| 12 | 00 | 00.00 | 128 | 64.00 | 96 | 48.00 | 94 | 47.00 | 01 | 0.50 | 319 |

तालिका - 2.56

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी लिंग भेद के अनुसार न्यादर्श

1. लिंग

| महिला संख्या | पुरूष (संख्या) | योग |
|---|---|---|
| 167 | 233 | 400 |

तालिका - 2.57

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आयुवर्ग के अनुसार न्यादर्श

2. आयु वर्ग वर्ष

| | 15-20 | 21-25 | 26-30 | 31-35 | 36-40 | 41-45 | 46-50 | 65 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 40 | 42 | 36 | 23 | 20 | 05 | 01 | 01 |
| पुरूष | 03 | 32 | 59 | 55 | 70 | 13 | - | - |

तालिका - 2.58

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी शिक्षा के अनुसार न्यादर्श ।

3. शिक्षा स्तर

| | अशिक्षित संख्या | कक्षा 1-2 संख्या | 3-4 संख्या | 5-6संख्या | योग |
|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 148 | 16 | 03 | 00 | 167 |
| पुरूष | 203 | 30 | 00 | 00 | 233 |

तालिका – 2.59

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी जातिवर्ग के अनुसार न्यादर्श

4. जाति/वर्ग

| | सामान्य वर्ग बहुसंख्यक | अनुसूचित जाति | अनुसूचित जनजपति | पिछड़ी जाति | अल्प संख्यक | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 40 | 70 | — | 49 | 08 | 167 |
| पुरूष | 66 | 80 | 01 | 73 | 13 | 233 |

तालिका – 2.60

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी व्यवसाय के अनुसार न्यादर्श

5. व्यवसाय

| | कृषि | मजदूरी | नौकरी | गृहकार्य | व्यापार | कुछकार्य नहीं | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला | 63 | 64 | – | 40 | – | – | 167 |
| पुरूष | 114 | 110 | – | – | 09 | – | 233 |

तालिका – 2.61

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वार्षिक आय के अनुसार न्यादर्श

6. वार्षिक आय

| रू0 3600 तक | रू0 3601 से 600 | रू0 6001 – 7200 | 7201 से अधिक | |
|---|---|---|---|---|
| 231 | 98 | 1 | – | 70 ने कुछ नहीं बताया |

तालिका - 2.62

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी वैयक्तिक चेतना से लाभान्वित

जनपद - हमीरपुर

महिला + पुरूष कुल योग - 200

वैयक्तिक

भाग - 1

| प्रश्न | अ | | ब | | स | | द | | य | | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| संख्या | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या % |
| 1 | 35 | 8.75 | 207 | 51.75 | 188 | 47.00 | 211 | 52.75 | 185 | 46.25 | 826 |
| 2 | 176 | 44.00 | 226 | 56.50 | 214 | 53.50 | 195 | 48.75 | 148 | 37.00 | 959 |
| 3 | 111 | 27.75 | 179 | 44.75 | 169 | 42.25 | 169 | 42.25 | 120 | 30.00 | 748 |
| 4 | 168 | 42.00 | 211 | 52.75 | 220 | 55.00 | 211 | 52.75 | 124 | 31.00 | 934 |
| 5 | 174 | 43.50 | 207 | 51.75 | 203 | 50.75 | 222 | 55.50 | 145 | 36.50 | 951 |
| 6 | 154 | 38.50 | 180 | 45.00 | 198 | 49.50 | 193 | 48.25 | 105 | 26.25 | 830 |
| 7 | 177 | 44.25 | 203 | 50.75 | 220 | 55.00 | 206 | 51.25 | 117 | 29.25 | 923 |
| 8 | 145 | 36.50 | 192 | 48.00 | 203 | 50.75 | 208 | 52.00 | 143 | 35.75 | 891 |
| 9 | 164 | 41.00 | 204 | 51.00 | 231 | 57.75 | 196 | 49.00 | 148 | 37.00 | 943 |
| 10 | 142 | 35.50 | 224 | 56.00 | 224 | 56.00 | 215 | 53.75 | 124 | 31.00 | 929 |
| 11 | 170 | 42.50 | 218 | 54.50 | 204 | 51.00 | 201 | 50.25 | 147 | 36.75 | 940 |
| 12 | 139 | 34.75 | 190 | 47.50 | 208 | 52.00 | 214 | 53.50 | 174 | 43.50 | 925 |

## तालिका - 2.63

## प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी सामाजिक चेतना से लाभान्वित

जनपद- हमीरपुर

महिला + पुरूष कुल योग - 400

सामाजिक

भाग - 2

| प्रश्न संख्या | अ संख्या | अ % | ब संख्या | ब % | स संख्या | स % | द संख्या | द % | य संख्या | य % | योग संख्या | योग % |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 86 | 21.50 | 181 | 45.25 | 153 | 38.25 | 186 | 46.50 | 196 | 49.00 | 802 | |
| 2 | 220 | 55.00 | 222 | 55.50 | 212 | 53.00 | 157 | 39.25 | 112 | 28.00 | 923 | |
| 3 | 149 | 37.25 | 217 | 54.25 | 219 | 54.75 | 204 | 51.00 | 145 | 36.25 | 934 | |
| 4 | 197 | 49.25 | 218 | 54.50 | 216 | 54.00 | 213 | 53.25 | 122 | 30.50 | 966 | |
| 5 | 153 | 38.25 | 229 | 57.25 | 225 | 56.25 | 213 | 53.25 | 136 | 34.00 | 956 | |
| 6 | 177 | 44.25 | 187 | 46.75 | 191 | 47.75 | 199 | 49.75 | 114 | 28.50 | 868 | |
| 7 | 195 | 48.75 | 222 | 55.50 | 191 | 47.75 | 166 | 41.50 | 145 | 36.25 | 919 | |
| 8 | 142 | 35.50 | 204 | 51.00 | 201 | 50.25 | 193 | 48.25 | 147 | 36.75 | 887 | |
| 9 | 166 | 41.50 | 195 | 48.75 | 203 | 50.75 | 185 | 46.25 | 126 | 31.50 | 875 | |
| 10 | 165 | 41.25 | 211 | 52.75 | 207 | 51.75 | 195 | 48.75 | 120 | 30.00 | 898 | |
| 11 | 163 | 40.75 | 198 | 49.50 | 201 | 50.25 | 207 | 51.75 | 138 | 34.50 | 907 | |
| 12 | 156 | 39.00 | 205 | 51.25 | 218 | 54.50 | 193 | 48.25 | 126 | 31.50 | 898 | |

तालिका - 2.64

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी आर्थिक चेतना से लाभान्वित

जनपद - हमीरपुर | आर्थिक | भाग- 3

| प्रश्न | अ | | ब | | स | | द | | य | | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| संख्या | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या |
| 1 | 63 | 15.75 | 197 | 49.25 | 169 | 42.25 | 193 | 48.25 | 206 | 51.50 | 828 |
| 2 | 155 | 38.75 | 226 | 56.50 | 196 | 49.00 | 214 | 53.50 | 124 | 31.00 | 915 |
| 3 | 111 | 27.75 | 195 | 48.75 | 202 | 50.50 | 197 | 49.25 | 105 | 26.25 | 810 |
| 4 | 160 | 40.00 | 220 | 55.00 | 221 | 55.25 | 215 | 53.75 | 142 | 35.50 | 958 |
| 5 | 138 | 34.50 | 224 | 56.00 | 215 | 53.75 | 208 | 52.00 | 125 | 31.25 | 910 |
| 6 | 156 | 39.00 | 196 | 49.00 | 194 | 48.50 | 182 | 45.50 | 141 | 35.25 | 869 |
| 7 | 155 | 38.75 | 198 | 49.50 | 194 | 48.50 | 188 | 47.00 | 115 | 28.75 | 850 |
| 8 | 153 | 38.25 | 211 | 52.75 | 210 | 52.50 | 209 | 52.25 | 125 | 31.25 | 908 |
| 9 | 168 | 42.00 | 219 | 54.75 | 203 | 50.75 | 221 | 55.25 | 147 | 36.75 | 958 |
| 10 | 149 | 39.75 | 198 | 49.50 | 204 | 51.00 | 191 | 47.75 | 136 | 34.00 | 878 |
| 11 | 156 | 39.00 | 202 | 30.50 | 197 | 49.25 | 186 | 46.50 | 138 | 34.50 | 879 |
| 12 | 174 | 43.50 | 218 | 54.50 | 200 | 50.00 | 170 | 42.50 | 125 | 31.25 | 887 |

तालिका – 2.65

## प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी राजनैतिक चेतना से लाभान्वित

जनपद – हमीरपुर

महिला + पुरूष कुल योग– 400

राजनैतिक

भाग – 4

| प्रश्न संख्या | अ संख्या | % | ब संख्या | % | स संख्या | % | द संख्या | % | य संख्या | % | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 73 | 18.25 | 219 | 54.75 | 198 | 49.50 | 186 | 46.50 | 203 | 50.75 | 879 |
| 2 | 213 | 53.25 | 255 | 63.75 | 229 | 57.25 | 220 | 55.00 | 160 | 40.00 | 1077 |
| 3 | 143 | 35.75 | 203 | 50.75 | 190 | 47.50 | 214 | 53.50 | 115 | 28.75 | 865 |
| 4 | 164 | 41.00 | 182 | 45.50 | 198 | 49.50 | 190 | 47.50 | 106 | 24.50 | 840 |
| 5 | 176 | 44.00 | 201 | 50.25 | 192 | 48.00 | 160 | 40.00 | 141 | 35.25 | 870 |
| 6 | 172 | 43.00 | 222 | 55.50 | 211 | 52.75 | 179 | 44.75 | 120 | 30.00 | 904 |
| 7 | 155 | 38.75 | 183 | 45.75 | 181 | 45.25 | 185 | 46.25 | 121 | 30.25 | 825 |
| 8 | 152 | 38.00 | 187 | 46.25 | 221 | 55.25 | 215 | 53.75 | 149 | 37.25 | 924 |
| 9 | 171 | 42.75 | 204 | 51.00 | 189 | 44.75 | 203 | 50.75 | 145 | 36.25 | 912 |
| 10 | 145 | 36.25 | 227 | 56.25 | 209 | 52.25 | 185 | 46.25 | 148 | 37.00 | 914 |
| 11 | 163 | 40.75 | 185 | 46.25 | 175 | 43.75 | 170 | 42.50 | 117 | 29.25 | 810 |
| 12 | 188 | 47.00 | 212 | 53.00 | 184 | 46.00 | 168 | 42.00 | 139 | 34.75 | 891 |

तालिका - 2.66

प्रौढ़ शिक्षा प्रतिभागी अन्य ज्ञान से लाभान्वित

जनपद - हमीरपुर

महिला + पुरूष कुल योग - 400

अन्य

भाग - 5

| प्रश्न | अ | | ब | | स | | द | | य | | योग | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| संख्या | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % | संख्या | % |
| 1 | 41 | 10.25 | 174 | 43.00 | 154 | 38.50 | 223 | 55.75 | 208 | 52.00 | 798 | |
| 2 | 194 | 48.50 | 218 | 54.50 | 200 | 50.00 | 224 | 56.00 | 180 | 45.00 | 1016 | |
| 3 | 190 | 47.50 | 230 | 57.50 | 240 | 60.00 | 206 | 51.50 | 151 | 37.75 | 1017 | |
| 4 | 156 | 39.00 | 200 | 50.00 | 189 | 47.25 | 198 | 49.50 | 118 | 29.50 | 861 | |
| 5 | 125 | 31.25 | 206 | 51.50 | 229 | 57.25 | 213 | 53.25 | 133 | 33.25 | 906 | |
| 6 | 190 | 47.50 | 204 | 51.00 | 222 | 55.50 | 194 | 48.50 | 136 | 34.00 | 946 | |
| 7 | 164 | 41.00 | 199 | 49.75 | 192 | 48.00 | 192 | 48.00 | 129 | 32.25 | 876 | |
| 8 | 130 | 32.50 | 169 | 42.25 | 175 | 43.75 | 165 | 41.25 | 133 | 33.25 | 772 | |
| 9 | 127 | 31.75 | 162 | 40.50 | 163 | 40.75 | 162 | 40.50 | 114 | 28.50 | 728 | |
| 10 | 148 | 37.00 | 167 | 41.75 | 160 | 40.00 | 163 | 40.75 | 128 | 32.00 | 766 | |
| 11 | 145 | 36.25 | 163 | 40.75 | 161 | 40.25 | 156 | 39.00 | 122 | 30.50 | 747 | |
| 12 | 141 | 35.25 | 168 | 42.00 | 162 | 40.50 | 150 | 37.50 | 132 | 33.00 | 753 | |

तालिका 2.67
अनुदेशक अनुसार विश्लेषण

| बिंदु | संख्या रेन्ज/प्रसार | 40 जालौन | 20 झांसी | 20 बांदा | 20 ललितपुर | 40 हमीरपुर | 140 योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | कक्षा 5 | 02 | 01 | 05 | 08 | 01 | 17 |
| | 8 | 10 | 05 | 03 | 04 | 06 | 28 |
| | एच0एस0 | 09 | 06 | 10 | 06 | 10 | 41 |
| | इण्टर | 09 | 04 | – | 02 | 08 | 23 |
| | बी0ए0 | 07 | 03 | 01 | | 14 | 25 |
| | एम0ए0 | 01 | — | 0 | | — | 01 |
| | एम0ए0बी0एड0/बी0टी0 सी0 | 01 | 01 | 01 | | — | 03 |
| 2. | पढ़ाने में | 20 | 11 | 05 | 11 | 10 | 57 |
| | समाज सेवा में | 05 | 02 | 13 | | 08 | 28 |
| | कृषि में | | | | | 02 | 02 |
| | गृहकार्य में | 04 | 01 | | | 05 | 10 |
| | खेल में | | 01 | | | 02 | 03 |
| | व्यापार मे | | | | | 01 | 01 |
| | टेक्नीशियन बनने में | | | | | 01 | 01 |
| | खाना बनाने में | 01 | | | 06 | | 07 |
| | सिलाई कढ़ाई में | 03 | | | | | 03 |
| | पुलिस सेवा में | 01 | | | | | 01 |
| 3. | शिक्षा प्रसार के लिये | 15 | 05 | 12 | | 02 | 34 |
| | शिक्षण में लगाव/पढ़ने में | 02 | | | 02 | 03 | 07 |
| | धनअर्जन में पैसे कमाने | 05 | | | | 04 | 09 |
| | बेरोजगारी के कारण | 02 | 05 | | 03 | 02 | 12 |
| | इच्छा से स्वयं प्रेणना से | 08 | | 02 | 06 | 21 | 37 |
| | समाज सेवा भाव | | 01 | | | 02 | 03 |
| 4. | प्रशिक्षित | 14 | 14 | 19 | 04 | 40 | 91 |
| | अप्रशिक्षित | 21 | 06 | – | 15 | – | 42 |
| 5. | प्रत्येक जनपद में और नये बिन्दु किये गये हैं। | 05 | 08 | 05 | 07 | 04 | 29 |
| 6. | " | 06 | 08 | 05 | 06 | 09 | 34 |
| 7. | " | 14 | 06 | 09 | 07 | 03 | 39 |
| 8. | क " | 23 | 15 | 12 | 13 | 23 | क – 86 |
| | ख " | 15 | 04 | 08 | 07 | 17 | ख–51 |
| | ग | 01 | – | – | – | – | ग–01 |
| | घ " | – | 01 | – | – | – | घ–01 |
| | ड़ " | – | – | – | – | – | ड़— |
| 9. | क " | 21 | 13 | 12 | 12 | 09 | क–63 |
| | ख " | 09 | 05 | 08 | 08 | 20 | ख–50 |
| | ग " | 09 | – | – | – | 11 | ग–20 |
| | घ " | – | 2 | – | – | – | घ–02 |
| | ड़ | — | - | – | – | – | ड़ – |
| 10. | 06 | 06 | 02 | 07 | 04 | 03 | 22 |

तालिका - 2.68

ग्राम प्रधान अनुसूची अनुसार विश्लेषण

| बिन्दु संख्या | | जालौन एन040 | झांसी एन020 | बांदा एन020 | ललितपुर एन020 | हमीरपुर एन040 | योग एन 140 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | | हां नहीं - 36 2 2 | हां नहीं - 19 1 - | हां नहीं - 20 - - | हां नहीं - 17 3 - | हां नहीं - 37 3 - | हां नहीं - 129 09 2 |
| 2. | प्रत्येक से नया बिन्दु | 03 | 02 | - | 02 | 01 | 08 |
| 3. | प्रत्येक से नया बिन्दु | 03 | 03 | 03 | 03 | 03 | 03 |
| 4. | " | 04 | 01 | 07 | 03 | 01 | 16 |
| 5. | व्यक्तियों की संख्या में एकबार | 15 | 05 | 14 | - | 19 | 53 |
| (2) | माह में 2 बार | 04 | 06 | | 08 | 11 | 29 |
| (3) | माह में 3 बार | 04 | 02 | | 04 | 02 | 12 |
| (4) | माह में 4 बार | 09 | 03 | | 04 | 02 | 18 |
| (5) | माह में 5 बार | 02 | 01 | | 04 | 04 | 11 |
| (6) | माह में 10 बार | 01 | - | - | - | - | 1 |
| (7) | साल में 1 बार | 8 माह 01 | 8माह 01 | - | - | 8माह 01 | 03 |
| 6. | | 03 | 04 | 03 | 01 | 02 | |
| 7. | हां | 6 | 02 | 5 | 1 | 4 | |
| | नहीं | 22 | 15 | 4 | 19 | 8 | |
| | कोई उत्तर नहीं | 12 | 03 | 11 | - | 28 | |
| 8. | | 01 | - | 02 | - | - | |
| 9. | हां | 31 | 17 | 10 | 6 | 35 | 99 |
| | नहीं | 02 | 2 | 10 | 5 | 03 | 22 |
| | कोई उत्तर नहीं | 07 | 1 | - | 9 | 02 | 19 |
| 10 | | 01 | - | 01 | 01 | - | |
| 11 | | 03 | 02 | 09 | 03 | 03 | 20 |

| बिन्दु | रेन्ज/प्रसार | जालौन | झांसी | बांदा | ललितपुर | हमीरपुर | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | प्रत्येक जनपद से और नये बिन्दु लिये गये है । | 03 | – | 05 | 02 | – | 16 |
| 12. | " | 07 | 01 | 04 | 03 | 02 | 17 |
| 13. | " | 02 | 02 | 04 | 03 | 02 | 13 |
| 14. | " | 03 | 02 | 03 | 09 | 13 | 30 |

## प्रौढ़ शिक्षा – मूल्यांकन

### भाग – । वैयक्तिक

| | केन्द्र में आकर अध्ययन के बाद(वर्तमान) | | केन्द्र में आने के पहिले {पूर्व स्थिति} | |
|---|---|---|---|---|
| | हां | नहीं | हां | नहीं |
| **1. शिक्षा की स्थिति :** | | | | |
| अ} कुछ नहीं जानना | | | | |
| ब} वर्ण एवं अक्षर कला जानना | | | | |
| स} हस्ताक्षर कर लेना | | | | |
| द} कुछ लिखना पढ़ लेना | | | | |
| य} साधारण किताबें पढ़ लेना | | | | |
| **2. दूसरों द्वारा दिया रू0 लेने की स्थिति:** | | | | |
| अ} बिना गिने लेना | | | | |
| ब} गिनकर लेना | | | | |
| स} अच्छे खराब नोट,रू0 की पहिचान | | | | |
| द} नये पुराने सिक्के कीपहिचान | | | | |
| य} 10,100, रू0 के नोट पहिचानना | | | | |
| **3. रूपये के बच्चों के शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण :** | | | | |
| अ} शिक्षित होंना लाभादायक | | | | |
| ब} बिना शिक्षा के कर, खेती बारी का देखना | | | | |
| स} शिक्षा से लांभा होता है | | | | |
| द} शिक्षित करना आवश्यक नहीं है | | | | |
| य} शिक्षित करने से बाहर के हो जाते हैं । | | | | |

| | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं |
|---|---|---|---|---|

**4. घर के सामान खरीदने में सलाह लेना :**

अ) घर में बड़ों की सलाह

ब) पत्नी की सलाह

स) लड़के/लड़की की सलाह

द) बहू की सलाह

य) किसी की सलाह नहीं

**5. अपने तथा अपने परिवार के स्वास्थ्य के प्रति दृष्टिकोण :**

अ) दूसरों पर आश्रित

ब) स्वयं आकर स्वास्थ्य केन्द्र पर डा० से बात करना

स) बीमारी एवं दवा के विषय में जानकारी से देखकर थोड़ा बहुत कना

द) स्वास्थ्य के प्रति दवा स्वयं पुस्तकों से देखकर थोड़ा बहुत करना ।

य) डाक्टर की गलत दवा पर उससे कहना, बताना

**6. कृषि से संबंधित उपकरणों के खरीदने बेचने, ठीक करने से संबंधित दृष्टिकोण**

अ) विज्ञापनों को ठीक से पढ़कर मनन करने के बाद

ब) बिना सोचे समझे

स) दूसरों पर निर्भर रहना

द) उपकरणों के प्रयोग को बाहर जाकर देखकर

हां नहीं हां नहीं

य) कृषि विशेषज्ञों से सलाह मशविरा लेकर

7. **गांव के सांस्कृतिक कार्य कलापों धार्मिक आयोजनों से संबंधित दृष्टिकोण**

अ) समय का सदुपयोग होता है

ब) समय खराब होता है

स) अपव्यय होता है

द) सभी को लाभ होता है

य) परोक्ष रूप से व्यक्तिगत लाभ होता है

8. **नये उपकरणों के प्रति जानकारी :**

अ) रेडियो बजाने में मीटर के आधार पर लगाना

ब) टेलिविजन के कार्यक्रमों को पढ़ लेना

स) देश विदेश के समाचारों को रेडियो में सुनने के रूचि लेना

द) रेडियो/टेलिविजन में मौसम की जानकारी समझ लेना

य) परिवार नियोजन के संबंध में सूचनाओं एवं जानकारी से लाभ उठाना ।

| | हां | नहीं | हां | नहीं |
|---|---|---|---|---|

9\. तार, मनीआर्डर पत्र डाकिया द्वारा, लेकर अपने पर दृष्टि कोण :

अ) दूसरों से पढ़ाना

ब) अंगूठा लगाना

स) स्वयं पढ़कर समझ लेना

द) वापस कर देना

य) तार मनीआर्डर, नोटिस के अंतर को समझाना

10 किसी घरेलू समस्या के आने पर दृष्टिकोण

अ) अप्रशिक्षित होने के कारण ठीक से समझ न पाना

ब) घबड़ा जाना

स) दूसरों से हल करने के लिये दौड़ना कहना

द) घर के लोगों से सलाह लेना

य) स्वयं निर्णय लेना

11\. वैयक्तिक प्रथाओं के दृष्टिकोण

अ) 18 वर्ष के पूर्व विवाह उचित

ब) बाल विवाह के पक्ष में है

स) विधवा विवाह के पक्ष में है

द) विवाह केवल भुगतान के ऊपर निर्भर होता है।

य विवाह संबंधी कानून की जानकारी ।

| | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं |
|---|---|---|---|---|
| 12. गाँव से संबंधित कानूनों की जानकारी के विषय में | | | | |
| अ) विवाह में दहेज | | | | |
| ब) मताधिकार | | | | |
| स) अस्पृष्यता संबंधी कानून | | | | |
| द) न्यूनतम मजदूरी | | | | |
| य) दाखिल खारिज/पट्टा भूमि संबंधी कानून । | | | | |

भाग – 2 सामाजिक

1. सामाजिक कार्यक्रमों का गाँव के विकास के कार्यों योजनाओं के संचालन के प्रति दृष्टिकोण :

अ) निष्क्रिय रहना

ब) सक्रिय होकर तत्परता से कार्य करना

स) जैसा दूसरे लोग कहें वैसा ही करना

द) सुझाव देना

य) बेकार का कार्य समझकर अलग रहना

3. वाह्य समूहों से संपर्क :

अ) निकट गाँव के विकास कार्यक्रमों के प्रति जानकारी रखना

| | | हां | नहीं | हां | नहीं |
|---|---|---|---|---|---|
| ब) | दूसरी जातियों के लोगों से भाई चारा रखना । | | | | |
| स) | छुआछूत के आडम्बरों से दूर रहना | | | | |
| द) | दूसरी जाति के लोगों को विवाहों सक्रिय होकर कार्य करना | | | | |
| य) | अपने पर ही सीमित रहना | | | | |
| 4. | **सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक सांस्कृतिक समारोहों के प्रति दृष्टिकोण** | | | | |
| अ) | समारोहों में भाग लेना | | | | |
| ब) | सामाजिक कार्य कर्ताओं के जीवन चरित्रों को पढ़कर प्रेरणा लेना | | | | |
| स) | धार्मिक पुस्तकों को पढ़ना/समझाना | | | | |
| द) | आयोजनों में स्त्रियों को समान रूप से भाग लेने के पक्ष में होना | | | | |
| य) | सब आडम्बर की चीज समझाना | | | | |
| 5. | **प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में पढ़ने पर सुविधाओं के प्रति जागरूकता** | | | | |
| अ) | दो बच्चों के परिवार के संबंध में | | | | |
| ब) | प्रौढ़ शिक्षा की पुस्तकें पत्रिकायें, पढ़ना या जानना | | | | |
| स) | स्त्री पुरूष के समान अधिकारों के प्रति | | | | |
| द) | गांव के विकास में संगठनों की भूमिका | | | | |

| | हां | नहीं | हां | नही |
|---|---|---|---|---|

य§ गांव के जीवन में रोचकता लाने से संबंधित
कार्यक्रमों का ज्ञान

6. **गांव के सामूहिक विकास के संचालित कार्यक्रमों से संबंधित दृष्टिकोण**

अ§ अपने कामों से ही मतलब

ब§ सरकार तक गांव के विकास कार्यक्रमों की मांग करना

स§ गांव में चल रहीं विभिन्न विकास योजनाओं की जानकारी ।

द§ ब्लाक कार्यालय जाकर, कृषि कार्यों, उद्योगों के प्रति जानकारी

य§ गांव के विकास के लिये गोष्ठियों में भाग लेना कहना, ज्ञापन देना

7. **किस समुदाय के लोगों के मध्य आपका उठना बैठना होता है :**

अ§ सवर्ण

ब§ पिछड़ी जाति

स§ हरिजन

द§ कार्य संबंधित

य§ रूचित संबंधी

8. **कौन कौन सामाजिक कुरीतियों को आप नापसंद करते हैं ।**

| | हां | नहीं | हां | नहीं |
|---|---|---|---|---|
| अ) स्त्री अशिक्षा | | | | |
| ब) पर्दा प्रथा | | | | |
| स) दहेज प्रथा | | | | |
| द) धार्मिक आडम्बर | | | | |
| य) अंध विश्वास | | | | |

9. **सामाजिक समारोहों पूजा स्थलों के प्रति दृष्टिकोण :**

अ) स्वयं न जाना

ब) उच्च वर्ग के लोगों को ही जाना

स) खास व्यक्ति ही को जाना

द) सभी जाति के लोगों को जाना

य) पुजारियों को ही जाना

10. **किसी वर्ग या जाति के ऊपर दुःख पड़ने पर :**

अ) स्वयं जाना

ब) केवल उसी जाति के लोगों को जाना

स) किसी को न जाना

द) कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को ही जाना

य) अपने जाति के लोगों को जाने से मना करना ।

11. **परिवार संबंधी दृष्टिकोण :**

अ) संयुक्त परिवार का होना

ब) एकांकी परिवार का होना

| | हां | नहीं | हां | नही |
|---|---|---|---|---|
| स) संयुक्त सम्पत्ति होना | | | | |
| द) संयुक्तता से सुरक्षित होना | | | | |
| य) बहुओं का शिक्षित होना | | | | |

12. **विवाह संबंधी दृष्टिकोण :**

अ) स्थानीय विवाह का होना

ब) उपजाति में विवाह होना

स) 21 वर्ष की आयु में लड़की का विवाह होना

य) दहेज रहित विवाह होना

**भाग – 3 आर्थिक**

1. **अपनी या परिवार की आमदनी बढ़ाने के प्रति दृष्टिकोण :**

अ) कृषि में नये उपकरणों का प्रयोग

ब) यूरिया/खाद का प्रयोग की विधि से परिचित होना

स) आधुनिक ढंग से कृषि काना

द) पशुपालन/हस्त कौशल, मुर्गा पालन में नयी विधियों का प्रयोग

य) सरकारी योजनाओं के विषय में सही जानकारी करना ।

2. **अपने घर मकान, कपड़ों वस्तुओं से संबंधित :**

अ) मकान बनाने के लिये धन एवं ऋण प्राप्त करने के श्रोतो की जानकारी

ब) कपड़े वस्तुओं के सस्ते मिलने के स्थानों की सही जानकारी

527.



| | हां | नहीं | हां | नहीं |
|---|---|---|---|---|
| स§ कपड़ों, सामान का सही ढंग से उपयोग करने की जानकारी | | | | |
| द§ कृषि की बीमा योजना के विषय में जानकारी | | | | |
| य§ घरेलू सामान, पशुओं के बीमा योजना की जानकारी | | | | |

3. **अपनी आर्थिक दशा को सुधारने के लिये किस प्रकार के व्यवसाय पसंद है :**

अ§ अपने पैत्रिक पेशों को करना ठीक है

ब§ बाहर जाकर नौकरी करना

स§ बड़ी एवं प्रतिष्ठित जगहों पर कार्य करने की इच्छा

द§ साधारण खेती बारी का ही कार्य

य§ कुटीर उद्योगों को करने की सोचना

4. **अपनी आर्थिक दशा में परिवर्तन के प्रति दृष्टिकोण :**

अ§ आमदनी कम होने का कारण

ब§ आमदनी बढ़ने का कारण

स§ आमदनी बढ़ाने की विधियां पढ़ने से ज्ञात हुई ।

द§ रूखे सूखे ही रहना ठीक है

य§ आमदनी ज्यों की त्यों रही

| | | हां | नहीं | हां | नहीं |
|---|---|---|---|---|---|
| 5. | मासिक या वार्षिक आमदनी बढ़ाये के प्रति दृष्टिकोण : | | | | |
| अ) | कुटीर उद्योग धन्धों | | | | |
| ब) | नई विधि से खेती | | | | |
| स) | पुराने ढंग से खेती | | | | |
| द) | खेती के अतिरिक्त अन्य धन्धों करना | | | | |
| 6. | कृषि या उद्योग उत्पादन से संबंधित दृष्टिकोण : | | | | |
| अ) | गांव में ही बेचना | | | | |
| ब) | सहकारी समितियों को बेचना | | | | |
| स) | बाहर जाकर बेचना | | | | |
| द) | अधिक भाव में बेचने के उपाय करना | | | | |
| य) | कुछ न सोचना | | | | |
| 7. | आय का सम्पूर्ण समय किन बातों से व्यतीत होता है : | | | | |
| अ) | खेती के कार्य में | | | | |
| ब) | गप शप करने में | | | | |
| स) | बेकार बैठक में | | | | |
| द) | कुटीर उद्योग करने में | | | | |
| य) | नौकरी करने में | | | | |
| 8. | अपनी ही आमदनी बढ़ाने के लिए आपने क्या किया । | | | | |

529.
X11



| | हां | नहीं | हां | नही |
|---|---|---|---|---|
| अ) कारीगरी | | | | |
| ब) मजदूरी/नौकरी | | | | |
| स) सघन एवं वैज्ञानिक खेती | | | | |
| द) कुटीर उद्योग | | | | |
| य) व्यापार | | | | |
| 9. **आपने परिवार की आमदनी बढ़ाने के लिये क्या उपाय किये ।** | | | | |
| अ) शहर में जाकर देखा/सीखा | | | | |
| ब) गांव में रहकर सीखा, समझा | | | | |
| स) व्यावसायिक केन्द्रों में जाकर सीखा | | | | |
| ब) कहीं नहीं सीखा | | | | |
| द) भगवान पर छोड़ दिया | | | | |
| 10. **गांव की आर्थिक दशा सुधाने के लिये आपने क्या किया ।** | | | | |
| अ) गांव की चकबन्दी में रूचि ली | | | | |
| ब) बैंक खुलवाने के लिये प्रयत्न किया | | | | |
| स) बैंकों में खाता खुलवाने में सहयोग | | | | |
| द) गांव में बने सामान को बेचने के लिये बाहर भिजवाया | | | | |
| य) ऋण समितियों से संपर्क कर लाभ के कार्य करना । | | | | |

| | हां | नहीं | हां | नही |
|---|---|---|---|---|

11. प्रौढ़ शिक्षा से आर्थिक दशा पर प्रभाव संबंधी दृष्टिकोण

अ) स्त्रियों के आर्थिक समृद्धि बढ़ाने में लगाया

ब) प्रौढ़ शिक्षण से प्राप्त ज्ञान से आर्थिक उन्नति प्राप्त की

स) प्रौढ़ शिक्षा से अर्थ संबंधी अधिनियम एवं सूचनाओं की जानकारी प्राप्त हुई ।

द) नये उद्यमियों/व्यापारियों से संपर्क में लाभ हुआ

य) प्रौढ़ शिक्षा से आर्थिक उन्नति, में कुछ लाभ नहीं हुआ ।

12. **कर्ज या ऋण लेने के प्रति दृष्टिकोण :**

अ) बुरी चीज है

ब) अच्छी बात है

स) कर्ज लेकर व्यवसाय करके कमाना

द) कर्ज लेकर जुआ खेलना

य) कर्ज लेना देना दोनों खराब बातें हैं

**भाग 4 राजनैतिक**

1. **स्वतंत्रता का सही माने में अर्थ**

अ) अपने मनमाने ढंगसे काम करना

ब) सरकार के निर्देशों को पढ़कर कार्य करना

स) अधिकारों कर्तव्यों के प्रति पढ़कर तर्क संगत कार्य करना

द) सही एवं गलत को समझना

य) गांव देश के प्रति सोचना समझना

| | | हां | नहीं | हां | नही |
|---|---|---|---|---|---|
| 2. | सामान्य ज्ञान के प्रति जानकारी | | | | |
| अ॥ | भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री का नाम | | | | |
| ब॥ | उत्तर प्रदेश के वर्तमान मुख्यमंत्री का नाम | | | | |
| स॥ | हिन्दी के प्रमुख दैनिक समाचार पत्र का नाम | | | | |
| द॥ | भारत वर्ष की राजधानी | | | | |
| य॥ | उत्तर प्रदेश की राजधानी का नाम | | | | |
| 3. | **चुनावों से सम्बन्धित जागरूकता:** | | | | |
| अ॥ | गांव के मुखिया के कहने पर वोट देना | | | | |
| ब॥ | बिना किसी के बताये स्वयं निर्णय लेकर वोट देना | | | | |
| स॥ | नेताओं या बिरादरी के कहने पर वोट देना | | | | |
| द॥ | पैसे रूपये मिलने के कारण वोट देना | | | | |
| य॥ | वोट देना बेकार की बात है । | | | | |
| 4. | **गांव के पदाधिकारियों की प्रति जागरूकता :** | | | | |
| अ॥ | ब्लाक प्रमुख का नाम | | | | |
| ब॥ | ग्राम प्रधान को दूसरों के कहने से चुनना | | | | |
| स॥ | ग्राम प्रधान, ब्लाक प्रमुखकों अपने विवेक से चुनना | | | | |
| द॥ | पार्टी के कहने पर चुनना | | | | |
| य॥ | चुनाव में भाग न लेना | | | | |

| | हां | नहीं | हां | नहीं |
|---|---|---|---|---|
| **5. गाँव के विकास के लिये धारण व दृष्टिकोण:** | | | | |
| अ) सरकार द्वारा दिये गये अनुदान, विकास योजना के प्रति जानकारी | | | | |
| ब) गोष्ठी में भाग लेकर अपनी राय देना | | | | |
| स) धन के अपव्यय करने वालों की शिकायत सरकार तक पहुँचाना | | | | |
| द) विकास के लिये पत्रकारों से बात करना | | | | |
| य) गाँव के विकास के लिये उपाय बताना | | | | |
| **6. गाँव के विकास के लिये विधियों के अपनाने के प्रति दृष्टिकोण:** | | | | |
| अ) सही वोट देकर | | | | |
| ब) जनमत तैयार कर | | | | |
| स) राजनैतिक दलों में सक्रिय भागिदारी देकर | | | | |
| द) अधिकारियों पर तर्क संगत दबाव डालकर | | | | |
| य) कुछ न करके भगवान भरोसे छोड़कर | | | | |
| **7. सरकार से गाँव के विकास के लिये उपाय करना सहायता अनुदान माँगने के प्रति दृष्टिकोण:** | | | | |
| अ) संगठन बनाकर मांग करना | | | | |
| ब) राजनैतिक कार्य के रूप में मांग करना | | | | |
| स) अपने गांव प्रधान/मुखिया से कहकर लिखित देना | | | | |
| द) पत्रकारों से संपर्क कर लिखित देना | | | | |
| य) तटस्थ रहना | | | | |
| **8. अपने क्षेत्र में कार्यरत विभागों के प्रति जानकारी:** | | | | |
| अ) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र | | | | |
| ब) पशुचिकित्सा केन्द्र | | | | |
| स) ब्लाक कार्यालय | | | | |

| | नहीं | हां | नहीं | हां |
|---|---|---|---|---|
| द) ग्राम पंचायत | | | | |
| य) ग्रामीण बैंक | | | | |

9. गांव पंचायत क्या करती है:

अ) लगान वसूली
ब) गाँव की सड़के ठीक करना

स) सांस्कृतिक कार्यक्रम कराना

द) गोष्ठी मीटिंग करना

य) गांव की विकास योजनाओं को तेजी से पूरा कराना

10. ग्राम प्रधान किस प्रकार चुना जाता है

अ) चुनाव द्वारा

ब) निर्विरोध चुनाव

स) सरकार द्वारा मनोनीत

द) जिलाधिकारी द्वारा मनोनीत

य) तहसीलदार द्वारा मनोनीत

11. इनके दायित्वों के विषय में आप क्या जानते है:

अ) राष्ट्रपति

ब) प्रधानमंत्री

स) मुख्य मंत्री

द) सांसद / विधायक

य) जिलाधीश

12. प्रौढ़ शिक्षा के कार्यों के विषय में जानकारी

अ) साक्षरता का प्रसार

ब) निरक्षरता उन्मूलन

स) गॉव के विकास कार्यक्रमों को करना

द) कागजी कार्यवाही करना

य) कृषि यंत्रों का प्रयोग

# प्रौढ़ शिक्षा मूल्यांकन- उत्तर पत्र

केन्द्र का नाम (ग्राम) ________ ब्लाक ________ जनपद ________ क्रम सं. ________

नाम उत्तर दाता ________ आयु वर्षों में ________ शिक्षास्तर (अशिक्षित) (कक्षा 1-2) (3-4) (5-6) (________)

जाति (वर्ग)– सामान्य–अनुसूचित जाति–जनजाति–पिछड़ी जाति–अल्पसंख्यक व्यवसाय–कृषि–मजदूरी–नौकरी–व्यापार–गृह कार्य–कुछ नहीं–अन्य इनमें केवल ✓ का निशान लगायें

वार्षिक आमदनी– रु० 3600 तक, 6000 तक 7200 तक, इस से ऊपर

| प्रश्न क्रम सं. / स्थिति | भाग–1 बैयक्तिक | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | अ | | ब | | स | | द | | य | |
| | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं |
| 1 वर्तमान | | | | | | | | | | |
| 1 पूर्व | | | | | | | | | | |
| 2 वर्तमान | | | | | | | | | | |
| 2 पूर्व | | | | | | | | | | |
| 3 वर्तमान | | | | | | | | | | |
| 3 पूर्व | | | | | | | | | | |
| 4 वर्तमान | | | | | | | | | | |
| 4 पूर्व | | | | | | | | | | |
| 5 वर्तमान | | | | | | | | | | |
| 5 पूर्व | | | | | | | | | | |
| 6 वर्तमान | | | | | | | | | | |
| 6 पूर्व | | | | | | | | | | |
| 7 वर्तमान | | | | | | | | | | |
| 7 पूर्व | | | | | | | | | | |
| 8 वर्तमान | | | | | | | | | | |
| 8 पूर्व | | | | | | | | | | |
| 9 वर्तमान | | | | | | | | | | |
| 9 पूर्व | | | | | | | | | | |
| 10 वर्तमान | | | | | | | | | | |
| 10 पूर्व | | | | | | | | | | |
| 11 वर्तमान | | | | | | | | | | |
| 11 पूर्व | | | | | | | | | | |
| 12 वर्तमान | | | | | | | | | | |
| 12 पूर्व | | | | | | | | | | |
| योग वर्तमान | | | | | | | | | | |
| योग पूर्व | | | | | | | | | | |
| अन्तर | | | | | | | | | | |

| प्रश्न क्रम सं. स्थिति | भाग–2 सामाजिक | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | अ | | ब | | स | | द | | य | |
| | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं |
| 1 | | | | | | | | | | |
| 2 | | | | | | | | | | |
| 3 | | | | | | | | | | |
| 4 | | | | | | | | | | |
| 5 | | | | | | | | | | |
| 6 | | | | | | | | | | |
| 7 | | | | | | | | | | |
| 8 | | | | | | | | | | |
| 9 | | | | | | | | | | |
| 10 | | | | | | | | | | |
| 11 | | | | | | | | | | |
| 12 | | | | | | | | | | |
| वर्तमान | | | | | | | | | | |
| पूर्व | | | | | | | | | | |
| अन्तर | | | | | | | | | | |

| प्रश्न क्रम सं. स्थिति | भाग–3 आर्थिक | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | अ | | ब | | स | | द | | य | |
| | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं |
| 1 | | | | | | | | | | |
| 2 | | | | | | | | | | |
| 3 | | | | | | | | | | |
| 4 | | | | | | | | | | |
| 5 | | | | | | | | | | |
| 6 | | | | | | | | | | |
| 7 | | | | | | | | | | |
| 8 | | | | | | | | | | |
| 9 | | | | | | | | | | |
| 10 | | | | | | | | | | |
| 11 | | | | | | | | | | |
| 12 | | | | | | | | | | |
| वर्तमान | | | | | | | | | | |
| पूर्व | | | | | | | | | | |
| अन्तर | | | | | | | | | | |

| प्रश्न क्रम सं. स्थिति | भाग–4 राजनैतिक | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | अ | | ब | | स | | द | | य | |
| | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं |
| 1 | | | | | | | | | | |
| 2 | | | | | | | | | | |
| 3 | | | | | | | | | | |
| 4 | | | | | | | | | | |
| 5 | | | | | | | | | | |
| 6 | | | | | | | | | | |
| 7 | | | | | | | | | | |
| 8 | | | | | | | | | | |
| 9 | | | | | | | | | | |
| 10 | | | | | | | | | | |
| 11 | | | | | | | | | | |
| 12 | | | | | | | | | | |
| वर्तमान | | | | | | | | | | |
| पूर्व | | | | | | | | | | |
| अन्तर | | | | | | | | | | |

| प्रश्न क्रम सं. स्थिति | भाग–5 अन्य | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | अ | | ब | | स | | द | | य | |
| | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं | हाँ | नहीं |
| 1 | | | | | | | | | | |
| 2 | | | | | | | | | | |
| 3 | | | | | | | | | | |
| 4 | | | | | | | | | | |
| 5 | | | | | | | | | | |
| 6 | | | | | | | | | | |
| 7 | | | | | | | | | | |
| 8 | | | | | | | | | | |
| 9 | | | | | | | | | | |
| 10 | | | | | | | | | | |
| 11 | | | | | | | | | | |
| 12 | | | | | | | | | | |
| वर्तमान | | | | | | | | | | |
| पूर्व | | | | | | | | | | |
| अन्तर | | | | | | | | | | |

## अनुदेशक अनुसूची

जनपद

अनुदेशक महिला/पुरूष केन्द्र का नाम : ——————

1. शैक्षिक योग्यता :

2. रूचि :

3. आप अनुदेशक क्यों बनना चाहे :

4. प्रशिक्षित/अप्रशिक्षित :

5. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की मुख्य कमियां क्या है?

(क)

(ख)

(ग)

(घ)

(ङ)

6. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम चलाने में मुख्य बाधायें क्या हैं :

(क)

(ख)

(ग)

(घ)

(ङ)

7. प्रौढ़ शिक्षा को व्यावहारिक बनाने के लिये आपके सुझाव :

(क)

(ख)

(ग)

(घ)

(ङ)

8. प्रशिक्षणार्थियों को केन्द्र में लाने के संबंध में :

{क} स्वयं आने वाले

{ख} मनाकर लाये गये

{ग} सरकारी ओर से

{घ}

{ङ}

9. प्रौढ़ केन्द्र में महिला प्रशिक्षणार्थियों के विषय में :

{क} स्वयं आना

{ख} गांव के लोगों मुखिया, प्रमुख व्यक्ति के कहने पर आना

{ग} आपकी प्रेरणा से

{घ} अन्य श्रोत

{ङ}

10. प्रौढ़ शिक्षा के प्रशिक्षणार्थियों के बीच में छोड़ने के कारण :

{क}

{ख}

{ग}

{घ}

{ङ}

11. केन्द्र में प्रशिक्षण के उपकरण :

{क} प्रोजेक्टर {च} टेप

{ख} टी0वी0 {छ} वीडियो

{ग} समाचार पत्र {ज}

{घ} पुस्तकें {झ}

{ङ} मानचित्र {ट}

12. इनके अतिरिक्त आपकी उपकरणों के होने की सलाह देना चाहते हैं :

{क}

{ख}

{ग}

{घ}

{ङ}

13. किस जाति के लोग प्रौढ़ शिक्षा में अधिक आते हैं :

(क)

(ख)

(ग)

(घ)

(ङ)

14. अन्य सुझाव :

(क)

(ख)

(ग)

(घ)

(ङ)

नाम :

हस्ताक्षर :

दिनांक :

## शोधार्थिनी द्वारा क्षेत्र के प्रधान व्यक्तियों से प्राप्त

जनपद :

केन्द्र का नाम :

नाम ब्लाक ..............प्रधान/समाज सेवक ......................

ग्राम/क्षेत्र :

ब्लाक :

1. क्या आप अपने यहां चल रहे प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के कार्य कलापों से संतुष्ट हैं : हां नहीं

2. यदि संतुष्ट नहीं है तो कारण :

1.

2.

3.

3. आपके क्षेत्र के सबसे अधिक किस वर्ग के लोग अप्रशिक्षित हैं :

1.

2.

3.

4. क्या कारण है कि आपके क्षेत्र में कुछ लोग प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में आकर कुछ समय के बाद छोड़ देते हैं :

1.

2.

3.

5. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र को देखने आप कितनी बार जाते हैं :

1. दिन में ...........

2. माह में ..........

3. वर्ष में ..........

6. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों निरीक्षण कर्ता अधिकारी का नाम पद:

1. नाम पद

2. नाम पद

3. नाम पद

7. क्या आपके क्षेत्र में प्रौढ़ शिक्षा पर अनुवर्ती अध्ययन हुआ है :

हां नहीं कब

8. यदि हां तो कुछ वर्णन करें :

9. क्या आप प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आते हैं : हां नहीं

10. यदि नहीं तो क्या कारण है :

1.

2.

3.

11. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों को अधिक अच्छे ढंग से चलाने के सुझाव दें :

1.

2.

3.

तालिका - 3.2

## जनपद अनुसार परियोजना न्यादर्श केन्द्र संख्या

| क्र0सं0 | जिला का नाम | परियोजना | केन्द्रों की संख्या | प्रत्येक पन्द्रहवां नम्बर के अनुसार | 1987-88 से 1989-90 तक{ }{ प्रत्येक केन्द्र से 10 प्रत्येक वर्ष - 2 |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | जालौन (उरई) | (क) कालपी {डकोर} | 300 | 20 | 200 |
| | | (ख) कोच | 300 | 20 | 200 |
| 2. | झांसी | (क) गरूसरांय | 300 | 20 | 200 |
| | | (ख) - | - | - | - |
| 3. | बांदा | (क) कर्वी, मानिकपुर, | 300 | 20 | 200 |
| 4. | ललितपुर | (क) तालवेहट | 300 | 20 | 200 |
| | | (ख) | - | - | - |
| 5. | हमीरपुर | (क) सुमेरपुर | 300 | 20 | 200 |
| | | (ख) कुरारा {राठ} | 300 | 20 | 200 |
| | योग | नौ परियोजनायें | 2100 | 140 | 1400 |

( 5 )

न्यादर्श के अनुसार

अनुदेशक नामावली

(जनपद, परियोजना एवं विकास खण्ड अनुसार)

जनपद – जालौन

1. परियोजना – कोच

2. परियोजना – डकोर

| क्रम संख्या | अनुदेशक का नाम | केन्द्र का नाम | विकास खण्ड–कोंच |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री राम प्रसाद | बिलायां | विकासखण्ड– कोंच |
| 2. | सुधा देवी | अमीरा | |
| 3. | इन्द्रा देवी | पड़री | |
| 4. | अर्चना देवी | अटा | |
| 5. | श्री अरूण कुमार तिवारी | डाढ़ी | |
| 6. | सत्यमामा | पचीपुरी | |
| 7. | इन्द्रा देवी | देवगांव | विकासखण्ड–नदीगांव |
| 8. | कमला देवी | धनौरा | |
| 9. | सीमादेवी | सुलखना | |
| 10. | उर्मिला देवी | वरगुवां | |
| 11. | भगवती देवी | कुरचौली | |
| 12. | गायत्री देवी | सईपुरा | |
| 13. | बिमला देवी | खैरावर | |
| 14. | प्रेमलता | भीमनगर | |
| 15. | संजीव कुमार | कुरौती | |
| 16. | हर दयाल | बोहरा | |
| 17. | श्री कुमार | पिधौना | |
| 18. | बिटोला | बिरिया | |
| 19. | विनोद कुमार | कुरौती | |
| 20. | राजकुमारी | सुल्तानपुरा | |
| 21. | बबिता | नबादा | परियोजना डाकोर |
| 22. | सोमवती | निजामपुरा | विकासखण्ड–डाकोर |
| 23. | शान्ती देवी | नाहिली | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 24. | सोबरन सिंह | तिरावली | |
| 25. | -(अपठनीय) | जरवा | |
| 26. | देव सिंह | धानी अहीर | |
| 27. | आशा देवी | जुमलापुर | |
| 28. | राजकुमार | सिकन्दरा | विकास खण्ड-महेवा |
| 29. | रामदास | पुर्खी | |
| 30. | मायादेवी | नसीरपुर | |
| 31. | नरेश सिंह चौहान | टिकावली | |
| 32. | रामपाल | सरसैला | |
| 33. | मालती देवी | मढगवां | |
| 34. | दुर्गाप्रसाद | सान्धी | विकास खण्ड-रूदौरा |
| 35. | आशागौर | तिरही | |
| 36. | रजनी सेन | जौरा खेरा | |
| 37. | श्रीमती अरूणा देवी | कुसमरा | |
| 38. | रंजना कुमारी | हांस | |
| 39. | रामदर्शिनी अग्नीहोत्री | पण्डौरा | |
| 40. | सुलोचना | जयसुखपुर | |

## जनपद – झांसी

| क्रम संख्या | अनुदेशक का नाम | केन्द्र का नाम | परियोजना गुरसरांय |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री धर्मेन्द्र सिंह | भसनेह | विकास खण्ड–गुरसरांय |
| 2. | श्री किशोरी लाल | गढ़ा | |
| 3. | कु0 सुषमा देवी | पुंछी | |
| 4. | श्रीमती कुसमा देवी | खेरी | |
| 5. | श्रीमती गायत्री देवी | बराख | |
| 6. | परमेश्वरी | ककखई | विकास खण्ड–बामौर |
| 7. | रामजी दास | सुहा | |
| 8. | मंत्राराम आदित्य | कुड़री | |
| 9. | श्रीमती फुलकुंवर | बरौरा | |
| 10. | स्नेहलता | शमशेरपुरा | |
| 11. | कु0 विनोद कुमारी | मदखास | विकास खण्ड–मडरानीपुर |
| 12. | सुधा देवी | सुहागपुरा | |
| 13. | कम्मोदलाल | मेढ़की | |
| 14. | श्रीमती मोहिनी देवी | बरूआसागर | |
| 15. | गीता | रौनी | |
| 16. | राम श्रीखरे | मदखारा | |
| 17. | कस्तूरी देवी | मऊरानीपुर | |
| 18. | निर्मलादेवी | सिजारी बुजुर्ग | |
| 19. | श्री वीरेन्द्र सिंह बुन्देला | टकटौली | |
| 20. | कु0 उमा देवी | घाटकोटरा | |

जनपद - बांदा

| केन्द्र सं0 | अनुदेशक का नाम | केन्द्र का नाम | परियोजना कर्वी मानिकपुर |
|---|---|---|---|
| 1. | कुसुम देवी | सिमरिया जगन्नाथ | विकास खण्ड-चित्रकूट कर्वी |
| 2. | सुशीला देवी | भैसोंधा | |
| 3. | रविकिरन | शीतलपुर | |
| 4. | सुनीता कुमारी | हिनौतामाफी | |
| 5. | गुलाबचन्द्र | रसौली | |
| 6. | श्रीमती मिथिलेश कुमारी | अहमदगंज | |
| 7. | ललित कुमारी | कुटिलहाई | विकास खण्ड-मानिकपुर |
| 8. | समुद्री देवी | बड़ी मड़ैयन | |
| 9. | रामकन्या | सेखापुर | |
| 10. | राजमुनि | लक्ष्मणपुर | |
| 11. | कलावती | एलहा | |
| 12. | शिव प्रसाद | नया चन्द्रा | |
| 13. | शिवभवन | कवरापुरवा गांव | |
| 14. | शशि प्रभा | बछरन | विकास खण्ड - पहाड़ी |
| 15. | चन्द्रवती देवी | बधवारा | |
| 16. | सरिता देवी | औटहा वि0ख0पहाड़ी | |
| 17. | मुन्नी देवी | छिद्धरिया | |
| 18. | रेखा देवी | सालिकपुर | |
| 19. | शान्ता बाई | महुवागंज | |
| 20. | आशा कुमारी | राजापुर गांव | |

जनपद – ललितपुर

| केन्द्र सं0 | अनुदेशक का नाम | केन्द्र का नाम | परियोजना तालबेहट |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री हरी राम रैकवार | भारी पहाड़ी | विकास खण्ड जखौरा |
| 2. | श्री प्यारी राजा | पचौरा | |
| 3. | श्री रामलली | सेमराडांग | |
| 4. | श्री हरपाल सिंह गौर | हर्षपुर | |
| 5. | श्रीमती पुष्पा देवी | सतौरा | विकास खण्ड-बिरधा |
| 6. | श्री सावट सिंह | बम्हरौली बहना | विकास खण्ड-बार |
| 7. | श्री जुगल किशोर | बछरावनी | |
| 8. | श्री श्याम सुन्दर | चिगलौआ | |
| 9. | कुसुमलता | बड़ोखरा | |
| 10. | प्रमिला मिश्र | खिरिया मिश्र | |
| 11. | श्री अभयकुमार जैन | बिज यादव | विकास खण्ड-जखौरा |
| 12. | मोहिनी सिंह | अजनौरा | |
| 13. | श्रीमती किशोरी देवी | ऐरा | |
| 14. | श्री साहिबराजा | भावनी | |
| 15. | कु0गीतादेवी | भैंसाई | |
| 16. | कु0 द्रोपदी देवी | छिल्ला | विकास खण्ड-बिरधा |
| 17. | कु0राजवती | पटउवा | |
| 18. | कु0पुष्पा देवी | रजौरा | |
| 19. | श्री कमल कुमार | पठराई | |
| 20. | श्रीमती राम कुंवर | सिमरधा | |

जनपद – हमीरपुर

| क्रम सं0 | अनुदेशक का नाम | केन्द्र का नाम | परियोजना 1. सुमेरपुर 2. राठ |
|---|---|---|---|
| 1. | श्रीमती खलेश्वरी देवी | किस: वाही | विकास खण्ड – भौदाहा |
| 2. | सुमन देवी | छानी | |
| 3. | श्रीमती माया देवी | खड़ेही | |
| 4. | सरिता | कपसा | |
| 5. | श्याम बाबू | कुसेहटा | |
| 6. | श्रीमती दयावती | गुढ़ा | |
| 7. | श्रीमती श्याम | पचपहरा | |
| 8. | कु0माया | बरबई | |
| 9. | श्रीमती रामसखी | गंज | विकास खण्ड कवरई |
| 10. | श्री बृजगोपाल सुरहा | | |
| 11. | स्नेहलता | किडारी | |
| 12. | श्रीमती रामजानकी | करहरा कला | |
| 13. | श्रीमती धानकुंवर | मझलवारा | विकास खण्ड – कवरई |
| 14. | नारायण सिंह | ढिकवाहा | |
| 15. | सुनीता पाठक लुडेही | | |
| 16. | मीरा देवी | गुगौरा | |
| 17. | श्रीमती जयबाई | बछेधरकला | |
| 18. | श्रीमती चन्द्रकुंवर | मवइया | |
| 19. | श्रीमती रामजानकी | सुगिरा | विकास खण्ड–जैतपुर |
| 20. | श्रीमती रामवती | बड़ेरा खर्द | |
| 21. | श्रीमती रतन कुंवर | सरगांव | |
| 22. | नसीम बानो | उमरियां | |
| 23. | तुलसीदार | बरेल | |
| 24. | रामसहाय | झिन्नीवीरा | |
| 25. | गजराज सिंह | बिलराव | परियोजना – राठ |

| क्र०सं० | अनुदेशक का नाम | केन्द्र का नाम | परियोजना 1. सुमेरपुर 2. राठ |
|---|---|---|---|
| 26. | श्री ज्ञान देवी | कैथी | विकास खण्ड- राठ |
| 27. | सुषमा देवी | रोरो | |
| 28. | सरजू प्रसाद | मोलिहा | |
| 29. | मैयादीन | ददरी | |
| 30. | रामकरण | निवादा | विकास खण्ड-मुसकरा |
| 31. | श्रीमती लक्ष्मणी देवी | खड़ेही लोधन | |
| 32. | विद्यावती | मुस्करा | |
| 33. | रामस्वरूप | छीमलिया | |
| 34. | हरप्रसाद | गौरा | |
| 35. | रामपाल | ऐंचावा | |
| 36. | श्रीमती दया मिश्रा | नौसारा | विकास खण्ड-चरखारी |
| 37. | छवनी लाल | इगिलिया | |
| 38. | हरिशंकर द्विवेदी | गौरहरी | |
| 39. | श्रीमती मोहिनी कुमारी | स्वासामाफ | |
| 40. | शान्ती देवी | चरखारी | |

( ६ )

न्यादर्श के अनुसार

ग्राम प्रधान नामावली

(जनपद, परियोजना एवं विकास खण्ड अनुसार)

जनपद – जालौन

| क्र0सं0 | ग्राम प्रमुख/मुखिया का नाम | केन्द्र का नाम | परियोजना-कोंच |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री नाथू राम | बिलायां | विकास खण्ड – कोंच |
| 2. | श्री जंग बहादुर | अमीरा | |
| 3. | श्री अहमद खा | पड़री | |
| 4. | श्री विश्वंभर दयाल | अटा | |
| 5. | श्री प्रताप सिंह निरंजन | डाढ़ी | |
| 6. | श्री रामकिशोर निरंजन | पांचीपुरी | |
| 7. | श्री आनंद स्वरूप | देवगांव | विकास खण्ड – नंदी गांव |
| 8. | श्री विजय सिंह | धनौरा | |
| 9. | श्री गोविन्द सिंह | सुलखना | |
| 10. | श्री जगतनारायण | बरगुवां | |
| 11. | श्री गौरी शंकर | कुरचौली | |
| 12. | श्री परशुराम | सड़पुरा | |
| 13. | श्री दया शंकर | खेरावर | |
| 14. | श्री मेवालाल पचौरी | भीमनगर | विकास खण्ड-माधौगढ़ |
| 15. | श्री राम प्रताप सिंह | कुरौती | |
| 16. | श्री द्वारिका प्रसाद | बोहरा | |
| 17. | श्री बाबूराम | पिधौना | |
| 18. | श्री रमेशबाबु दीक्षित | बिरिया | |
| 19. | श्री राम प्रताप सिंह | कुरौती | |
| 20. | श्री उत्तम सिंह | सुल्तानपुरा | |
| 21. | श्री कृष्ण स्वरूप दीक्षित | नबादा | परियोजना-डाकोर |
| 22. | श्री वीरन सिंह यादव | निजामपुर | विकास खण्ड-डाकोर |
| 23. | श्रीमती शान्ती देवी | नाहिली | |
| 24. | श्री रामसनेही प्रधान | तिरावली | |
| 25. | श्री सूरज प्रसाद पाण्डेय | जरवा | |
| 26. | श्री हरीशंकर | छानी अहीर | |

| क्0सं0 | ग्राम प्रमुख/मुखिया का नाम | केन्द्र का नाम | परियोजना कोंच |
|---|---|---|---|
| 27. | श्रीमती उर्मिला द्विवेदी | जुमलापुर | |
| 28. | श्री रमेश यादव | सिकन्दरा | विकास खण्ड - महेवा |
| 29. | श्री फूल सिंह | चुर्खी | |
| 30. | श्री धानीसिंह | नसीरपुर | |
| 31. | श्रीमती शान्ती देवी | टिकाउली | |
| 32. | श्री बाबूराम दिक्षित | सरसैंला | |
| 33. | श्री लक्ष्मी प्रसाद | मुढ़गुवा | |
| 34. | श्री हरिओम द्विवेदी | सन्धी | विकास खण्ड - कदौरा |
| 35. | श्री विजय सिंह | तिरही | |
| 36. | श्री लखनलाल ओमरे | जौरा खेश | |
| 37. | श्री महेश्वरी दीन सिंह | कुसमरा | |
| 38. | श्री राम स्वरूप | हांसा | |
| 39. | श्री चैनसुख भारती | पण्डौरा | |
| 40. | श्री राम खिलावन कुशवाहा | जैसुखपुर | |

जनपद - झांसी

| क्रम सं0 | ग्राम प्रमुख/मुखिया का नाम | केन्द्र का नाम | परियोजना |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री शिव सहाय गुप्ता | भसनेह | विकास खण्ड-गुरसरांय |
| 2. | श्री ओम प्रकाश घोष | गढ़ा | |
| 3. | श्री द्वारका प्रसाद वर्मा | पुंछी | |
| 4. | श्री नाथूराम | खेरी | |
| 5. | श्री मानसिंह | बरांख | |
| 6. | श्री महेन्द्र पाल सिंह | ककरवई | विकास खण्ड-बामौर |
| 7. | श्री रामदीन | सुट्टा | |
| 8. | श्री वीरेन्द्र प्रताप सिंह | कुड़री | |
| 9. | श्री मनोहर सिंह | बरौरा | |
| 10. | - | शमशेरपुरा | |
| 11. | श्री भैयालाल | मदरवास | विकास खण्ड-मऊरानीपुर |
| 12. | श्री मनोहर लाल | सुहागपुरा | |
| 13. | श्री हरीदास | मेंढ़की | |
| 14. | श्रीमती मोहिनी श्रीवास्तव | बरूआसागर | |
| 15. | श्रीसुन्दर लाल | शैनी | |
| 16. | फूलचन्द्र कुशवाहा | मदखारा | |
| 17. | श्रीमती जमीला खातून | मऊरानीपुर | |
| 18. | श्रीराजेन्द्र सिंह | सिजारी बुर्जुग | |
| 19. | श्री कन्हैया जू | टकटौली | |
| 20. | श्री प्रमोद कुमार शर्मा | घाटकटोरा | |

जनपद - बांदा

| क्रम सं0 | ग्राम प्रमुख/मुखिया का नाम | केन्द्र का नाम | परियोजना |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री छोटेलाल | सिमरिया जगन्नाथ | विकास खण्ड-चित्रकूट कर्वी |
| 2. | श्री जगन्नाथ | भैसोंधा | |
| 3. | श्री जगन्नाथ | शीतलपुर | |
| 4. | श्री रामकिशन | हिनौतामाफी | |
| 5. | श्री सत्यनारायण शास्त्री | रंगौली | |
| 6. | श्री भागीरथी सिंह | अहमदगंज | |
| 7. | श्री गौरीशंकर | कुटिलहाई | विकास खण्ड-मानिकपुर |
| 8. | श्री शिवफूलसिंह | बड़ी भड़ैयन | |
| 9. | श्री समजिक | सेखापुर | |
| 10. | श्री रामेश्वर | लक्ष्मणपुर | |
| 11. | श्री केशवप्रसाद | एतेहा | |
| 12. | श्री इन्द्रजीत सिंह | नया चन्द्रा | |
| 13. | — | कवरापुरवा | |
| 14. | श्री वीरेन्द्र सिंह | बछरन | विकास खण्ड-पहाड़ी |
| 15. | श्री भईया | बधवारा | |
| 16. | श्री अमृतलाल | औदहा | |
| 17. | श्री राजसिंह | छिछरिया | |
| 18. | शिवऔतार | सालिकपुर | |
| 19. | श्री सुमेरासिंह | महुआगांव | |
| 20. | श्री रमेश सिंह | राजापुर गांव | |

जनपद – ललितपुर

| क्रमसं0 | ग्राम प्रमुख/मुखिया का नाम | केन्द्र का नाम | परियोजना ताल बेहट |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री वीर सिंह | मारी पहाड़ी | विकास खण्ड-जखौरा |
| 2. | श्री मंगल सिंह | पंचौरा | |
| 3. | श्री प्रेमसिंह | सेमराडांग | |
| 4. | श्री सीताराम | हर्षपुर | |
| 5. | श्री बद्रीप्रसाद | सतौरा | विकास खण्ड-बिरधा |
| 6. | श्री राजकुमार | बम्हौंलीसहना | विकास खण्ड-बार |
| 7. | श्री भगवान सिंह | बछरावनी | |
| 8. | श्रीनिहाल सिंह | चित्रलउआ | |
| 9. | श्री सीताराम यादव | बड़ोखरा | |
| 10. | श्री द्वारिका प्रसाद | खिरिया मिश्र | |
| 11. | श्री गोपसिंह यादव | बिजयावन | विकास खण्ड जखौरा |
| 12. | श्री राजेन्द्र सिंह | अजनौरा | |
| 13. | श्री राम सेवक | ऐरा | |
| 14. | श्री राजेन्द्र सिंह | भावनी | |
| 15. | श्री मातादीन वर्मा | भैंसाई | |
| 16. | श्री इमरत सिंह | छिल्ला | विकास खण्ड-विरधा |
| 17. | श्री सुरजन सिंह | पटऊआ | |
| 18. | श्री महेश प्रसाद | रजौरा | |
| 19. | श्री सनमानसिंह | पठराई | |
| 20. | श्री जगन्नाथ प्रसाद | सिमरधा | |

जनपद – हमीरपुर

| क्रम सं0 | ग्राम प्रमुख/मुखिया का नाम | केन्द्र का नाम | परियोजना–सुमेरपुर |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री नारायण सिंह | किसवाही | विकासखण्ड–भौदहा |
| 2. | श्री लाल जी सिंह | छानी | |
| 3. | श्री भइयादीन | खडेही | |
| 4. | श्री बल्लू शिवहर | कपसा | |
| 5. | जवाहर लाल द्विवेदी | कुनेहरा | |
| 6. | श्री रामधीन | गुढ़ा | |
| 7. | श्री रामखिलावन | चचपहरा | |
| 8. | श्री जगदीश सिंह | बरबई | |
| 9. | श्री रामदुलारे | गंज | विकास खण्ड–कबरई |
| 10. | श्री आसादीन | सुरहा | |
| 11. | श्री भूरेलाल | किडारी | |
| 12. | श्री लालबहादूर | करहरा कला | |
| 13. | श्री लालसिंह | मझलवारी | विकास खण्डकवरई |
| 14. | श्री रामसेवक | ढिकवाहा | |
| 15. | श्री भूरेलाल | लुहेड़ी | |
| 16. | श्री रूप सिंह | गुगौरा | |
| 17. | श्री प्रताप नारायण | बछेधरकला | |
| 18. | श्री रमजान | मवईया | |
| 19. | श्री राजेन्द्र बहादुर | सुगिरा | विकास खण्ड–जैतपुर |
| 20. | श्री शंकर दयाल | बड़ेराखुर्द | |
| 21. | श्री करनसिंह | सरगांव | |
| 22. | श्री शलील अहमद | उमन्नियां | |
| 23. | श्री शिवबालक | बरेल | |
| 24. | श्री धनीराम | झिनाबीरा | |
| 25. | श्री खालिद मियां | बिलराव | विकास खण्ड–राठ |

| क्रम सं0 | ग्राम प्रमुख/मुखिया का नाम | केन्द्र का नाम | परियोजना – सुमेरपुर |
|---|---|---|---|
| 26. | श्री जयगोविन्द पाण्डेय | रोरो | |
| 27. | श्री शिवसेवक सिंह | कैथा | |
| 28. | श्री कैलाश चन्द्र | मेलिहा | |
| 29. | श्री सिद्धगोपाल | ददरी | |
| 30. | श्रीकमल सिंह | निवादा | विकास खण्ड–मुस्करा |
| 31. | श्रीबाबूराम तिवारी | खड़ेही लोधन | |
| 32. | श्री हर स्वरूप व्यास | मुस्करा | |
| 33. | श्री गिरीश पालीवाल | इमिलिया | |
| 34. | श्री भगवती प्रसाद | गौरा | |
| 35. | श्री लल्लू प्रसाद | ऐचाना | |
| 36. | श्री ज्ञान प्रकाश उपाध्याय | नौसारा | विकास खण्ड–चरवारी |
| 37. | श्री सुधीरबाबू | इमिलिया | |
| 38. | श्री हरिकान्त गुप्ता | गौरहारी | |
| 39. | श्री श्रवण कुमार | स्वासा माफ | |
| 40. | श्रीमती पुष्पादेवी | चरखारी | |

(7)

न्यादर्श के अनुसार

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की सूची

(जनपद - जालौन, झाँसी, बाँदा, ललितपुर एवं हमीरपुर)

## न्यादर्श अनुसाद प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की सूची

### जनपद – जालौन

### परियोजना – कोंच

| क्र0सं0 | विकास खण्ड | न्यादर्श केन्द्र का नाम | केन्द्र का स्थान | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 1. | कोंच | बिलावाँ | मंदिर पर | |
| 2. | " | पड़री | प्रा0 पाठशाला | |
| 3. | " | पड़री | प्रा0 पाठशाला | |
| 4. | " | अटा | घर पर | |
| 5. | " | डाढ़ी | प्रा0 पाठशाला | |
| 6. | " | पंचपुरी | " " | |
| 7. | नदीगाँव | देवगांव | घर पर | |
| 8. | " | घनौरा | " | |
| 9. | " | सुलखना | " | |
| 10. | " | बरगुवां | " | |
| 11. | " | कुरचौली | " | |
| 12. | " | सइपुरा | " | |
| 13. | " | खोरावर | " | |
| 14. | माधोगढ़ | भीमनपुर | " | |
| 15. | " | कुरैती | मंदिर | |
| 16. | " | बोहरा | " | |
| 17. | " | पिछौना | घरपर | |
| 18. | " | विरिया | " | |
| 19. | " | कुरौती | " | |
| 20. | " | सुल्तानपुरा | " | |

## न्यादर्श अनुसार प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की सूची

### जनपद – जालौन

### परियोजना – डाकौर

| क्र0सं0 | विकास खण्ड का नाम | केन्द्र का नाम | केन्द्र का स्थान | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| 21. | डाकौर | नवादा | सार्वजनिक स्थल | |
| 22. | " | निगामपुर | " | |
| 23. | " | नहिली | " | |
| 24. | " | तिरावली | " | |
| 25. | " | जखा | " | |
| 26. | " | धनीअहीर | " | |
| 27. | " | जमलापुर | " | |
| 28. | महेवा | सिकन्दरा | निजीघर | |
| 29. | " | तुर्खी | " | |
| 30. | " | नसीरपुर | " | |
| 31. | " | टिकाउली | " | |
| 32. | " | सरसौला | " | |
| 33. | " | मडगुवा | " | |
| 34. | कदौरा | सन्धी | " | |
| 35. | " | तिरही | " | |
| 36. | " | जौरा खोरा | सार्वजनिक स्थल | |
| 37. | " | कुसमुरा | " | |
| 38. | " | हासा | " | |
| 39. | " | पण्डौरा | " | |
| 40. | " | जयसुखपुर | " | |

## न्यादर्श अनुसार प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की सूची

### जनपद – झाँसी

### परियोजना – गुरसराय

| क्र0सं0 | विकास खण्ड का नाम | केन्द्र का नाम(न्यादर्श) | केन्द्र का स्थान | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| 1. | गुरसराय | भसनेह | हमीर सिंह का मकान | |
| 2. | " | गढ़ा | पून्न धोबी का मकान | |
| 3. | " | पुछी | मन्दिर में | |
| 4. | " | खोरी | बैठक नाथूराम | |
| 5. | " | वरासरमपुरा | सार्वजनिक स्थान | |
| 6. | बमौर | ककरवाई | प्रा0 पाठशाला | |
| 7. | " | सुइा | श्री कडोरे का मकान | |
| 8. | " | लुडरी | मकान परमाई का | |
| 9. | " | बरोरा | मकान मनोहर सिंह | |
| 10. | " | शमशेरपुरा | प्रा0 पाठशाला | |
| 11. | मऊरानीपुर | मदरवास | सार्वजनिक स्थल | |
| 12. | " | सुहागपुरा | " | |
| 13. | " | मेंढकी | पम्मे का मकान | |
| 14. | " | बरूआसागर | रा0क030मा0वि0 | |
| 15. | " | रौनी | " " | |
| 16. | " | मउखार | मकान राजेन्द्र प्रसाद | |
| 17. | " | मऊखार | रा0क030मा0वि0 | |
| 18. | " | सिजारी बुजुर्ग | मकान भानसिंह | |
| 19. | " | टकटौली | " " | |
| 20. | " | घाटकटोरा | मकान भुवानी | |

## न्यादर्श अनुसार प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की सूची

जनपद - बाँदा

परियोजना - कर्वी मानिकपुर

| क्र०सं० | विकास खण्ड | न्यादर्श केन्द्र का नाम | केन्द्र का स्थान | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| 1. | चित्रकूट कर्वी | सेमरिया जगन्नाथ | घर पर | |
| 2. | " | भैसौधा | " | |
| 3. | " | शीतलपुर | " | |
| 4. | " | हिनौतामाफी | " | |
| 5. | " | रमौली | " | |
| 6. | " | अहमदगंज | " | |
| 7. | मानिकपुर | कुटिलाहाई | सर्व० स्थल | |
| 8. | " | बड़ी मड़ैयल | निजीघर | |
| 9. | " | सेखापुर | " | |
| 10. | " | लक्ष्मणपुर | " | |
| 11. | " | ऐलहा | " | |
| 12. | " | नयाचन्द्रा | " | |
| 13. | " | कबरापुरवा | " | |
| 14. | पहाड़ी | बरछन | " | |
| 15. | " | बघवारा | " | |
| 16. | " | औदहा | य " | |
| 17. | " | छेदरिया बुजुर्ग | " | |
| 18. | " | सालिकपुर | " | |
| 19. | " | महुआगाँव | " | |
| 20. | " | जी.जी.आई.सी.राजापुर | " | |

न्यादर्श अनुसार प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की सूची

जनपद – ललितपुर

परियोजना – तालबेहट

| क्र0सं0 | विकास खण्ड का नाम | न्यादर्श केन्द्र का नाम | केन्द्र का स्थान | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| 1. | जखौरा | कालीपहाड़ी | निजी मकान | |
| 2. | " | पंचौरा | लोकपाल की पौर | |
| 3. | " | सेमराडांग | गोपाल सिंह का मकान | |
| 4. | " | हर्षपुर | आशाराम की पौर | |
| 5. | विरधा | सतौरा | पुराना प्रा0स्कूल | |
| 6. | बार | सहना | निजी मकान | |
| 7. | " | बछरावनी | " | |
| 8. | " | चिकलउआ | बेसिक प्रा0पा0 | |
| 9. | " | बड़ोखरा | " " | |
| 10. | " | खिरिया मिश्र | निजी मकान | |
| 11. | जखौरा | विजयावन | सुम्भा चमार का घर | |
| 12. | " | अजनौरा | आचार्य जी की पौर | |
| 13. | " | ऐरा | रामगोपाल का घर | |
| 14. | " | भवानी | हरचरन नाम देव का घर | |
| 15. | " | भैंसाई | देवसिंह का मकान | |
| 16. | विरधा | छिल्ला | प्रा0पा0 | |
| 17. | " | पटउआ | मेहरबान सिंह का मकान | |
| 18. | " | रजौरा | जगदीश का मकान | |
| 19. | " | पठराई | परमाल सिंह का दालान | |
| 20. | " | सिमरधा | प्रा0पाठ0 | |

## न्यादर्श अनुसार प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की सूची

जनपद – हमीरपुर

परियोजना – सुमेरपुर

| क्र०सं० | विकास खण्ड का नाम | न्यादर्श केन्द्र का नाम | केन्द्र का स्थान | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| 1. | मौदहा | किसवाही | भागवत प्रसाद की बैठक | |
| 2. | " | द्रानी | रामस्वरूप शुक्ल का घर | |
| 3. | " | खेड़ही | इन्द्रपाल का घर | |
| 4. | " | कपसा | गोपाल का घर | |
| 5. | " | कुनेहटा | गंगाप्रसाद का घर | |
| 6. | " | मुठा | कर्ण सिंह का मकान | |
| 7. | " | पचपहरा | रमाशंकर का घर | |
| 8. | " | बरबई | रामअवतार का घर | |
| 9. | " | गंज | हरिहर त्रिपाठी का घर | |
| 10. | 6 | सुरहा | सुभाष शुक्ल की बैठक | |
| 11. | " | विठारी | गया विश्वकर्मा का घर | |
| 12. | " | कनहरा कला | धर्म सिंह की बैठक | |
| 13. | कबरई | मझालवारा | मूलचन्द्र का मकान | |
| 14. | " | छिकवाहा | हरिश्चन्द्र का मकान | |
| 15. | 6 | लुहेड़ी | बद्री प्रसाद का मकान | |
| 16. | " | गुगौरा | जगदीश की बैठक | |
| 17. | " | बछेछरकला | भइया लाल का घर | |
| 18. | " | मवइया | जयहिन्द का घर | |
| 19. | जैतपुर | सुगिरा | अयोध्या का घर | |
| 20. | " | बड़ेरा खुर्द | ग्राम प्रधान काघर | |

## न्यादर्श अनुसार प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की सूची

### जनपद – हमीरपुर

### परियोजना – कुरौरा

| क्र0सं0 | विकास खण्ड का नाम | न्यादर्श केन्द्र का नाम | केन्द्र का स्थान | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| 21. | राठ | सरगांव | करनसिंह का घर | |
| 22. | " | उमन्नियाँ | शलील की बैठक | |
| 23. | " | बरेल | हरिजन बस्ती | |
| 24. | " | झिनाबोरा | देशराज का घर | |
| 25. | " | बिलरंडा | बूद्धू का मकान | |
| 26. | 6 | कैथी | प्रा0पा0 | |
| 27. | " | रोरो | सियाराम का मकान | |
| 28. | " | मेल्हिया | ख्याली का मकान | |
| 29. | " | ददरी | हरीदास का मकान | |
| 30. | मुस्करा | निवादा | कामता का घर | |
| 31. | " | खड़ेही लोधान | निजी चौपाल | |
| 32. | " | मुस्करा | कड़ोरा कोरी का घर | |
| 33. | " | इमलिया | सुन्दरलाल का घर | |
| 34. | " | गौरा | देवीदीन का घर | |
| 35. | चरखारी | ऐंचाना | पीपल का चबूतरा | |
| 36 | " | नौसारा | जयगोपाल का मकान | |
| 37. | 6 | इमिलिया | हरिकूप के पास | |
| 38. | " | गौरहरी | प्रा0 पाठशाला | |
| 39. | " | स्वासामाफ | पर्वत सिंह का घर | |
| 40. | " | रा0बा0इ0का0 | रा0बा0इ0 कालेज | |